

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें  
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने  
मुद्रित किया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

## रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥  
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनं नत्वा, धर्मशीलं च सद्गुरुं ॥  
गीर्वाणीं हृदये धृत्वा, लिखामि रत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थं ज्ञव्यजावा  
नां, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं  
॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वानि, पौषधंदेववन्दनं ॥ स्तोत्राणि स्तवनं रम्यं,  
स्वाध्यायं गुरुवन्दनं ॥ ३ ॥ इत्यादि बहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥  
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्च संपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्भोरजिनेन्दुतीर्थतिलकः सद्गुरुतत्संपन्निधिः, संजज्ञे सुगुरुः  
सुधर्मगणनृत्तस्यान्वये सर्वतः ॥ पुण्ये चांद्रकुले ऽजवत्सुविहिते पक्षे स  
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनः सूरिराट् ॥ ५ ॥  
आसीत्तत्पदपंकजैकमधुकृत् श्रीवर्द्धमानाजिधः, सूरिस्तस्य जिनेश्वर  
ख्यगणनृत्तातो विनेयोत्तमः ॥ यः प्रापत्तत्तत्सिद्धिपंक्ति सरदि ।  
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धकृती खरतरे त्पाख्यं  
नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमे श्रीमत्, सूरिः श्रीकुशलाजि  
धः ॥ दादाविरुद्विरुयातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्त्तिउप  
ध्यायः, जातो सौप्तिकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमशटी  
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविक्रान्तः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ  
कानेकज्ञानानां, ज्ञानक्रियाप्रपादकाः ॥ ९ ॥ तत्वरणसमालोढा, नि  
धानकुशलाजिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंति बहुमानवाः ॥ १० ॥  
उपाध्यायसदाचारा, वादीनां मानजंजका ॥ शास्त्रार्थविजयंप्राप, संप  
दं युक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकज्ञाद्विस्तारेण, कृतोयं ग्रंथसंग्रहः ॥  
स्वपरोपकृते सम्यग्, प्रतिद्वंद्वप्रापितं मया ॥ १२ ॥ सुशिष्यहेमचंद्रेश,  
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृतसहायेन, मुबय्यां शोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥



यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेऽप्योवै, नि  
 त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेऽस्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृह  
 दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुज  
 हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंद्र चि । पेमचंद्र चि ।  
 अमरचंद्रका हे, हमने हमारा सर्व स्वयंपासरा पुस्तक धन्नमालका  
 मालक इन तीनोंको किया हे, दूसरा किसीका दावा जर नहीं ॥  
 शुज ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिका खुद ॥



## ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजयसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीवशोन्नतसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञू तविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजम्बाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीधूलज्जम्बाहुस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहृत्तिसूरजी ज्ञये सो वीरजगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगञ्ज प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तैसे १८ पट्टपर श्रीजिनचंडसूरी हुये इनोंसे चंडकुल प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य उर इसरा साधुजके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योंको आचार्यपद दिया तबसे ८४ गञ्ज ज्ञया, यह ८४ गञ्जोंके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक ज्ञए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाठधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणहलपुरपट्टणमें डुर्लभराजाकी सज्जामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटशके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ लज्जलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बने कठोर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगङ्ग वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद एसें ४ जेद नवदी  
 कित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिल्लीके बाद  
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा बुनाखेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र  
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके  
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थ नर नवांगवृत्ति प्रगटकर्ता श्रीअजयदेव  
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अगरे हज्जार वागमीश्रावक प्रतिबोधक  
 श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रजावीक  
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोने चितोम नर उज्जयणी  
 वज्रखंजसे साहीतीन कोटी विद्याभ्यासकी पुस्तक निकालके साध  
 कर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हज्जार घर राजन्य  
 वंशीयोको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस  
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारो लूशिया राखेचा  
 सावणसुखा ठाजेम इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत  
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरुका गुण लिख नहीं सकते, वह  
 आज तक बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५  
 में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-  
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो  
 का दिल्लीके जरबजारमें दाग जया बना चमत्कार देख बादसाहा-  
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे  
 ५० में पट्टपर महाप्रजावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद  
 पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बने२ उपगार  
 किये, गूजरमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप  
 सें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण  
 वदि अमावशको स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-  
 गट होय प्रथम दर्शण दिया, तिसपीठे जकजोकोका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघने अपने आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्ति स्थापन कर दादा जीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंडुस्थानमें रक्ता करवाई, क्रियानुद्धार कर पतितोंको वांटा गह्वकी व्यवस्था करमचंद वठावतकी वीनतीसें सर्व समयानुमार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरि: इनोके समयमें आचार्य गह्व सागरचंडसूरि:सें जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि: इनोके समय रंगविजयसूरि:सें रंगविजय गह्व जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाजसूरजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौजाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमें महेँडसूरिजीसें मंमोदरागह्व जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरि:जी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि: जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरि:जी वर्त्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरि: महाराजके शिष्य म. होपाध्याय श्रीकैमकीर्तिगणि:जीने जं । यु । प्र । ज । श्रीजिनपद्मसूरि:जीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब- होत थोमे रहे तर वने२ ज्ञानवंत क्रियावंतोंको तर२ जगे चतु-

मांस करणे जेजेगये, थोमे बहोत रहेथे सो ज्ञी गोचरी धर्मिल्ल  
 जूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी  
 ही बैठेथे, श्रीजीका धर्मिल्लजूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपणे वि-  
 द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप  
 विराजो समयका बना अपरवलीपणा हे सो गन्धमें साधू बहोत  
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत  
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंथित वि-  
 द्यमानं थे, अब यह गन्ध किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय,  
 जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-  
 हाराज यह वृहन्न खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी  
 अज्ञी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायेंगे, एसा कह दादासाहि  
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,  
 गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-  
 रणेकूं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन  
 नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शान्तराश  
 का जरा बैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-  
 वाहकी वांछा ठोम दीक्षा ली, दादासाहिबने देवशक्तीसें सबोको  
 धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोको लेकर श्रीआचार्य पास आये,  
 सूरिश्चरने कहा, हेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने  
 कहा तथास्तु, मेरे शान्तानी हेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे;  
 उस दिनसें वृहत्साखा हेमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई.  
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची  
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध  
 हे, इस साखामें बनेश विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये  
 अनेक प्रकार काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस साखा

( ए )

मैं उपाध्याय श्रीनेममूर्तिजीजिनिः तत् शिष्य उ । श्रीकैममाणि  
कजीजिनिः तत् शिष्य । पंक्ति प्रवर श्रीविनयन्नद्रजिजिनिः तत्  
शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिजिनिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म  
शीलजिजिनिः (श्रीसाधूजी) तन्निष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि  
जिनिः तन्निष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुदितारगणिजित्संगृहीत  
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविज्ञाश तन्निष्य पं । कामासौज्ञायमुनिः  
चि । पेम्चंद चि । अमरचंदकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-  
पगारार्थ पढेके उपाया । श्रीवीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ  
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ  
स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकान-  
नेरमें दिया ॥

- ४१ रु । श्रीनमसेठजी चांदमलजी ढंढा.  
११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी जावक.  
११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.  
११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी लाम.  
११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.  
१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.  
७ रु । श्रीआसकरणीजी वरदिया.  
११ रु । श्रीबादरमलजी जलकरणीजी रामपुरिया.  
११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेम.  
२५ रु । श्रीबालचंद कनीराम आनन मुमईवाला.  
३ रु । श्रीवराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाके मदत देंगे तो  
ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोके केश्यक शिष्य जैनपं-  
क्ति तत्त्वज्ञानी वषा जायेंगे, जैनउपदेशक बनें, तुर जो नदी पु-

दते हैं उनको हरतरे आवकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकुं उद्यमवंत  
 करणा यह काम आवक मातपिता नर गुरुलोकोंका हे, इस नही  
 पढ़ाणेके सबब जैनके ज्ञेयधारी नर ज्ञेयधारणीयां अनेक कुत्सर्माके  
 वश नरकके पात्र नर धर्मकुं लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालक सूत्रमें लिखा हे ( ॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥ ) पढ़-  
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नोका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा  
 कहते हैं हमारे ज्ञावे विगमे तो क्या नर सुधरे तो क्या, हम नतो  
 इनको गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो भानरहित कंग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मज्जसे तो जैनधर्म अभावश चंडताकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसे  
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसे उद्योत करें, आद्विधी विवेकविवाशादि  
 आवकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसें नृपुण्ये धर्माचार्यकुं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला कतरे,  
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणसें विगारुका सुधार नही  
 होता, धर्ममें थिर करणकी असली जन्म विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़ाण हे कार्य सो अठी क्रिया चोथा  
 पांचमा ठठा सातमा गुणगुणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा,  
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोई  
 कृतघ्नी अपणे पितासे पिताज्ञाव नरके तो उसका क्या कोई कर  
 सकता हे लेकिन संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-  
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 तो जतीही हे, जतियोंसें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पम्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हे-  
 यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वमेरोनें तुमारे वमे-  
 रोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबसे  
 वमा हे. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते हे लेकिन सुणाणे  
 पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों केसें  
 माने ? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा  
 हे सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों  
 करते हैं इनोसें यथार्थ धर्म पलतानही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ  
 धर्म तो यथाख्यात चारित्रकुं कहा हे सो तो वज्ररुषज्जनाराच सं-  
 हयान विन्नेद होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोय रहा,  
 जिसमें जी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी  
 प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग  
 सूत्रोंमें वांचणें योग्य उहरगया, आपसमें कषायकी चोकनीका व-  
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंजत्यागकी इमेसां बुद्धि रखे  
 पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला बणाणेमें इतना फायदा  
 हे-मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-  
 का पाप ज्ञानपदे बाद आपसेंही ठोरुदेणा, केश्यक इनोमें चोथा  
 पांचमा ठठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव  
 परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकुं  
 सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बांधता हे, थोमेमें  
 विचारणा ॥ प्रश्न-जिनोकुं पढाया नही उर गुरुमरे बाद गुरुके क-  
 माये धनसें पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरुकुं जरूर लगे  
 या नही ? उत्तर-जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह  
 वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज  
 सो करणेवालेकुं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका



मर्म हैं, मातापितां गुरु शुभ्र अनुष्ठान सिखलाते दे संतान वेसा  
करे तो जरूर शुभ्रफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सि-  
खलाते नही इस बास्ते करै करावै अनुमोदे वसकूं पाप लगे ॥

बोकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-  
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
लीलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावतीस। दादासाहिवपूजा	०	४
मूर्तिमंरुणका अदभुत ग्रंथ लिङ्गमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगङ्गा तपगङ्गाकी	४	०
श्रावकव्यवहारालंकार	१	८

## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त उर विद्यावन्त सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेही होणा, फेर हमेंसा शास्त्राज्यासी होणा, बहोत प्रनादवन्त नहीं होणा, देश क्षेत्र काल ज्ञाव मुजब सदा गन्तकी सारसंज्ञालसे जैनधर्मके दीपक होणा, वेजा चलणसे यतीयोंको दृढकणा, उनोके मन मुजब नही चलणे देणा, लांगित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नय काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नहकके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पन्थिलेइण करणा, जती जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तारीफ करे ऐसे मार्गमें प्रवर्त्तणा, इत उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणादही करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अवै सुशील पंथितो की सोहबत करणी, क्लमावन्त ज्ञी होणा, समय ज्ञी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर पंथितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोज्ञ उर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणो२ गन्तके अविष्टायक क्षेत्रपाल मानजद्रादिकके साहायसे धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिवलसे संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने उर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गन्ध के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जंमार नहीं है उहां पुस्तक लिखवाके जंमार करवाणा, अपनी निशायें हजारों रुपयेके पुस्तक लिखवाके आवकों पास लेणा यह साधूजंका धर्म नही, फकत अपनेसें उठे उर नित्य पढिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकूं चहीये तो ज्ञानजंमारसें लेकर पीठा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसमें वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दूसरे क्षेत्रोंके समर्थ आवकोंसें करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, बती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंढितोंदीसें तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कतघरी होकर उनही की पीठी हीजणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्क उर बीजभूत जतीही है क्योंकि जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमाळादि आवक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पन्ते समयमें जती होतेआए है, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बूटे-रायजी उर आत्मारामजी वगेरे जये है, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी कृमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञानचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चरित्र इन तीनोंकी जग इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न काखपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी ठे गुणस्थानकमें केश्यक वर्चते हे उर आजकलके साधूजी केश्यक प्रमादी गुणस्थानवर्ची हे इस वास्ते केश्यक तो गंने दोष लगाते हे केश्यक प्रगट, केश्यक तो जतीयोमें ज्ञाव करके पंचम गुणघाणी हे केश्यक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुजके मुजबही शुज ज्ञावसंयुक्त जतियोके ज्ञाव आश्री गुणघाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुज बलवान हे, लोचादि कायकेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूजमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणशवालोंसे आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके जती देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद कैसे सभेगा बलीहारी उनहीकी हे जिनोंने कषायकी चोकनी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वशिष् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन चार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत ठोठा लेणसें धाय रखशी होती हे उसकी प्रालगेट करणकुं तब बहोतसे कमजात अपशी एबकुं ठिपाणकुं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमसं वात नही निंका लते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही बणता, दुष्टोंका स्वप्ना;

वही होता है सो गुणमें उद्युक्त निकालते हैं, अर्तुहर लिखता है-  
 सूरवीरकुं निर्दश कहते हैं गमखाणेवालेकुं मरुकुं केते हैं ब्रह्म-  
 चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हैं, खैर ऐसे चेलेकुं मुखपाठ  
 जैनधर्मका अवश्य कर्तव्य गुणाना नित फेर अहर वांचने सि-  
 खाणा अहर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कौश व्या-  
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्वानुसार सीखाकर जी-  
 वविचारादि षट् प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-  
 पट्टा मुंहपत्ती उधा मांसा चेहर पांगरणी स्वेत हथेसां रखणा, म-  
 स्तकके बाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंदाणा, पादस्त्राण स्वे-  
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर  
 देश आश्री पहरणे दक्षिण पूर्वमें प्राये नहीं उहां ऐसा उपसर्ग  
 नहीं देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोधार ग्रंथमें का-  
 रणविशेष साधुनंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लि-  
 खणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूथणा तिर्यणीके मोरे बणाणे  
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो ज्ञी  
 जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकुं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख  
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पक्कमणा करणा, ठन्नी शक्ते  
 लञ्चित त्यागणा, राजदंने लोकजंने ऐसे रस्ते नहीं चलणा, कुलम-  
 र्याद लोपणा नहीं, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखि  
 लापनसा पीणेवालेकी संगत नहीं बैठणा, कुविसनीयोके संगतसे  
 लंढन लगता है, आवक जो द्रव्य दें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-  
 यात्रा चेला लेणा उनोकुं खिलाणा पिलाणा पंक्तोको रुजगार देंके  
 चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय  
 पापोंकी गह्रा सुकृतकी अनुमोदना कर सब दोसराके परजव सा-  
 धणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुवज्रबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धान्तोंमें लिखा है, उस गुणोंकूं धारणा चाहिये. गणान्गसूत्रमें साधुओंकी प्रतिपाल करनेसे श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य जगवंतने कहा है, बालक कसूर ज्ञी करे तो ज्ञी मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कष्टी हेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुओंकोसे वर्रणा चाहिये, जेवधारीसाधुओंमें कोइ तरेकी एव दीखपने तो एकांतमें हितशिखा देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोंकी विविचित्रता समझके एतोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै एसी एव कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल जाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानो नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांसे रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाल जरूर करे, विनासंज्ञाल किये बहोतसे मंदिर उपासरोकी तजवीजें बिगन रही है, जंमार लोक लागये हे, बती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसे करें, अपना लरुका लरुकीयोकूं संसारविद्या उर धर्मकी मजबूती करणेकूं पम्किमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशास्त्री अकर बचपणसे सिखलाणा चाहिये देव गुरु उर बनेर अकलवंतोंकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजादसे जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको ज्ञी रोक्णा, विद्यमान अंग्रेजी इष्टम लरुकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुतियार कर पीबै सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इष्टमकी ज्यादा किताबोंके पढणसे पीबै उस,

कं सत्य सनातन दयार्थमका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चौथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ठढा गुलाबचंदजीकों हम धन्य-वाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समजा है वोही जाणता है उर लस-नकूं मुसककी खुसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अजी बंदोत जवक्षमण करणा बाकी रहा है उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही, कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ त्यारे२ है मानेजी तो कोन सच्चा उर कोण फूठा ? ( उत्तर ) हे जय्य हमने पेस्त-रही लिखा है न्याय जो जैनका सात जंगरूप है उसकूं समजा उर वस्तुत पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है, ( प्रश्न ) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले घोमे हैं सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समजो तो जो रुषजदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है बीच२ में अद्विपज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकड़के अपने२ मत खने किये है, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान् जड्वाहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाष्यकार जिन-जद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यदि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, श्रावणधर्मवालों पर वसा उपगार स्तनप्रजसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केशिक पापारंज की बातें तो इस जातीके कायदेसंही बंध होगई है, जैसे मद्यका पीणा उर मांसादि अन्नक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरे३ ऐसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोने अधोगतीकी समक बां-

धर्म पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरञ्जायकी तरे क्यों हाथसें फेरते हो पीठे पठ- तावा होगा ओम्मे इनकी जिह्मानी हे, मदिरा पीणेमें बावन उगुण हे ऐसैं मांसमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञापाग्रंथ, यही चीज अग्री होती तो तुमारे वगैरे लाखों राजपूत इस चीजोंको क्यों ठोमते नरं मुसलमानीको जौ धर्मकायदेसें इस वातकी सकतं मनार्इ हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाउं स्थापन करणी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसैं सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममें संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं- नित तो दुस्मन जौ अग्रा होता है मूर्ख हितकारी जौ कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेह करता है मूर्खके विनाका- रण द्वेष नर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंने कहा हे-  
 उहा ॥ सज्जन जकेसो नही, दुस्मन नही पंचास ॥ जणनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ आवक जितनी चीज अपणे उपजोगमें लेता हे सो सब जेतम चीजका दान करेता हे एक स्त्री बर्जके उस करके जन्मांतरमें लहमीकी एश्वयता ज्ञाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधो पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकुं पुन्य बोलानुरूप हे, अन्न वस्त्र उंबधी सज्या पात्रादिकसाधुजोंको देवे, देवकं निमत अष्टंध्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसैं दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगैरे जेजमणैं दान करे, साधु धर्मी तथा जैनपंथितोंकुं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थंकर जंगवान जौ सैवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे जंगवतीजीनें ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा हे, जंगवतीसू- त्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, क- लागुरु २ जो लिखला पढ़लादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु



३ सामायक पश्चिममणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-  
पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य ज्ञाती करे ॥ श्राव  
चतुर्जंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवन्त देसैविराधक । १ । कष्टरूप  
क्रिया करणेवाला देशैव आराधक । २ । ज्ञान नर क्रियारहित सर्वे-  
विराधक । ३ । ज्ञान नर सत्क्रियावन्त सर्वे आराधक । ४ । ॥ इति  
पत्रिगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोंके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा  
होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाममें प्राये जैनमंदिर जोगवदी पूजते हैं उनमें इत  
वर्षतें प्राये मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम हे, गुजरातमें  
जो जोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंको अन्य  
देशमें गंधर्व कहते हैं. ( प्रश्न ) पूर्वोक्त जोजकोंने जैनधर्म कबसे  
बोला हे ? ( उत्तर ) पहले श्रीरुषजदेवजीने जोगवंश स्थाप-  
नकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे जैरतजीने ब्राह्मणवंश  
स्थापन करा, राजा सूर्ययशने जोगवंशीयोंको पूज्य जाण जिनमं-  
दिरोंकी सारसंज्ञाव सोंपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके  
कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणसे बलिदान जोगवंशी नही  
खातेथे वो सब पंखी जानैवर खायाकरते, इनोंको अनेक तरेसे पर्व  
महोत्सव पर इव्य वस्त्र जोजनादिकसे राजा नर प्रजा सब सत्कार  
करतेथे वो सब नवमें देशमें जोगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये  
बाद कच्ची कौइ जैन कच्ची मिथ्यात्वी ऐसे होते चले आये, जब २४  
वर्ष पहले छुसीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-  
नीके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-  
वगेरोंने ज्ञाती नर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-  
साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीवागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् बारसेमें रामानुज माधवाचारी वगैरोंने विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको दादा दत्तसूरजो ने लाखों हुतवाल फेर वणायें, तब राजवीरोंने गुरुसे अरज की इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा नही राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरुने कहा जो जिनमंदिरोंकी जत्ती नुर जतीगुरुकी सेवा अन्नक त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां तक पाटका मालक राजा नुर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाउने अपणें ज्ञाई स्वजनवर्गी हुतवालोकें प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवामोंमें हुतवालोकें राज्याधिकार वणा तबसे हुतवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोंका पूजारीपणा ज्ञी ज्ञोजकोंको सोंपा वह ज्ञोगवंशी फेर पीठे धारेइ मिथ्यास्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेंसे सब तरे की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण ज्ञोजकोंको कर्म करके मानणे लगे पूज्यज्ञाव उठगया, जो कज्ञी ज्ञोजकलोक एसा समजतें होंगे की हम तो अबलसेही शैव बैष्णव थे ( उत्तर ) यह समजकी ज्ञूल हे हम पदली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहुलायतमें प्रजा जैन रही, बोधोक अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अमलमें सांख्य, इत्यादि वार्ते तवारीकोसें ज्ञी पाईजाती है लेकिन जैनधर्म नुर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना ज्ञोजकोंको जरूर समजणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लागा नुर बहुमान हुतवंश पर कज्ञी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर हुतवाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समजणा, पीठेंसे

विष्णुमंदिरोंकी पूजा नर राजा वगैरोंकी देखोदेखें संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी वध गया, इस तरेही बहो-तसें उसवंशी जी खुसामंदीसें इसरां धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणांवट जी हे " जिसकी खावे बाजरो जिसको गैरणी हाजरी " उसमें हरज करणोंसें निमकहरांम कहलाता हे ॥ अंतरंगजकीसें जिनमंदिरमे जाहू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विंगरं जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आतपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगैरे देकर जीवरहो करणी, जल शुद्ध बाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवड्यकी चोरी नही करणी, हक्कमें हरकत मालणा नही, देव नरं गुरुकी सेवा करणोंसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो ज्ञावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी व दोलत रौटी आदि सइकनों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य छंपासरे के जरीये तुम्हें सइकनों रुपै आवक देते हैं वो सब देवगुरुका प्रताप समज इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश में लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखां होये तो माफी मांगताहूं सरलज्ञावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके ठापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके बांचे या गुरुसें शुद्ध करावेमें मनशु-द्धिसें सर्व संघसें कृपा मांगताहूं सकल तो सदा गुणग्राहीही होने

हैं, उनोंका मैं सदा आज़ार मानता हूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियते  
ग्रंथ, संति यद्यपि दुर्जना ॥ नहि दस्युज्जयाल्लोको, दैन्यवानिह वर्तते ॥  
॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करता हूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे  
चोरीके मरसें लोक कंगाल नही बूझ वेठते तेसे ? मेनें अपने  
हाथसे लिखकर मुंबई जेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-  
ग्रह मेनें अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवी-  
रचंडजीमुनिसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे,  
ऋषभदेवजीका आदिअक्षर । र । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोंसे  
बणा जो । राम । उनोंके मध्यवर्ती सब जगवंतोंके गुणोंका विलास  
इसबास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाइव सर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतले लुठंति ॥ मरु-  
श्चलीकटपतरुः सज्जीया, ज्जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-  
णिः कटपतरुर्वराको, कुर्वन्ति ज्ञान्याः किमु कामगत्या ॥ प्रसीदतः श्री  
जिनदत्तसूरैः, सर्वे पदाहस्तिपदे प्रविष्टाः ॥ २ ॥ नो योगीन च योगिनी,  
न च धराधीशस्य नो शाकिनी ॥ नो वेताल पिशाचराक्षसगणाः, नो रोग-  
शोभोगो ज्ञयं नो मारीचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्पुञ्जैः ॥ य-  
स्ते श्रीजिनदत्तसूरि, गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-  
र्वईया ॥ बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगण पाय ल-  
गाई ॥ नाइण साइण व्यंतर खेचर, नूतरुप्रेत पिशाच पुलाई ॥  
बीज तमक्क करक्क जटक्क, अटक्क रहै जु खटक्क न काई ॥ कहे प्र-  
मतीह लैये कुण लीह, दीये जिनदत्तकी एक डुलाई ॥ १ ॥ इति ।  
राजै भुंज गौरगौर, एसो देव नह । और ॥ दादौ दादौ नामसें,  
गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लक्क लोक पा-  
स्यासनकूं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट हात्रु ६

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-  
ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचो श्रीजिनकुशलसूरि, नाम तुं  
कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग उबरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-  
शल देव देहरे, कुशल धन राजड्वारे ॥ पुन्य पसाथे कुशल कुशल  
श्रीसंघ ज्ञानीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घरं२ गाईजै ॥ जिन-  
चंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि  
पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वनो संसार  
कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लब्धि घर कुशले  
आवै ॥ कुशलै धन वरसंत कुशल वन धनरुवन्नो, कुशलै घोमां  
पट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतपो कुशलै जग  
रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२  
होय वधामणो ॥ १ ॥

---

## रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ छँकारं बिंडुसंयुक्तादि मंगलाचरण	१
२ स्वरवर्ण ... ..	२
३ वर्णव्यंजनमाला ... ..	३
४ शिक्षावाक्य ... ..	३
५ संधिसूत्र ... ..	४
६ हितोपदेश ... ..	५
७ छिन्नं जिन नाम सोले सती नाम	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र ... ..	१०
९ थापनाचार्यजीकी तेरेपमिलेइण	१०
१० खमासमण ... ..	१०
११ सुगुरुने शाता सुखपुढा ... ..	११
१२ मुहपत्ती पमिलेइणके पच्चीस बोल	११
१३ अंगकी पच्चीस पमिलेइण ... ..	११
१४ सामायकका पञ्चखाण ... ..	१२
१५ इरियावहि ... ..	१३
१६ तस्सउत्तरी ... ..	१३
१७ अन्नचूससिएणं ... ..	१३
१८ लोगस्त ... ..	१४
१९ वेसणोसंदिस्सानं ... ..	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि...	...	...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार ...	...	...	१५
२२	जंकिचिंतामति० ...	...	...	१५
२३	नमोऽनुषां ...	...	...	१५
२४	जावन्ति चेइआई ...	...	...	१६
२५	जावन्ति केवि साहू ...	...	...	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार ...	...	...	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र ...	...	...	१६
२८	जयवीथराय ...	...	...	१७
२९	परिक्रमण गायवेका अवसर ...	...	...	१७
३०	सबस्तवि ...	...	...	१८
३१	इच्छामिगमि ...	...	...	१८
३२	वन्दणवक्त्याए ...	...	...	१८
३३	पुष्करवरदी ...	...	...	१९
३४	सिद्धाणंबुद्धाणं ...	...	...	१९
३५	वेयावच्चगराणं ...	...	...	२०
३६	संभासाप्रमार्जन ...	...	...	२०
३७	सुगुरुवांदणा ...	...	...	२०
३८	देवसियं आलोचं ...	...	...	२१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोचण ...	...	...	२१
४०	अठारे पापस्नानक आलोचण...	...	...	२२
४१	आवकवंदित्तसूत्र ...	...	...	२३
४२	वंदित्तसूत्र पीठकी विधि ...	...	...	२६
४३	अष्टविंशति ...	...	...	२६
४४	आयरिय उवज्ञाए ...	...	...	२६

४५	आवश्यकक्रीमुहपत्ती	...	...	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	...	...	२७
४७	परसमय तिमरतरणि	...	...	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	...	...	२९
४९	काजसगर्मे स्तुतिका पृथग् पाठ	...	...	२९
५०	अढाङ्गोसु दीवसमुद्दे	...	...	३०
५१	जय२ त्रिभुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	...	...	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिबा...	...	...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंमणं	...	...	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाजिनरिंदनंद	...	...	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि जेठ्या रे	...	...	३२
५६	सिद्धाचलशुद्ध शेरुंजगिरिनमीये रुषजदेवपुंमरीक	...	...	३३
५७	पन्निखेइण विधि	...	...	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	...	...	३४
५९	जयवं दसणजदो	...	...	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	...	...	३५
६१	देवसी पन्निक्कमण विधि	...	...	३६
६२	जयतिहुअण	...	...	३६
६३	जयमहायश	...	...	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंचण को०	...	...	४०
६५	स्तुति कल्यां पोठेकी विधि	...	...	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६८	वरकनक	...	...	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	...	...	४४



७०	श्रीजिनविंब जुहारो रे ज्ञविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे काजसग करणेकी विधि ...	४५
७२	थंजणापार्श्वनाथका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेदो०	४६
७३	थंजणयद्विपाससामिणो ... ..	४६
७४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४७
७५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चउक्साय चैत्यवंदन ... ..	४७
७७	लघुशांतिस्तवन ... ..	४८
७८	कमलदल स्तुति ... ..	४९
७९	कढ्याणकमला गेहं ॥ स्तुति... ..	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति ... ..	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ण वर्षी गजराजगामिनं	५०
८३	सोदम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवंदन...	५१
८६	बंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवंदन	५१
८७	अथ पाहिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५१
८८	वृहदतिचार ... ..	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि ... ..	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संघाय...	६४
९१	दस पञ्चस्काण ... ..	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या ... ..	६९
९३	पञ्चखाणके आमारीका अर्थ ... ..	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्वारिमंगलं ...	७२

९५	पस्कीसूत्र ...	...	...	३६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि ...	...	...	९०
९७	पोसदहा पञ्चस्काण ...	...	...	९१
९८	चोवीस अंमला करणेका पाठ ...	...	...	९३
९९	अंमलाकहाकरणा ...	...	...	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि...	...	...	९३
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि ...	...	...	९५
१०२	राइ संघारा विधि ...	...	...	९८
१०३	पोसद पारणेकी विधि ...	...	...	९९
१०४	दिन जग्यां पीठै पोसद लेणेकी विधि ...	...	...	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोसेकी विधि...	...	...	१०२
१०६	ठाणेकमणें चंकमणे...	...	...	१०३

॥ देववांदखेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मही मंमणं ...	...	१०३
१०८	पांचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०...	...	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर...	...	१०४
११०	मैनाएकादशी स्तुति ॥ अरस्य प्र० ...	...	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ ईंईंकि चतुर्दशीकी...	...	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति ...	...	१०६
११३	वलिर हूं ध्याऊं ॥ पजूषण स्तुति ...	...	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति ...	...	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति...	...	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेद विषै विहरंता॥वीसविहरमान स्तुति:१०८
-----	---

११७	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्श्वस्तुतिः	१०७
११८	वरमुत्तिग्रहार ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०७
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन थुइ...	११०
१२१	यदंद्दिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरदेनं० वीरजिन थुइ ...	१११
१२३	सुरति मनमोहन० वीर थुई ...	१११
१२४	चनवीस जिन पंचकट्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंण आदिदेव ॥ सेत्रुंज थुई...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनथुई...	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमियै ॥ चैत्रीपूनमस्तुति ...	११४
१३०	समरं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक थुई	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमंलाचल मंण जिनवर ॥ शेत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ थुइ	११७
१३६	मन सुष वंदो जावे जवियण ॥ सीमंधर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरताथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ परकी चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शान्त स्तव प्रथम ... ..	११०
१४२	उल्लासिक्रम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शान्ति ॥	११५
१४३	नमिञ्जण ॥ तृतीय स्तव ... ..	११६
१४४	तंजयउ ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरद्वियं ॥ गुरुपारतंज्य ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्धमवहरिउ० षष्ठ स्मरणं ... ..	१३१
१४७	उवसगहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	ऋक्तामर स्तोत्र ... ..	१३३
१४९	वमी शान्ति ॥ ज्ञोज्ञोज्ञया ... ..	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र ... ..	१४१
१५१	किंकपत्तरु० वना नवकार ... ..	१४२
१५२	तिजयपहुत्त ॥ शसतिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	दोसावहारदक्को ॥ नवयद० पा० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शान्ति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कल्याणमंदिर स्तोत्र ... ..	१४८
१५६	रुषिमंमल स्तोत्र ... ..	१५३
१५७	लघुजिनसहस्रनाम ... ..	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र ... ..	१५८

॥ अथ लुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो विज्ञाय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेहीतट मेरु धाम ॥ थंजणापार्थ चैत्यवंद०	१६३
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरब देसे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेसर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्द्धे ॥ पार्थ्व स्तुति ॥	...	१६३
१६५	अविरलशब्दघनोष्ठा ॥ सरस्वती स्तुति...		१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति		१६४
१६७	ज्ञाषामर्ह दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥हस्याजेहसुख.		१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन		१६५

### ॥ अथ वक्ता स्तवन संग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि		१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वक्ता स्तवन	...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वक्ता स्तवन		१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.		१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं	...	१७१
१७४	विमलजिन म्दारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.		१७२
१७५	समवसरण बैठा जगवंत ॥ मूनइग्यारस स्त०		१७२
१७६	सारदमात नमूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन		१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन	...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन	...	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन	...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संजुज स्तवन		१८०
१८२	सिध्दाचल मंरुणस्वामी रे ॥ सिध्दाचल स्त०		१८१
१८३	रुषंजजिनेसर दिनकर साहिब ॥ स्तवन		१८२
१८४	वीर सुणोमोरी वीनती ॥ अमावसका म. स्त.		१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन	...	१८५
१८६	इरियावही मिन्नामिडुक्कर संख्या स्तवन		१८८
१८७	पंच समबाय स्तवन...	...	१८९

१८८	चौदे गुणवाणा स्तवन	...	...	१८५
१८९	नव-तत्व ज्ञाषागर्भित स्तवन...	...	...	१८६
१९०	दंभक ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०६
१९२	समवशरण विचारगर्भित स्तवनं	...	...	२१०
१९३	सुख२ सेत्रुंजगिरिस्वामी ॥ कृष्णदेव स्त०			२१२
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०			२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०			२१५
१९६	मुहपत्ती पम्प्लेदण स्तवनं	...	...	२१८
१९७	आलोयण दंभ स्तवनं	...	...	२१९
१९८	नंदीश्वर बावन जिनालय स्तवनं	...	...	२२२
१९९	अटार्इद्वीप वीस विहरमान स्तवनं	...	...	२२३
२००	जात्रीमाजाइ आवूजीनी जात्रा करण्यो			२२४
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...			२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन			२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥			
	धर्म जिन स्तवन	...	...	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...			२३२
२०५	समकित द्वार गुंजारे पेसतां ॥ दर्शन, आ. स्त.			२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुखीजै ॥ स्तवनं	...	...	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण			२३४
२०८	बे कर जोम्नी-वीनवूजी ॥ आलोयण स्तवन			२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवनं ॥			
२०९	कृष्ण जिनेसर प्रीतम माहरो...	...	...	२३७
२१०	पंथिनो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे...			२३८

२११	शंखवेदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३९
२१२	अजिनंदन जिन दरशन तरसिये	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न बाजे हो कुंथु जिन...	...	२४१

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेटिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज ..	...	२४३
२१९	वालेसर मुज वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखी मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन म्दारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो...	...	२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी महिर करिने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रभू तुं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोक्षनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०	२४८	२४८
२२९	सैत्रुंज रुषज समोसरधा ॥ तीर्थमाला स्त०	२४८	२४८
२३०	आज आपे चालो सदिया ॥ सिद्धाचल स्त०	२४९	२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ हिवराणीपद्मा०	२५२	२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृध्दस्तवन	२५४	२५४
२३४	धम्मो मंगल मुक्किठं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र ... ..	२५९
२३६	सुखकारण ज्ञविषण ॥ नवकार ठंड ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीस ... ..	२६१
२३९	झोल सती ठंड ॥ आदिनाथ आदिदेई...	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिजेष वर्णन स्तवन ... ..	२६४
२४२	जबसे अद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवनं	२६४
२४३	आवककी करणी ॥ आवक तुं ठवे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिखरजीका रास ... ..	२८०
२४७	मुनिमालका ... ..	२९१
२४८	विभ्रंजिन स्तवन ... ..	२९५

॥ अथ सिंहायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसह सिंहाय ॥ जगचुन्नामणीजूठ२९७	
२५०	राइ संथारा पोसह सिंहाय ॥ निस्तिही०	३००
२५१	निंदावारक सिंहाय ... ..	३०१
२५२	शीतासती सिंहाय ॥ जलजलती मीलती०	३०२
२५३	अनाथोरुषि सिंहाय ॥ श्रेणिक रयवानी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंहाय ॥ कर पक्रिमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार ... ..	३०४
२५६	ढंढणरुषि सिंहाय ... ..	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रुषीसिंहाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिंहाय ...	३०७



२५९	सात व्यसन सिद्धाय	...	...	३०८
२६०	चेलणा सती सिद्धाय	...	...	३०९
२६१	वैराग्य सिद्धाय ॥ जूलो मन जमरा कांइ जमे	...	...	३१०
२६२	बाहूवल सिद्धाय ॥ राजतणा अति लोन्नीया	...	...	३११
२६३	अरणक मुनि सिद्धाय	...	...	३११
२६४	इलापूत्र सिद्धाय	...	...	३१२
२६५	मेघकुमार सिद्धाय	...	...	३१३
२६६	असिझाई निर्णय सिद्धाय	...	...	३१४
२६७	बावीस अन्नक सिद्धाय	...	...	३१५
२६८	गजसुकमाल सिद्धाय	...	...	३१६
२६९	प्रष्णचंड सिद्धाय	...	...	३१७
२७०	उत्तपति सिद्धाय	...	...	३१८
२७१	आत्मनिर्द्धा	...	...	३२२
२७२	मंदिर जाणोकी उर दर्शन करणोकी विधि	...	...	३२७
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणोकी विधि	...	...	३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चरावण विधि	...	...	३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कहणोका	...	...	३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०	...	...	३३९
२७७	मेरो मन वस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन	...	...	३३९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	...	...	३४०
२७९	नेमजिनंदजोसें आंखफली ॥ स्तवन	...	...	३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	...	...	३४०
२८१	रात गई अब प्रात होन ज्यो	...	...	३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	...	...	३४१
२८३	ज्ञाव धर धन्य दिन० सिद्धाचल स्तवन	...	...	३४१

२८४	श्रीनीमंघर साहिवा ॥ स्तवन	...	३४१
२८५	मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो	...	३४२
२८६	सुण अरदासा सुगुण० पार्श्वजिन स्तवन		३४२
२८७	अंतरजामी सुण अलवेसर ॥ पार्श्वजिन स्त०		३४२
२८८	प्राण पियारा जीहो पासजी	...	३४३
२८९	महाराज वधाई वाजे वै ॥ सुमतिजिन स्त०		३४३
२९०	आज महोत्सव रंग रलीरी -...	...	३४४

### ॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंड़जी कृत स्नात्रपूजा	...	३४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	३५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	३५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	... ..	२
२९५	आरतिविध तथा आरती॥ जै जै आरति शां०		३६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चहिये सो चीजोंकीविधि		३६३
२९७	नवपदजीकी वरुनी पूजा	... ..	३६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढावण त. वासकैपपूजा वि.		३७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक		३७४
३००	दादाजीकी आरती	... ..	३७५
३०१	सूतकविचार	... ..	३७५
३०२	असिझाई विचार	... ..	३७७
३०३	अकान्ह विचार	... ..	३७९
३०४	नव ग्रह दश दिग्पालकी आहुतान विशर्जनविधि		३८०
३०५	नवपद मंरुल पूजा विधि	... ..	३८६
३०६	नवपद मंरुल प्रतिष्ठा विधि नृजमणे तक		३८९

## ॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	...	...	३९९
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	...	...	४०३
३०९	कम्मपयनी तप गुणनो	...	...	४०५
३१०	कम्मपयनी स्तवन ...	...	...	४०७
३११	नवकार तप स्तवन ...	...	...	४०९
३१२	नवकार तप विधि ..	...	...	४११
३१३	पंच कढ्याणक तप स्तवन ...	...	...	४१२
३१४	शुभिमंरुल सुणणेकी पूजणेकी विधि ...	...	...	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डहा...	...	...	४१५
३१६	शिक्षाका डहा ५ ...	...	...	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा थुई.	४१७		
३१८	शंस्क्रुतवद्ध चतुर्विंशति जिन स्तुति ...	४२५		
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	४२८		
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	४२९		
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	४३०		
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन ...	४३०		
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन ...	४३०		
३२४	नितप्रति प्रणमुं ॥ नवपद थुई ...	४३०		
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उली करण विधि	४३१		
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाशजाणेकी वि.	४४८		
३२७	उलीकी संक्षेप ऊजमणा विधि ...	४४९		

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उलीतप	४५०
३२९	अष्टापद उली करण विधि: मंरुलविधि स. दि. ३.	४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूनम पर्वाधिकार पर्व ४ देववन्दन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूनम स्तवन ... ..	४५६
३३३	नंदीश्वर तपस्या करण विधि ... ..	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वाधिकार आखातीज ... ..	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशांति पर्वाधिकार ... ..	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वाधिकार ... ..	४५९
३३७	श्रावणमासमें ठुटकर तपस्याधिकार ... ..	४६०
३३८	ज्येष्ठमासमें पर्युषण पर्वाधिकार ... ..	४६५
३३९	आश्विनमासमें जुली पर्वाधिकार ... ..	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वाधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वाधिकार ... ..	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववन्दन विधि ... ..	४६९
३४४	ग्यानका वरु चैत्यवन्दन धुई ... ..	४६९
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७१
३४६	श्रीसुयगडांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७२
३४७	श्रीगणांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय ... ..	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि० ... ..	४७५
३५१	श्रीउपाशकदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५३	श्रीअणुत्तरोववाइ सूत्र सि० ... ..	४७७
३५४	श्रीप्रश्रव्याकर्णसूत्र सि० ... ..	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४७८
३५६	इग्यारे अंग वर्षान सि० ...	४७९
३५७	मेर रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेजुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग कृमाहो मोन अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कल्याणक गुणनो ...	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार ...	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४९१
३७०	फाल्गुनमासे पर्वाधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२

### ॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४९६
३७४	मधुवनमें जाय मची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी ठिब ...	४९७
३७८	नेना हरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

( ४१ )

३४९	एसें फायुण मस्त महीनें चलोरी ...	४९७
३५०	नेम स्यामसें कहियो मोरी ...	४९७
३८१	होरी खेलो रे नविक मन थिर करै ...	४९८
३८२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु... ..	४९८
३८३	वाके ममताने धूम मचाई ... ..	४९८
३८४	समकित विन जीव जगत नटक्यो ...	४९९
३८५	विसरे मत नाम प्रजुजीको ... ..	४९९
३८६	नेम निरंजन घ्यावो रे ... ..	४९९
३८७	गढ गिरनारकी तलहटी ... ..	४९९
३८८	धन राजुल तेरो जागरी ... ..	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें ...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी ...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिख बसिया ...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लाला ...	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया ...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या बेठे नव द्वारो रे	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी... ..	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान... ..	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग... ..	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धायर ... ..	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी ...	५०४
४००	बावो रुषन बेठे अलवेसर ... ..	५०४
४०१	गिरराजकूं हमारी वंदना रे ... ..	५०४
४०२	दरशन कियो आज सिखर गिरको ...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दरशन करले ...	५०५

४०४	मोहे अपणै रंगमें रंगदे ...	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुजीके रंगमंमपमें ...	५०५
४०६	रंग मन्थो जिनद्वार चाखो खेखिये होरी ...	५०६
४०७	नेमजीसैं कहियो मोरी ...	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मंदिरमें वरसे रंग ...	५०६
४०९	तोरी अंगिया वणी है सुरंग ...	५०६
४१०	चिंतामणि चित्त ध्यावो रे ...	५०६
४११	मत मारो पिचकारी रे ...	५०६
४१२	नेम मिले तो वार्ता कीजिये ...	५०७
४१३	आत्मतत्त्व विचारो ज्ञानसैं ...	५०८
४१४	लाख तेरे नयनोकी गति न्यारी ...	५०८
४१५	दर्शन विन जीव संसार जन्म्यो ...	५०८
४१६	मत बोमो माने थूँही रे कोइ चूक बतावो ...	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच० ...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार... ...	५०९
४१९	मंगलकलश ...	५१०

### ॥ तपस्थाविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कट्याणक टीप ...	५१०
४२१	पांच कट्याणक विधि ...	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन... ...	५१४
४२३	पखवासा तप विधि... ...	५१६
४२४	दश पञ्चक्राण स्तवन ...	५१६
४२५	दश पञ्चक्राण तप विधि ...	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन ...	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि ...	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना चर काजसग प्रमाश	५२७
४२९	वीश स्थानक मंजुल पूजन विधि	५२८
४३०	रोहणी तप स्तवन...	५२९
४३१	रोहणी तप विधि	५३०
४३२	उम्मासी तप स्तवन...	५३१
४३३	उम्मासी तप विधि...	५३२
४३४	वारे मासी तप स्तवन	५३३
४३५	वारे मासी तप विधि	५३४
४३६	अर्वास्त लब्धि स्तवन	५३५
४३७	अर्वास्त लब्धि तप विधि	५३६
४३८	चौदे पूर्व स्तवन	५३७
४३९	चौदे पूर्व तप विधि	५३८
४४०	तिलक तप स्तवन	५३९
४४१	तिलक तप विधि	५४०
४४२	शोलिये तपका स्तवन	५४१
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४२
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४३
४४५	पैतालीश आगम स्तवन	५४४
४४६	इग्यारै गणधर तप विधि	५४५
४४७	११ गणधर नाम गुणना	५४६
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास ग्रहण करण विधि	५४७
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि	५४८
४५०	उपधान तप स्तवन...	५४९
४५१	संघ मालारोपण विधि:	५५०
४५२	संघमालाकी देववन्दन विधि	५५१



४५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
४५४	उपधान तप विधि ...	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६७
४५७	वाचना विधि: ...	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
४५९	परिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ...	५६३
४६०	कमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या परिलेहण विधि: ५६४	
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
४६२	रुषिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५६६
४६३	शांतिकं पूजा विधि: ...	५६७
४६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
४६६	चोपरु खेलण सिझाय ...	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
४६८	टुक निजर महरदी क० ...	५७३
४६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
४७०	सखी सब बनठन ...	५७३
४७१	हो जिन तेमें दरशपर० ...	५७३
४७२	म्हारा रुषज्ज जिनंदने ग० ...	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रभु इण दिख वसणावे ...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे ...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो	५७६
४७७	केसें काज सरे माहाराजविन केसें० ...	५७६
४७८	राजरी वधाई वाजैठै ...	५७६
४७९	मोतनकीमाला जितगल सोदे... ..	५७६
४८०	रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय ...	५७६
४८१	हे माय वांकरी करमगति जाय न कही	५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेठे जी थारो उपदेश ...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे ... ..	५७७
४८४	वरषित वचन ऊरी० ... ..	५७७
४८५	या घरमें रंग० ... ..	५७७
४८६	चिहुं सर वदरिया वरसे ... ..	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले ... ..	५७८
४८८	समज नर जीवण थोरो .. ..	५७८
४८९	मत कर मान गुमान ... ..	५७८
४९०	निश दिन जोजं थारी वाटकी० ...	५७८
४९१	आज तो हमारे ज्ञान्य वीरप्रभु आए हे	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो ... ..	५७९
४९३	कृष्ण विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो ...	५७९
४९४	सुश मन होनहार न टरे रे ... ..	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रभु पूजन काज...	५८०
४९६	मनवा जिनंद गुण गाय रे ... ..	५८०
४९७	चलो देखोरी मधुवनको राव... ..	५८०

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	...	...	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	...	...	५००
५०४	धारे मुखमारी हो वारी राज...	...	...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	...	...	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	...	...	५०१
५०७	वीर प्रजु तेरी दोस्तीमें	...	...	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	...	...	५०२
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	...	...	५०२
५१०	सांवरो सखनो सखी...	...	...	५०२
५११	आज रुषन घर आवै	...	...	५०३
५१२	अंगण कलप फढ्योरी	...	...	५०३
५१३	ऊठेने मोरा आतमराम	...	...	५०३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	...	...	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	...	...	५०४
५१६	कीरतीबाग मन प्रेम लाग	...	...	५०४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	...	...	५०४
५१८	प्रजु तेरी सूरतिया लागे जखी...	...	...	५०५
५१९	आयो सही अब जाउं कहां	...	...	५०५
५२०	घमरी२ पल२ बिन१ निशदिन...	...	...	५०५
५२१	सुमतानें क्या कर मारा रे	...	...	५०६
५२२	तुम तो जखे विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	...	...	५०६
५२३	शिखर गिरिंइ जुहारो ॥	...	...	५०६
५२४	सांवरिया में दीगो दरश तिहारो ”	...	...	५०७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	...	...	५०७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	...	...	५०८

५२७	में मुख देख्यो गोमीपारसको...	...	५८१
५२८	किरपा करो रे गोमीपाश जिनैसर	...	५८७
५२९	मुजरा साहिब मुजरा साहिब...	...	५८७
५३०	घंट वाजै घननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझयां रे ...	...	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवानं दे	...	५९०
५३३	आय रहो दिलवागमें	...	५९०
५३४	रहो रे यादव दो धनिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें ...	...	५९१
५३६	किण देखा हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अबधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अबधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंता तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरश नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजीके पाये लागे रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अबधू निरपढ़ विरला कोई	...	५९३
५४४	चलशा जरूर जाकुं ताकुं केसा सोचशा	...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार	...	५९४
५४७	रसना सफल जई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	राजुज पुकारे नेम पिया	...	५९४
५४९	कोन किसीको मित	...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	...	५९५
५५१	गोमी गाईये मन रंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रभुजी से लागो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोइ२ सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रभुजीसे ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे ऊगो वै दामो आजनो रे ...	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	धन३ आजूनो दिन रलियामणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी ...	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी ठबि नीकीजी ...	६००
५६७	सादिब सुगुण सुपारससे ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे ..	६००
५६९	तुम जजो रुषन प्रभु प्यारा जग० ...	६०१
॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥		
५७०	अगरुदू२ वजै चोधना ...	६०१
५७१	आखातीजकी लावणी ...	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०५
५७३	सीमंथरजिन लावणी ...	६०६
५७४	अजीमगंजमें सांवलियाजीकी लावणी ...	६०७
५७५	नेमनाथ मेरी अरज सुणीजै ...	६०८

( ३६ )

४७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतघन	६०६
४७७	चल चेतन अब उठकर० ... ..	६१०
४७८	तुम जजो जिनेसर देव ... ..	६११
४७९	तुं कुमति कलेसण नार खगी क्युं केहे...	६१२
४८०	तुम तजो जगतका खयाल ... ..	६१२
४८१	दे गया दगा दिखदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१३
४८२	मुलक बीच मगसो पारसका... ..	६१४
४८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१५
४८४	तुम तज कर राजुल नार ... ..	६१५
४८५	आप समझका घर नहीं पाया ... ..	६१६
४८६	नमुं२ में गुरु निर्यग्रकुं ... ..	६१७
४८७	करुं२ में ऐसे सदगुरु ... ..	६१७
४८८	तजुं२ में उन कुगुरुकुं ... ..	६१८
४८९	यो जिनदाश जूगे रे जूगे ... ..	६१८
४९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती ... ..	६१८
४९१	अरज हमारी सुणो दीनपति... ..	६१९
४९२	मुक्ति जाणेकी मिगरी ... ..	६१९
४९३	अनुभव पद मिगरी... ..	६२१
४९४	नेमकी जान बणी ज्ञारी ... ..	६२२
४९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ बई घटा ग०	६२३
४९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ...	६२४
४९७	सज शोले सिणगार हुई दुसियार ...	६२६
४९८	चंदावदनी मुखसे कहती गिरनारीकुं० ...	६२७
४९९	कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब ...	६२८
५००	सुणजो वातां राव सदाशिव... ..	६२८

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी ... ..	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो ... ..	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी ... ..	६३५
६०५	पिया मैरा गिरनार सिधाए ॥ ने० ला० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली अई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढोश जी रुषन विहारी ... ..	६३८
६०९	कीजे मंगल ब्यार आज घर० ... ..	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन ... ..	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन ... ..	६४०
६१३	चखो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत होरी... ..	६४२

॥ अथ बारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें ... ..	६४२
६१७	नेमनाथजीका बारेमासा ... ..	६४४

॥ स्तोत्र गुटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ...	६४६
६१९	विशद गुण विचित्र० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र...	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४७
६२२	गोभीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र ...	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र ... ..	६४८

६२४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीरुषभ० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	...	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	...	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	...	६५१

### ॥ अथ तपगन्ध सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरनो सिंहाय...	...	६५९
६३१	मन्हजिणाणं सिंहाय	...	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	...	६६०
६३३	सकलार्हत्स्तोत्र	...	६६१
६३४	शान्तिकर स्तोत्र	...	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी	...	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	...	६६६
६३९	परमात्मना चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६६
६४१	आंखनीये में आज० सेत्रुंजा स्तवन	...	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतबद्ध स्तवन	...	६६८
६४४	नेम राजुल सिंहाय ॥ पित्रजी२ नाम	...	६६८
६४५	आऊखो तूटाने सांघो० सिंहाय	...	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०		६७०
६४७	डुविध धर्म जिन उ० दूज चैत्यवंदन	...	६७०



६४८	त्रिगमै वैरा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यवं०	६७०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७२
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति० ... ..	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ श्रौय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी श्रौय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी श्रौय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी श्रौय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूवमी ॥ इग्यारश श्रौय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी श्रौय ...	६७५
६५८	कढ्याणकंदनी श्रौय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० श्रौय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ श्रौय	६७७
६६१	पंचैदिय संवरणो ... ..	६७७
६६२	सामायक पारवागाथा ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचढो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६७८
६६४	जगचिंतामणि चैत्यवंदन ... ..	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति ... ..	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति ... ..	६८०
६६८	जीसे खिते साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति ...	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि ... ..	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि ... ..	६८१
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८३

६७३	परकी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८५
६७४	चन्द्रमाशी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७६	पम्पलेहण करवानी विधि ... ..	६८७
६७७	पञ्चस्काण पारवानी विधि ... ..	६८८
६७८	पुष्कलवद् विजयें जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	धीज तिथीनो स्तवन वमो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम थ० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	महावीरस्वामीनुं हालरिथुं ... ..	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिझाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि ... ..	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चन्द्रमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० श्रोय स्तवन ... ..	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, श्रोय ... ..	७०५
	संज्ञवनाथ, अजिनंदन चैत्यवंदन श्रोय...	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० श्रोय	७०७
	चंद्रप्रभु, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० श्रो०	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० श्रो०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० श्रोय स्तवन...	७१०
	कुंभुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ चै० श्रोय	७१३
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० श्रोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन श्रोय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन श्रोय स्तवन	७१६

	शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्लोक	७१७
	नीलमयी रायण तरु तले ॥ सिद्धाचल स्तवन	७१०
	नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७१०
	आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
	अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
	समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४	सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूषण श्लोक ...	७२४
६८८	नेमनाथजी बारेमाशो ॥ शीयाले खाटू०	७२४
६८९	अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९०	पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिङ्गाय	७२६
६९१	गोतमस्वामी पूजा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिङ्गाय	७२८
६९२	नेमनाथजीरो सिलोको ... ..	७२९

### ॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३	विजयसेठ विजयासेगणी चोढा० ...	७३१
६९४	इखुकार राजा जूगु प्रोहितरो चो० ...	७३३
६९५	दान शील तप ज्ञाव चोढालीयो ...	७३६

### ॥ अथ ठंद संग्रह ॥

६९६	सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो० ...	७४३
६९७	नवकार ठंद ॥ वंछित पूरे विविधपर० ...	७४५
६९८	घघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

### ॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

७००	विलशै रुद्धि समृद्धि० ... ..	७५१
७००	वर लाख विलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१	रिसह जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२	आयो सहु श्रीसंघ ... ..	७५४

७०३	सदगुरुजी थे सांजलो	...	...	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	...	...	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गदालै	...	...	७५६
७०६	सहाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	...	...	७५७
७०७	आयोश् जी समरंता दादो०	...	...	७५७
७०८	जाया जक्तिसूं पूर रहो रे	...	...	७५८
७०९	पूजो जवि हितसुं कुशल सूरिंद	...	...	७५८
७१०	आज करो रे जगह श्रीजिनकुशल	...	...	७५८
७११	में निरख्या गुरु महाराज	...	...	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	...	...	७५९
७१३	अब मोहि दरशण दीजै कु०...	...	...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	...	...	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	...	...	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	...	...	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	...	...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	...	...	७६२
७१९	देख्या में दरश तिहारा	...	...	७६३
७२०	सदा सदाई कुशल सूरिंद०	...	...	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	...	...	७६४
७२२	उत्रपती थारे पाय नमें जी	...	...	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	...	...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२	...	...	७६५
७२५	होरी खेखो जविक सदगुरुके संग	...	...	७६५
७२६	गुरु पूज रहो रे सुझानी	...	...	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी...	...	...	७६६

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ बेर जलटा, ४ बेर सुलटा गियो ॥ अनुक्रमे ११ उपवास करणसें एक जुली होय. ४ जुली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवन्नल करै, मंरुलकी विधि एकेक दीसीमें ( १३ ) तेरे २ पदामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इत्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिति वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरुषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इहुरससेती ज्ञया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, ऐसे पांच इत्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

( ४९९ )

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालूम नई. इस दानके प्रज्ञावर्से श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आशेसें वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीठै गुरुके मुखसें एकासणादिके पञ्चस्क्राण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो ज्ञयजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता र हेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वधिकारः ॥

॥ अथ तृतीय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वधिकारः ॥

॥ ज्येष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोखमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कज्जी श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससें ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्थकपोषणानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, ज्ञव्याश्रनुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) जो ज्ञानाएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्थं

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥  
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥  
 विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥  
 सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥  
 हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।  
 रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥  
 चंगी रंगी वीणा बागे रागे सारे रागे गावे ।  
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥  
 हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।  
 लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥  
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।  
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ऌ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द  
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । झ ॥ क  
 का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ जृ षृ गृ  
 सृ ह्र ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य व्य त्व्य ज्य्य त्व्य्य एय त्य द्य ध्य  
 न्य प्य ज्य्य म्य र्य व्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र प्र ज्ञ त्र द्र प्र प्र  
 अ ब्र श्र स्त्र ह्र ॥ क्त्वं एत्वं त्वत्वं न्वत्वं स्त्वं श्वत्वं स्वं ॥ क्त्वं प्र  
 त्त्वं प्रत्त्वं श्रत्त्वं स्त्रत्त्वं क्षत्त्वं ॥ क्त्वं ग्त्वं ध्त्वं ज्त्वं एम्त्वं श्म्त्वं इम्त्वं स्म्त्वं  
 ह्त्वं ह्म्त्वं । क्त्वं ख्त्वं ग्त्वं ॥ क्त्वं र्त्वं ग्त्वं ॥ क्त्वं छ्त्वं ज्त्वं ज्त्वं ज्त्वं

ट ठ डु ढ ण त त्थ ठ द द्ध न्न ॥ प्प फ्फ ब्ब ज्ज म्म य्य र र्त्त  
 व वश ष्श स्स ॥ उय त्स्य षू ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ।  
 ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १०००००  
 ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्रो कृष्णवृहस्था । णिंदाद्वास्त्युश्च स्वस्करा ॥  
 पृथ्वीधृद्वलुश्रेष्ठात्म । द्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥  
 अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥  
 विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥  
 स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥  
 पंक्तिच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥  
 तस्मात्मूर्खे सदस्त्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
 नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥  
 पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥  
 माता शत्रुः पिता वैरी । वालो येन न पाठितः ॥  
 न शोभते सज्जामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥  
 लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तारयेत् ॥  
 प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥  
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥  
 एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥  
 अविद्यं जीवितं गूढं । दिशःगूढास्त्वबांधवा ॥  
 पुत्रहीनं गृहं गूढं । सर्वगूढा दरिद्रता ॥ ८ ॥  
 न च विद्या समौबन्धु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥  
 न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥  
 किं तया क्रियते धेन्वा । यानसूतेन दुग्धदा ॥



कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेकिमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥

पयःपानज्जुंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्जुतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाधायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना  
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्भूतः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-  
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच  
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चषोषाः षोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङ-  
त्रणनमाः अनतस्थाः यलवाः उष्माणः शषसद्वाः अःइतिविसर्ज-  
नीयः कःइतिजिह्वासूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-  
परयोरर्थोपलब्धौषदम् अस्वरं व्यंजनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमयन्-  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-  
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अंहतोभगवंतंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तनत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ३ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वंतु)

यह जो पंचपरमेष्ठिपदहे सो हमेसां तुमजव्यजीवोंकूं मंगलकरो, के-  
सेकहे पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवंतंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री  
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हरे सो अरिहंत कहीजै.  
फेर श्री अरिहंत कैसेहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-  
हंतमाहाराज कैसेकहे जगवंतहे जगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इन्द्रा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंहे एकतों सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसें कहें ( इन्द्रमहिता ) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारगुणोंसें विराजमानहै सो बार गुण ऐसेहैं प्रश्रमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग उर पसीना उर मैलरहित बना खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही उर मांस गठके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म चकुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारगुणा ऊंचा होताहे जिसकी गाय बेंठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीठ नीचा रहे पांखनी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपणी २ ज्ञापामें यथावस्थित समजै एसा उनोंकों मालम देवेके जगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंजित्ता ॥ तिहुअणमणुसासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ श्रामर ४ जगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्बर डोलता रहै ४ ॥ आसनअ ५ जगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ जामंमलं ६ जगवानके पिठामी भामंमल रहे जिससें जव्यजीव जगवानके तरफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे उर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे  
 च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-  
 खाइदेवे ६ ॥ डुंडुजी ७ आकाशमें देव ते देवडुंडुजीवाजित्र वजावे  
 ७ ॥ रातपत्रं ८ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठत्र  
 रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव  
 चोतीस अतिशय विराजमान पैतीस वचनगुण सोजित एकहजार  
 आठ लक्षणांलंकृत अगरे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-  
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-  
 वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंमल-  
 पर ज्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें  
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥  
 ( सिद्धाश्वसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार  
 हुं केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप  
 अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-  
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग लोक  
 जयादिकसें रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-  
 मयमें जाणते नर देखतेथके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे  
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या-  
 जिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुं केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज षत्तीसगुणोंसें विराजमान  
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-  
 प्रतिबोधक क्षमागुणजंमर समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-  
 शासनके उन्नतिके करणवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-  
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्याउपाध्यायका श्रीति-  
 द्धांतसुपाठका ) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुं केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतके पढायेवाले २५ गुणोंसे विराजमान ऐसे श्रीजुपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ ( मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमेश्वरपदमें सरब साधूमुनिराजजी केसे कहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-गुप्ता ब्रह्मायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक ऐसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसे सोजित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

## ॥ अथ विष्णुंजिननाम ॥

### ॥ अतीतचोवीसी ॥

- |                    |                        |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥   |
| ३ श्रीसागरजी       | ४ श्रीमहायसजी          |
| ५ श्रीविमलदेवजी    | ६ श्रीसर्वानुभूतिजी    |
| ७ श्रीश्रीधरजी     | ८ श्रीदत्तस्वामीजी     |
| ९ श्रीदामोदरजी     | १० श्रीसुतेजनाथजी      |
| ११ श्रीस्वामीजी    | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी    |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी  | १४ श्रीशिवगतिजी        |
| १५ श्रीअस्तागजी    | १६ श्रीनमिश्वरजी       |
| १७ श्रीअनिलनाथजी   | १८ श्रीयशोधरजी         |
| १९ श्रीकृतार्थजी   | २० श्रीजिनेश्वरजी      |
| २१ श्रीशुद्धमतजी   | २२ श्रीशिवकरजी         |
| २३ श्रीस्यन्दनजी   | २४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

### ॥ वर्तमानचोवीसी ॥

- |                   |                   |
|-------------------|-------------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी    | २ श्रीअजितनाथजी   |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअजिनंदनजी   |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी  | ६ श्रीपद्मप्रभूजी |

७ श्रीमुपार्थनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
ए श्रीसुविधनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंशुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्थनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

### अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्थजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभूजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसूत्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीवित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंबरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रकरजी

### ॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

( ए )

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रज्ञजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	११ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहानंदजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसांश्वतोतीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना सांश्वतैव जवंति ॥

॥ अथ सोले सतोनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबाळाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुखसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुजद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंद्वतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी १ सतियोंको त्रिकाल १ वंदना ॥

( १० )

॥ ॐ परमेश्वरिणे नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराह ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्यायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा  
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं इवइ मंगलं ॥ ए ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
१ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
१ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा आपनाचार्यजीके सामने  
खरना हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इत्थामि खमासमणो वंदितुं जावणिक्काए निसीहिआए म  
ञ्जएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इञ्कार जगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा  
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगोजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥  
॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे-  
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अझुठि  
ठमि कहे पीठें खमासमण देकें इञ्जाकारेण संदिस्तह जगवन्  
सामायिक लेवा मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे, पम्हिलेह. पीठें इञ्ज  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पम्हिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पढिलेहणके पञ्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-  
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान  
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पम्हिले-  
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-  
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पम्हिलेहण जिमणे हाथसैं करणी  
॥ यह पञ्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पञ्चीश पढिलेहण लिखते हैं ॥

॥ रुष्णालेश्या ॥ १ ॥ नीलालेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या  
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥



॥ रुद्धिगौरव ॥ १ ॥ रसगौरव ॥ २ ॥ शांता गौरव ॥ ३ ॥  
ए तीनों मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मित्रादंसर्ग-  
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय रुबे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन रुबे  
हाये परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुःख ॥ ३ ॥ ए तीन  
जिमणे हाये परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए  
तीन रुबे पगे परिहरुं ॥

॥ वातकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥  
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्रपत्ति पन्निवेदना संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खना दोय के इच्छामि स्वमासमणका पाठ कहे के  
इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्तावुं ? गुरु कहे  
संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे के फेर स्वमासमण दे के इच्छा ॥  
ज्ञ ॥ सामायिक ठावुं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीठें इच्छं कही स्वमासमण देह थोरो जुकी तीन नव-  
कार गणी इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् पसाज करी सामायिक  
इंसक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें  
सामाईयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पञ्चखण ॥

॥ करेमि जंतें सामाईयं, सावळें जोगं पञ्चखामि ॥ जाव  
नियमं पञ्जुवासामि ॥ दुविहं तिबिहेणं मणोणं वायाए काएणं,

( १३ )

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पम्किमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठे खमासमण दे के इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पम्किमामि ॥ गुरु कहे पम्किमह, पीठे इच्छं कही ॥  
इच्चामि पम्किमिच्छं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पम्किमा  
मि ॥ इच्छं इच्चामि पम्किमिच्छं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे  
॥ उत्ता उत्तिग पणग दग मट्ठी मक्कन् संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि  
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि  
या परियाविया ॥ किलामिया उद्विया गणान्न दाणं संकामिया  
जीवियान्न ववरोविया ॥ तस्समिच्चामि उक्कम् ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्घायणघाए ॥ वामि  
कान्त्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं डीएणं जंजाइएणं  
उम्भुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुच्चाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा  
लेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गे अविराहित ॥ दुक्क मे कान्त्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकायं गणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ  
ति ॥ ६ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको कान्त्सग्ग

करे. पीठैं एमो अरिहंताणं कहे कें कान्दस्सग्ग पारकें मुखसैं प्रगट्ठ  
लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिठ्येरे जिणे ॥ अरिहंते  
कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उत्तन्न मज्झिअं च वंदे ॥  
संज्ञव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पणमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंत वासु  
पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वथं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ्ठ  
नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअथा ॥ वि  
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिठ्य  
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ  
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलान्नं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥  
चंदेसु निम्मलयर ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयर ॥ सागरवरगंजीरा  
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठैं खमासमण देइ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो संदि  
स्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठैं इच्छं कहे कें वली खमा-  
समण दे कर ॥ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो गार्जं ? गुरु कहे  
गएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा ॥  
जग ॥ सिज्जाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठैं  
इच्छं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ सिज्जाय  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा खरे हो कर  
आठ नवकार कह कर सिज्जाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे  
तो खमासमण दे कें इच्छा ॥ जग ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु  
कहे संदिस्सावेह ॥ पीठैं इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा ॥  
जग ॥ पांगरणो पम्पिघाजं ? गुरु कहे पम्पिघाएह ॥ पीठैं इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवन्त अथवा पोसासहित श्रावक  
वांछे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांछे तो, सि  
धाय करेह, एतैं कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज० ॥ चैत्यवन्दन  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठैं इच्छं कही जयउ सामि जियेउ सामि  
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जति ॥  
॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चरिमंमण ॥ १ ॥ जरुअठेह  
मुणिसुव्वय, महुरिपास उह डुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तिठ-  
थर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडुं जिण  
सबेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-  
रिसउ, जिणवराण विहरंत जप्पई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोनि  
सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं  
वरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डई, शुणिऊइ निच्च विहाण  
॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा वप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-  
सय ग्यासीया, तिच्छुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोनि सयं,  
पणवीसं कोनि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्सा, चउसय अठ-  
सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥  
जाइं जिणबिंवाई ॥ ताइं सवाई वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवन्ताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

जगराणं, सयं संवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिसंसीहाणां, पुरि-  
सवरपुंररीआणां, पुरिसवरगंधहठीणां ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लोग-  
नाहाणां, लोगहिआणां, लोगपईवाणां, लोगपज्जोअगराणां ॥ ४ ॥ अज-  
यदयाणां, चरुवुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, वोहिदयाणां  
॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-  
रहीणां, धम्मवरचान्नरंतचक्रवट्टीणां ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरणाण  
दंसण धराणां, विअट्ठ उज्जमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां  
तारयाणां, बुद्धाणां बोहयाणां, मुत्ताणां मोअगाणां ॥ ८ ॥ सब्बनूणां  
सव्वदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणंत मरुवय मवाबाह मपुणरा-  
वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणां,  
जिअ जयाणां ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति  
णागए काले ॥ संपइअवट्ठमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइ ॥

॥ जावंति चेइआइ ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइ  
ताइ वंदे ॥ इहसंतो तच्च संताइ ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ ज्ञरहेरवय महाविदेहे अ ॥  
सव्वेसिं तेसिं पणुत्त ॥ तिविहेण तिदंरु विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवर्न ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-  
रविसिन्निन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं  
॥ कंठे धारेइ जो सया मणुत्त ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा  
जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिउट्ट दूरे मंतो ॥ तुच्च पणामो वि बहु-  
फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुख्ख दोहगं ॥

॥३॥ तुह सम्मते लखे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्पहिए ॥ पावन्ति  
विग्घेणं ॥ जीवा अदरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संयुत्तं महायस  
॥ जत्तिप्परनिप्प्रेण हिअएण ॥ ता देव दिक्क बोहिं ॥ जवे जवे  
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हांउ ममं तुह पप्पावत्तं जयवं ॥  
जवनिव्वेत्तं मग्गा, एुत्तारिआ इव फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चा  
त्तं ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत्तवय, ए सेवणा  
आज्जव मखंका ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें  
खमासमण दे के इच्छा ॥ जण ॥ कुसुमिणडुसुमिण राई पाय  
जित्त विसोहणत्तं काउस्तग कजं ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं कह  
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायजित्त विसोहणत्तं करेमि काउ  
स्तगं ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे के सोले नव  
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मलपरा पर्यंत चिंतन  
कर के काउस्तग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ  
स्तग पारीके मुखसे एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें  
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्तगमांहे ॥ सागर  
वरगंज्जीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम  
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वांदिथें ॥ १ ॥ खमासमण  
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले के वां  
दिथें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ के सर्व साधुजीकुं वांदिथें ॥ ४ ॥ इत  
तरे चार खमासमणसे पक्कमणां ठावी गोमालीयें बैठ के मस्त  
क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहमे दे कर ॥ रुद्रस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्तह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ उच्चित्तिअ उप्पासिय दुच्चिअ इच्छा  
कारेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिञ्चामि दुक्कमं ॥ इति  
॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह के खमा होय के ॥ करेमि जंते सा  
माइयं सावद्यं जोगं पच्चस्सामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इ  
च्छामि कान्त्सगं जो मे राइन् ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि कान्त्सगं ॥ जो मे देवसित् अइआरो क  
उ ॥ काइन् वाइन् माणसित् ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कप्पो ॥ अक्  
रणिक्को ॥ उच्चाउ ॥ दुव्विच्चित्तिउ अणायारो ॥ अणिअिअवो ॥ अ  
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥  
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गु  
णवयाणं ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥  
जं खंमिअं जं धिराहिअं ॥ तस्स मिञ्चा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ  
हां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ० ॥ अन्नन्न उससिएणं कह कर चारित्रशु  
द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका कान्त्सग करी  
पारि के दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
चेइआणं ॥ करेमि कान्त्सगं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना  
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स  
क्कमाण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्वाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वड्डमाणी  
ठामि काउस्तगं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठें अन्नन्न० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका  
उस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुष्करदी० ॥  
यस्त जगवन् करेमि काउस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुष्करदी ॥

॥ पुष्करदीवेहे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे रवय  
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्त  
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल  
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्त, कट्ठाण पुग्खलवि  
तालसुहावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार  
मुवल्लघ्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजो पयन् एमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तप्पूअ जावच्चि ॥  
लोगो जठ पइठिं जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वड्डन् सा  
सन् विजयन्, धम्मसुरं वड्डन् ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्त ज  
गवन् करेमि काउस्तगं वंदणवत्तिआएण ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नन्नूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ  
स्तग करे, काउस्तगके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ  
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग मु-  
वगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्त वड्डमाणस्त ॥ सं  
सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेल सिहरे,



दिक्का नाणं निसीहिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्ठि, अरिठनेमिं न  
भंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं  
॥ परमठ निठ्ठिआठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिदि समाहिगराणं ॥  
इति ॥ करेमि कान्तस्सगं ॥ अन्नठण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संसासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र  
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेह ॥ मुहपत्ती  
पम्हिलेहे. पीठें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उच्चा हुआ आधा नीचा नम कर  
इठामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए अणुजा-  
णह मे मिउगगहं. इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संसास  
प्रमार्जन कर कें उक्कर वेठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नावे  
कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निल्लार पूंजी, मुहपत्ती आगे  
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अहो  
कायं इत्यादि आवर्तन कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि  
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिजो जे किलामों  
॥ इत्यादि पाठ कहे. पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्तन कर  
कें खमा होकें पीठें पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर  
निकलकें स्वस्थान पर आवे. जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ  
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इठामिं खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए  
॥ अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,  
खमणिजो जे किलामो ॥ अप्पकिंताणं बहु सुजेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-  
सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणाणं ॥ देव-  
सिआए, आसायणाए ॥ तिचीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-  
, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
जाए, सब्बकालिआए, सब्ब मिच्चोवयाराए, सब्बधम्माश्कमणाए ॥  
आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥  
निंदामि गरिहामि अण्णपाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें  
आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वश्कंतो, तथा  
चउमासीयें चउमासीउ वश्कंतो, पस्कीयें परको वश्कंतो, संवच्च-  
रीयेसंवच्चरीउ वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्चाकरेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्चं ॥ आ-  
लोएमि, जो मे ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयें कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक आलोवे, सो क-  
हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-  
काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-  
द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थच पंचेंद्रिय ॥ चउदे  
लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां  
प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ  
मि डक्कनं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२  
॥ अज्ञातव्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,  
सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनें, वचनें, कायार्थे  
करी तस्त मित्रा मि डक्कनं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव  
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञात  
कथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीथुं होय, कराव्युं  
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्थे करके, दि  
वस अतिचार आलोयणे कर के पम्क्कमणामे आलोउं ॥ तस्त  
मित्रा मि डक्कनं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पम्क्कमणेमें  
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीठें सबस्तवि राश्यं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां  
इच्छाका ॥ ज० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
थवित मागे ॥ गुरु कहे पम्क्कमह ॥ पीठें इच्छं तस्त मित्रामि  
डक्कनं कह के संभासा प्रमाज्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि  
जगवन्! सूत्र जणुं? तब गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन  
नवकार अरु तीन वार करेमि जंते ॥ जण के इच्छामि पम्क्क  
मिउं जो मे राश्यं इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

५. वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीठें खम्हा हो कें अमुदि  
मि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आवक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसादू अ ॥ इत्तामि  
मिक्कमिन्, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
ते तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे  
च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे  
आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्पिक्कमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥  
बद्धमिदिण्हिं, चउहिं कसाण्हिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण  
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-  
अणाज्जेगे ॥ अज्जिउगे अ निउगे, पम्पिक्कमे ॥ ५ ॥ संका-  
विग्गिंठा, पसंस तह संश्रवोकुल्लिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
मिक्कमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा-  
अत्तघाय परा, उज्जयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव-  
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ तिसकाणं च चउएहं, पम्पि-  
क्कमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥  
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध उविठ्ठेए,  
उत्तरे जत्त पाण बुठ्ठेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पम्पिक्कमे ॥  
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिशुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आया-  
रिअमप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,  
मोसुवएसे अ कूरुलेहे अ ॥ बीयं वयस्त इआरे, पम्पिक्कमे ॥  
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ  
मप्पसत्ते, इत्त पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पउगे, तप्पमिरूवे  
विरूढ गमणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पम्पिक्कमे ॥ १४ ॥ चउठे  
अणुवयंमि, निउं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्त  
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिउव

अशुरागे ॥ चउठे वयस्स इआरे, पन्निक्कमे० ॥ १६ ॥ ईत्ता अणुव्वए  
 पे, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिञ्जेए, इत्त पमायप्पसं  
 गेणं ॥ १७ ॥ धणं धन्नं खित्त वत्तू, रूप्प सुवत्ते अ कुविअ परि-  
 माणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पन्निक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसइअंतरद्धा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमत्ते अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पन्निक्कमे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुञ्जोसहि जस्सकणया,  
 पन्निक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाळी वणसामी, ज्ञाना फोमी सुवज्जए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥  
 एवं खु जंतपिच्छणं, कम्मं निच्छंणं च दवदाणं ॥ सरद्ध तलाव  
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मंसल जंतग, तण  
 कठे मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पन्निक्कमे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सद्धव रसगंधे ॥ वज्जासण आजरणे,  
 पन्निक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिरण जोग अइ-  
 रिन्ने ॥ दंमंमि अणछाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 दुप्पणिहाणे, अणवघाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वित्तहकए,  
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुगलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 संथा रुज्जारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाजोए ॥ पोसह विहि  
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पि-  
 हिणे ववएस मन्नेरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिस्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा  
 ॥ राणेषव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु  
 संविज्जागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंसं पन्णे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच्च दुक्क मरणंते ॥ ३२ ॥  
 काएण काइअस्स, पन्निक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-  
 अस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिसकाणां,  
 रवेसु सन्ना कत्ताय वंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो  
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिंति जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंघो, जेण न निदंघसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपन्निक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवत्तामेइ,  
 वाहिब सुत्तिस्सिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुण्णयं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अउविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुत्तावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्तो, आलोइअ  
 निंदिय गुरुत्तागसे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ जरुव जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुउउ होइ ॥  
 उस्काण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविहा, नयसंजरिआ पन्निक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुट्ठिमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥  
 तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइआइं ० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, जवसयसहस्स महणाए ॥ चउवीस जिण वि-  
 शिगय कहाइं, बोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,  
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्महिंति देवा, दिंतु समाहिं च  
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पत्तिदाणं करणे, किच्चाणं मकरणे पन्निक्क-  
 मणे ॥ असइहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-  
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब नूएसु, वेरं

मल्लं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुंगं-  
निअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०  
॥ इति ॥ १ए ॥ इहां प्रजातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं  
कहना ॥

॥ पीठें दो वादणां देकर अवग्रहमांहियकोज कहे ॥ इष्ठा-  
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुठ्ठिमि अग्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?  
गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे  
बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ  
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुठ्ठि ॥

॥ इष्ठाकारेण संदिस्सह जगवन् अणुठ्ठिमि अग्निंतर देव-  
सिद्ध खामेउं ॥ इष्ठं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं ज्ञे  
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर  
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मल्लविणय परिदीणं सुहु-  
मंवा बायरं वा ॥ तुप्पे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्चामि  
डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्चामि डुक्कं कहे. पीठें बे वादणां देई  
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय के आय-  
रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवच्चाए, सीसे साहमीए कुलगणे अ ॥ जे  
मे कथा कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण  
संघस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावन् धम्मो निदिअ  
निअ चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंतें इच्छामि ठामि काजस्सगं तस्सुत्तरी० ॥  
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काज-  
 स्सगं अन्नबू० ॥ कहि कें काजस्सग करे, काजस्सगमें श्रीवीर-  
 कृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ  
 षोणस्सका काजस्सग करे, काजस्सग पारिकें प्रगट लोणस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेहु  
 ॥ मुहपत्ती पम्हिलेही बे वांढणां देई सकल तीर्थनाम लइ नम-  
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्कत्तया देवलोके रविशशिजवने, व्यंतराणां निकाये,  
 नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
 गद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-  
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
 कुंभले हस्तिदंते, वक्रारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥  
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥  
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके  
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-  
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे कि-  
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्योटे ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिण्डले वा,  
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
 कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंगे  
 वरतरङ्गविमे उद्रिघाणे च पौंगे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविमुकवलये



कान्धकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुरव्या गजपुरमधु-  
 रापत्तने चोक्तायिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां  
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्विले ताम्रलिप्यां ॥  
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,  
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये  
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-  
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाढमलौ जंबुवृक्षे, चौकान्ये चैत्यनदे  
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलाके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-  
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,  
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-  
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः  
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥  
 इति ॥ ३१ ॥

पीठे गुरुमुखें पञ्चरक्षाण करि कें ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि  
 कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेणमो खमासमणाणं एमोऽईत्तिदाण ॥ कह कर,  
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि तरण वरतरणिं  
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार  
 विदारकारि, दुर्न्तजावारिणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलसत्तमा  
 वो, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,  
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-  
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोत्तालीढलोला-  
 लिमालां, वरकमलनिवासे द्वारनीद्वारहासे ॥ अविरलजविकारागार

( ५९ )

वृत्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥  
३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥  
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-  
म सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमालितानि ॥  
रिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि  
न ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवार्हिसा-  
वरलक्ष्मीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेवं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,  
वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल  
रिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-  
ीनिवासे ॥ गायसंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वा-  
देदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे. पीठै-स्वप्ना हो  
अरिहंत चेइयांणं करेमि काउस्तग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नबू०  
। इत्यादि पाठ कहि कैं ॥

॥ काउस्तग्गमाहे एक नचकार चिंतवी ॥ एक श्रावक  
काउस्तग्ग पारी नमोऽर्हस्तिआ० कही ॥ एक गाथा स्तुति  
, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,  
ील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पञ्चमावश धरणिंद ॥  
२ ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक  
कहे ॥ दूसरे सब काउस्तग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठै  
अरिहंतारं कहि कैं काउस्तग्ग पारे ॥ इस तरे आगे पण  
॥ पीठै लोगस्त कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

वति० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काजस्तग  
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वइ, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर  
नंदी, रुचक कुंरुल सुखगाम ॥ जुवणोसुर व्यंतर, जोइस विमाणी  
नाम ॥ वत्तें ते जिणवर, पुरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठें पुस्करवदीवद्धे कहि कैं सुयस्त जगवज्ज ॥ वंदण ॥  
अन्नबू ॥ कही ॥ एक नवकारका काजस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी  
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना  
दाख्या, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम पद्द्रव्य, सस पदारथ  
जुत ॥ सांजलि सईहतां, त्रूटे करम तुरत ॥ ३ ॥

॥ पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कहि कैं वेयावज्जगराणं ॥  
अन्नबू ॥ कही ॥ एक नवकारका काजस्तग करी पारि कैं एमो-  
इइस्सिद्धाण कहि कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यद्ध परतद्ध ॥ सहु संघनां संकट,  
दूर करेवा दद्ध ॥ समरो जिनज्जत्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख  
सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठें नीचा बैठ कैं एमोवूणं ॥ कहि कैं ॥ तीन खमा-  
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांटे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें  
मुदपत्ती देई अट्ठाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्ठाइजेसु ॥

॥ अट्ठाइजेसु ॥ दीव समुदेसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमिसु ॥  
जावंत केवि साहू ॥ इयहरण गुह्यपग्निग्गद्वारा पंचमद्वयधारा ॥  
अट्ठारसहस्र सोलंगधारा ॥ अक्कयायारचरिचा ॥ ते सबे सिरसा  
मणसा मज्झण वंदांमि ॥ इति ॥

( ३१ )

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमांसमण  
सीन बखत देखे ॥ इच्छाकारेण संदिस्सद् जगवन् ॥ चैत्यवन्दन करूं  
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवन्दन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवन्दन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय  
जय करुणा शांत दांत, जविजनहितकामी ॥ जय जय ईव नरिंद  
चंद्र, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-  
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥  
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-  
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽब्रूणं जावंति चेऽब्रूणं जावंत केवि साहू ॥  
॥ उर एमोऽर्हस्तिद्वाचार्योपाध्याय सर्वसाधुच्यः ॥ तक कहि कै  
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिवा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥  
केवल ज्ञान दिवाकर, ज्ञांगे सादि अनंत लाल रे ॥ ज्ञासक लो-  
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र  
चक्रीसर, सुर नर रहे कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,  
अणहूँता इक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर  
चसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-  
शरो, जब जब देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण  
हो तुम्हें, दूर हरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी,  
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें जयवीरराय० वंदणवत्तियाए ॥ अन्नबू० कहि

कैं ॥ एक नवकारका काजस्सग करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हत्सिद्धा०  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुससोवन्न वेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥  
महाणंदलब्धी बहुबुद्धिरायं, सुसैवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम  
होज श्रिता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव डुःख विहरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिपन्न जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कळयाण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०  
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-  
ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेव्यां रे ॥ धन्य ज्ञाग्य हमारां ॥ विम-  
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोद्यो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्पा स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसैं पूजो ज्ञावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धरण  
बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञाव  
जक्तिसैं प्रज्जू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि  
जविजन गुज्ज ज्ञावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
संवत अढारे ज्यासी मास आषाढे, वदि आठम ज्योमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीठें जयवीराराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकाउस्तग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हत्ति० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषजदेव पुंमरीक ॥ गुज तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ गुद मन उपवासें, विधिगुं  
चैत्यवंदनांक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निखेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ पन्नि-  
खेहण संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्ताएह ॥ बीजे खमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निखेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे  
अंग पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ अंगपन्निखेहण करुं, कहीके धोतियुं  
कणदोरो पन्निखेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसाउ  
करी पन्निखेहण पन्निखेहावो जी, एम कही ॥ आपनाचार्य  
पन्निखेह ररके, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पन्निखेहे, तो  
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ उही पन्नि-  
खेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पन्निखेहे ॥ पीठें पोषध-  
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही  
पन्निक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोजी  
दृष्टिपन्निखेहण तो अवश्य करणी ॥ अवजी प्राये एही करते दि-  
खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पन्निहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहचि कही, अर्द्ध नमि ऊज्रो अको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमाळीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ जयवं दससज्जदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दससज्जदो ॥

॥ जयवं दसस जदो, सुदंसणो धूलिज्जद वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिगहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उठमज्जो मूढमणो, कित्ति य मित्तं पि संजरइ जीवो ॥ जं च न संजरामि अहं, मिज्जामि डुक्कं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चित्ति य, मसुहं वायाइ ज्ञासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिज्जामि डुक्कं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, विस्स जीवस्स जाइ जो काळो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायार्थे करी मिज्जामि डुक्कं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्निहेण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूढे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें ऐसे कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्धिलेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्धिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्धिलेहुं ? गुरु कहे पन्धिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्धिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक तंदिस्ताजं ? गुरु कहे तंदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाजं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी सामायिक दंरुत उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञावण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्धिमामि ? गुरु कहे पन्धिमहेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्धिमिजं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पन्धिमामी ॥ एक लोगस्तका काउस्तग करी, एमो अरिहंताणं कही, काउस्तग पारी मुखें प्रगट लोगस्त कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्धिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार जगवन् ! पसाठ करी पञ्चस्काण करावोजी. पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें थापनाचार्य समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वेमेरा साथमीं मुखें पञ्चस्के ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पन्धिलेहि पञ्चस्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पन्धिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥



॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इच्छं कही  
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ?  
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उजो थको  
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई  
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह  
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं ठाणं ?  
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत काळादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?  
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ पांगरणुं पन्निघाणं ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इच्छं  
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे  
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्सरीके रोज तीस गाथा  
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा  
 पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.  
 अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय  
 तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-  
 धियाण जुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुद्धाई जिणेस पास थंनणय  
 पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न  
 हिरसण पुसण जणजुंजहिरऊहि ॥ पिरुक्कहि मुक्क असंखसुक्क तुह  
 पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण ॥  
 २ ॥ जरजज्जर परिजुस वसणहु सुकुट्ठिण, चक्कुस्कीणखणखुस

निरसस्त्रिअसूत्रिण ॥ तद् जिण सरणरसायणेण वहु हुंति पुणसुव,  
 जय धसंतरि पास महवि सुहुं रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस  
 मंततंतसिस्त्रि अपवत्तिण, जुवणपुअ अगविह सिद्धि सिज्जइ तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवत्तत्तवि जण होइ पवत्तत्त, तं ति-  
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तत्त ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत  
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिजवग्गविगंजइ ॥  
 दुब्बियसत्त अणत्त घत्त निज्जारइ दय करि, डुरिअई हरत्त सुपासदेव  
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंजेइ जीमदप्पुद्धर सुरवर,  
 रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरत्तदखुद्द  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पठ्ठिअ अत्त अणत्तद्धिज्जत्तिप्पर निप्पर, रोमंचं चिअचारु-  
 काय किल्लरनरसुरवर ॥ जसुत्तेवहिं कमकमलजुअल पक्कालिअ  
 कलिमल्लु, सो जुवणत्तयसामि पास महमद्दत्त रिजवल्लु ॥ ७ ॥ जय  
 जोइअमणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद  
 जुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह,  
 थंजणयठ्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवण्णुअवण्णु  
 सुण्णु वण्णु षण्णु, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥  
 जं ज्जायइ बहु दरिसणत्त बहु नाम पसिद्धत्त, सो जोइ अमण  
 कमलजसलसुह पास पवद्धत्त ॥ ९ ॥ जयविज्जल रणत्तथिरदसण  
 अरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णुगग्गिरगिरकरुणय ॥  
 तइंसइसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्जविसज्जत्तइ पास  
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइपासविविअसंतत्तित्तपत्तत्तपवित्तिअ,  
 वाहपवाहपवूढरूढ डहदाइसुपुलइय ॥ मण्णूहिंमण्णसत्तण पुण्ण-  
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणोसर ॥ ११ ॥  
 तुह कल्लाणमहेसुधंठंकारवपिद्धिअ, वल्लरमल्लमहल्लजत्तिसुरवरगं-  
 जुद्धिअ ॥ इल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियं-  
 रविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सबलपयन्नविठरिअ पहाजर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर  
 पासनाइ ज्ञवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिसित्त  
 माणव मइ मेइणि, अवरारसरुहुमन्नबोइ कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-  
 फलजरजरिय हरिय डुहदाइ अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाइ  
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवद्धिन्नल्लूरि-  
 यडुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुह-  
 जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयज पास जय  
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ ज्ञवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तव सुनव सुव  
 अविंसंवुलचिहंदिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी  
 कंदलदलतमाल निद्धुप्पलसामल ॥ कमठासुर ज्ञवसग्गवग्ग संस-  
 ग्गअग्गजिअ, जय पञ्चस्कजिणेस पास अंजणय पुरछिअ ॥ १७ ॥  
 महमणतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाइप्पपमाणदेव कारुणपवत्तज, इयम-  
 इमाअवहीरपासपालहिविलवंतज ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिण्णयकलु-  
 णकिंकिंवन्नजं पिण्ण, किं वनचिह्णकिं देवदीणयमविलंबिज ॥ का-  
 सुनकियनिप्पल्लल्लुअहोहिं डुहत्तइं, तहविन पत्तजताण किंपि पइं  
 पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय वप्प तुहुं  
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु  
 ॥ इजं डुहज्जरज्जारिअवरान राजलनिप्पगण, लीणज तुह कमक-  
 मल सरणजिणपालहि चंगज ॥ २० ॥ पइंकिविक्कयनीरोय-  
 लोयकिविपाविद्यसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-  
 वपय ॥ किवि गंजिअरिजवग्गकेविजसपवल्लिअ ज्ञूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरसागयवञ्चल ॥ २१ ॥ पञ्चुवयारनिरिहनाहनिप्पण  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगगन्विमइं पासनिरं-  
 जण ॥ २२ ॥ हनं बहुविदुहत्तत्तत्तुहुं उहनासणपरु, हनं  
 सुयणहकरुणिकवाण तुहुं निरुकरुणकरु ॥ हनंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन  
 सोदिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहमहुजोअणतुहसम, जव-  
 णुवयारसु हावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण नएइ  
 जुविदाहुसमंतज, इय उहवंधव पासनाह मइं पाल शुणंतज ॥  
 २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुगय, जं जोइयजव-  
 यारुकरइजवयारसमुक्काय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-  
 चत्तज, तो जुग्गजअहमेव पासपालहिमइं चंगज ॥ २५ ॥ अहअ-  
 णविजुगयविसेसकिविमसुहि दीणह, जं पासविजवयारुकरइ  
 तुहनाह समगह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,  
 किं अणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पठण नहु  
 होइ विदल जिणजाणज किं पुण, हनं उरिक्क निरुसत्तवत्तउक्कहु  
 जस्तुयमण ॥ तं मसज निमिसेण एण एणविक्कइ जअइ, सच्चं जं  
 जुरिकयवसेण किं उंबर पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मइं अप्पपयासिज, किज्जजं जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपिज ॥  
 अणु ण जिणजगतुहसमोविदस्सिआदयासज, जइअवगिणसि  
 तुंदिजअइहाकिंहोइसइयासज ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ  
 पाइणवेळंविज, तजजाणुंजिणपास तुम्ह हनंअंगीकरिअज ॥ इयम-  
 हइअजं जं न होइ सातुहउंहावण, रक्कंतह नियकित्तिणे य जु-  
 क्कइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिदजचदेवइयन्हवणामहुसज, जं  
 अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्ध ॥ इय मइं पत्ति-  
 यसुपासनाहअंजणयपुरठिअ, इय मुणिवरसिंरि अज्जयदेव विस्सवइ

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-  
वनम् ॥

पीठै जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाजाग जय चितिय  
सुह फलय ॥ जय समञ्च परमञ्जजाणय, जय जय गुरु गिरिम  
गुरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंजणयदिय पासजिण ॥ ज-  
वियह ज्जीम जवहु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जत्ति संज  
नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठै शक्रस्तव कह कैं स्वमा हो कर अरिहंत चेइयाणं०  
॥ करेमि कान्त्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि पाठ  
कह कैं कान्त्सगमाहे एक नवकार चितवी एक श्रावक कान्-  
त्सग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो  
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ  
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनाथक लेंगन, सात हाथ तनु  
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब कान्-  
त्सगमें रहे थके सुने. पीठै एमो अरिहंताणं कह कैं कान्त्सग  
पारे. इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठै लोगस्त कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-  
णवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि कैं एक नवकारका कान्त्सग करे.  
पारि कैं उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित जर  
पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवियणने तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी  
गाथा कहि कैं काउस्तग पारे. पीठैं पुस्करवरदो० वंदणवत्तिआए०  
अन्नबू० कहि कैं, एक नवकारका काउस्तग कर कैं, पारि कैं उक्त  
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जारख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने  
गूँघ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न  
शके एकंत ॥ समरं सुखसायर, मन गुरु सूत्र सिद्धंत ॥ ३ ॥  
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नबू० ॥  
कही काउस्तग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सद्गु संकट चूरे,  
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंघे  
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सर्गिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहि कैं वैठ कैं नमोबूणं कहे, पीठैं एरु  
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठैं  
श्रीनपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्तमान आ-  
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र  
इसी तरे कह कर गोमाखीयें वैठ कैं मस्तक नमावी सच्चस्तवि  
देवसियण इत्यादि कह कर तस्त मिठामि डुक्कर्म कहे, परंतु 'इ-  
च्छाकारेण संदिस्सह इत्थं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठैं खमे हो कर करेमि जंतें सामाइयं ॥ इठामि ठामि.  
काउस्तगं जो मे देवसिउण ॥ तस्सुत्तरिण ॥ अन्नबूण ॥ इत्यादि  
कहि कैं, आठ नवकारका काउस्तग करे. काउस्तगमाहे आजूना  
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही  
काउस्तग पारि कैं प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह. पीठें मुहपत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज उजो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोचं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांराने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि डक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमिये आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणोह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पमिक्कमिजं जो मे देवसित्त इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अणुठित्तमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुठित्तमि अप्रितर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखे धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयसिय उवधाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि ठामि काजस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काजस्सगं अन्नञ्जु० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काजस्सग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदणवत्ति० अन्नञ्जु० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काजस्सग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुत्तरवरदीवळे कहि कें सुयस्स जगवन् ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नञ्जु०

॥ कहि कैं एक लोःस्तका कानस्तग करे, पीवैं पारि कैं सिद्धाणं  
 बुद्धाणं० कहि कैं देवावज्जगराणं न कहे, पीवैं सुंयदेवयाए  
 करेमि कानस्तगं अन्नबू० ॥ कही एक नवकारनो कानस्तग करे,  
 पीवैं गुरुका योग न होवे तो एक आवक कानस्तग पारिकैं एमो  
 अर्द्धस्तिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु  
 कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कानस्तग पारे, अब श्रुतदे  
 वताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाइ, द्वादशांगी जिनोन्नवा ॥ श्रुतदेवी  
 सदा मद्भ्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं खित्तदेवयाए, करेमि  
 कानस्तगं० ॥ अन्नबू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चित्तवी पूर्वकी  
 परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगतः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाङ्गा  
 साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खना हुवा एक नवकार कही, संताता प्रमार्जि  
 उरुनूवैठ कैं ठेठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वांछणां देइ नैं वर-  
 कनक कहे, सो लिखते है.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ नैं वरकणाय संख विट्ठम, मरगय घण सन्निहं विगय  
 मोहं ॥ सित्तरि सवं जिणाणं, सद्दामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥  
 नैं जवणवय वाण मंतर, जोइसबासविमाण वासीय ॥ जे केवि  
 डुण्ढेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चस्काण नहिं लिया  
 होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पम्किमणां, वांछणां, काष्ठ-



स्सग, पञ्चस्काण, ङ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगो अ  
धिको अक्षर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें  
करी मिहामि उक्कमं ॥ इहामो अणुसदिं० ॥ कही बैठे, पं ठें गुरु  
एक स्तुति कहा पीठें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो  
खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय०  
इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही सं-  
सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा.  
समोक्ताय, परोक्ताय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,  
ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं  
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, क-  
रोतियो जैनमुखांबुदोक्ततः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सन्नजो, ददातु  
तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरजिगंधा लीढनृङ्गोत्तुरङ्गं,  
मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभ्रति ॥ विकच कमलमच्चैः साऽ  
स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलसुखविधात्री प्राणज्ञाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमोबूखं० कहि कें. एक  
श्रावक खमासमण देई कहे:-इहामो० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन  
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इहामो० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-  
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलोह. पीठें आसन  
पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बमो स्तवन कहे, सो लि-  
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविकां श्रीजिनबिंब जुंदारो, आतम परम आधारो रे  
॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काँई ॥ आगम वाणानि अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०  
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणो, ते कहियें किम जाणो  
 ॥ जूला तेह अज्ञानें जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणो रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबर आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक  
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाप्म्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-  
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि  
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाप्म्या विरतिप्रकार रे ॥  
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें  
 अधिकार ॥ सूरियाज सूर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार  
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या  
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोनी, करिये केम अकाज रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन  
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी  
 चित्त धिर राखी ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेदें कीनी, जीवाजिगम ते  
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,  
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम  
 घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रज्जु  
 पास पसार्यें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनवाज सुगुरु उपदेशें,  
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-  
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व सांधु वांढी,  
 अढाइजेसु कहनां, फेर खमासमणो ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं काजस्तग्नं करुं? गुरु कहे, करेह. पीठें इन्हें कहि कै देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काज-स्तग्नं अन्नबूण ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काज-स्तग्न करे, पारी कै लोगस्त कहे.

॥ पं. ठैं खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
दोवदव उमावण्डं करेमि काजस्तग्नं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहा.  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काजस्तग्न करे, पारि कै  
प्रगट लोगस्त कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्तानं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-  
समण देई कै ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव  
फलं स्फूर्जत्फलापस्तवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-  
बांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावद्धो शिरोमणिः ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इत ॥

॥ पीठें नमोवृणालें लेकें जयवीरराय सुधी कहे ॥ पं. ठैं  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि अंजणयद्विय पास सामिणो'  
इत्यादि दोथ गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणयद्वियपाससामिणो सेस तिष्ठसामीणं ॥ तिष्ठ  
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सवेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरण्डं,  
काजस्तग्नं करेमि सत्तोए ॥ जतीए गुण सुद्विस्त, संघस्त समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीधंजला पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउ-  
स्तगं ॥ पीठें खेने दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कहि चार लोग-  
स्तका काउस्तग करि कें पीठें पारी प्रगट लोगस्त कहि कें ॥  
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूनामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि  
काउस्तगं ॥ अन्नवू० कहि कें, एक लोगस्तका काउस्तग करे,  
पीठें प्रगट लोगस्त कहि कें

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहार जंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूनामणीजी आराधवा निमित्तं  
करेमि काउस्तगं ॥ अन्नवू० कहि कें एक लोगस्तका काउस्तग  
करे, पीठें प्रगट लोगस्त कहि वैठ कें नावो गोमो नंचो करि कें  
खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी,  
ऐसे कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पमिखूखूरण, डुजाय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस्त पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पात जुवणत्तय सामिउ  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति कमप्पसिणिउ, सोहइ फणमणि किरणा  
लिद्ध ॥ ननव जलहर तमिखूय लंठिय, सो जिणु पातु पयड्य  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैतै परमेश्वरैः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुवूणसैं ले कें जयवीराराय पर्थत कहि के पस्की,  
चउम्मासी अरु संवन्तरीके रोज तो वनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः  
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-  
समन्विताय शश्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वाभरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौषना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकि-  
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ ज्ञानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कर्त्रि यशो, वर्द्धिनि !  
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२  
॥ अथ रक्षरक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं  
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

( ४९ )

उ मेति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥  
 एवं यन्नामाकर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,  
 नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-  
 विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सखिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च  
 नक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा  
 यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥  
 उपसर्गाः कथं यांति, विद्यंते विघ्नवद्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,  
 पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण  
 कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठें चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पन्ना होय तो  
 इरियावहि० तस्तुत्तरी० अन्नबू० कहि कै, एक लोगस्तका काउ-  
 स्सग करे, पीठें प्रगट लोगस्त कहि पूर्वलो परें सामायिक पारे,  
 पीठें एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पन्तिकमण  
 विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥  
 कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-  
 दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञुवनदेवी,  
 शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः  
 साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनं ॥  
 ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंमन्निधं  
 पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेधो, डुरिततिमिरज्जानुः,  
कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स जवतु  
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णी गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरैर्द्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या रुषजं जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन  
वरण शरीर कांपि, अतिशय अजिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-  
सेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंघन धरं पद कमल, सेवे सुरनरवृंद  
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंनित आण ॥ एक मनं  
आराधतां, लहिये कोरि कढ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-  
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी  
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, असृत पद अजिराम ॥  
तास क्कमा कढ्याण मुनि, निशिदिन नमत कढ्याण ॥ ५ ॥ इति  
श्रीनेमिनाथः

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण  
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलष साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोरी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिजु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जगु वाण ॥ ध्यान धरंतां  
एहनूं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण  
मुणि, आपो करि सुपत्ताय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पट्टिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पत्तिकमी ॥ १ ॥  
खमासमण देई देवसी आलोइयं पत्तिकंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पत्तिकेहुं ? चउमासीए चउम्मासियं मुह-  
पत्ती, संवत्तरीये संवत्तरी मुहपत्ती पत्तिकेहुं ? एम कहे. पीडें गुरु  
कहे, पत्तिकेहेह ॥ पीडें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती  
पत्तिकेही, वांदणां देई, तिहां पत्तिकीमें पत्तिको वड्कंतो ॥ चउमासी  
पत्तिक ॥ चउमासीउ वड्कंतो संवत्तरीमें संवत्तरी वड्कंतो, एम  
यथायोगें कहे ॥ पीडें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-  
त्तिक ॥ चउमासिक सांवत्तरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.  
मधुर स्वरें पत्तिकमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांसलमें  
सावचेत रदेजो, पीडें सघलाही तदत्ति कहे ॥ पीडें ऊठी ॥  
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अप्रुविन्ति अग्नि-



तर परिक्रियं ॥ ३ ॥ स्वामेकं ? गुरु कहे, स्वामेह ॥ पीठें मस्तके  
 अंजलि करतो थको, इच्छं स्वामेमि परिक्रियं ॥ ३ ॥ कहा, गोमालीयें  
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती  
 मुखें देई ॥ परिक्रियें पनरसहं दिवसाणं पनरसहं राईणं जं किंचि-  
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउहं मासाणं अ-  
 व्हं परकाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 कहे. संवत्तरीयें डुवालसहं मासाणं चउवीसहं परकाणं तिनिसय-  
 सविराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु  
 पण मिळामि डुकरं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता दुवे तो पा-  
 खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने खमावे ॥  
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 परिक्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इच्छं आलोएमि, जो  
 मे परिक्रियं ॥ ३ ॥ अइयारोकड, इत्यादि सूत्र जणी ॥ संक्षेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते हैं ॥

## ॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच  
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर,  
 जाणतां अणजाणतां दुओ होई, ते सह मन, वचन, कायाइं करी  
 मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभए, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-  
मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान  
हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
वांदणे पढिक्कमणे सिद्धाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,  
भणीनें बोसायों, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-  
पढिलेही, वसती अणसोधी, असिद्धाई अणोज्ञा कालवेलामाहि  
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो  
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई,  
पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार  
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो  
विणसतो उवेख्यो, छती शक्ते सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें  
मन्नर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां  
प्रदेश मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्वहणा  
कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा  
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार  
पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते  
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निबित्तिगिच्चा अमूढदिट्ठो अ ॥

उववूह थिरीकरणे, वञ्चल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सधलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मल-मलीन गात्र देखी दुगंठा उपजावी, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधी, संघमांहे गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणो चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रते तेज्जीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, दासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणो बाफ लागी, ठवणारिय हाथयको पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोंनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविइो होइ नायबो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंवाणपारिढावणोयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंस विगिडा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधी. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाडग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तंके इहलोक परलोकार्यें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र  
 शोख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अँजो-  
 पडिवो प्रेतवोज गोरत्रीज विणायगचोय नागपांचम झूलणाछठ  
 शोलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,  
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणो घाल्यां घलाव्यां घर  
 चाहिर कूई तलाव नदी ससुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां  
 धाण्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिष्ठाः-धर्म-  
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणो तणी दुगंछा कीधी,  
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी  
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधो, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म  
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविधे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि  
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,  
 कायाई करी मित्रामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह  
 बंध छविठेए, अइभारे भक्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे  
 पोड्या, निर्लछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयुं, रुडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दू-  
खव्यां, रुडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इडां फूटां, अनेरा एकें-  
द्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुडे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रुडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो ० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विस्मणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-  
त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देणें व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-  
हडप्पडगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,  
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल  
दीधुं, संकेत कहुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधी, नवा पुराणां सरस  
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल  
मांने माप वहोरयां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता  
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहीनें लेखे  
पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत  
विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-  
ग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिघअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,  
इत्तरपरिगृहितागमन. विधवा वेर्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-  
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधी, सराग वचन बोल्यां, आठम  
चउदस अनेराई पर्व तिथि तगा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां,  
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी,  
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधी,  
कुस्वप्न लाघां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथें मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त  
वडू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव  
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधी,  
माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधी, परिग्रह परिमाण  
लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे  
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-  
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गया संकोडी बीजी गया वधारी, विस्मृति लगे अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहुंती पन्नरे, एवं बीश अतिचारा॥ सञ्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सञ्चित तणे नियम लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुबौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रसुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दव्व विगई, पाणह तंबोलवठ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आहुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रसुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वैगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीटुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिरान्या तथा पन्नरे कर्मा-दान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निछंछणकम्मे, दवगिगदावण्या, सर दह तलाव सोसण्या, असई पोसण्या, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला करान्या. इंटवाह नीवाह पचान्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपान्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,  
कूकडा सूडा प्रसुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर  
कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-  
दपे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी पेरें हास्य कुतूहल मुखादि अंग  
कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या.  
खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक  
सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु दोर लेवराव्यां, अ-  
नेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण  
पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा  
भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां,  
कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांद  
कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे  
अदेखाई चिंतवो माटो मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या,  
तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल  
गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते  
मांहि कीडो कंधुआ माखी उंदर गिरोलो प्रसुख जोव विणठा, सूडा  
प्रसुख जीव कीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष  
लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा  
अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणि-  
हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य  
बोळ्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाई सामायिक न  
लीधुं, सामायिक लई उघाडे सुख बोल्या, उंघ आवी कीधी, बीज  
दीवा तणी उजाहो लागी. कण कपासिया माटो मीठुं नील फूल



हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिं पारुं वीसारिं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशवकाशिक व्रते पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्धानुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल स्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांदिवाहिर थकी कांइ अणावुं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंलुं जणावुं ॥ दशमे देशवकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोव्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण-पांडिलेहुं वावरिं, अणपुंजी भूमिकां परठविं, परठवतां चिन्तवणां न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न क्खो. परठव्यां पुठे वार व्रण वोसिरामि वोसिरामि न क्खुं. पोसहशालामांदि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय चाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणी विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांदि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारोयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रते पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निष्कवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रते असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धे सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेढ्या, मन्नरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका संसप्पज्जे परलोगासंसप्पज्जे जीविआसंसप्पज्जे मरणा संसप्पज्जे कामभोगासंसप्पज्जे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठक्कुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साद्धपोरसि पुरिमद्ध एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पारवां वीसार्या. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काजुपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषय्यो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायञ्चितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायञ्चित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाड्युं नहीं, देव गुरु संघ साहम्भो प्रतें विनय साचव्यो नही; वा-  
चना पृष्ठना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त  
लोगस्स दस वीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,  
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायघो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन  
कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रुढां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां,  
बेठां पडिक्कमणुं कोधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मसेसु ॥  
बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं  
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य वत्तीस अनंत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधां, जीवाजीवादि वि-  
चार सद्विद्या नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अटारह  
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें  
श्रावक धर्मे श्रो सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार  
मांहि जिको क्रोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां  
अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायार्थे करो मिळामि दु-  
क्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सबस्तवि पस्त्रिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्तह  
 पर्यंत कहे. तेवारे गुरु कहे. चउठेण पन्निक्कमह, चउमासे ठठेण  
 पन्निक्कमह. संवठरियें अठ्ठेण पन्निक्कमह. इत्थं तस्स मिच्छामि डुक्कं  
 कही. छाड्ढावर्त्त वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन्,  
 देवसियं आलोड्यं पन्निक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं. अण्डुठिडिमि  
 अप्पिंतरपस्त्रियं ॥ २ ॥ खामेज्जं? गुरु कहे खाण ॥ पीठें इत्थं खामेमि  
 पस्त्रियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कहुणे, तिम कही मिच्छामि  
 डुक्कं देई खमावे, पीठें वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोड्यं  
 पन्निक्कंता पस्त्रियं ॥ १ ॥ पन्निक्कमावह? गुरु कहे सस्सं पन्निक्कमह. पीठें  
 इत्थं कही करेमि जंतेसामाड्यं ॥ इच्छामि ठामि काउस्तगं जो मे पस्त्रियं  
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरीण अन्नवूण कही ॥ काउस्तग करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुथकी जूडा पन्निक्कमता हुवे, तो  
 एक आवक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,  
 जणोह. एसो वचन मनमें धारी ॥ इत्थं कही, उज्जो यको, हाथ जोनी  
 मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें  
 चिंतवतो वंदितु सूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं तेण इच्छामि  
 ठामि काउस्तगं तस्सुत्तरीण अन्नवूण कही काउस्तगमें रह्या  
 सुणे. सूत्रप्रातें एमो अरिहंताणं कही. काउस्तग पारी, उज्जा  
 थका तीन नवकार गुणी वेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
 जं ते कही, इच्छामि पन्निक्कमिजं जो मे पस्त्रियं ॥ ३ ॥ इत्यादि  
 कही, वंदितु सूत्र गुणे, पन्निक्कमे देवसियं सबं ॥ एहने ठिकाणें  
 पन्निक्कमे पस्त्रियं, चउम्मासियं संवठरियं सबं कहे. पीठें झुगी, अण्डु-  
 ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी. खमासमण देई इच्छा ०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विगुदि निमित्तं,  
 काउस्तग करूं? गुरु कहे करेह. पीठें इत्थं कही, करेमि जंते

सामा० इहामि ठामि कान्दस्सगं तस्सु० अन्नत्तू० इत्यादि कही,  
 पाखीयें वार लोगस्स चन्मासियें वीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोस  
 लोगस्सनो कान्दस्सग करे, एक नवकार ऊपर, कान्दस्सग करी,  
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पन्निहेही, बे वांदणां देई इत्ता०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अणुद्धिओमि अग्निंतर प-  
 स्खियं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इत्तं खामेमि पं-  
 स्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कह्यो. तिम कहे, पीठें इत्ताका० ॥  
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर  
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं  
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे  
 नित्तारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इत्तं इहामि अणुद्धिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-  
 विल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें  
 दैवसिक जणजो. एम चन्मासे ए सर्व डगुणो कहणो, संवत्तरीयें  
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीधो हुवे ते पइदियं कहे, न  
 कीधो हुवे ते तदत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अणुद्धिओमि अ-  
 ग्निंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणा देई. आय  
 रिय नवव्वाए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक  
 पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्दस्सग  
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए करेमि कान्दस्सगं. इत्यादि  
 विधे जवनदेवताको कान्दस्सग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुः-  
 तान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो कानुस्सग करे, तथातीने पर्वे वडा स्तवन  
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गद्वर स्तोत्र कहणो, तथा  
पम्पिकमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक गुर्वाङ्गायें, नमोऽर्हस्ति-  
द्वा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणने  
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति  
पाक्षिकादि तीन पद्धिकमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चखण  
करे ॥ जगए सूरें नमुकार सहियं मुंठसहियं पञ्चखण चउद्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असण्णान्नोगेणं सहसागरेणं  
महत्तरागरेणं सबसमाहिवत्तियागरेणं विगइण पञ्चस्काइ. असण्णान्नो-  
गेणं सहसागरेणं वेवावेवणं गिदिणसंसिठेणं उखिवत्तविवेगेणं  
पमुच्चमस्किणं पारिष्ठावणियागरेणं महत्तरागरेणं सबसमाहिवत्ति-  
यागरेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्काइ. असण्णान्नोगेणं  
सहसागरेणं महत्तरागरेणं सबसमाहिवत्तियागरेणं वोसिरइ ॥  
इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका भुर  
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निक्केवल नवकारसी आदिक  
पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ जगए सूरें नमुकार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउद्विहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नव-  
कारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, जगए सूरें चउद्विहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं असण्ण० ॥ सहसा० ॥ पञ्चस्काणें दिसा  
मोहेणं ॥ साहुवयणें सब० विगइण पञ्चस्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कदशां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साठ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चस्काइ कदशां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चस्काइ, चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० ॥ पढ० ॥ दिसा-  
मो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइण पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं बिआसणं वा पञ्चस्काइ, डुविहं तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आ-  
उट्टणपसारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण बिआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पञ्चस्का० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगछाणं पञ्चस्काइ, डुविहं तिबिहं चउबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरु-  
अप्पुछाणेणं पारिछाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलछाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पढ० दिसामो० साहु० सब० आर्यबिलं पञ्चस्काइ, अस्स० सह० लेवालेवेणं गि-  
हत्तसंसिठेणं उस्किन्नविवेगेणं पारिछा० मह० सब० एकासणं प-  
ञ्चस्काइ, तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठा० मद्द०  
सब्ब० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरूपाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पच्चरूपाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असा० सह० पढ० दिसा०  
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चरूखामि. असा० सह० लेवालेवेशं  
गिहत्तसंसिद्धेणं उखित्तविवेगेणं पमुच्चमखिवएणं पारि० मद्द० सव्व०  
एकासणं पच्चरूपाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं असा०  
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मद्द० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. असा० सह० मद्द० सव्व० वोसिरामि  
॥ इति नीवी पच्चरूपाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं पच्चरूखामि. चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं असा० सह० मद्द० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. असा० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥  
इति चउव्विहार उपवास पच्चरूपाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं पच्चरूखामि. तिविहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमद्ध  
अवद्धं वा पच्चरूपाइ असा० सह० पढ० दिसा० साहु० सब्ब  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चरूखामि. अ० स० म० सव्व० वो-  
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चरूपाण ॥

॥ पोरसिं साहु पोरसिं पुरिमद्धं अवद्धं वा पच्चरूखामि. उग्गए  
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०  
पढ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगघाणं दत्तियं पच्चरूखामि.  
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असा० सह०  
सागा० गुरु० मद्द० सव्व० विगइत्तं पच्चरूखामि. इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति क्किपच्चरूपाण ॥ १० ॥



॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ११ ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्न० सह० मह०  
सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ १२ ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-  
जिग्रह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व०  
वोसिरइ ॥ पांचमो चोखपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-  
जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहसां जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि  
दधुनं खित्तनं कालनं जावनं दव्वनं देसावगासियं खित्तनं उठ  
वा अण्णवा कालनं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि  
जावनं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि असेण-  
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अजिग्रह  
अण्णवाणोणेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चक्राण करे. तब देसावगासी नदी पञ्चके.  
अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें  
पाणस्सका ठ आगार पञ्चके सो दिखावे हैं. पाणस्स लेबोनेण वा

अलेवामेण वा अणेण वा बहुलेण वा ससिन्नेण वा असिन्नेण वा  
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोषेव नमुक्कारो आगार षड् हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त  
पुरमिद्धे, एगासणंमि अणेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्तत्त, अणेवय आ-  
यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाणे, अप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चत्तरो अत्तिगहे, निवीए अछनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-  
चत्त, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ जग्गएसूरे नमुक्कार संहियं पञ्चखाण चत्तविहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाण। शिष्य कहे पञ्चखाणमि, पञ्चखाणका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना। जेसैं सूरज उदय हुआ  
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं, यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाकूं नहीं तहां  
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं, सो  
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है, असन कहते अन्न, चावल,  
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लड्डू वगेरे सब  
तरेका पकवानं सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब  
घाट सब पतली ऊँर नरम वस्तु हिंगि वेसण सुंफ लूण सेंधवादिक  
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आन्नण  
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय-॥२॥ खाइमं कहते खादिमं सूखनी नाखेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आंबा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खादंम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूँठि मिरच पींर हरमे बहेना आंबला तुलसी कसेला  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा  
 अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया  
 कुंजटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजर वावची वांवल-  
 गाल धवगालि खेजमेकीगालि खवरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीगालि जर  
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीगालि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीगालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलियां  
 चिरमी कयर बोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ओ-  
 रणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पञ्चखाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इस वास्ते संक्षेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पञ्चखाणमें जितना आहार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे. अन्नछणाजोगेण कहिये अना-  
 जोग टालके किया जो पञ्चखाण, अत्यंत जूल जाणोसैं कोइनी  
 चीज जूलके मुंमे मालली होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी  
 वखत पीठा नाख देवे तो पञ्चखाणमें जंग नही. जर जाणे बाद  
 जकण करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चकालेषं कहते  
 कालकी प्रवृत्तता. आकाशमें गर्द ऊमती होय आकाशमें बदल  
 गये होय तेसेइ पहामकीन्ट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-  
 रमसुं पञ्चखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत  
 जंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा जूलकर पूरबकूं पछिम  
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर जोजन कर लेवे तो  
 व्रत जंग नही ॥ ३ ॥ सदस्सागारेणं कहतां सदसात्कार बहोत उताव  
 लके योगेसैं अथवा अकस्मात् विधोवते तोलते धी वगेरेका गीटा

मूँमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयषेणं कहतां साधूके  
 वचनसें उग्यामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समादिवनियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणेसें पहली  
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे  
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक  
 पशुय देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं  
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकिस्तीसें वण नही आवे ऐसा जो चैत्य  
 संधादिकका प्रयोजन होणेसें पञ्चस्काणका काल पूरा जये विगर  
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां  
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा  
 दे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन  
 करणे वेगदे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणेसें उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो  
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें ऐसा आगार हे जिस पुरुषकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर  
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आज्ञादृष्टपसारणेणं  
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें ओमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अप्रुवणेषणं कहतां आपका गुरु  
 आणेसें तथा आपसें कोइ बन्दा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते जोजन  
 करतां एकाशनादिकमें आसन गेरु खमा हो जावे तो ज़ी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिणावणियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकादे जिस आहारके परगणेसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परगो मत सरस आहार हे तब

एकाङ्गनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासे दूसरी वस्तुतन्त्री आहार करे तो व्रत जंग नहीं ॥ ११ ॥ लेवालेवेषण कहता जौजन करेका आल प्रमुख जाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेमें पूब माळा उस परजो किंचित्त्वे मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाळा जौजन कर लेवे तो व्रत जंग नहीं ॥ १२ ॥ उक्त्तिविवेगेण कहता आयंबिलादि पञ्चखाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाव सके नहीं ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेंसे व्रत जंग नहीं ॥ १३ ॥ गिहत्थसंसिद्धेण कहता जौजन पुरबे जिससेती ऐसी कुम्भी आदि देकर जाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरनी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें जौजन पुरसे तोजो व्रत जंग नहीं १४ पडुच्चमुखिएण कहता सर्वे आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चोपरणेमें आयाहे लेकिन घृतादिका स्वाद नहीं मालम देता हे तो नीवी पञ्चखाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पञ्चखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलपप्पत्तो धम्मोमंगलं ? चत्तारिलो गुत्तमा अरिहंतालो गुत्तमा सिद्धालो गुत्तमा साहूलो गुत्तमा केवलपप्पत्तो धम्मोलो गुत्तमो १ चत्तारिसरणं पवज्जामि अरिहंते सारणं पवज्जामि सिद्धे सारणं पवज्जामि साहू सारणं पवज्जामि केवलपप्पत्तं धम्मं सारणं पवज्जामि ३ इच्छामि पक्कमिदं

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संथाराजवट्टणाए परियट्टणाए आउंठ-  
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कुइए ककराईए ठोए जंजाइए  
 आमोसेससर रकामोसे आउलमानलाए सोअणवत्तियाए इब्बोविप्प-  
 रियासिआए दिढीविप्परियासिआए मणाविप्परिआसियाए पाण-  
 जोयणाविप्परिआसिआए जोमेदेवसिउं अइयारोकउं तस्समिच्चामि-  
 डुक्कं पन्निक्कमामि गोयरचरिआए जिखायरिआए उग्घामकवाम उ-  
 ग्घामणाए साणावच्चादारा संघट्टणाए मंनोपाहुमिआए वलिपाहु-  
 मिआए ठवणापाहुमिआए संकिएसहस्सागारे आणेतणाए पाणेत-  
 णाए आणजोयणाए पाणजोयणाए बोअजोयणाए हरियजोयणाए  
 पञ्चाक्कम्मियाए पुराक्कम्मिआए अदिहहमाए दगसंसहहमाए रयसंसह  
 हमाए पारिस्तान्निआए पारिठावणिआए उंहासणजिस्काए जंउ-  
 ग्गमेणं उप्पायणेतणाए अपरिश्रुद्धं पन्निगहिअं परिजुत्तंवा जंनप-  
 रिठवणिअं तस्समिच्चामिडुक्कं पन्निक्कमामि चाउक्कालं सिद्धायस्स  
 अकरणयाए उज्जउंकाळं जंनोवगरणस्स अप्पमिलेहणाए अप्पमज्झ-  
 णाए उप्पमज्झाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-  
 सिउं अइआरो कउं तस्स मिच्चामि डुक्कं पन्निक्कमामि एगविहे  
 असंजमे पन्निक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं  
 पन्निक्कमामि तिहिं दंमेहिं मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं  
 पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए  
 पन्निक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्चदं  
 सणसल्लेणं पन्निक्कमामि तिहिं गारवेहिं इब्बोगारवेणं रसगारवेणं  
 सायागारवेणं पन्निक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए  
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पन्निक्कमामि चउहिं क-  
 साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं  
 पन्निक्कमामि चउहिं सप्पाहिं आहारसप्पाए जससप्पाए वेहुणसप्पा

ए परिगहससाए पम्किमामि चउहिं विगहाहिं इन्धिकहाए जत्त-  
 कदाए देसकदाए रायकदाए पम्किमामि चउहिं जाणेहिं अट्टेणं  
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषणंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पम्किमामि  
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अदिगरणियाए पाठ सियाए पारताद-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पम्किमामि पंचहिं कामगुणेहिं  
 सदेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पम्किमामि पंचहिं महव्वएहिं  
 पाणाइवायानुविरमणं मुसावायानुवेरमणं अदिन्नादाणानुवेरमणं  
 मेहुणानुवेरमणं परिगहानुवेरमणं पम्किमामि पंचहिं समिईहिं  
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणजंमत्तनि  
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेवजल्लसंधाणपारिठावणियासमि-  
 ईए पम्किमामि ढहिं जीविकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं  
 तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्तईकाएणं तस्तकाएणं पम्किमामि  
 ढहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-  
 उमलेसाए सुक्कलेसाए पम्किमामि सत्तहिं जयघाणेहिं अछहिं म-  
 यघाणेहिं नवहिं बंज्जेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं  
 उवासगपम्माहिं बारसहिं जिस्कुपम्माहिं तेरसहिं किरियाघा-  
 णेहिं चउदासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिएहिं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे अलंजमे अठारसविहे अबंजे इगुणवीसाए ना-  
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिघाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगमऊयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी  
 साए ज्ञावणाहिं ठवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्ता  
 वीसाए अणगरगुणेहिं अठावीसाए आयारपक्कणेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअघाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं  
 बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तितीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय  
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवञ्चायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे-  
 वाणंआसाय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्न-  
 त्तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणञ्जूअजी-  
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० मुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा  
 रिअस्सआ० जंवाइइं वच्चाभेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयहीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, डुठुपनिब्बियं अकालेक-  
 उतसज्जानं कालेनकउतसज्जानं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इयं तस्स मिच्चामि डुक्कं एमो चउवीसाए तित्थयराणं उतसज्जाइ-  
 माहावीरपङ्कवसाणाणं इणमेव निगंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-  
 वलियं पन्निपुसं नेआउयं संसुद्धं सद्धगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुक्कपहीणमगं  
 इत्थदियाजीवा सिञ्चंति दुञ्चंति मुञ्चंति परिनिवायंति सव्वडुक्कवाण-  
 मंतंकरंति तंधम्मं सद्धहामि पत्तियामि रोएमि फालेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सद्धहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अणुठिन्निमि आराहणाए  
 बिरउमि विराइणाए अतंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि  
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्तं परिआणामि सम्मत्तं  
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संजरामि जं च न संजरामि जं  
 पन्निक्कमामि जं च न पन्निक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स  
 अइयारस्स पन्निक्कमामि समणोइं संजय विरय पन्निदय पच्चरुवाय  
 पावकम्मे अनियाणो दिठिसंपन्नो मायामोसविवज्जितं अट्ठाइज्जेसु  
 दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुब्ब



परिग्गहधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अघार सहस्त सीलंगधारा ॥  
 अस्ववयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥  
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,  
 वेरं मच्चं नकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय डुगंझियं  
 सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥ २ ॥ इतिश्री  
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

### ॥ अथ परस्वी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिब्बंकरे अतिब्बे, अतिब्बसिद्धेय तिब्बसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 णेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,  
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-  
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥  
 खंती गुत्ती सुत्ती, अज्जवया मह्वं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं  
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवड्डित्तं, महव्वय उ-  
 च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा  
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वानं पाणाइ-  
 वायाओ वेरमणं सव्वानं मूसावायाउवेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणानं  
 वेरमणं सव्वानं मेहुणानं वेरमणं सव्वानं परिग्गहानं वेरमणं सव्वानं-  
 राइभोयणानं वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ-  
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चस्कामि से सुदुभं वा वायरं वा तसं  
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा  
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं  
 भण्णेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अननसमणु  
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि  
 से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वनं खित्तनं कालनं  
 भावनं दव्वनं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तनं पाणा

इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं  
 पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि  
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सत्ताहिंघियस्स विणयमूलस्स खंती-  
 पहाणस्स अहिरससोवसियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स भिक्खावित्थियस्स कुल्लवीसंवलस्स निरगिसरणस्स  
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निब्बियारस्स निब्बि-  
 चीलख्खणस्स पंचमहवयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविस्वाइयस्स  
 संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुंवि अन्नाण  
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-  
 गदोस पड्विद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब-  
 गरूयाए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोख्ख मणुपालयंतणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
 वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग-  
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-  
 ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेव  
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
 यंतैवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं  
 साहुसस्सियं देवसस्सियं अप्पसस्सियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा  
 परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे  
 हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं  
 सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुरक्कणयाए अ-  
 सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्वणयाए महत्ते महायुणे महाणभावे महापुरिसाणु-  
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुस्सक्कयाए कम्मक्कयाए मोहस्स

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपज्जिन्नाणं विहरामि  
 पढमे भंते महव्वए उवड्डिन्मि सव्वान् पाणाइवायान्वेरमणं ॥ १॥  
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायान्वेरमणं सव्वं भंते मुसावायं  
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइच्चा  
 नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अब्बेनसमणुजाणमि  
 जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-  
 रेमि न कारवेमि कंत्तंपि अब्बंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-  
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वन् खित्तन् कालन् भावन् दव्वन्णं मुसा-  
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तन्णं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालन्णं  
 मुसावाए दियावा रान्वा भावओणं मुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्क  
 णस्स सच्चाहिडियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-  
 वित्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वितीलक्कणस्स पंचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंबाइयस्स संसारपारगामियस्स  
 निव्वानगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-  
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए  
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसान्वग  
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं  
 वाभवे अब्बेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संबरेमि अणागयं  
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावजीवाए अणिस्सिन्नि नेवसयंमुसंवइ

द्या नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिखुव्वा भिखुवुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चख्खाय पा-  
 वक्कम्मे दियावा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-  
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखायाए  
 कम्मखायाए मोहखायाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोत्ते भंते महव्वए उवट्ठिठमि सव्वाउं मुसा-  
 वायाओवेरमणं १ अहावरे तत्ते भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं  
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं  
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-  
 समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से  
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा  
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालुक्खणस्स सच्चाहिडियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स  
 नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुल्लवीसंबलस्स

निरगिसरजस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-  
 विव्यारस्स निविच्चोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंवि-  
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपाग्गामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं  
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपड्विद्वयाए बालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नभारियाए साचासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवगं  
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा धिप्पंतंवा परोहिसमणुन्ना  
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं  
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा  
 णं जावज्जोवाए अणिसिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं  
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसख्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं  
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव  
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं  
 जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय  
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महब्बे  
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसब्बे तं  
 दुक्कस्काय कम्मस्काय मोहस्काय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय  
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुठ्ठिओमि स-  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-  
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वा मा-  
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणेसेवतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंयि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदाभि गरिहामि ।  
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउडिहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रूउसुवा रूउसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेदुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-  
 हिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नववर्म्मभेरेयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स  
 कुखवीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वत्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-  
 स्स अविस्त्वाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपच्चावसाण-  
 फलस्स पुर्व्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेसु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहि समणु-  
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-  
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरोमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंभेदुणं  
 जावजीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिमेदुणंसे-  
 वाविजा मेदु गंसेवतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतंसख्खि-  
 यं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हव-  
 इमिख्खूवा मिख्खुणीवा संजयचिरयपडिहयपच्चक्कायपावक्कमे दि-  
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आशुगामिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं-  
 सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए  
 अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुइवणयाए महब्बे महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसब्बे तंदुख्खखयाए  
 कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टुउव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-  
 मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं  
 परिगिण्हविद्धा परिग्गहं परिगिन्नंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते  
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि-  
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे  
 अपग्घेवा महग्घेवा रांगेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगु-  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गि-  
 सरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्वितीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविंसंभाइयस्स संसारपा-  
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए अस-  
 वणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किमयाए तिगारख-  
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिउवा गाहाविउवा विप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिदामिग्गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पडुप्प-  
 न्नंसंवरोमि अणागयंपच्चत्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-  
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविद्धा परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसत्थियं सिद्ध-  
 सत्थियं साहुसत्थियं देवसत्थियं अप्पसत्थियं एवंहवइभिखूवा भि-  
 खूणीवा संजयविरयपडिहय पच्चत्काय पावक्कमे दियावा राउवा  
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखल्लुपरिग्गहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं  
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुइवणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसब्बे तंदुक्कस्सयाए कम्मस्सयाए बोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए  
 उवडिउमि सबानपरिग्गहानवेरमणं ५ अहावरेछहे भंते महव्वए रा-  
 इभोयणानवेरमणं सबं भंते राइभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिजा नेवन्नेहिंराइभुंजाविद्धा राइभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कार्वेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राइ-  
 भोयणे चउबिहेपस्सत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं  
 राइभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राइभोयणे-



समयस्त्रित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिवा भावओणं राईभो-  
 यणे तित्तेवा कड्डुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्-  
 णस्स सच्चाहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवत्तमप्पभवस्स नव बंभवेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्कावि-  
 त्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स  
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-  
 गमणपच्चवसाणफलस्स पुबिंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-  
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए  
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगास्वगरुयाए चउक्कसाओवगएणं  
 पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा  
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा  
 पेरेहिंसमणुज्जाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-  
 याए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि  
 सठ्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिसिओहं नेवसयं राईभु-  
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुजंतेवि अन्नंसमणुजाणामि  
 तंजहा अरिहंतसस्सिकयं सिद्धसस्सिक्खयं साहुसस्सिकयं देवसस्सिकयं  
 अप्पसस्सिकयं एवंहवइभिस्सुवूवा भिस्सुणीवा संजयविरय पडिहय  
 पच्चस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा  
 सुत्तेवा जागरम्माणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे-  
 निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिपाणाणं सव्वेसिं-  
 भूवाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्कणयाए असोयणयाए  
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-  
 ह्वणयाए महत्तेमहायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरसि-

देसिएपस्तये तंदुरुखस्तयाए कम्मखस्तयाए मोहस्तयाए बोहिलाभाए  
 संसारुत्तरणाए तिकट्टु उवसंपजित्ताणं विहरामि छहे भंते महवए  
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इवेइयाइं पंच-  
 मइव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपजित्ताणंविह-  
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्तवेरमणे  
 एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिक्वरागायजाभासा तिक्वदोसातहेवय  
 सुसावायस्तवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-  
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्तवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ संह-  
 रवारसागंवा फासाणंचविआरणा मेहुणस्तवेरमणे एसवुत्ते अइ-  
 क्कमे ॥ ४ ॥ इष्ठापुष्पायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्तवेरमणे  
 एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 घम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-  
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 घम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-  
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-  
 णघम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-  
 घम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-  
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणानं ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे  
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणानं ॥ १४ ॥ आलियविहार-  
 समिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं पंच-  
 मं वयमणुरत्थे विरयामो परिग्गहाञ्च ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं छव्वं वयमणुरत्थे विरयामो राईभोयणा  
 ञ्च ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं तिविहे-  
 णपडिक्कंतो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्चत्तं  
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तं एगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वए-  
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्ठरुहाइं परिवच्चंतो-  
 युत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-  
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसब्बाञ्च परिवच्चंतोयुत्तो रस्सकामि-  
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपप्पहासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसब्बाञ्च उव-  
 संपन्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्ज  
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविञ्च रस्सकामिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवच्चंतो  
 युत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-  
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥  
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअणहवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रस्सकामि-  
 महव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-  
 न्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-  
 भासाञ्चअप्पसत्थानं परिवज्जंतोयुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥  
 छविहमञ्चितरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रस्सकामि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयछाणाइं सत्तविहंचेवनाणविअंग्गा परिव-  
 चंतोयुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सत्तिकयामहव्वयणा उवसंपन्नोजुत्तो रस्सकामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयद्वाणां अष्टयकम्माइंतेसिबंघिच परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिट्ठाअवविहनिट्ठिअणेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-  
 णायनवविहाजीवा परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 वबंभचेरगुत्तो दुनवविहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणा दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति  
 विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्तं सञ्जुद्धरणं धिइवलंसानं साहणघोपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोणो प  
 सन्नच्चाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमघो उत्तमघो एसखलुत्तित्थं  
 कोरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिअं पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसिअं तिच्चुक्कं सकयंठाणं अणुवगया नमोत्तुते सिद्धबुद्ध  
 सुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंस मप्पमेय न  
 मोत्तुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहत्तं नमोत्थुते भग  
 वत्तं तिक्कट्टु इच्चैसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इत्थामोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग  
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसन्न वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च  
 रक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंतं ससुत्ते सअब्बे  
 सगंगे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ  
 गवंतंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सद्धहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्धहंतंतेहिं पत्तियंतंतेहिं रोयंतंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो  
 संवञ्जरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुञ्चियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता  
 रणाए तिकट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप  
 दियं नपरियट्ठियं नपुञ्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेबो  
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विज्जेमो विसोहेमो अकरणयाए अण्णेमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायञ्चित्तं पडिविच्चामो तस्स मिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जे  
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उकालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं  
 कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद  
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदाविच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिंपिए  
 यंमि अंगवाहिरिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअब्बे सगगंथे सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प  
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सह्हामो प्रत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसह्हंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं  
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुञ्चियं अणु  
 पे हयं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहि  
 लाभाए संसारुत्तरणाए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोप  
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुञ्चियं नाणुपेहियं नाणुपा  
 लियं संतेबले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विज्जेमो विसोहेमो अकरणयाए अण्णे  
 मो आहारिहं तवोकम्मं पायञ्चित्तं पडिविच्चामो तस्स मिच्चामिदुक्कडं न  
 मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उकालियं भगवंतं

तंजहा उत्तञ्चयणाइं दसान्कप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं  
जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दोवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
णपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
चाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
वेलंबरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए समुट्टाणसुए नागपरियाव  
ल्लियाञ्च निरयावल्लियाञ्च कप्पियाञ्च कप्पवडिसयाञ्च पुप्फियाञ्च पुप्फचु  
ल्लियाञ्च वल्लोदसान् आसीविसभावणाञ्च दिट्ठीविसभावणाञ्च चारणसु  
मिणभावणाञ्च महासुमिणभावणाञ्च तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं  
मि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए  
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि  
यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं  
अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा  
लियं तंदुरुखखयाए कम्मरूखयाए मोहरूखयाए बोहिलाभाए सं  
सारुत्तारणाए तिकट्ट उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंन  
वाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
बले संतेबीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहमो अकरणयाए अणुट्टेमो अहारिहं  
तवोक्कम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिट्ठामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास  
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो  
सूयगडो ठाणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहानं उवासगद  
सान् अंतगडदसान् अणुत्तरोववाइअदसान् पण्हावागरणं विवाग  
सुयं दिट्ठिवान् सुदिट्ठिसुहान् सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगो गणिपिडगे  
भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा  
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह  
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो  
 पख्वस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुंन्धियं अणुपेहियं अणुपालियं तं  
 दुख्खस्सकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्वस्स जंनवाइयं नपढियं नप  
 रियट्ठियं नपुंन्धियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस  
 क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पढिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्ठेमो  
 विसोहेमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पढिव  
 ज्जामो तस्समिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंमंवाइयं दुवाल  
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं  
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिञ्चामिदुक्कडं ॥ सुय  
 देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंधायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं  
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अणुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घन्टियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमैष्टि स्म-  
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
 खेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालाये आप-  
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,  
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पढिक्कमि पीठें ख-  
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
 खेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
 पन्निखेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पोसह संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-  
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह गाउं ? गुरु कहे

गाएह, पीठे ईडं कही खमासमण देई ऊजो अई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-  
च्छकार जगवन् पसाउ करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-  
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसिं ले के अप्पाणं वो-  
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखवाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चस्काण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, बेसउ सबउ वा,  
सरीरसक्कार पोसहं, सबउ वंजवेर पोसहं, सबउ अद्यावार पोसहं,  
सबउ चउविदे पोसहे, सावळं जोगं पञ्चखवामि, जावदिवसं अहो-  
रत्तिं वा पञ्जुवातामि, डुविहं तिबिदेणं मणेषं वायाए काएणं, न  
करेमि न कारवेमि, तस्त जं ते पम्किमामि निंदामि, गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥  
पीठें एक खमासमणें ॥ इडाका ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक  
मुहपत्ती पम्किहेहुं ? गुरु कहे, पम्किहेहेह. बीजी खमासमण देई  
मुहपत्ती पम्किहेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्ताजं ?  
सामायिक ठाजं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊजो अको  
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-  
सणो संदिस्ताजं ? बेसणो ठाजं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-  
धाय संदिस्ताजं ? सिधाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो अको,  
आठ नवकारनो सिधाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें,  
पांगरणुं संदिस्ताजं ? पांगरणुं पम्किघाजं ? कहे. ए सर्व सामायिक-  
विधि पूर्वे कहीओ ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां  
इरियावही पम्किमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरयां  
पीठें इरियावही नही पम्किमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीयराय



सूधी करी कुसुमिण डुस्तमिण कानस्तग करे, पीठें पन्किमण-  
वेलासीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पन्किमण करे,  
पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वांछा पीठें खमासमण देई  
कहे ॥ इब्बाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेळें संदिस्तानं ? गुरु कहे,  
संदिस्तावेह. पीठें इब्बं कही खमासमण देई कहे. इब्बाका० ॥  
सं० ॥ ज० ॥ बहुवेळें करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इब्बं कही,  
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीजपाध्यायजी मिश्र  
२, श्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
स्कार जणो, जो पन्किरेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं  
चैत्यवंदनादि करी, सिद्धाय करे. हवे पन्किरेहण वेला पन्किरेहण  
करे, ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो बे तो पण संदे  
पें फेर लखीयें ठेबें. दोय खमासमणें, इब्बाका० ॥ सं० ॥ ज०  
॥ पन्किरेहण करुं ? कही मुहपत्ती पन्किरेह. पीठें दोय खमा-  
समणें अंग पन्किरेहण संदिस्तानं ? अंग पन्किरेहण करुं ?  
कहे. पीठें गुरुवचनें इब्बं कही. धोतियो कणदोरो पन्किरेही  
वस्त्र पदेरी, खमासमण देई, इब्बकार जगवन् ! पसाज करी, प-  
न्किरेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पन्किरेही स्थापे,  
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पन्किरेहे, तो पण खमासमण देई  
मुक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इब्बाका० ॥ सं०  
॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पन्किरेहुं ? गुरु कहे, पन्किरेहेह.  
पीठें इब्बं कही, मुहपत्ती पन्किरेही दोय खमासमणो ॥ इब्बाका०  
॥ सं० ॥ ज० ॥ उद्दी पन्किरेहण संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्ता  
वेह. उद्दी पन्किरेहण करुं ? गुरु कहे, करेह,

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें  
पासवणें अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे  
॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-  
सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-  
यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-  
गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-  
वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥  
आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-  
च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-  
वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-  
यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥  
अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-  
वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-  
हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०  
॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे  
आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-  
हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए  
अंमिलपमिलेहण पाठ कइया ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम  
पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके ज़ीतर पासे दहिणें ३,  
वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके बाहर दोनुं पासे पमिलेहे  
॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ  
पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इठं कही, कंवल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शांखा प्र

भार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताउं ? वसती पन्तिकेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रभार्जे. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छा कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, ज्ञाने, गुणे. वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां. उग्याडा पोरिसी अग्रवा, बहुपन्तिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पन्तिकमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्तिकेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छा कही, मुहपत्ती पन्तिकेही पान जोजन पात्र पन्तिकेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांछण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रभार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पालें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पालें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छा कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोजुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे. एक लोगस्तनो काउस्तगग करे. मुखें लोगस्त कहे. संमास्ता प्रभार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमोजुणं कहे. उजो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्तगगं वंदणवत्ती०

अन्नबू० कही, एक नवकारनो काउस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्तण सबलोए अरि० वंदणव० अन्नबू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुरस्करवरदी० सुअस्त जगण वंदण० अन्नबू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इ त्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुईयें देव वांदी बेसे ॥ नमोबूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीराराय कही. नमोबूणं सबवे तिविदेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन बृहन्नाथमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्र स्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेश्याई ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जा वंति के० बीजो गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीराराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पम्किमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पञ्चखाण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे. फिर एक खमास मण ॥ इच्चा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखण पारवा मुहपत्ती पम्कि लेहुं ? गुरु कहे, पम्किदेहे ॥ पीठें इच्च कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किदेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्चाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणहार अमुक पञ्चखवाण पारुं ? -गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तव्वो. पीठें तदन्ति कही, अमुक पञ्चखवाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पञ्चखवाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्त मिच्छामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे, कणमात्र सिज्जाय करी यथासंज्जवें अतिथिसंविज्जाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चखवाण पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो थकोहीज दिवस चरिम पञ्चखवे, पीठें इरियावही पम्किमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चखवाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंमिले जई; अणुजाणह जस्तुगहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजळें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्तही पूर्वक पेसी इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इत्तं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संभा सा पूंजी, थंमिलो पम्किमेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्तही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंमियं, जं विरा हियं, तस्त मिच्छा मि उक्कमं, एम कही बेसे. पीठें पम्किमेहण बेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पावले प्रदुरे इरियावही पम्किमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ पम्किमेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इहं कही दूजे खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला  
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठें इहं कही, मुहपत्ती पन्डिलेही  
 दोय खमासमणें अंग पन्डिलेहण संदिस्ताउं ? अंग पन्डिलेहण करुं ?  
 कहे. पीठें गुरु वचनें इहं कही मुहपत्ती पन्डिलेही दंभासणों पूंजणी,  
 प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठें काजो गुह करी, उदरी  
 एकांतें विखरतो परगधी इरियावही पन्डिकमी, खमासमण पूर्वक  
 कहे ॥ इच्छाकार जगवन् पसाउ करी पन्डिलेहणों पन्डिलेहावोज। ॥  
 पीठें स्थापनाचार्य पन्डिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा आपनाचार्य  
 समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती  
 पन्डिलेहुं ? गुरु कहे, पन्डिलेहेह. पीठें इहं कही खमासमण देई,  
 मुहपत्ती पन्डिलेहे. पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ सिधाय संदिस्ताउं ? सिधाय करुं ? उक्त रीतें कणमात्र सि  
 द्धाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार  
 पञ्चस्के ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां  
 दोय देई, पञ्चक्राण करे. पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥  
 सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्डिलेहण संदिस्ताउं ? बोजे ख  
 मासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्डिलेहुं ?  
 गुरु वचनें इहं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ बेसणो संदिस्ताउं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि प  
 न्डिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्डिलेहे. उपवासी तो  
 ठे तेमार्टे सर्व पात्रो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पन्डिलेहे, उपधा  
 नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पन्डिलेह्यां. पीठें  
 वस्त्र कंबलादि पन्डिलेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठें कालवेला सीम  
 सिधाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवण. २४ थंमिला पन्डिलेहे,  
 जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासी पन्डिकमणो करे, संवसरीयें

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो  
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसिय आलो  
ऐमि इत्यादि देवसी आलोया पीठे " ठाणे कमणे चंकमणे " इ  
त्यादि पाठ कहे. खुदोवदव काउस्सग कियां पीठे दोय खमासम  
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० 'सिधाय संदिस्ताउं ? सिधाय करुं ?  
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें  
लिख गये हैं. वहांसें जान लेनां.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठे साधुको वेधावच्च करी पोरसी  
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज  
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे अंमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारै  
प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्रा पो  
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठे राई  
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा  
मुहपत्ती पन्तिखेहुं ? गुरु कहे, पडिखेहेह. पीठे इठं कही, खमास  
मण देई मुहपत्ती पन्तिखेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राई संधारो संदिस्ताउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठे गुरु वचनें इठं कही, चउकसाय  
पन्तिमल्लुत्तूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी  
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाधरे. पीठे  
शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही संधारे बेसी, तीन  
नवकार तीन करेमि जंतें ऊचरी ॥ एमो खमासमणायें, गोयमा  
ईयें 'महामुणीणं, 'अणुजाणह जिठिळा अणुजाणह परम गुरु'.

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें छे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पन्निक्कमे ॥ पीठें जघन्ये पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काठस्तग्न करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्निक्कमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्निक्कमण वेला सीम सिधाय करे. पन्निक्कमण वेला हुवां पन्निक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संथारा उवणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्निक्कमणो करी पन्निक्कमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पन्निक्कमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊहरी इरियावही पन्निक्कमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसद पारे ॥

॥ अथ पोसदपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पन्निक्कमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोचवो. पीठें तद्वत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उजो. थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पन्निक्कमे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-



યારો ન મોત્તવો. પીઠે તહત્તિ કદી સ્વમાસમણ દેઈ અર્ધાવિનત. ગાત્રે ઝજો થકો હાથ જોડ્યાં- મુહપત્તી મુર્ખે દિયાં થકાં તીન ન વકાર ગુણી સંમાસા પમિલેદે. ગોમાલોવેં બેસી મસ્તક નમાવી, “ જયવં દસન્નજદો ” ઇત્યાદિ જાવનારૂપ ગાથા કહે. પીઠે પોસ-હના ઝપગરણ સંવરી, દેહરે જઈ દેવ જુહારે. ઘરે આવી આહાર નિષ્પન્ન હુવો દેહી સાધુ સમીપે આવે, અતિથિ સંવિજાગવ્રત સા-ચવણ નિમિત્તે સાધુ જાણી નિમંત્રણા કરી, ઘરે લે જાવે, સાધુ પણ શુદ્ધ આદાર લેઈ, સ્વસ્થાનકે આવે, તિવાર પીઠે સાધુનેં જે આદાર દીધો, તેહનોદીજ શેષ આદાર આપ કરે ॥ ઇતિ આઠ પુહરી પોસહ ગ્રહણ પારણ વિધિઃ ॥

॥ હવે દિન ઝગ્યા પીઠે પોસહ લે, તેહનો વિધિ કહે છે ॥

॥ ઘરથકી નિર્ધિત થઈ ધર્મસ્થાનકે આવી, સર્વ ઝપગરણ પમિલેદી, કચરો વિધિજું પરઠવી ફરિયાવહી પમિક્રમે. સ્વમાસ-મણ પૂર્વક આગ્યા માગી, પોસહ મુહપત્તી પમિલેદે, આગે પોસહ ગ્રહણકા વિધિ પૂર્વે લિખા હૈ. તિમહિજ જાણવો. પણ દિવસ પોસહદીજ કરણો હુવે, તો પોસહ દંમક ઝચ્ચરતાં જાવવિવસં પજુ-વાસામિ, એહવો પાઠ કહે. અને જો અઠપુહરી કરવો હુવે, તો જાવ અહોરત્તિ પજુવાસામિ એહવો પાઠ કહે. પીઠે સામાયિક વિધિ સર્વ કરી ચૈત્યવંદન કુસુમિણહસ્તમિણ કાઝસ્તગ્ગ કરી પમિક્રમણો કરી દોય સ્વમાસમણેં બહુવેલં સંદિસ્તાવે ૧, અને જો પૂર્વે પમિક્રમણો ગુરુ સાર્થેં કરયો હુવે, તો પમિક્રમણાનેં અંતે પમિલેદી શાસ્ત્ર્યાં જે વસ્ત્ર, તે પહેરી પોસહ સામાયિક સર્વ વિધિ કરી દોય સ્વમાસમણેં બહુવેલં સંદિસ્તાવે ૧, તથા જો ગુરુસેં જૂદો પમિક્રમણો કરયો હુવે, તો ગુરુપાસેં આવી પોસહ સામાયિક સર્વ વિધિ કરી, આલોચણ સ્વામણાદિ નિમિત્તે મુહપત્તી પમિલેદી વે વાંદણાં

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोचं ? गुरु कहे, आ-  
 लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ज० ॥ अग्रुद्धिनि अग्रितर, राइयं खामेमि ? गुरु कहे  
 खामेह, पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पन्निक्कमणामें न-  
 वकारसी पञ्चख्यो थो तेमाटें पीठें गुरु साखें पञ्चकाण उपवासनो  
 करे, पीठें दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-  
 रका विकल्प जाणनां. हवे पन्निखेदण तो पूर्वे करी वे, तो पण  
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पन्निखेदण संदिस्तां ? बीजे खमासमणें पन्निखेदण करूं ?  
 कही मुदपत्ती पन्निखेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्नि  
 खेदण संदिस्तावी मुदपत्ती पन्निखेहे. पीठें वली खमासमण देई  
 इच्छाकार जगवन् ! पत्ताउ करी पन्निखेदण पन्निखेदावो जी. एम  
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ  
 पधि मुदपत्ति पन्निखेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपन्निखेह्यो राख्यो  
 हुवे, तो पन्निखेहे, नहीं तो वली आसण पन्निखेहे. दोय खमास  
 मणें सिध्दाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिध्दाय करे. आगे  
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी,  
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न  
 लेवे, जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीथो हुवे, ते पाठले  
 पुहर पञ्चकाण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पन्निखेदण सं-  
 दिस्तां ? उही पन्निखेदण करूं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे.  
 अने अंमिला नहीं पन्निखेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह म-  
 हण करणेंमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह  
 ग्रहणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कोहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी विवस पोसो ऊच्चरयो है, पीठें संध्यानी पन्निखेदण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्निखेदी तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे, तिहां जाव रत्तिं पङ्कुवासामि एम पाठ ऊच्चरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीठें दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांग रणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही थंमिलां पन्निखेदण संदिस्ताउं उही थंमिलां पन्निखेदण करुं? गुरु कहे, करेद, इच्छं कही उपधि पन्निखेदे, आगें सर्व किया पूर्व लिखी तिम जाणवी, तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पहुर धर्मस्थानकें आवे, जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पन्निखेदी इरियावही पन्निक्मे, पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्निखेदी दोय खमासमण देई पोसह संदिस्तावे, फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे, तिहां दिवसेसरत्तिं पङ्कुवासामि कहे, सं ध्या हुवे, तो रत्तिं पङ्कुवासामि कहे, पीठें बिहुं खमासमणें सामा यिक मुहपत्ती पन्निखेदे, दोय खमासमण देई, सामायिक संदि स्तावे, फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंतें ऊच्चरे, दोय खमासमण देई सिधाय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे, फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे, पीठें बे खमासमण देई, अंग

पन्डितेहण संदिस्तावी, मुदपत्ती पन्डितेहे. फेर बे खमासमण वेई, उंही धंमिदां पन्डितेहण संदिस्तावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पन्डितेहे. जो सर्व उपगरण पन्डितेह्यां हुवे, ते पण था नक शून्यता टालवा ज्ञानी वली आसण पडिलेही, पडिक्रमण वे ला सीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवणना १४ धंढिला पडिलेही पडिक्रमणो करे. तथा पाठलो रातें वली सामाधिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसद लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसदविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्रमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणोक्रमणे चंकमणे आउते अणाउते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे आवरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सबस्तवि देवसिअ, डुच्चित्तिअ, डुप्पासिअ, डुच्चिडिअ ॥ इच्चाकारेण संदिस्सद, इच्चं तस्स मिच्चा मि डुक्कनं ॥ १ ॥ संशाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अवसुक्कवित्तयकायकी, सबस्त विराइअ, डुच्चित्तिअ, डुप्पासिअ, डुच्चिडिअ, इच्चाकारेण संदिस्सद, इच्चं तस्स मिच्चा मि डुक्कनं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके  
प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंशं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलज्जाणगेहं ॥  
मदानंद लब्धि बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिष्ठारयं ॥ १ ॥  
पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सच्च ज्जाण ताया  
॥ तदा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दितु ते मे तिलोयप्पदान-  
णा ॥ २ ॥ डुरुत्तर संसार कुबार पोयं, कलंका वली पंकपस्काज

तोयं ॥ मणोवैद्यिष्ठे सुमंदारकप्यं, जिशंदागमं वेदिमो सुमह्यं  
॥ ३ ॥ विकोसे जिशंदाणशंजो जलीणा, कलारूव लावस सोदग  
पीणा ॥ वहं तस्त चित्तंमि शिचं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे  
सुखनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंघरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य  
पदवीचश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांगनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्  
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच  
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरुषीकनिर्जयमण्यो प्राप्ता  
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥  
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं  
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाज्जं गुरुपंचमारतिमिरेश्वेकादशी रोहिणी,  
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्ञकानां जविनां गृहेषु ब-  
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न  
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायिका त्रायिका  
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चञ्चवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करिये,  
चंद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोदे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीर्ग  
दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रज्जु  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपञ्जर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
द्विपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अष्टा महोच्चव, करता दोडादोड  
॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चञ्चमासे रहिया,

मलयधर मुनि परिवार ॥ जविष्यणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पढिकमणुं, क  
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल आये, दिन दिन कोडि कढयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ चलकैकादश्यां सदसि ललड्डाममहसि,  
क्षितौ कढयाणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रप्रेष्या  
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः क्षणमति सुखं नारकसदः, क्षितौ ० ॥ २ ॥ जिनां  
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्बहुमुदः, क्षि ० ॥ ३ ॥  
सुराः सैद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखि  
लजवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ डेईकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ब्रसकिधर, धपधोरवं ॥  
दोंदोंकि दों दों, दागिदि दागिदिदि, द्रमकि द्रप रण, द्रेषावं ॥  
ऊजिऊँकि ऊँऊँ, ऊषणररण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
शैल शिखरे, जवतु सुखवं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेगिनि  
थोंगिनि, किटति गिग्गदां धुधुकि धुठनट, पाटवं ॥ गुणगुणगुणगुणगण,  
रणकि रोंरों, गुणगुणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊँकि ऊँऊँ, ऊषण र  
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयति कमला, कलितक  
लमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहेंठ ठ

ह्रिक, गर्हिषट्टा, ताड्यते ॥ तललोकि लोलों, त्रैषि त्रैपिनि, मेपिमेवि  
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, पुंगि पुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल  
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३ ॥  
पुंदांकि पुंदां, पुषुद्दि पुंदां पुषुद्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,  
रणकि ऐंऐं रुणण मेरे, मेरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु  
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिनः ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥  
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव  
श्रीपालतणी परे पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,  
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल  
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जियें ए नीति  
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास  
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें  
जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणगुं, नवपद केरो सारो जी ॥  
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥  
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से  
वक जविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गञ्ज ना  
यक सदगुरु, श्रीजिनजक्ति सुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि  
पन्नणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदः ॥

॥ अथ पञ्जसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गात्रं जिनवर वीर, जिनपर्व पञ्ज

सण, दास्यतां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,  
 षण्मिक्कमण संवच्चरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जलें जावें जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि  
 चैत्थ प्रवारे किरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वंचाय, श्रीकळप  
 सूत्र जिहां सुणातां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर  
 ठरकेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 हम्मीवच्चल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर बंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्कोजितं, धन  
 सधनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग बंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर  
 बंदू नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पडुता मुनिवरू,  
 चउवीस जिणवर तेह बंदू सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 अंग उपांग बारे दश पथन्ना जाणिये, ठ छेद अंश प्रसन्न अन्ना  
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन  
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पैतालीश आगम ध्याइये  
 ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेइने सदा जवियण सुखकरू,  
 डख हरे अंवा लुंख सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो  
 अंवा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥



### ॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, ह्रमापालप्र  
 जुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे  
 तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र  
 जुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोन्नव व्रतवरज्ञानाकरासिक्वणे, संज्ञयाशु  
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमन्नाजिज्ञवादिबोरच  
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानधचेतसे विदधतां श्रेयास्यने  
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिष,  
 स्तत्पञ्चाक्षणायाका विरचबांचक्रुस्तरां सृत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनै  
 कसमये सन्धगृह्णां ज्ञूस्पृष्टां, ज्ञूयाज्जावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धाधिका देव  
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
 चंङ्गीस्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने  
 शार्दूलविक्रीकितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

### ॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

#### ॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-  
 कमल तसु नामूं सीस । अहनिस् समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं  
 च भेरुपासे जलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर जे  
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय  
 डवाखस अंग । आनक वीस जणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे  
 आषो रंग । ते नर पाभे सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च  
 छवीस । पूरे मुज मनतणी जगीस ॥ संघतथा जे विघन निवारे ।  
 तिहुअण जे मन बंध्य सारे ॥ ४ ॥

## ॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदेमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न  
गरजेसलमेरविज्जूषणं । जजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे  
श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख  
कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि  
नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु  
सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियद्धारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकव  
वप्पयदेवगणं । सिरिअद्ध्यु वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि  
यपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिञ्चलजीवदया ।  
मम हुंति जिनागमसुरकसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क  
छाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि  
नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । सुहजाणविणम्मि  
यएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुस  
या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

## ॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमात्तमपद धारीजी । प्रथम  
जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन  
राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने  
सर, आत्तमसंपद ज्ञूपोजी ॥ १ ॥ पांच ज्जरत वलि पांचे एरवत,  
पंच विदेह मज्जरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव  
पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काळे वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डवाळत  
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण षरजय नय जंग  
 प्रमाणे, जिहां षट्पद्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्या,  
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे  
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंडित नित सेवीजी  
 ॥ कळयाण कारण जेहनी सेवा, संघ सकळ सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद सुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णामे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।  
 श्रीमूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 शय बलि चोतीस । दिखरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि  
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्थाद्वादन  
 यादिक हेतुगुक्ति नवि ज्ञांत ॥ पापकरदमपाणी सद्गतिनी सह  
 ज्ञाणी । सुणये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासनानी  
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो  
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदं हि नमता देव । देहि नः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाज्जे  
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्च न पालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे  
 ज्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमर्तनुमुक्तये ॥  
३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता  
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञयान् जनान्नयतु नित्य  
ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इति महावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछन्दसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वन्दे । जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं  
वाक्यं ज्ञूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
स्त्रीछन्दसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि  
नश् सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥-१ ॥ सुर नरवर किन्नर वं-  
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि  
यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा  
वीस ॥ २ ॥ अरण्ये करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते  
गूँछ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके  
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि  
का देवी वारे वियन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
अहनिसि कर जोनी सेवे सुरनर इंद, जंप्पे गुणगण इम श्रीजिन  
लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाज्जेयं संज्जवं तं, अजियसुविद्वयं, नंदणं सुवयद्वा ॥ सु  
प्पासं पणमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध  
र्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुण्ठं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
नमिमविन्मिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गप्पे दाणेषु जम्मे,

वय गदणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाणिवाणठाणे, पगवण समए,  
 संयुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, विंतरे किंन  
 रेहिं, तंमझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कळ्याण एसु ॥१॥ देजं  
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा,  
 अहमविनियमा, जायए सवकाळं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममइणं,  
 धीयअंकूररूवं । अवावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कळ्याण एसु  
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहवा । सवढामाणमं  
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपउमा, थणइसर  
 णई, खित्तेगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गदगणसईया, पंच क  
 ळ्याण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकळ्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनि स समरुं तास सेव  
 ॥ रायणातल पगळां प्रचूतणा । पूजि सफल फल सोदामणा ॥१॥  
 तेवीस तीर्थंकर समवसरघा । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरि  
 करुणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेळो मुगतिसाथ ॥२॥ सौदम  
 सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंनरगिरि महिमा  
 जे मांहा । ते आगम समरुं मनउवाह ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुख क  
 वरुयह । मन वंठित पूरण कळपवृह ॥ सिद्धक्षेत्रसिद्धरे सहदेव  
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर कैवल  
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कळ्याणक मुखकर सुरतरुकंद । तसु  
 जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्टावय चंपा पावापुर  
 शुभ्र ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजिता  
 दिक दीसे पुढता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमं अधिक

ઉલ્લાસ ॥ ૨ ॥ જિણવર મુખ હૂંતી સુણિ ત્રિપદી તતકાલિ । ગ  
 ણધારક ગૂંછ્યા દ્વાદશ અંગ વિશાલ ॥ નયજંગ પદારથ સત્ત્વ  
 નવ તત્ત્વ । જવિયણને તારે સાયર જિમ બોહિત્થ ॥ ૩ ॥ ચક્કેસ  
 રિ અંબા પન્નમાદેવિ પ્રત્યક્ક । શ્રીસંઘ મનોરથ પૂરે વાસુરવૃક્ક ॥ ધ્યા  
 વે સુખ પાવે શ્રીજિનલાજ સરીસ । જિનવર સુપ્રસાદે આસ ફલે  
 સુજગીસ ॥ ૪ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ શ્રીશીતલજિન સ્તુતિઃ ॥

॥ સુખ સમકિતદાયક કામિત સુરતરુકંદ । હઠરથ વૃપ રાં  
 ણી નંદાકેરો નંદ ॥ જદિલપુર સ્વામી ફેમે જવના ફંદ । ચિત્ત ચો  
 રે નમિયે શ્રીશીતલજિનચંદ ॥ ૧ ॥ અતીત અનાગત દુઝા દોસ્યે અ  
 નંત । સંપ્રતિ કાલે જે ક્ષેત્ર વિદેહ વિચરંત ॥ ત્રિહું જવણે ઠવણા  
 સાસય અસાસય હુંત । તે સગલા ત્રિકરણ પ્રણમું શ્રોશ્રરિહંત ॥ ૨  
 ॥ કાલિક ઉત્કાલિક અંગ અનંગ પવિઠ । નયજંગ નિરૂપેવા સ્યા  
 દ્વાદ મિતસિઠ ॥ જવિજન ઝપગારી જારી જિન ઝપદેશ । શ્રુત  
 શ્રવણે સુણતાં નાસે કોમિ કલેશ ॥ ૩ ॥ બ્રહ્મજક્ક અસોકા સા  
 સન સુરિ સુવિચાર । સંઘ સાનિધકારી નિરમલ સમકિત ધાર ॥  
 ચિંતા ડુલ્લ ચૂરે પૂરે મનહ જગીસ । ધ્યાન તેહનો ધરિયે કહે જિન  
 લાજસૂરિસ ॥ ૪ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ સમવસરણવિચારગર્ભિત સ્તુતિઃ ॥

॥ મિલ ચોવિહ સુરવર વિરચે ત્રિગ્ગો સાર । અઢી ગાઝ  
 ઝંચો પિહુલો જોયણ પાર ॥ વિચ કનકસિંહાસન પદમાસન સુખ  
 કાર । શ્રીતીરથનાયક વૈસૈ ચોમુખધાર ॥ ૧ ॥ તીન ઉત્તર સિરો  
 વર ચામર દોલે ફંદ । દેવંડુઝિ વાજે જાંજે કુમતિ ફંદ ॥ જા  
 મંરુલ પૂંઢે ઝલકે જાંણ દિનંદ । તિહુઅણ જન જવિ મન મોદે  
 સયલ જિનંદ ॥ ૨ ॥ इत्य ज्ञाव सुववणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा  
जिन सरस्वी सुखकार । शुभ्र ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥१॥  
डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवन्नेद कृपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो जवि प्राणी । सुय  
देवि पसार्ये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिथे रुषजदेव पुंमरीक । शुभ्र तपनी म  
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य  
बंदनीक । करिथे जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र  
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्कनी पूनम चेत्र मास  
शुभ्र वार । विधिलेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले  
वरसलग धरिथे ज्ञान उदार । कर्ता नर नारी पामे जवनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी ले  
विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे  
गणनायक श्रीजिनलान्नसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद  
महिमा ज्ञाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव  
दीस । नव आंबिल करिथे मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
हंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण  
चरण तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोष दह्यार । सहु  
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अरुन्धतीस पण वी  
स सँग वीस सार । सरुसठ इक्कावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ ३ ॥

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञाषित विधि इम  
कीजे अज्जिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री  
पावतणीपर पूरे वंछित सुख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र जवि  
प्राणी । जिनद्वर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अजिनव कामी  
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धात्रीजी ॥ आनक  
बीसे आगम ज्ञाणिया बीतराग गुण जुकाजी । जे नर अंतर आ  
तम ध्यावे सिवरमणी वर युकाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन  
सूरी धिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र  
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत  
तिष्ठ जूपोजी । ए पद निज जवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो  
जी ॥ २ ॥ दोय सहस्र गुणनो प्रत्येकें ज्यार सया उपवासोजी ।  
इव्यज्ञावसें विधि परकासे तीर्थकर पद खासोजी ॥ तीजे जव  
वर बीस आनकनी सेव करे जव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे  
निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल  
हे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गढ जिन आज्ञाधारी पा  
टोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायै हंस सूरिंद गुण  
गावेजी । संघ सकलकृं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥  
४ ॥ इति श्रीबीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज धिवराण । उवजाय सादू  
नाण दंसण विनय पढाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम  
जिनजाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो बीसे गण ॥ १ ॥ उ  
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर



वीम गंजीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे  
 थानक आराधी गुणमात्र ॥ १ ॥ आवश्यक बे बेला जिनवंदन  
 त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमात्र ॥ काउसग  
 गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वल्ल करतां न  
 वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जक  
 जखणी सुरपती बेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे  
 मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥  
 नवपदमाहे मुख्य वखाण्या कृष्णादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी  
 ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो  
 पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिदंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल  
 मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं  
 प्तारीजी ॥ नवमें ज्ञव ज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।  
 धीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ ठत्तीसे  
 गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । समस्त इकावन वलि जैती  
 सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम  
 थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंखिल नव  
 विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयज्ञ चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता  
 जी । ज्ञजी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर  
 गह्व जिन आझाकारी पाटोधरपद चुक्ताजी । जिन सौजाग्यसूरिंद  
 पसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही  
 केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

રિસિલ્લે સમવસરયા સુલકંદ ॥ ૧ ॥ ઇણ ચઢવીસીમાં રૂપનાદિક  
 જિનરાય । વલ્લિ કાલ અતીતે અનંત ચોવીસી ધાય ॥ તે સવિ ઇણ  
 ગિરવર આવી ફરસી જાય । ઇમ જાવી કાલે આવસ્યે સવિ મુનિ-  
 રાય ॥ ૨ ॥ શ્રીરૂપજના ગણધર પૂંમરીક ગુણવંત । દ્વાદસ અંગ  
 રચના કીધી જેણ મહંત ॥ સવ આગમમાહે સેત્રુંજ મહિમ મહંત  
 । જાણી જિન ગણધર સેવો કરિ ધિર ચિત્ત ॥ ૩ ॥ ચક્રેસરિ ગોમુહ  
 કવરુ પમુહ સુર સાર । જસુ સેવા કારણ આપે ઇંડ નદાર ॥ દેવચંડ-  
 ગણિ જાણે જિવિજનને આધાર । સવ તીરથમાહે સિદ્ધાચલ સિરદાર  
 ॥ ૪ ॥ ઇતિસેત્રુંજયસ્તુતિ ॥

॥ અથ શ્રીશાંતિનાથ સ્તુતિ ॥

॥ શાંતિ જિનેસર જગ અલલેસર અચેરા નદર અવતરિયાજી  
 । વિશ્વસેન નૃપ નંદન જગગુરુ દયણાપુર સુલ કરિયાજી ॥ ઇતિ  
 ઉપદ્રવ મારિ વિકારી શાંત કરી સંચરિયાજી । જે જિવિ મંગલ  
 કારણ ધ્યાવે તે હુય ગુણગણ દરિયાજી ॥ ૧ ॥ વર્તમાન જિન સવ  
 સુલકારણ અતીત અનાગત વંદોજી । વારે ચક્રી નવ નારાયણ નવ  
 પ્રતિચક્રી આનંદોજી ॥ રામાદિક જે પુરુષ સલ્લાકા વંદત પાપ નિકં-  
 દોજી । ઇચ્છ નિકેપે જિનસમ જાણો કાટે જવજય વંદોજી ॥ ૨  
 ॥ અંગ ઉપાંગે જિનવર પ્રતિમા શ્રીજિન સરસી જાણીજી । ઇચ્છ  
 જાવ વિહું જેદે પૂજા મહાનિસીધે સાણીજી ॥ વિષય નિવૃત્તી સત્  
 આરંજે વિનય તર્પી તે જાણોજી । શુભયોગે નહિ આરંજકારી જગ  
 ષડ અંગ પ્રમાણોજી ॥ ૩ ॥ આપના સત્યે દેવી નિર્વાણી શ્રીસંઘને  
 સુલકારીજી । કારણથી સવ કારજ સીજે જિનવર આજ્ઞા ધારીજી  
 ॥ શ્રીજિનકીર્તિ સૂરીશ્વર ગઢપતિ પાઠક શ્રીરૂપેસારીજી । સમ-  
 કિતધારી દેવ સદાઈ સુલસંપત્ત દાતારીજી ॥ ૪ ॥ ઇતિશ્રીશાંતિ-  
 નાથજેનસ્તુતિઃ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध बंदो ज्ञावे जवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसैं धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषजलंबन सुखदायाजी । विजय जली पुखलावड विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते बीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरण्ये श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी मोह निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो जविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । तानिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सदाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांठन लांठित वंठित दान सुदह । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु बंदो ध्यावो जविजन पद ॥ १ ॥ पुरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंडिय दम सिव पढुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण उपर सुधिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरजरमांहे दीपकसम सेजंत । पंचम तपफल  
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-  
वाकारक जे नरनार । निरमल पंचम तपना धारक तेह ज्ञानी  
सुविचार ॥ श्रीसिद्धादिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री  
जिनलान्न सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-  
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम  
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।  
ए पंच कढ्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक  
अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डगुणा  
दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्या सब संकट मिट जाय ॥  
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये  
विधिलेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।  
इक चित्त आराधो साथो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण  
वण सम्यग् दरसनवंत । जिनचंड सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ  
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कढ्याण  
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल  
जाख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-  
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।  
जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो  
उपवास । मन बंठित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो  
बोड्यो लान्न अनंत । विधसुं परमारग्र साथे सुधो संत । दुखदो

दग तेहनो नाति जाय सब दूर । बलि दिन ५ अंगे बाधे अधिको  
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाग्य  
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर ५ महोदधव नित नवला  
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गह  
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस  
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम ५ संशय  
जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क  
टपसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर गम ५  
तुम देखो चउदस ५ परकी होय, जूला कांइ जमो तुम प्राणी ताचो  
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,  
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक  
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर  
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो  
मन बंढित फल होय, जे जे आझा सूधी पाले ब्यानो विधन ह  
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूधो समकित पाय, खरतरगड  
मंरुण कुमति विहंरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति परकी  
चौदस शुद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवज्जयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जय  
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणारे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विनयतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प-  
 ज्ञावे, ओसामि सुदिढ सप्पावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,  
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ ३ ॥  
 सिलोणो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं  
 ॥ तद्द य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संघिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ-  
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धियं ॥ अजिअस्स य संति  
 मद्दा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणं च नमं  
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम-  
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावत्तं, अज्जयकरे सरणं पव-  
 ज्जाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज-  
 रमरणं, सुर असुर गरुड जुयगवई, पयव पणिवइअं ॥ अजिअ न-  
 ह्मविअ, सुनय नय निज्जणमज्जयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमै ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम  
 नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निदिं ॥ संति  
 अरं पणमामि दमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 दिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मज्जय प-  
 सत्त विज्जिन्न संघिअं थिर सरिज्ज वज्जं मयगल लीलायमाण वर गंध-  
 हत्थि पत्ताण पत्थिर्यं संघवारिहं हत्थिहत्थ वाहुं धंतकणग रुअग नि-  
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणौ वचिअ सौम्म चारु रूवं सुइ सुहम  
 णाज्जिराम परम रमणिज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेद्धत्तं ॥ अजिअं जिआरिणं, जिअ सबज्जयं ज्ञवो हरिं ॥  
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेज्ज मे जयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध-  
 त्तं ॥ कुरु जणवय हत्थिणात्तर नरीसरो पढमंतत्तं मद्दाचक्कव  
 त्तिज्जोए मद्दप्पज्ञावो जो वात्तत्तरि परवर सहस्सवर नगर शिगम

( १२५ )

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण  
नव महानिहि चउसठि सहस्त पवर कुवईण सुंदर वइ  
चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी वसवइणाम कोरि  
सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेद्धउ ॥ तं  
संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं वि  
हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्काणु विदेह नरीसर, नरव  
सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु  
अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविज्जल  
कुला ॥ पणमामि ते जवज्जय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥  
१३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणाविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,  
लठ रूव धंत रूप पट्ट सेअ मुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स  
त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सव्वलोअ जावि  
अ पपजावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स  
सिकलाइरेअसोम्मं, वित्तिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइणणा  
इरेअ रूवं, धरणिधर पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते  
अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,  
एस अहं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ जूअणपरिंरिंणिअं  
॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ  
न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव  
इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥  
तिन्नवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणश्रुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं  
॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणिं सरण मु  
वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणय सिरिरइ अंजलि, रित्ति  
गण संश्रुअं श्रिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, शुअ महिअच्चिअं  
बहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर, समहिअ सप्पन्नं तवसा ॥

गयशंगल विवरण समुद्रा, चारण वंदित्रं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय  
 माला ॥ असुर गरुड परिवंदित्रं, किन्नरोग एमंसित्रं ॥ देव कोमि  
 सयसंश्रुयं, समणसंघ परिवंदित्रं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं  
 अरुयं ॥ अजित्रं अजित्रं पयन पणमे ॥ २१ ॥ विजुविलसित्रं ॥ आग  
 यावर विमाल, दिवकणग रह तुरय पदकर सएहिं हुलित्रं ॥ स  
 संजमो अरण खुजित्रं लुलित्रं चल कुंमलंगय तिरीन सोहत मऊ  
 लिमाला ॥ २२ ॥ वेदुठ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विजता  
 नति सुजुता, आयर नूसित्रं संजमपिंमित्रं, सुहु सुविद्वित्रं सबब  
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूवित्रं नासुर नूसण नासुरिअंगा,  
 गाय समोणय नत्तिवसागय पंजलिपेसियसोस पणामा ॥ २३ ॥  
 रयणमाला ॥ वंदिकण ओळणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया  
 हियं ॥ पणमिळणय जिणं सुरासुरा, पमुद्रा सज्जवणाइतो गया  
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं पि पंजलि, राग दोस नय  
 मोह वज्जित्रं ॥ देवदाणव नरिंद वंदित्रं, संति मुत्तम महातवं नमे  
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि  
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दललो  
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणत्तरविणमिय गायल  
 याहिं, मणिकंचण पसिदिलेभेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं  
 खिणि नेउर सतिलय बलय विजूसणियाहिं, रइकर चउर मणो  
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तरकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय  
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं  
 मंणुओळुण्णपगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं  
 चिल्लएहिं संगयं गयाहिं नत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि  
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजित्रं  
 जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं पयन पणामामि ॥ २९ ॥ नंदित्रयं ॥



धुअवादअस्ता॥रासगण दवगणोहिं, तो देव वहुहं पयउं पणामअ  
 स्ता ॥ जस्त जगुत्तमसासणयस्ता, जत्तिवसागयपिंनिअआहिं ॥  
 देव वरवरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंनिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सद् संति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सद् मी  
 सएकए अ, सुइसमाणएअ सुद्ध सज्ज गीअ पाय जालघंठिअहिं ॥  
 घलय मेहला कलावनेउराजिराम सद् मीसएकए अ देवनट्टिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विष्णमप्पगारएहिं नच्चिक्कण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्तते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायणं ॥  
 वत्त चामर पन्नाजृअ जव मंझिआ, ऊयवर मगर तुरय तिरिक्क  
 सुलंढणा ॥ दीव समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सज्जिअ वसहं सी  
 हंसिरिवत्तसुलंढणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलढा समप्पइहा,  
 अदोस डुवागुणोहिं जिण ॥ पसायसिण तवेण पुढा, तिरिहीं इहा  
 रितीहीं जुढा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सबलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअ संति पायया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव वल वि  
 ङ्गलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु  
 ण्क सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउं मे विसायं, कुणउअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनेदिं, पावेउअ नं  
 दिसैणमज्जिनेदिं ॥ परिसाडवि सुहनेदिं, मम य दिसउ संजमे  
 नेदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चानम्मासिय, संवहरिए अवस्त  
 ज्ञिअवो ॥ सोअवो सबेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जउं कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्त रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छद परम

पयं, अहवा कितिं सुविचरुं जुवणे ॥ ता तेलुकुदरणे, जिणव  
यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहदजितशांतिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपहा दंरुञ्जलेणंणिणं, वदारुण  
।दसंत इव पयमं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंउज्जव दंतकंति मिसन  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समञ्जे ञ्जणे ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासज्जत्ति  
अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
णंतसामञ्जत्तिं, फलहइ लहु सबं वंठिअं णि ञ्ठिअं मे ॥ ३ ॥ सय  
लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निठदोधट्ठयं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जि  
णिंदे जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्टए देहदित्ती, विलसइ  
जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमत्तित्ती होइ संसारवित्ती,  
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं जू  
रिदिवंगहारं, फुरुगणरसज्जावो दारसिंजारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
हंसणञ्जे अज्जीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥  
थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा वज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंजा रंजनिवाणलङ्गी, घणअणधुसि णिक्कु  
प्पंकर्पिणीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वठ्ठणिच्चं अणिच्चं, सदसद  
णज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंथयारं, जमइजय मसणं तावमिञ्चत्तवणं ॥ फुरइ फुरुप

लंता संतणाणं सुपूरो, पयसु मज्झिमसंती जाण सूरु न जाव ॥९॥  
 अरि करि हरि तिण्हु एहं बु चोरा दिवाही, समर रुमर मारी रुद्ध  
 खुद्धो वसग्गा ॥ पल्लय मज्झिमसंती कित्तणे उत्तिजंती, निविमतरत  
 मोद्धा जस्करालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरिअदारु दित्तजाणग्गि  
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा  
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरप्पिर मिह लब्धिं गाढसंपंज्जिअव ॥ ११ ॥  
 अरुविनिवन्निआणं पब्बिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण  
 गुत्ति ढियाणं ॥ जलिअ जलण जाला विंगिआणं च जाणं, जणयइ  
 लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिप्पं पक्क  
 पाइक्कपुप्पं, सयलपुहवि रज्जं ढक्किअं आण सज्जं ॥ तण मिव पणि  
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पससा ॥ १३ ॥  
 ढणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणज्जरनमिरीहिं मुढिगिज्जोद  
 रीहिं ॥ ललिअ जुअलयाहिं पीण सोणिढ्ढणीहिं, सयसुर रमणीहिं  
 वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमि जकुळ गंठि कासाइसार,  
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसण्ढी कुब्बिक  
 साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु  
 छुहतासे पस्सिए चाउमासे, जिणवर दुग्गधुत्तं वड्डरे वा पवित्तं ॥  
 पढइ सुणाइ सिद्धा एह जाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा  
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे  
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोत्तर ॥ तिठंकर सोल  
 सम संति जिणवत्त्वह संधुअ, कुरु मंगल मम हर सुडुरिअमखिलं  
 पि शुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशातिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरणरंजिअं मुणि  
 णो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं संशवं बुद्धं ॥ १ ॥ सन्धिय

॥ चरण नंद मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुं महारो  
 तानल, फुलिंग निदृष्ट सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा रादण, स  
 लिलंजलिसेय बुद्धिय छाया ॥ वण दवदढा गिरिपा यव व पत्ता  
 पुणो लब्धिं ॥ २ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उप्पन्न कल्लोल जी  
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंवुल, निध्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥  
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण  
 चलण जुअलं, निञ्चंविअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ  
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डम गहणे ॥ मत्तं सुद्धमिय  
 बहु, जीसरणरव जीसणंम वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,  
 निवाविअ सयल तिहुअणान्नाअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ  
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण न  
 यण तरल जीहालं ॥ जगज्जुअं नवजल य, सज्जं जीसणायारं  
 ॥ ८ ॥ मत्तं कीरु सरितं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह  
 नामकर फुल्लि इ, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि  
 ल्ल तकर, पुलिंद सइल सइजीमासु ॥ जयविहुर वुन्नकायर, उल्लु  
 रिअ पदिअ सज्जसु ॥ १० ॥ अबिलुत्तविह वत्तारा, तुह नाह प  
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं  
 ॥ ११ ॥ पक्कलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह  
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजठलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज  
 म पत्तिव, नहमणिमासिक पन्निअ पन्निमस्स ॥ तुह वयण पहरण  
 धरा, सीहं कुंदिपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह  
 करुल्लाल वद्धि उज्जाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल  
 हारावं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति  
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लोणा ॥ १५ ॥ स  
 मरम्मितिक्क खग्गा, जिग्घाय पविद्ध उल्लुय कवंथे ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि कल, ह मुक्क सिक्कार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिन्, नरिंद निवहा जमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण जयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, तणेष  
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा जयहरं, पास जिणिंदस्स संघ  
 वमुत्थारं ॥ जविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय जय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सज्जण रिक्क पीमासु ॥ तं  
 जासु दोसु पंघे, जवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिज,  
 सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन् न  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयज जय तिब्बं, जमिब्ब तिब्बाहि वेण वरेण ॥  
 सम्मं पवत्तिअंज, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसन्न सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिब्ब,  
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदद्धकम्म बीआ, बीआपरंमि  
 णिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुब्बाणि तिब्ब  
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय  
 रिआ तइ तिब्बं, निहय कुतिब्बं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पणिणीय कए,  
 वणितु सब्बस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निब्बाणसानुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ  
 सब्ब साहज्जा ॥ तिब्बप्पन्नायगाते, हवंतु परमिणिणो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगयं नाणं, निब्बाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिब्बस्स दंसणं  
 तं, मंगलमुवणेज सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निब्बजमो सुअधम्मो, समग्ग  
 ज्ञवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुब्धिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

( १५९ )

हं दिसन् ॥ ८ ॥ रम्मो चरित धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवत्त  
 म्मो ॥ नीसेत्त किलेसदहो, हवन् सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुहं मइणो कुणंतु तिब्बस्स ॥  
 सिरिवद्धमाण पढुपय, मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥  
 जियपन्निवक्काजक्का, गोमुह मायंग गयमुह षमुक्का ॥ सिरि  
 बंज्ज संति सहिआ, कय मयरक्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा  
 पन्निहयमिंबा, सिद्धा सिंहाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,  
 संति सुरा दिसन् सुक्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उर्दितु  
 संघस्स मंगलं विजलं ॥ अनुत्ता सहिआन्, विस्सुअ सुयदेवयान  
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रक्का, जक्का चनवीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिब्बस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाज सब हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिब्बस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग,  
 विहिअ जव्वाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुहं दिसन् ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि  
 देव देवीन् ॥ जिण सासण णिआणं, उहाणि सवाणि निहणंतु  
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासस्कि, त्वालयया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअइ पदरेहिं ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कंटएहिं, सविठ्ठिवेहेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सबन्न सुहं, दिसंतु  
 सबस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ  
 य जे देया ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिब्बस्स ॥ २०  
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गब्बइ पुरज्जपणासिअ तमोहं ॥ तंतिब्बस्स ज  
 गवन्, नमो नमो वद्धमाणास्स ॥ २१ ॥ सो जयन् जिणो वीरो,  
 जस्स ऊविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपइसासणं कुप, ह नासणं  
 सब जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसज्जसेण पमुहा, हयजय नि

वहा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सब जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंछिअं  
 सबं ॥ १३ ॥ तिरि वड्ढमाण तिष्ठा, हिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्त  
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसन्त सुहं सयल संघस्त ॥ १४ ॥ पय  
 इएज्झिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स  
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्त ॥ १५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,  
 उस्तअं तस्त नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिन्, सुनिद्धिअण  
 मुही होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं  
 ॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामकं पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिक्कणं ॥  
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिब्व शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय  
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणव संदेहा ॥ पणयंगि वग दाविअ,  
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर  
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पन्निज्जग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्त  
 सत्तोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय उह दाहा सिवंग तरु  
 साहा ॥ संपाविअ सुहदाहा, खीरोदखिणुब्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु  
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा ॥ सिवसुह  
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा,  
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं  
 न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिणदेवो, देवायरिन् उरंत  
 जवहारी ॥ तिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 तिरि वड्ढमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पन्निहय कसाय  
 पसरो, सरय ससंकुब्व सुहजणन् ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ए  
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तज्जाणन् पणय  
 सुगुणजणन् ॥ ९ ॥ पुरज्जं उल्लह महिव, छइस्त अणहिस्स वानए  
 पयन् ॥ मुक्कावि आरिक्कणं, सीहेणव दव्वल्लिगि गया ॥ १० ॥ ६

( १३१ )

समञ्चरेय निसिवि, प्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेशव सूरि  
जिणो, सरेण हयमद्दिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त किन्ती, पय  
मिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई  
सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवंग सुत्तव, रयणुक्कोसो पणासिअ  
पउसो ॥ जवन्नीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥  
॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परुवणा करणबंधु रोधणिअं  
॥ सिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पत्तमधरो ॥ १४ ॥ कय  
सावय संतासो, हरि व सारंग जग संदेहो ॥ गय समय दप्प द  
लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ नीमज्जव काण्णमिअ,  
दंतिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरि जिणव  
सुहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरविअ सच्चरणो, चउरणुत्तंग प्पहाण  
सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उट्टमुहो सहइ जस्स करो ॥  
॥ १७ ॥ दंतिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावन्तव जत्त  
॥ गुरुगिरि गरुत्त सरहिव, सूरि जिणवसुहो होत्ता ॥ १८ ॥ जुग  
पवरागम पीत्त, सपाणि पीणय मणाकया जवा ॥ जेण जिणवसु  
हेणं, गुरुणा तं सब्बहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि  
रोमणी वूढ डुवइ खमोया ॥ जो सेसाणं तेसु, व सहइ सत्ताणता  
णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महोणं, सुगुरुणं पारतंत मुवइइ ॥  
जयइ जियइ जिणवत्त सूरि, सिरि निळत्त पणय मुणितिलत्त ॥  
२१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंजयनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥  
सिरि पात्तजिणो अन्नण, पुरठित्त निठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयम सु  
इम्म पमुहा, गणवइणो विद्धिअ जव सत्तमुहा ॥ सिरि वद्धमाण  
जिणति, व सुत्तयंतं कुणंतु सया ॥ २ ॥ सकाइणो सुराजे, जिण



वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघसंति  
 करा ॥ ३ ॥ सिरि थंजणय छिअ पा, ससामि पयपन्नम पणय पा  
 एणीणं ॥ निहलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरज डुरिआइं ॥ ४ ॥  
 गोमुहपमुक्क जस्का, पणिहय पणिवक्क पक्क लस्का ते ॥ कयसुगु  
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पणिचक्का पमुहा,  
 जिण सासण देवयान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु  
 संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चउर, पुरविन्न वद्धमाण  
 जिण ज्ञो ॥ सिरि बंज संति जस्को, रक्कज संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तिगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया तान ॥ निबुड पुर प  
 हियाणं, ज्ञाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि  
 पहरि उब्बिण कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण जग्ग संघस्स, सब्बा ह  
 रज विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिब्बवइ वद्धमाणो, जिणसरो संगण सुसंघेण  
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रक्कज जिणवत्तहा पढुमं ॥ १० ॥ सो  
 जयज वद्धमाणो, जिणसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय  
 देवा, पढुणो जिणवत्तहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवत्तह पाए,  
 ज्ञयदेव पढुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणसरव, द्दमाण तिब्बस्स  
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मज्जंति कुणंति जेय कारंति ॥  
 मणसा वयसा वजसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त  
 णो नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,  
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठे स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसद  
 रविसनिष्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेजवे  
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त  
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत  
मोविताम ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले  
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ  
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो  
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्दुम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना  
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रयोऽहम् ॥ वा  
लं विहाय जलसंस्थितमिन्दुर्विब, मन्यः क इहति जनः सहसा  
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्ग शशांककांतान्, कस्ते ह  
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कष्टपातकालपवनोद्गतनक्रचक्रं, को  
वा तरितुमलम्बुनिधिं जुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ  
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी  
र्यमविचार्य मृगोमृगैर्दं, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्  
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव सुखरीकुरुते  
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाग्रत  
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,  
पापं कृणात्कथमुपैति शरीरज्जाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी  
खमशेषमाशु, सूर्याशुजिह्ममिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति  
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥  
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदभिर्दुः  
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि  
जगतां उरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रजैव,  
पद्माकरेषु जलजानि विकाशज्जाजि ॥ ९ ॥ नात्यजुतं जुवन  
जूषणजून नाथ, जूनैर्गुणैर्जुवि जवंतमज्जिष्ठवंतः ॥ तुष्ट्या जवंति  
जवतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति  
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति डुग्धसिंधोः, क्षारं जलं  
जलनिधेरशितुं क इहेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिज्जिः परमाणु  
जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामञ्जुत ॥ तावंत एव खलु तेष्य  
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क  
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगद्वितयोपमानम् ॥ विवं  
कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्भासरे ज्वति पांडुपलाशकट्यम्  
॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, गुत्रा गुणास्त्रिभुवनं तव  
लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति  
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,  
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कट्यांतकालमरुता चलि  
ताचलेन, किं मंदराडिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव  
र्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न  
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वंमसि नाथ जगत्प्रकाशः  
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टोकरोषि सहसा  
युगपज्जगंति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि  
मासि मुनींश्च लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,  
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव सुखाज्जमन  
व्यपकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकविंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
शशिनाहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि  
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जज्ञरान्रैः  
॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह  
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव  
दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री  
 णां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी  
 प्रसूना ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन  
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,  
 मादित्यवर्णममलं तनसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयन्ति  
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्ध्रपाः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं वि  
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक  
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग  
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजुवनार्चिहराय नाथ,  
 तुभ्यं नमः क्लितितलामलज्जूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व  
 राय, तुभ्यं नमोजिनज्जबोदधिदोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो  
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥  
 दोषैरुपात्तविधिधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो  
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं  
 ज्वतो नितान्तम् ॥ स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवितानं, विंबं रवेरिव  
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि  
 ब्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विलसदंशुलताविता  
 नं, तुंगोदयाद्दिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचाम  
 रचारुशोभं, विब्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु  
 चिर्निर्जरदारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उत्र  
 त्वयं तव विज्जातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता  
 पम् ॥ मुक्तारुलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर  
 त्वम् ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमन्वपंकजपुंजकांती, पर्युद्धसन्नखमयूख

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽधत्तः, पद्मानि त  
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इदं यथा तव विज्रूतिरज्रूज्जिने  
 ऽ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह  
 तांधकारा, तादृकुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्र्येत  
 न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ  
 शवताज्जमिज्जमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रिता  
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेज्जकुंजगलडुज्ज्वलशोषिताक्त, मुक्ताफलप्रकर  
 जूषितजूमिजागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु  
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं  
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्क्रुणमापतंतम् ॥ आक्राम  
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ वड्गत्तुरंगगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि जू  
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 जिद्रामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिन्नगजशोषित वारिवाह, वेगावता  
 रतरणातुरयोधंजीमे ॥ युद्धे जयं विजितडुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद  
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ ह्रुजितजीषणन  
 क्रचक्र, पाठीनपीठजयशोल्बणवारुवाग्रौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया  
 नपात्रा, ख्रासं विहाय जवतः स्मरणाद्भजन्ति ॥ ४० ॥ उद्धूतजी  
 षणजलोदरज्जारज्जुभाः, शोच्यां दशामुपगताच्युतजीविताशाः ॥  
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः  
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग्नकोटिनिघृ  
 ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग  
 तबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विप्रेऽमृगराजदवान्त्रादि, संग्राम

वारिधिमहोदरबन्धनोद्धम ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं जिषेव,  
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेऽ  
गुणैर्निबद्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो  
य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४  
॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ओ ओ जग्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व मेतत्, ये या  
त्रायां त्रिभुवनगुरोराहतां जक्तिज्जाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु जवताम  
ईदादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रोष्ट्र तेमतिकरी केशविध्वंसदेतुः ॥ १ ॥  
ओ ओ जग्यलोका इह हि जरतैरावतविदेहसंजवानां, समस्तती  
र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः  
सुघोषायणढाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन  
यमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाङ्गिणे, विहितजन्मान्जिषेकः,  
शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन  
गतस्त पंथाः ॥ इति जग्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि  
धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं  
इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, ग्रीयं  
तां २, जगवन्तोऽईन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै  
लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥  
ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विम  
ल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,  
स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग  
१५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि  
नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,  
एते अतीतः

## ॥ चतुर्विंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषज १, अजित २, संजव ३, अजिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रज ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रज ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोद्विल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, ज इंकर २४.

॥ एते ज्ञावितीर्थिकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्जिह्वकान्तरेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुभंगला ५, सुस्तीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

( १३ए )

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणा १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धाधिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेन्द्रः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, कालो ७, महाकालो ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोध्या १३, अनुष्ठा १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षेरुशविद्यादेव्यो रक्तंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रज्ञातिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्विभूषणं गारकवृषभद्विपतिशुकशनैश्वरराहुकेतुसहिताः सलोकापादाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत



यश्च ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रघ्नातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिवंधु  
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु ॥ अस्मिंश्च ज्ञानं  
 मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस-  
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिः  
 द्विरुद्विमाङ्गल्योत्सवाः ज्वंतु ॥ सदाप्राडुर्ज्ञेयानि दुरितानि पापा-  
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना-  
 म्नाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाञ्ज-  
 लचिंताङ्गुणे ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे  
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेष्टु ॥ २ ॥ ॐ न  
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,  
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा-  
 जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेष्वातिम् ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्जवतु, श्रीराज-  
 संनिवेशानां शान्तिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-  
 यात्रास्नात्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू-  
 पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपात्रे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि-  
 वंधुः पुष्पवस्त्रश्वंदनाञ्जलिलंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां  
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति  
 ॥ नृत्यंति नृत्यं मण्डिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो-  
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणप्राप्तोहि जिनाजिषेके ॥ १  
 ॥ अहं तिष्ठयममाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह  
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु  
 सर्वजगतः, परहितनिरता ज्वंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,  
 सर्वत्र सुखी ज्वंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यंते वि-

प्रवक्ष्यामः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति  
श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हभ्रयो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं  
अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो  
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ  
र्हं श्रीं गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच  
नमस्कारः, सर्व पापहर्तृकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति  
मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क  
मलप्रज्ञसूरींशो, ज्ञापते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकजन्तोपवासेन, त्रिकालं  
यः पठेद्दिवं ॥ मनोज्ञलिपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ नू  
शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोज्जविवर्जितः ॥ देवताये पवित्रात्मा, य  
एमासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्वलाटके  
॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुचुन्दं  
मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा  
र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेष्टी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं  
गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशां श्रीजिनो रक्ते,  
दाम्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणांशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि  
त् ॥ ९ ॥ पश्चिमांशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थ  
कृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्ह,  
न्नाकांशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्तं तु सकलं कुलं ॥  
११ ॥ श्वन्नो मस्तकं रक्ते, दजितोपि विलोचने ॥ संज्ञ  
वः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनंदनः ॥ १२ ॥ उद्यौ श्रीसुमती र  
क्ते, दंतान्पद्मप्रज्ञो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो  
विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्ते, हृदयं श्रीसुशोतलः ॥ श्रे

यांसो वादुयुगलं, वासुगूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,  
 वनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशोतिर्नाजिमंमलं  
 ॥ १५ ॥ श्रोकुंथुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिखरूपृष्ठिं  
 शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि  
 भरणद्वयं ॥ श्रोपाश्वर्धनाश्रः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥  
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेषपापेभ्यो, वी  
 तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक  
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे  
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्तमाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी  
 मिते ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहणार्दिते ॥ नद्युक्ता  
 रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुद्वाय, यः  
 स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥  
 जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रज्जराजेंद्र, श्रियं स  
 लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुद्वाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत  
 ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्जराख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित  
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरूपक्ष्मीयवरेण्यगङ्गे, देवप्रज्जाचार्यपदाब्जहं  
 स्तः ॥ वार्दीञ्चूनामणिरपज्जनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्जराख्यः  
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

## ॥ अथ स्तोत्रोमैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वटानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरुं अयाण चिंतज मणजितरिं, किं चिंतामणि  
 कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघव,  
 रयणरासि कारण किसे सायर जल्लंघव ॥ चवदे पूरव सार युग लद्ध  
 ए नवकार, सयल काज मडिवल सरे उत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुख अणंत  
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विवसै बहु  
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो  
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि  
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मझ चिंतवै कमल नर,  
 कंचणमय अठइल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ  
 रिहंतदेव पञ्चासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरैवि पढम पय  
 चिते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुख,  
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर सुख ॥ ३ ॥ पनर जे  
 य तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विदुमतणे वन्ननिय सो  
 दग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धिं पुढे दिसि, सयल लोय  
 तिह नरहि होइ ततखिणसैंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर स  
 हू जगधंद, मणमूली उग्रय करे बुद्धि हीणजाचंव ॥ ४ ॥ दक्षिण  
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित  
 उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पहरे  
 पीलावत्थ तेह मन वंठिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि दुवेए  
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर वत्त सिर  
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाव सीस पाढंता पञ्चिम, आराहिजे  
 अंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु  
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रस्के  
 विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल  
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विज्ञाग सामला वड्ढा, जि  
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिह ॥ मण वयण काएहिं  
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥  
 अनंत चोवीसी जग हुइ होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ  
 गणोहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरोहिं ॥ वायव दिसि जाएह  
 मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दि  
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु  
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरणिंद हुठ  
 पायालह सामी, समलोकुप्र उपन्न जित्त सुर लोयह गामी ॥  
 संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव अयो  
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन बंठिय करे जोगी लियो मत्ता  
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैगे  
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिटि हुई फूल माल नवकारह  
 नामी ॥ बाढरु आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही  
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत  
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर  
 धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि  
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि  
 व्याधि ग्रहतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे  
 नासै एणही मंत, मयणासुंइरितणी परे नव पय जाण करंत ॥  
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाशहीण  
 उठमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिठराठ महिमा  
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर  
 गणहर पणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण  
 गिरुन नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु  
 अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण बल्लह  
 सूरि ज्ञणे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डुक्क  
 निवारण ॥ जल अल महियल वनगहण समरण हुवैइक चित्त, पंच

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-  
 मन्मलमन्मितः ॥ १३ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥  
 नमामि विंबमाहित्यं, ललाटस्य निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं  
 शांतं, बहुलं जाड्यतोद्धितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर-  
 घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-  
 त्रिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं  
 त्रिरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च,  
 त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥  
 सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्धूतं प्रातिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं  
 बोतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥  
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदारुणस्तु-  
 वर्णितः, सरेफो विंडुमन्मितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-  
 मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषजाद्यां जिनो-  
 त्तमाः ॥ वर्षैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥  
 नादश्चंद्रसमाकक्षो, विंडुतीलसमप्रज्ञः ॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णान्नः  
 सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, धिनीलोवर्णितः स्मृतः ॥  
 वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थरुन्मन्मलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,  
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसंततमौ  
 ॥ २४ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुष्पयौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-  
 संलीनौ, पार्श्वमल्लोजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थरुतः सर्वे, हर-  
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाहरं प्राप्ता, श्रुतुर्विशतिरर्हतां ॥ २६ ॥  
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविर्वर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेश्च, ते ज्ञवंतु  
 जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥  
 तयाज्ञादितसर्वाङ्ग, मामाहिनस्तुलाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यं  
 मामाहिनस्तुलाकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुलाकिनी ॥ ३० ॥

देव० मामां हिनस्तु काकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामां हिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामां हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामां हिसंतु पक्षगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामां हिनस्तु हस्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामां हिसंतु राक्षसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामां हिसंतु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामां हिसं-  
 तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामां हिसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामां हिसंतु जूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्जा, तस्या या  
 ज्ञुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्यद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥  
 पातालवासिनो देवा, देवाञ्जूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे  
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाञ्जुत-  
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गतास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-  
 वतः ॥ ४५ ॥ लङ्गी श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी च मी सरस्वती,  
 जयांवाविजया नित्यां, क्लिप्ताजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-  
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौंडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-  
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले डुगें गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यब्र-  
 ह्मा निजं राज्यं, पदब्रह्मानिजं पदं ॥ लक्ष्मीब्रह्मा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णं  
 रूपे पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,  
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ जूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्ञीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुञ्जैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्वैतैः, मुच्यते नात्र  
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टैः, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्पं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥  
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रातः, र्ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्जवंति न चापदः ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 तन्महातेजो, जिनविवं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंबे,  
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥  
 ६१ ॥ विश्ववंद्यो ज्ञवेध्याता, कळयाणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा  
 स्थानं परं सोपि, ज्ञूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमु-  
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति रुषि मंजल स्तोत्रं ॥ कैयकश्लोकनिराकृत्य  
 मूलयंत्रकळयानुसारेण लिखितं गणि । श्रोकमाकळयाणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ते तस्यैव ना  
 मानि । मौक्तिसौहार्दजलाशया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि  
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंको निरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं  
 कारो । निर्विकारोऽपि निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्र  
 सृजुः ॥ ४ ॥ निर्वाहो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क



प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।  
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिन्द्यो महत्पूतात्मा । जगत् शिखरशिखरः ॥६॥  
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुभं  
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः अ-  
 कथ्यो विष्णुः ॥ अमूर्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥  
 अनिन्द्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो ज्ञवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,  
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान  
 लोचनः ॥ अवेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्पविवर्जितः ॥ १० ॥  
 अजेयसर्वतो ज्ञः । निष्कषायो ज्ञवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥  
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस  
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत  
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः ।  
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी  
 पितामहः ॥ सर्वज्ञूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं-  
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य-  
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥  
 गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकैव-  
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र-  
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स-  
 र्वेशः सतसुखावासः । जिनेदो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्गूनपरम  
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य-  
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो  
 सुवर्णाधोशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।  
 विसुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगीशो नादिसंसिद्धः । निरीदो ज्ञानगोच-  
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वताधुजनैर्वन्द्यः ।  
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितकरः ॥ १३ ॥  
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रविदानंद ।  
 चैतन्यश्चैत्यवैजयः ॥ १४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह  
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ १५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म  
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा  
 रमकः ॥ महर्द्विको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ १७ ॥ महा  
 पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।  
 महामहिम अच्युतः ॥ १८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि  
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ १९ ॥ महासूरो  
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ  
 द्यो महागुरुः ॥ २० ॥ निर्मारो मारविहंसो । निष्कामो विषयाच्यु  
 तः ॥ जगवंतामहाघ्रातो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ २१ ॥ परमात्मा  
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआ  
 रमकः ॥ २२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना  
 कृतिं नाहरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २३ ॥ व्यक्ताव्यक्त  
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्  
 धर्मनायकः ॥ २४ ॥ बोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥  
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विजयः स्तुतः ॥ २५ ॥ वर्णातीतो  
 महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश  
 नायकः ॥ २६ ॥ वरेण्यो जगद्विध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥  
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ २७ ॥ विश्वदृक् जग्यसं  
 बंधः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र  
 काशकः ॥ २८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि

षप्रपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक  
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाय  
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ॥  
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज्ञ  
झादुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारम्ये परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम  
पि गुणगुरौर्गन्तुमनलम् ॥ नलम्नं लम्नं त्वाधिपमिह नयैस्सर्वकलनं  
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वाग्मृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं  
किल निरवकाशोप्यहमिहो । द्यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच  
वचः । शृणीयां सह्यं तत्तनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्थात्तन  
यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांशामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु  
ना । सुनामन्नोदुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोत्तानो जु  
वनजवने नो वृषज्जरं । व्यधामोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥  
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । ऊगन्नय्यारामेमरकुरुद्वामे  
यजिनपाः ॥ इतोऽग्राह्यामे शितरत्नमकामेषुविजयो । त्वमर्काली  
ज्ञामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरमपारे  
जुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारेकेतारे  
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे जवदहनवारे कुरुकपां  
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्तारान  
हिमिधुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलद्यस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता  
। मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसज्जवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे  
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥  
तमालाज्ञोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु  
तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकायंकिरवगणहंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहाव्रततिपरशुकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरै  
 ददानंकंकहोपमसुरमराखंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगार्त्रं  
 ज्ञचकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंछात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं  
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्  
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वञ्चन्दंद्गुदकज्वैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स  
 फलजनुषस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज्ञ  
 वारण्येदन्तकथमपिज्वंतंनन्ददृशुः ॥ १० ॥ नजानेदंनेतः कुमततिमर  
 प्रावृतदृशां गतिर्मूर्द्धकाणादरहरज्वित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य  
 र्जिमतफलोत्सर्जनपरं त्वदाख्यांनोचितामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः  
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानीमयिवितनुतात्कामपिरुपां ज्ञवास्ताघोदत्व  
 चलनिपतितं प्रोद्धतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर  
 णः शरणयोसिश्रेयान्प्रनुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा  
 धरितकनकाहार्यमहिमा हिमाखोप्रान्त्याब्धि प्रतिजगत्गजोरत्ववि  
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः  
 कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविज्रहोर्धंपरमपुरुषः सिद्धिर्न  
 गरीं गरीयः सात्रज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्तुंकर्माष्टकरि  
 पुवर्जंज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीज्जरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥  
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज  
 विनामोद्दशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसज्ज्जी  
 यात्पार्श्वप्रचुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीज्जोलोकोत्तरपद  
 मुपेतःसकलवि । ह्रवित्रंदोषालोयवसलवनेप्राप्तविज्जवः ज्ञवध्वस्त्यै  
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो जितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुणै  
 र्गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ ज्वन्तंसद्योग प्रथि  
 तपदवीचारिनिवहा अजस्त्रविश्रामंप्रणिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने  
 चन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

एताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकजुरुप्रकाशोधतमसं हरद्वौंकुर्ब  
 न्नमलकमलोद्वासमयकम् प्रबोधं व्यातन्वनिततः करतः पंकदलनो ज  
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलं मे संमयन्तः ॥ १८ ॥ नितान्तं सन्तापं स  
 मतनुमतांश्च न्नमृतशुः कलाजिः संपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो  
 षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताद्यामापुत्रः सपदि विपदस्तार  
 कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति महीजन्मातङ्गा  
 स्येयप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिदददविरंतराजतनयो ह  
 यातो तोलोकेतनुजवनमाप्नोति बलवान् ॥ २० ॥ धरादित्येशानः शु  
 ज्जउरुविजोगौरकरणः सदापायाद्वैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः  
 स्फारश्चोकस्तुतिसमुचितो ज्ञानुतनय स्तमो विघ्नध्वंसी नकुशलकरः  
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽथेन्यस्त्रिदसविसरं ज्यौवरतया सि  
 लोकेशो नूनं त्रिजगदवनात्वंकमलजः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज  
 न्माधिवसना चतुर्बुक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योऽस्युपदिशन् ॥ २२ ॥  
 प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्ध्यश्रीयोगात्मकमलनेलपेसो  
 सिजगवन् ननाकश्चिद्दिश्वतिशयजरचितस्त्रिभुवने जवाहृद्वीगीतः  
 परमपुरुषो तोहरिद्वयैः ॥ २३ ॥ महेशानोऽसित्वं त्रिभुवनजनैकाधि  
 पतया शिवः शश्वन्मृणां परमपददानैकसुविधेः असित्वं सर्वज्ञः सकल  
 जगदर्थो धकलना न्नशूलीनोचोद्यो नचपशुपतिर्नो विषमदृक् ॥ २४ ॥  
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता द्वितीयाग्रकोणारुहमहि  
 मत्तारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसजः कृतकुमतज्जगः सुमनसां हिताया  
 शेषाणां सुकृतपदवीत्वंककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राहोरात्रं बहु विपदम  
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्र कसद्वरिहरादिः सुरगणः सकर्षांनाकर्षामित  
 चरितताधूर्त्तनिबद्ध प्रतारीसदोषः मित्तसततरोषः स्थितिदतः ॥ २६ ॥  
 समग्रामग्रामप्रजवज्रयदो बोधरहितः सरुग्जव्यघ्रेषी पुरुडुरितकृत्मा  
 नकलितः पुरामोहान्नूतश्चिरमिहसज्ञाहीनमहितः सदेवोऽप्रायत्वंकथ

भपिसमासादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रजोर्किंवामेतैरज्जिमतविधानेनसतरे  
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोलिर्मैत्वत्यहनजयुगले  
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८ ॥ अदब्रंद  
 द्वांसिन् इविणज्जरमडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो  
 दधत्सौवर्णानामुपरिनिक्षिप्तानांक्रमयुगं पुनर्निर्लोप्तानांधुरिसुमतिमद्भि  
 स्त्वमुदितः ॥ २९ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्न्यंसुवरण त्रयी  
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल  
 ह्मणांशिदधत कुतस्तैरैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं  
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्रवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्च  
 रत्तरम् कतेनिगैथत्वंप्रशमरसचाद्वेस्त्यमुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित  
 वेदंतुचरितं ॥ ३१ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगदा  
 रिद्याभिं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु  
 ग्मं सुधादया नतर्षं स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग  
 त्येकाधारादितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि  
 ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकणहत् जवेवेशस्तोर्षोपिचनिश  
 पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अदीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना  
 मनाक्यस्येद्भक्तोयदिधनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुंरु  
 तेतंस्वपसमं समाङ्गल्यंवाथप्रजवतिनकः स्वाभिरुपया ॥ ३४ ॥ प्र  
 लापायाहुद्धास्तवगुणगणान्जान्तिविशदा स्त्रिलोकीभूजानेसुरपयमणो  
 ज्ञानवश्व रसज्ञानांक्रोव्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टेसख्या  
 तुमदरपरार्थंतुसरदां ॥ ३५ ॥ नमस्तुभ्यंसंसृत्पतनुतटिनीतारणतरे  
 नमस्तुभ्यंजीमामयसमददन्ताबलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तातिमधुरिमदासी  
 कृतसुधा समुद्रायामुद्दृश्युदवासिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्  
 महिमालयायसुमनः सन्दोदशुश्रूषितां ह्रिदन्दायकलिभिदेजगवते  
 ज्ञव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुज्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीदितं  
 ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा भ्ररनिर्किततारकराजगणः कृतव  
 क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द ॥  
 जवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये  
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यत्वामचिन्त्य  
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा  
 दप्रसादसन्नुषरधुनाशदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती  
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकट्टरुनामगर्भैवसंततिलका  
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रज्जुस्तवः ॥ अहार्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
 यरे नज्जोमासकृष्णोगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेतपदिरपु  
 नाथाद्यामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदजरतः ॥ १ ॥  
 इतिश्री पार्श्वप्रज्जोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

## ॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंनरीठ मु  
 निंदो । वाली पञ्जुन्न संबो जरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो  
 कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम  
 लगिरिमहं तिडमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिद्धां

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंजणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम  
 सिरि पास सांम, राजे अजिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अजय  
 देव संठवियाणं दिव थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं  
 न्धिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥  
 आराहत्त जदि एग मण, पावो पद कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला  
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति  
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥  
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंमरीकनी ज्ञाण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं  
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर निच । तीरथ सिख  
र समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु ।  
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु  
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥  
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाज । समरुं सुखकारी ॥ ज्ञावी  
जिनवर जरहखित्त । मंरुण मणिधारी ॥ १ ॥ लांगन वर्ण सुदेह  
मान । धिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमान । जिनराज  
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जाण ॥  
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामाक्षे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा जूतं  
रूपं जगवदज्ञिषेयं जवतिय ॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं  
निराकारं शस्वज्जप नरपते सिन्धुतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्दनोघा  
। प्रह्लाहितसकलजूतलकलंकाः ॥ मुनिजिरूपासित्त्वचरणा । सर  
स्वती हरतु मे डुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥



( १६४ )

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैशाणां । साधूनां वंदनेन  
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महे यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रह्णा  
लितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनैः  
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर  
पूज्या नहीन, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,  
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥  
॥ २ ॥ जीवमा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा  
नमे परजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें,  
बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥  
जगमें तीरथ दो वमा, सेतुंजो गिरनार ॥ ठण गिरि रुषज समो  
सरघा, ठण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो  
मन रही लोनाय ॥ ज्यूं महर्षीके पातमे, लाखी लाखी न जाय  
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज  
हु न वावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांझ पंखियां,  
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार  
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकू, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्धि बुद्धि  
गोदे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,  
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लामले, वसे पहामा बीच ॥ १० ॥  
इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभुजीको नाम कल्याण ॥ सकल  
सज्जा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग  
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतनी, त्यूं त्यूं  
मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोनियो, लाखां ऊपर कोना  
मरती बेला मानवी, लियो कंदोरो तोरु ॥ १३ ॥

( १६५ )

दया गुणारी बेलनी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव  
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलनी, रोपी  
आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन नई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत  
संत आतम गुण नूप ॥ आचारज उवप्राय साधु समतारस धाम,  
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुजव अजिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज  
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद  
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परजव आणंद जगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि  
सम जात जोग बहु पुन्ये लक्षो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि  
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध  
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कढ्याणनिधि  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक  
जगगुरु मुज आशाविशाराम ॥ पूरव विदेहे विजय जली पुष्कला  
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥  
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण  
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते ज्ञविजन जे रहे प्रभु ताहरे  
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्तव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने उलसे मन मा  
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुज सधली  
जोम, पण प्रभु लग पडूंजीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आमा  
मूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रभुजी  
एटली दूर ॥ आंखरुली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

मली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटमली वहतो  
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ  
 ॥ जाणूं शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो अई ऊपरि  
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एण अवाय,  
 तो इण ज़रतना वासी ज़विजन पावन आय ॥ साहिबनी तो सुन  
 ज़र सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय  
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना  
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत  
 मराम, नहिंय विसारूं जीहुं ज्यां लगि ताहरूं नाम ॥ ७ ॥ साचे  
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि  
 महिर अवेह ॥ दूसम काल तणो डःख टाळो दीन दयाल, पालो  
 विरुद संजालो निज सेवकशुं कपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग  
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर उतां नवि आय  
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें  
 सकलने जाणे हज़ूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा  
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे  
 एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज उदयजिन चंड लहे नित  
 प्रेम अजंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणूं, सामि सीमंधरा तुह  
 जगते जणूं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सुप  
 साय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहशुं कूर अरिहंत शुं राखियें,  
 जिस्थो अठे तिस्थो कर जोरि करि जांखियें ॥ अति सबल मुऊ  
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं त्रिजवन धणी  
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगळे, रीश चटको चढे

लोभ वधरी नने ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम  
 अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे  
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत  
 जाणो जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥  
 कम्मवत्ति सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि  
 णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख  
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,  
 धर्म न कशाय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो  
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्न सही ॥ ६ ॥ घण कशाय माय  
 पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो  
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तह्न समोवरु नहिं अवर वा  
 ब्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजलुं, बारवर  
 परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उल्लुं,  
 किम करूं गम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ जौलिमा जगति तूं चित्त  
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन  
 वयण तन उल्लसे, दूरथी दूकना जेम हियमे वसे ॥ ९ ॥ जल  
 जलो एणि संसार सहू ए अठे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठें  
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त  
 आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं  
 नेह जे वात तुह्न जी कहे ॥ तुह्न पय जेटवा अति छणो टलवलुं,  
 पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज्ञा कागल करूं, हीरसागर तणां दूध खनिया जरूं ॥ तुह्न मि  
 लवा तणा सामि संदेशमा, ईं पण लेखिय न शके अठे एवमा ॥  
 १२ ॥ आपणो रंग जरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय  
 मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, ज्ञान ने कोरु प्रभु

( १६८ )

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुढ जवि मौढ वश नैह हुवे जेहने,  
समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम  
रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतुं  
ध्यान दियमे वस्युं, बापहुं पाप दिव रहिय करवो किस्वुं ॥ गम  
जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके  
रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा  
तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख जं  
मार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,  
एह में वात अरिहंत आगळ कही ॥ एवनी मारी जगति जाणी  
करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्धिवृद्धि,  
समृद्धि कारण, डरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति  
जात्रे, धुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी  
सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ  
शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप  
जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल  
न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥  
न्यान वडूं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,  
साचो सदेह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविदास, लोकालोक प्र  
काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणो किश्रुं ए ॥ ४ ॥ अधिक  
आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतुं ए, किरिया  
देशतुं ए ॥ न्यानी श्वासोद्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही  
ए, कोरु बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोळ्या

सूत्र मज्जार ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठे कही ए ॥ ३ ॥  
किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरु  
ए, शाख हूथे जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मज्जार, पांचमि अकर  
सार ॥ जगवंत ज्ञाखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल डूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥  
श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥  
मिगसर माह कागुण जला, जेठ आपाढ वैशाखो रे ॥ इण षट  
मासैं कीजिये, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु  
हारी देहरे, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजा ग्याननी, संगति  
हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोनी जावशुं, गुरु मुख  
करो उपवासो रे ॥ पांचमि पम्किमणो करो, पढो पंजित गुरु  
पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
आरंज ठाखो रे ॥ पांचमि स्तवन शुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पा  
खो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी  
रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव जवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे  
वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य  
जोगे रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन  
पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी  
कीजिये काउस्तगरली ॥ त्रण ज्ञान हरिसण चरण टीकी देइ  
पुस्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥  
१ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति बीठांगणां, पांच पुठां रे  
मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूपा रे कांवी वारू वतरणां ॥ उल्लाखो ॥  
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप  
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पनुपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच  
 कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं  
 उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहेरे रे स्नात्र महोत्सव कीज  
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल  
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लाखो ॥  
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जंगार ए, आरति मङ्गलशा  
 ल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरु अंगदू  
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जोगे  
 रे गीत रसाल गवामीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,  
 ज्ञान दरिस्तरा रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लाखो ॥ साधियें मारग  
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान  
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे  
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंभित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥  
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेतरो ॥ में  
 शुण्यो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेत्तरो ॥ जयवंत श्री  
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय  
 सुंदर, जगति ज्ञाव, प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त  
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥  
 पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥  
 मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥  
 चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान  
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ  
 प्रसाद करिने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण  
 पासुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमती पास ॥  
 सेवा तारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोज्जागी  
 साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा बे ॥ ए आंकणी ॥  
 सुंदर सूरति मूरति सोदे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें  
 पेखतां मानुं, नव नवि बबिय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥  
 जव डःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी  
 गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 दूरअकी हुं आयो बहिने, देव लहो दीदार ॥ प्रारथियां पढ़िने  
 नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रजु  
 मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे  
 रवि देखिने जिम, जलवर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें  
 तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा  
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा  
 रस्ती, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत  
 रेशं बावीशें, बदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले ज्ञावशुं,  
 मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी



विघ्ननिवारी, परंपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारीता, मोरी स  
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय  
॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल  
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियमुं  
हींसे केम ॥ वि० ॥ १ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर  
खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ढवे रांक मनाय  
॥ वि० ॥ २ ॥ रत्न ठते कुण काचनें जी, अलवे पतारे हाय ॥  
कुण सुरतरुथी ऊठनें जी, बावल घाले बाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ देव  
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो  
जवें जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥  
बारे परबदा बैठी जुम्नी, मागशिर शुदि इग्यारश वनी ॥ १ ॥ म  
ल्लिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर  
दीक्षा लीधी रूवनी ॥ मा० ॥ २ ॥ नभिने ऊपनुं केवलज्ञान,  
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा०  
॥ ३ ॥ पांच जतर ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे तिम  
हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनगत  
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथि वे ए तिथि  
जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज अ  
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा० ॥  
६ ॥ मौनपणें रक्षा श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ  
॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घनी  
 ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक  
 उब्दास ॥ ए तिथि मोह तणी पावनी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं  
 कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपकरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग  
 गुरु पाये पनी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे छात्र करीजें वली, पोथी  
 पूजीजें मन रली ॥ जुगतिपुरी कीजें दूरुमी ॥ मा० ॥ ११ ॥  
 मौन इग्यारस ग्रहोदुं पर्व, आराधां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पञ्च  
 रक्षास करो आत्मनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसज शोक इक्याश। समे,  
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो व्यादमी ॥ मा०  
 ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

### ॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिजुवनके स्वामी  
 ॥ संतहि संत जपै सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥  
 सांत जपीने कीजै कांमा, सोइ कांम हुवै अन्निरामा ॥ शांति ज  
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जशकी  
 प्रजु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति  
 तणा गुण गावै, रुद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रजु  
 शांति सुहाई, ता नरकूं कुठ आरति नांही ॥ जो कबु वंढै सोही  
 पूरै, दाखिइ दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अखख निरंजन ज्योति  
 प्रकासी, घट२ के ज्नीतर प्रजु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि  
 जावै, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ नार दिया सबही ह  
 थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राचै,  
 राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कह्यौ देवा,  
 कायर कुंशु न एक दखेवा ॥ रुद्धि सहू प्रजु पास लहीजै, जिह्वा  
 हारी नांम कहीजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम जायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तज्जी परिग्रह जए जग नायक, नाम  
 अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै,  
 नाम देव अरिहंत जणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहाँजै, सेवक  
 जाँण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा, दूषण  
 नहि इक माँहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण  
 न रहै प्रभु एकण गंभी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै,  
 पिण सुपनो कबहु नवि पेलै ॥ रीस विना बाबीस परीसह, सैचा  
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ माँन विना जग आँण मनावै, मा  
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोअ विना गुणरास ग्रहीजै, त्रिहु  
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर बत्र धरावै, नाम  
 जती पिण चमर दुलावै ॥ अजय दाँन दाता सुखकारण, आगै  
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म  
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लख धणी  
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना कितही  
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज  
 पगदावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं  
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेग नही निगुणा  
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्विजुन कहिये, तेरे गुणाँको पार  
 न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक  
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुँलोकनखो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन  
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रभु तारक बै वरवीरा  
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स  
 वायो ॥ कर जोमो प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं  
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसायरथी पार उतारो  
 ॥ श्रीदयलापुर मंरुण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन जायै ॥  
जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥  
इति श्रीशान्तिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासो आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ गाल ॥ विलसै कृद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार  
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण  
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पने जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै  
॥ आसातना चउरासी ठालै, साश्वता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥  
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि  
कला सीखण हूँ, कुरखो तंबोल जखे शूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वनी  
लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु  
धिर क्रिया, चांदोनी नाखै चामरियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये  
कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण बिसरावै, अज  
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,  
नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह  
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, आपै  
बगणा ठमै हुंढणियां ॥ सूकवै कप्परु पप्परु वनियां, नासीय बियै  
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या  
वैतालीस लहै ॥ हथियार घमे ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रां  
धै ॥ ८ ॥ जांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरै ठत्र ने मंरुपमें  
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनै पनहो, चामर वीजै मन ठाम नही ॥ ९ ॥  
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, जूषण तज आप कुरूप शियै ॥  
दरसनधी सिर अंजली न धरै, इगसामै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥

भोगो सिरपेच मोरु जोमै, दमिये रमने वेते होमै ॥ सधणासुं  
 जुहार करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुनौ ॥ ११ ॥ धरे ध  
 रणो जगमे उल्लंघो, सिर गुंथै बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पदरे चावनि  
 यां, पग ऊटक दिरावै दुखनियां ॥ १२ ॥ करदम छुदै मैथुन मंमै,  
 जू आवलि अँठ तिहां बंमै ॥ उघामे गुऊ करै वयदा, काढे व्या-  
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालतो नीर धरै, अंधोले  
 पीवा ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदनजाध्यमें  
 जे ज्ञाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी आवग सगति बतां, आसातन टालै  
 बारसता, परमाद वसै कोई थायै, आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५ ॥  
 तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री जोग हुआ ॥  
 जूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर माहि वसै ॥ १६ ॥  
 इव्यत ने ज्ञावत दोय पूजा, एहनाहेज जेद कहा बूजा ॥ सेवा  
 प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥  
 कलश ॥ इम जव्य प्राणी ज्ञाव आंणी, दिवेही शुज वातना ॥  
 जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ  
 कर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवजाय श्री प्रवर्त्ताह वंदे, जैन  
 शासन ते बली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमं रुपज जिनेसर पाय, धनुष पांचसै उंची काय ॥ बी  
 जो अजित जिन मुऊ मन वसै, मांन धनुष साढाचारसै ॥ १ ॥  
 तीजो संजव सुख दातार, उंची काय धनुष सो व्यार ॥ अजिनं  
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम  
 सुमतिनाथ जगवान, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रभू पूरै  
 मन आस, देह धनुष दोयसे पच्चास ॥ ३ ॥ साभि सुपारस सत्तम  
 होय, देह प्रमांश धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र  
माण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमै जग सवे, देह प्रमाण ध  
नुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री अयांस नमूं उल्लासी, उंच प्रमाण धनुष  
तनु असी ॥ वासपूज्य वारम जिन चंद, मान धनुष सितर सुख  
कंद ॥ ६ ॥ विमल २ गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान सरीर  
॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥  
पनरम धर्मनाथ जगदीस, मान धनुष जसु पैंतालीस ॥ शांति  
करण शोखम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोजंति ॥ ८ ॥  
सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पैंतीस उदार ॥ अर अ  
वारम दीनदयाल, तीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि  
नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम  
मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवा  
सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम  
श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांश दिशंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री  
पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चौवीसमा जिनवर श्री  
वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो  
वीस, प्रशमै प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुद्धि सिद्धि उठ  
रंग, रंग विनय प्रशमै मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चौवीस जिन  
देहमान स्तवन ॥

॥ अथ चौवीस जिन आयु प्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ शषन्नदेव प्रणमूं जिनराख, लाख चोरासो पूरव आय ॥ बी  
जो अजित जसु सूत्रै साख, आठ बहुतर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती  
र्थकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अजिनंदन पूरै  
मन आस, आठ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम  
जगदीस, आठ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए थित

( १७८ )

जाण, लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब  
वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय,  
इक लख पूरब शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी  
लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,  
वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस,  
वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिशंद,  
लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस श्रिति पच्याणवै,  
श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि  
सहस पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनि सु  
व्रत परमाण उदार ॥ वीस सहस नमिजिन धित जणी, वरस स  
हस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस  
बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-  
सर बार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-  
वीस ॥ त्रिदुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस  
॥ १० ॥ सिद्ध लही सहने धन धन, गणधर चवदेसै बावन्न ॥  
सहुने मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख  
चमाल ब्याल हजार, धरधिक सह साधवो सो च्यार ॥ आवक  
लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोनि  
आवका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध  
सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणों ॥ १३ ॥ इति श्री  
चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं,  
पञ्चणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिखै निसतारं, आपण सकल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रुषज अजित संजव अ-  
जिनंदन, सुमति पदमप्रजु नयनानंदन, सत्तम तेम सुंपास ॥ चंड-  
प्रजु ने सुविध शांतव जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,  
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-  
थुनाथ अर मल्लि सुदंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए  
जिन चोवीस ॥ जग वल्ल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम ज़रत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो  
ठदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कोस, ठठो  
कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥  
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय  
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र ज़रत  
सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोइता सरग मजार ॥ ७ ॥ स-  
जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामो, ते  
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्ठि जांण, द्विपृष्ठ दूतरो, तीजो स्वयंप्रजु जा-  
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये  
ए ॥ ९ ॥ ठठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लहमण नांमे  
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए  
पिण नमुं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला  
पांच ठठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो  
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें जइ, सुप्रजु सुदर्शन,  
आनंद नंदन शुज मती ए ॥ रामचंड बलजइ, बलदेव ए नव,  
आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलजइ ब्रह्म देवलोक,



काल जसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक  
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ १३ ॥

॥ बाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वयीव नै तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज बलय  
प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिंसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक  
गति गामिया ए, ते पिण जावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ बाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांते नै कुंथु अरि एह जव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोय  
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणसाव  
पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव कैरां  
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै वता ॥ तीन चक्रधर तणां  
मिद्विय बारै टढ्या, एम त्रैसठना तात इकावन मिढ्या ॥ १६ ॥  
तीन चक्रवर्तणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी अई साठ लेखै इसै  
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे घरे, तेह सुरपद लही मोक  
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम युग्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-  
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रैसठ शलाका पुरुष उत्तम  
जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो  
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रैसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला  
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुज मन जे  
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणैस ॥ स्वामी श्री रिसदेसर,  
जब नयणे निरखैस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निन्नाणूं वारं ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥  
 इण गिरचनमासे रद्धा, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें  
 शिव सुख सांश्वता, गणधर श्री पुंररीक ॥ पुंरगिरि तिण कारणें;  
 जंगति केंरो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू;  
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखरं समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥  
 श्री० ॥ ६ ॥ आवच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग  
 वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच  
 महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर  
 करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इण मंगरै, मुनिवर कोमा-  
 कोमि ॥ पाज चढंता सांज्रै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥  
 जे बाधेण प्रतिबुंजवो, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवच मिळी,  
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर  
 सेवक तासे ॥ राजेसमुद्र गुण गावतां, अविचल लोल बिलास  
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंरुण स्वामी रे; जग जीवन अंतरजामी  
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनामी, यात्रोमा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्ण जिनैसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रजु  
 समवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन वखाणो रे,  
 पांच कोमिसुं पुंररीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०  
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते  
 रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने  
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमी

( १८३ )

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम जरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु धिर  
थाटे रे, पांम्हा मुगति तशो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोष सहस  
मुनी परवारे रे, आवच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार  
॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सोधा बहु यादवसे रे,  
ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांम्ह इण गिर  
आया रे, सीधा नव नारद रुषिराया रे, वलो संव प्रकून कहाय  
॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते  
रे, इम ज्ञाष्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही  
कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या०  
॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित्त पहारो रे, पदचारो ने जूमि संघारो  
रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम गहरी जे नर  
पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले  
॥ या० ॥ १३ ॥ धनश ते नर ने नारी रे, जेठे विमलाचल इक  
तारी रे, जइये तेहतशी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद  
सूरि सुपसाये रे, जिनदर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण  
गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतनी अवधारो रे।  
जगना तारु ॥ मुऊ तारो जो कृपानिध स्वांमी, जग जसवार  
प्रगट ठै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥  
निज गुण जोक्ता पर गुण लोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥  
अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०  
॥ १ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥  
ज० ॥ तुम रीजावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ १ ॥  
मु० ॥ काल अनंत गहो ऐकैइ, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेष धरया डुख धामी रे ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंडीपणो  
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंरुक मांदि जमियो, अब तो हूं पिण  
 हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जव नाटक नित करतो नव नव,  
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,  
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक  
 देखी रीज्या, तो मन बंभित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या  
 तो मुज ज्ञाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥  
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखना नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता  
 सेती सुंम ज्ञेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 तुज सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥  
 तो मुज करमतणी गति अवली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ए ॥  
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥  
 ज० ॥ सुगुण सेवकना बंभित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥  
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥  
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेट्या, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०  
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुषजदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोरी हो कहुं मननी वात  
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०  
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्यो, जव मांहे हो स्वामीसमुझ म  
 ऊर ॥ डुक्क अनंता में सहा, ते कहितां हो किम आवे पार ॥  
 वी० ॥ २ ॥ पर उगारी तूं प्रभू, डुख जंजे हो जग दीनदयाल  
 ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहाल  
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

१॥ स्वांम ॥ हुंतो परम ज्ञेय ताहरो, तिण तारो हो नही दीखो  
 काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूज्या, जिण कीधा हो तुज  
 ने उपसर्ग ॥ संक दियो चंरुकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसाखो गुनहीण घणो, जिण बोळया हो तोरा  
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए. कुण बै इंडजाखियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते. गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो बजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उभाप्या ताहरा, ते ऊगळ्यो हो तुज साथ  
 जमाळ ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाळ  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी  
 पाळ ॥ तिरती मूकी काबळो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाळ ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि बूहय्यो, चित चूको हो चारित्यो  
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नंदिषेण पिण ऊयरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखनी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊयरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरनी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पळै, नही तेहवो हो मुज दरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार बै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

बी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जेवे हो सम विखमी  
 ठाम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंगित  
 काम ॥ बी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डुख  
 जाये दूर ॥ तुम नांमे वंगित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर  
 ॥ बी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंडन, सेवतां सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज  
 समयसुंदर ॥ संश्रुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 चीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ बाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ प्राल जिनेसर, एह कलं अरदास जी ॥ ना  
 एण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण संसार समुड अथागै, जमियो जवजल मांहिजी ॥ गिलगिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुऊ आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतयो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ उगलीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तीर्थच ने मानव, एह अथा इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषो  
 नें वैमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तीर्थच  
 अने नर, परयासा जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आजलै नर तिरि, निहचै  
 देव ज थाय जी ॥ निज आजलै सम के उगै, पिण अधिक नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्तिम तीर्थच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरज्ज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥  
 ॥ ८ ॥ आठ संख्यातै जे गरज्ज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर  
 पृथ्वी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ पर्याप्ता  
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण  
 आगै, अधिकांई कहुं देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी  
 मांमी सुर, एकेंडी नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,  
 मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसारा।दोय गति  
 नें दोय आगत जांखियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-  
 ख्याते आयु परजापता, पंचेंडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-  
 ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग  
 जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी  
 लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा  
 पणी, ठठि लग छी जाय ॥ सातमियें माणस के मागलो ॥ ऊप  
 जै गरज्ज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंरुकै,  
 तिरयंच के नर थाय ॥ तेपिण गरज्ज ने परयापता ॥ संख्याती  
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे  
 फल प्रापति होय ॥ उल्कष्टे जांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही को  
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि  
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लहै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥  
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, ठठि देसविरत ॥ सातमी  
 नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आञ संख्यातै नर सहु दंरुके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥१०॥  
 तेउ वाञ्छ दंरुके बे तजी रे, दीजा जे बाबोस ॥ तिहांथी आया आवै  
 मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असं  
 खी आञपै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे  
 नही रे, अरिहंत ज्ञाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव  
 तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सग नरगना आया ए हुवै रे,  
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव अकी चवि ऊप  
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी  
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ बाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें  
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आञ संख्यातो जे नर तिर्यंच  
 विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण  
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कहा पदली तिण कारण न कहूं  
 हेव ॥ पंचेंडी तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां  
 जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आठ  
 कहावे, तिहांथी आञ संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवी  
 लहै सखविरति पिण मुगति न पावै, तेउ वाञ्छी आयो तेहनें  
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार,  
 पृथ्वी आञ वनस्पतीमांहे लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि  
 आवै दसे गंने, थावर विकल िरो नरमांहे उत्तपत पामै ॥ २८ ॥  
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंरुके एह, तेउ वाञ्छ मांहे आवो ऊपजै  
 तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाञ्छ बे जावै, विकलेंडी ते  
 दसमांहे जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितयो मिथ्यात्वी  
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी



पाणी अग्नि अने चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ  
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेईंड़ी तेईंड़ी अने चौरिंद्री मजारै, संख्याता  
वरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां नर  
तिरयंचमें रहियो, हिव मानवजव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हुवै बूटकबार, पिण बै माहरै  
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्वै अ-  
रिहत लाधो, हिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥  
तूं मन बंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में  
नवनिध सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इहू इण जव तूंहिज देव,  
सूधै मन इक होज्यो जव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कछु ॥

इम सकल सुखकर नगर जेतल, मेर महिमा दिन दिनें ॥  
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद  
समान वाचक, विजय हरष सुतीस ए ॥ श्री पासना गुण एम  
गावै, धरमसो सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंभक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मिळामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देखी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि  
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री  
वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही वांणो  
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिळामिदुक्कड तणी संख्या,  
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाउ, वणसइ  
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-  
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाख ॥ पुनवि दग रे वाउ तेज वणसइ, पण  
आवर रे वादर सुहम दसे आई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

अथा, बावीसे रे पञ्चतग अपञ्चतया ॥ उल्लाखो ॥ पञ्चत अपञ्च-  
तग वखाण्या, विगल तिय गह जाल ए ॥ जल अल खचर जुयंग  
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुनवी,  
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्चतय अ-  
पञ्चत जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया,  
किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव  
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥  
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर  
धिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ बारह  
विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रिवेके नव जण्या ॥ पञ्चत अपञ्चतग  
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र  
ए पनरह करम जूमि जाणोयै अलि कसि मसिहि आजीविकाए ॥  
हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिषा  
पाखती चारि १ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-  
गिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांदि विस्तरिए ॥ सात  
२ अंतर दोय पासै दीप ढप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ  
आगला जांणी मणुय पञ्चत अपञ्चतयाए ॥ एक सौ एक समुर्द्धिम  
जेद तीनसै तीनमणुआ अयाए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू ठे एह अजिहय आदिक दस  
गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥  
ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह डुइ-  
सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितउर आण ॥ मन-

( १८० )

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सदस सत सात-  
असी निःतंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किइ ॥  
इकलख सदसइग तिसय चाखीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत  
वर्त्तमान वलिकाल जे अइयविराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ८ ॥  
तीन लाख सदस च्यार बेसै अधिक तेघाय ॥ अरिहंत प्रमुख उह  
साखै उगुण ज्ञाय ॥ इम लाख अठारह वलि सदस चउवीस ॥  
इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मित्रामि डुकरंदेई जविक तरया जवजल नि  
धिकेई ॥ तरै अठै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लाखमी  
वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम  
करि निरमल ॥ सें मुखजाबै वीर जिणेशर ॥ सूत्रकरि गूथै ते शु-  
तधर ॥ ११ ॥ इम पन्तिकमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव-  
ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम  
सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुइंकरो ॥  
तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लहमी  
किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लज तवन करि  
इम संश्रुण्यो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मित्रामि डुकर-  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत बंदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु-  
तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्यादादशी  
संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त जंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ ५ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥  
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह  
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला  
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥  
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥  
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥  
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥  
 कालै ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥  
 कालै गर्जै अरे जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ कालै बोलै  
 कालै चालै, कालै जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधअकी दही धायै,  
 कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावै, अंत करे बे  
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचक्रवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत  
 रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥  
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, बै बै जूजूये जाते रे,  
 षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥  
 कालै बाळ विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे हुय  
 बलिश् छर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वज्ञाववादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वज्ञावे  
 नीपजे जी, विणसै तिमज निस्तंक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ  
 ५ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, बांजणि  
 न जणै बाळ ॥ मूढ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न वाळ  
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सज्ञाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय ॥

( १९१ )

अंग न लागै नीबनै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपंख  
कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,  
सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अशि-  
याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥  
॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस  
ततकाल, परवत थिर चल बाघरो जी, ऊग्य अगननी जाल ॥ १८ ॥  
॥ सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरै जी, बूनै काग पाहाण ॥ पंख जाति  
गणेषे फिरे जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय  
सुंदरी उपशमें जी, हरमे करै विरेच ॥ सीजै नही कण कांगनो जी ॥  
सकल स्वजाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,  
भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वजाव  
प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, ज्ञव्यादिक  
बहु ज्ञाव ॥ ठए इव्य आपायशा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥  
॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ एदेसी ॥

काल किसुं करै बापनो रे, वस्तु स्वजाव अकज ॥ जो न  
होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म  
करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए  
आकली ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोनि यतन करै कोय ॥  
अणज्ञावी होये नही जी, ज्ञावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
आबै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरया केइ खांसदी  
जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाजल जिम जव  
तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवत मन मानसतणो जी,  
तृण जिम पूछे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चितव्य  
जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चितव्यो जी, नियत कर

( १९३ )

वितराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुनूमिते जी, समुद्र  
पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवाल रे ॥  
प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहो कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥  
आहेकी सरै तक्रियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥  
आहेकी भागे नस्यो जी, बांण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊनी  
गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हण्या  
संघाममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमाहि मानवी जो,  
राख्याही न रहैत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ श्ल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वप्नाव नियत मति रुमी, करम करे ते थाय ॥  
करमें नरय तिरिथ नर सुर गति, जीव ज्वंतरे जाय ॥ ३२ ॥  
चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें  
राम वस्या वनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावखनुं,  
राज्य थयो वितराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीनी कर्म कुंजर ॥  
कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डख पीनित, जनम जायै  
विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेतर, उदक न पामे  
अन्न ॥ कर्म जिननें जोउ निमा रै, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥  
॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवे पाय ॥ एक हय  
गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम  
मांनी अंधतणी पर, जग हीनै डाहूतो ॥ कर्म बली ते लहै  
सकल फल, सुखनर सैजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके  
कीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो जूखो,  
नाग रह्यो नमरोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु  
सुखमां, दीयै आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया  
कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

( १९४ )

॥ शाल ६ मी ॥ तो चढियो घन भान गजै ॥ ए देखी ॥

दिव उद्यमवादी ज्ञाने ए, ए च्यारै असमत्त तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्त तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रथणायर तणी  
ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरे ए, जेहमां  
सत्त्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल महिथी तेल तो ॥  
उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी  
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरयां विना  
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां केपे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार इत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां  
ए, आप थया अरिदंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां  
करे ३ पाव तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंडुं ए, करे पाहाणमां गम तो ॥  
उद्यमथी विद्या ज्ञानै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ शाल ६ ॥ ए छिडी किहां राली ॥ ए देखी ॥

ए पांचेही वाद करतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकली ॥ ए  
पाचे समवाय मिथ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवैल तणी पर, जे बूजै ते रजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी  
 कोइ एकने, एहमां दिवै वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण,  
 जीति सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,  
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विधन  
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय नयम जोक्तादिक, जाग्य सबल  
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी  
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीक-  
 लियो ॥ पुण्यें मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे  
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपाक थयो तब, पंमित दोर्य जल्ल-  
 सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे  
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा  
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वादरस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संश्रुण्यो  
 ॥ संघ सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय  
 देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज्ञ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक  
 सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स  
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंवणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार,  
 आणी जाव अपार ॥ चवदै गुण थानक सुविचार, कंदिस्थुं सूत्र  
 अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्रमात कह्यो  
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंशो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चो  
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमांशो, उधो प्रमत्त



( १९६ )

पिठाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अढम अपुरव करण  
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोअ दसम सुविचार,  
उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम  
सयोगी गुणधाम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम  
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधम्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणवाणै,  
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पढ़ आपी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती  
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय  
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धर्यो, संत  
सी नाम मिथ्यात चोथो जणै ॥ ६ ॥ समऊ नही काय निज  
बंध रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ  
नंत अजन्मव्यने, करिय अनादि धिति अंतसुजन्मने ॥ ७ ॥ जेम  
नर खीर घृत खंरु जिमने वमें, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो  
गमें ॥ चौथ पंचम ठै ठाण चढने पने, क्लिष्टहि कषाय वस आय  
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहोय  
सासादने धित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणवाण तीजो  
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि  
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिथ, सत्य असत्य जिहां, सर  
दहणा बेजं गती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणाख्य मांहि, मरणा लहै  
नही, आउ बंधनपनै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि-  
त लहै, मति सरखी गति परजवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान,  
उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेज्रीस सागर, साधिक थिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥  
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥  
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै  
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव  
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद  
 लहै ए ॥ १४ ॥ ज्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या  
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परदी उपशमें, ते उप  
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर  
 क्हायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,  
 तातें तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंवल कोइ न छेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रत्याख्यान ॥ जेण  
 तजैवा वीत अजक, पांभ्यो आवकपणो प्रत्यक ॥ १७ ॥ गुण  
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्  
 कारज साथै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्च रौं ध्यान द्वै  
 मंद, आयो मध्य धरम आराध ॥ आठ वरस ऊशी पुवकोम, पंचम  
 गुणगणे थित जोम ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणगान, इक १  
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गम, तेण प्रमत्त ढढो  
 गुणधाम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साथै षट् आव-  
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा ज्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणगण  
 कहाय ॥ २१ ॥ रूपो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत  
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद किया विध नासै, अपरमत्त सत्तम  
 गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ दाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोष पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अठम गुणगणातणें, आरंजे दोष श्रेण संख्येयै

ति गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कपकश्रेणि  
 'कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम  
 अपूरब गुण लहै, अठम नाम अपूरब करण तिणें कहै ॥ सुख  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अरुणि धामे  
 धरै ॥ २४ ॥ दिव अनित्य करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव  
 धिरूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलैला हणै,  
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम  
 लोचन कांइक शिव अजिलखै, तें सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥  
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठाम  
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही  
 परै, तो आयै अहमिइ अवर गति नादरै ॥ इग्यार वार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पनै, मोह उदय उत्कृष्ट अरु  
 पुदगल रनै ॥ कपकश्रेणि इग्यारम गुणगणो नही, दशमश्री  
 बारम चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ एक दिन कोइ मागष आयो पुरंदर पास ॥ एदेसी ॥

खीणमोह नामे गुणगणो बारम जाण, मोह खपायो नेमो  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणो जिहां चरित अमल यथा आख्यात,  
 दिव आगे तेरम गुणध्यान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ धातीय चौकनी  
 कय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कपक  
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट थयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी गनी  
 परगट वात, महिमावंत अढरै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 ऊणी कही इक पूरबकोनि, उत्कृष्ट तेरम गुणगणें ए थिति जोनि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेष अयोगी

अंत समय सद्धु प्रकृति क्षपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊंचरता जेहनो  
माने, पंचम गति पांमें सिचपद चउदम गुणधान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
चारमें तेरमें माहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परजव साथे  
होय ॥ नारक देवनी गति माहे लाजै पहिला ज्यार, धुरला पांच  
तिरी माहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाउलें ॥  
गुणढाण चवद विचार वरण्यो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै  
ठत्तीसै, आचण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध,  
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणढाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवजाय ॥ साधु  
सकल प्रणामी करी, प्रणामी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं दूं नव  
स्तवनी, गाथा ज्ञाता रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं  
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संबर निज्जर  
बंध मोह ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
सत्तावन वारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह  
पणविह बविह जीव कहाय, चेतन त्रस आवर वेदै गई करणो  
काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय गण, सन्नि असन्नि  
पणिंदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जता अपज्जता चवदै  
होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंतण  
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए षरु लक्षण लक्षत जीव इच्छ  
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जती तीन, सासोसास

ज्ञाषा मन धरु ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार ऐगेंदी पंच पञ्जती  
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें धरु पञ्जती होय ॥ ४ ॥ ईद्विय  
 पांच उत्तास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सांत आठ एगिंदी  
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेडी नें नव दस क्रम आय, प्राणाधी  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तोनूना  
 त्रिणर जेद, काल दसम इग आगास पुगल च्यार विबेद ॥ खंघा देस  
 पणस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुगल नन्न काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चलय सहाई धम्मैधिर संगण अधम्म, अवगाहें पूरण  
 गल्लें नन्न पुगल धम्म ॥ समयावलयि महत्त दीह पख मास नें  
 साळ पळ्योपम सागर उत्तप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ धरु इग दो सग  
 सग सग धरु इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवळि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वळि सात तोन ऊत्तासें माण, केवलनाणी  
 जणियो एह महत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उव गोय मणु, सुर हुग  
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संघेण संगण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उत्तास तेम वळि आ  
 तप ने उजोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्माणत सादि वगु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आऊ तिळंकर पुण्य वयाळ ॥ तस बांदर पञ्जत प  
 तेय थिरं सुज सोय ॥ सुजंग सुसर आइऊ जलें तस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नोचअसाय, मिथ्य थावर  
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च डुग ऐकेंदी वि ति  
 चौरिंदी तेय, कूखगई उपघा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पढ  
 म संघयण विना संघेण तेम संगण, एम बयाली प्रकृति पाप त  
 तनी ए जाण ॥ थावर सुदम अपऊ सादारण अधिरै गेय, असुज  
 डुजंग दू सरणा इऊ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 ईदि कसाय अवय तिम जोग बायालीस सेव पञ्चीस क्रिया संजो

ग ॥ कौंड्य अहिगरलीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं  
 जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय भिन्नादंसल वक्ती  
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पादुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवशि  
 य ने सत्थि सदत्थे जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥  
 १४ ॥ अणव कंख पञ्चयना उवउंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म ज्ञाव  
 ण चारित्त, पणतिग बावीस दस वारै पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ  
 रिया ज्ञावा एषणा सुमतीना जेद होय, आदान जंरु उच्चार नि  
 स्केवण पाँचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हि  
 व आगे बावीस परिसह कहूँ हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपात्ता  
 लीत उत्तन सोसा निरवत्थ, अरति जोषा चरित्रा नैषिद्या सिद्धा  
 सत्त ॥ अक्कोत्तवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य  
 ज्ञा अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति महव अज्जव मुत्ती तव  
 संजम सम्म, सत्थं सौच अक्किचन बंजचेरज इ धम्म ॥ पढम अ  
 नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर ज  
 वि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुज्जाव बोध डुरलज्ज इग्यारम गाम,  
 धरम साधक अरिहंत ए वारै ज्ञावना ज्ञाव ॥ सापायक छेदोप  
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद सूखम संपराय चउत्थो जोय  
 ॥ १९ ॥ तिम अहस्काय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु  
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ वारै त्रिध निर्ज्जर तत्त्व बंध  
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुज्जाग प्रदेस जेई निरधार ॥ २० ॥  
 अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सद्धीनता  
 बाहिर तप परु ज्ञाग ॥ पायडित्त विनय वेयावच्च तेम सिद्धाय,  
 ध्यान काउसंग अच्यंतर तप परु विद्य आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु  
 ज्ञाव काळ अवधारण थित निरवंच, अनुज्जागै रस तेम प्रसेदे दल

नो संव ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य बलि तेम, निगम चित्र  
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेप  
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्थुं हिव मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल  
 पांचमो ठो अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदें ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी वै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम सत्तिक शृंग जिम  
 नहीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मंगल द्वार, विवरण  
 कर वरणवस्थुं सुणज्यो सुदुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सत्री  
 असत्री येसत्रि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रधी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सावि अनंती  
 धित जिन आगमधी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं  
 तर जोय, सरव जीवधी ज्ञाग अनंतम सद् सिद्ध होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक ज्ञाव, जीवत जेहने बलि परणाम  
 क ज्ञाव समाव ॥ सद्गुधी थोमा वेद नपुंसकधी जे सिद्ध, तेहधी  
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक  
 नव तत्त तत्त सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव  
 जिनेसर मुखधी ज्ञाप्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत  
 निञ्जल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ  
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उत्पणिय अणंत इग  
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध, आवक आयह कीन  
 सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गुण सुज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलान्नचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक  
करिवर सिंह वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पमिसाख ॥  
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम जाल, ए नव पद नव रथणे  
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवत्तर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वामं गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन  
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज  
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व ज्ञाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रुषजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंरुक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आज तेज वलि, वाज वणस्सइ काय ॥ बि  
ति चौरिंदी गजधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना द्वार कहुं द्विवै, गणनाये  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर जिणसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाइण संघयणेंतणा संगण, कोहाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिंदी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,  
उपपात वलि चवण ठिई पज्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥  
इव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहयो  
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ दाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गज्जय तिरि वाज कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांय  
दंरुक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उकोले देइ



प्रमाण, ज्ञाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरबनो  
 जेधन्य स्वज्ञावक अंगुल ज्ञाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने  
 विह्वात ॥ सुरनो सात हाथ गण्णय तिरि वणस्सय काय, जोयण  
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेईदि तिगाउ  
 बेईदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंदी देह उंचै आकार ॥ आरंज  
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, ज्ञाग एक इग अंगुलनो संख्या-  
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,  
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साज्ञावकथी डुणो नारक  
 वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥  
 सुरनें पक्क एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो आवर सुर  
 नारकनी माख ॥ गण्णय नर तिरनें षरु विगलनें डेवढ एक, सरब  
 जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षरु सुरनें सम-  
 चौरंस संठाण, हुंरुग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह  
 धयसूर्इमरुहनी चंड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ नू बुदबुद अप्पा-  
 कार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गण्णय षरु नर तिरि दोय, बेमा-  
 णिय नारग तेऊ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसितेऊ लेसा सेस  
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्थुं विसतार ॥ ७ ॥  
 समुदधात सग नरनें पण गण्णय तिरि देव, नारग वायुनें च्यार  
 सेसनें तीनुं जेव ॥ दिढी दोय विगलसें आवरने निख्यात, सेसने  
 तीन दिढि जिम प्रवचनमें विह्वात ॥ ८ ॥ आवरबि ति नें एक अच-  
 स्कू दंसण होय, चौरिंड़ी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजनें  
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर  
 नारगनें लीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,  
 गण्णय मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें  
 तेरै जोग, मनुजने ५ रै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मकायने पाच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवने  
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण बरु चौरिंड़ी थावर तीन, उववाय  
 इग चवण दार दोनुं सम कीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या  
 चवण पपात, गण्य तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ  
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत  
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सदस उक्किठ,  
 वणस्सइ व्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पढ्य  
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक लख वरस पढ्य  
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनै इक सागर अधिको आय, देसें  
 कृणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास  
 दिवस ठम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥  
 जुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पढ्य तेना अरुंस वेमा-  
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें व्यार ॥ विग-  
 लनें पंच पङ्कती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय ठए  
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मज्जार,  
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा  
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गण्य मणुजनें दीह कालकी सन्ना  
 होय, केइक आचारज कहे दिठिवायणी दोय ॥ निच्चय पङ्कता पं-  
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥  
 संखानपङ्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पङ्कता जू दग पत्तेय वणस्सइ  
 जेम ॥ ए सरवेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पङ्कत संख गण्य  
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरल्या नर तिर  
 उपजै न हुवे सेस, जू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥  
 पुढवाई दस पयमें जू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ  
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति  
मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरोने जीव मनुज नवि थाय  
॥ २० ॥ श्रीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, आवर विगल  
नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊता मणु बादर अगन वेमाणिक  
तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ बेइंड़ी तेइंड़ी  
पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
हे जिन ए सहु ज्ञावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां  
किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति  
संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सइवे देसविरत  
प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेइथी  
तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक  
दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
खरतर गढ जट्टारक श्रीजिनलान्न सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना  
पद अरविंद ॥ २५ ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तब्या  
तेवीस द्वार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम  
चंद निरधार, पोस मास पख उऊल सातमनें सोमवार ॥ आवक  
आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर  
मज्जार ॥ २६ ॥ इति श्री चोबीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्जित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नभि, किंचित् जीव सरूप ॥  
कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ दाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनाजी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं-  
तै रूप अजेद ॥ संसारी आवर इग तिम त्रस दोय प्रकार, जु अप वाउ

सेन वण स्सइ थावर धारा॥१॥ फिटक रयण मणि विड्म हिंगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी  
 अरयोढो पाखेवो पाषाण ॥ जोमल तूरी उंस जूमि पाहण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास  
 उंस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं  
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक  
 अगनि जीव विहात ॥ उष्णामगनकलिका मंमल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ जेदें हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय  
 वणस्सई जीव डु जेय, एग सरिीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं  
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाल, जूफोमा अदसिय सरवे जे फ  
 ल बाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ बाथलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा सांथा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पद्ध  
 व आय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरिी रे  
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक॥  
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु  
 हुनै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवमी संख गंमोला लहिगा  
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा  
 हाक्रम पौरादिक वेइंड़ी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली घीबेलो गोमीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 कम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेद, ईली  
 कंशुक इङ्गोप तेइंड़ी एह ॥ वीवू ठंकण जमरा जमरी इंडी च्यार,  
 तीमा माखी मांस मझर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवममोला मांक  
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइी च्यार विवेद॥

घम्मा वेसा भेलौ अंजने रिग हात, मघा माधवई नारग ए नौवे  
 सात ॥११॥ जलचारी थलचारी नजचारी तिरयंच, मञ्ज कञ्ज सुस-  
 मार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि जुजपरि साप जुचारी  
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम  
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथो बाहिर समुग विगय पंख  
 होत ॥ सरखे जल थल खचर समुञ्जम गण्णय दोय, कम्म अकम्म जूमि  
 अंतर दीवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ,  
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु ते दिठ ॥ पनरे जेदे सिद्ध कहा ए  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक दिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥१४॥ देह  
 आउखो एक सरीरे धितनो मान, प्रांश जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंख सहु एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक  
 पत्तेय वणस्तई काय ॥१५॥ वि तिचउरेंडी अनुक्रम उक्कि देह ऊंचास,  
 बारै जोयण तीन गाउ इग जोयण जास ॥ सच्चमना नेरइया धणु  
 सय पंच प्रमाण, तेहथी अरध २ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो  
 यण सहस गण्णधर मञ्ज उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त जूचारी पं  
 खी जेह खेचर नव धणु उरग जुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ  
 परिमाण समुञ्जम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाउ उंचास चउप्प  
 य गण्णय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन  
 व्यंतर जेइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तणु  
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंडै षरु ब्रह्म खांत ४ पांच, शुक्र स  
 हस्त्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हथैं  
 तीन, नवथ्रैवेयक दोय पंचाणु तर इग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन  
 दस वरस सहस्सें आय जू आऊ वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार  
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि उम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी  
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिख मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर छरपर जुजपर  
 उकासे पुवकोनि, पंखीने इग जाग असंख्य पढ्यनो जोर ॥ २१ ॥  
 सरव सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जहन्न उकासे अंतमुहुत्त  
 नियम थिति तेह, इम जगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि  
 इत्थ वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उत्पिणी सहु  
 एगिंडी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥  
 संख्याता संवहर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेडो तिरि  
 मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,  
 देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंदिय सासोसास आठ  
 बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडोय जाण  
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथक।  
 जेवि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती  
 चार, जमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग  
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद  
 लाख सूत्रें लाख ॥ जू अप तेउ वाऊ वणायचेय साधार, बि ति चौ  
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न  
 पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित  
 विक्कात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपु-  
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वोरज  
 ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धांतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए  
 जीवविचार गाथाथो जाषारूप श्रावक, आयहथी में कीनो सुगम  
 सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गढ जट्टारक श्री जिनलाल सूरिस,  
 रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीत जगीस ॥ संवत ससि रस  
 वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर  
 मऊार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥  
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे  
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहुं  
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिते, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥  
सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बखानी राणी चेळणा ॥ २ ॥ देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
जुवनपति वीस इंदै मिळ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड  
दस वेमाणिय जुगुधा जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन सम जान ॥ मेघकुमार  
रचै मेघने जी, करिय सुगंध भिरकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं  
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण  
जुरघ मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो  
जी, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,  
कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरै जी,  
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै  
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत उंची घणुं पांचसै जी, सवा-  
तैतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास  
घणु न्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी  
वीस हजार ॥ थाक अम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उब  
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच घणु सहस पृथ्वीथकी जी, उब

रहे त्रिगद आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर  
आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं ९ दिस तिहां जी,  
नीलमणि मोर निरमाण ॥ डसय धनु मध्य मणि पीठका जी,  
बुद्ध जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां  
चिहुं दिसै जी, मोतीयें जाकज्माळ ॥ सम विव कूण ईसाणमें  
जी, देवबंदो सुविसाळ ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवहुंडजि नाद उपदिसै  
जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी,  
गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुव दिसि आसणो आय वेसे पदू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू  
॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम  
मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण ठत्र सुविसाळ ए, रूप चि  
हुं ९ दिसैं चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणा,  
जगवंत उपदिसै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
निकूणै करी, गणधर साधची तिम वेमाणीय सुरी ॥ ज्योतषी जु  
वणानी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊनी सुणे ॥ त्रिहंत  
णा पति वायवकुंशमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए  
॥ बारह परखदा मद मन्तर गोरु ए, जूख त्रिस विसरै सुणै कर जोम  
ए ॥ १९ ॥ पूढ जामंरुल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज नं  
च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, मद्दक सहू  
वारणै धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाइण वहिल सहू धरिय पहिले  
गढै, दोय पगचार नर नार नंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गद रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणैं जिनवाणि धन गणिय अव  
तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांदिनो प्रौख



माहे वसैं ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विदिसि  
चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,  
स्नान पाने वपुं निरमंल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप  
राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्ठंग अ  
र्चिं माले ए, रंजतंगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
त्रिगंभो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण गंम ए ॥  
करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणानी रुदि दीठी जियै, तेह ध  
धन धन्न अवतार पायो तिथै ॥ पास अरदास सुणी वंजित पूरज्यो,  
हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणौ रुदि वरणौ सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
दहे ते जहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिझांत  
शुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री कृष्णभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोपरजी पाठियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं  
तो अंरज कहूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, जवसायर  
पार वतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रभू भूरति  
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजार  
क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर धरीजै,  
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया,  
जवरेना पातिक टलिया, प्रभु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥  
॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित भंगल आवै, मुऊ

आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर  
चंदन चरचीजै, दिन धन तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रजु दरसं  
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुबो चित मोरो, जिम दीदा चंद  
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रजु पंचम आरै, वीस मादा जय  
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमिं  
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कोई, बाधै संपत शोजन सवाई ॥  
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
उलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,  
प्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ दाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निलो  
ए, तवन करिस्त प्रजु ताहरो ए, मन वंठित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
नयरी नांम वणारसी ए, सुखनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेषा पूरी  
वै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
घर नार ए तसु गुणहि न लखै पार ए ॥ तास जयर अवतार ए,  
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,  
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूछै जूपतिने कहा ए,  
करजोनि कहा ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ दाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै  
वृषज ऊदार, घरणी जिण धरयो जार ॥ १ ॥ तीजै सिंह प्रधान,  
जसु बल कोय न माना ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी  
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्कनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छै दीगो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह'थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें  
 ए बीघो, पातिक धूमथी नीगो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरखो  
 नूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै नदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणो सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुठ कीरति करै, जनम कियो सुकयत्य  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते वर  
 पहुता आपलै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाल ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरुजगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुरक अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,  
 कर थांनक पोहती बंजित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ  
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज जत्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोन्नव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल द्वी  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घरइ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उच्चम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु बाधै दिन२कला  
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला  
 विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणाथो राजान ॥ १९ ॥

( ११५ )

॥ बाल ४ ॥

कुमारपदै प्रन्नु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग  
संजम लेवा समै ए ॥ तव लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ  
संवञ्चरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय  
इंद्रादिक सब मिळ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदळ्या  
ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ  
मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौमीपास्ततणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह  
परलोग सुवंगित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावै,  
चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणाराय  
पठमावइ जास वहे सिर आण, सांमल वरण सुसोजित नव कर  
काय प्रमाण ॥ कळपवृद्ध चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-  
शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-  
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु  
अजिथ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर  
प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,  
मानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोमहि लाख पचास ए, सागर  
जिनसातण जास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर  
हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां  
गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए  
॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर  
वस्यो दस मास ए, प्रन्नु पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आंशंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उच्चाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुखलित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति धलै  
 गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं  
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गहगह्यो ए,  
 लंबन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जौवन वय जब आवियो  
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु  
 पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ दिव ह्यशापुर ठाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा जयरै सुत अवत  
 र्यो ए ॥ मानव देव वलाणियो ए, चक्कीसर जिणवर जाणियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिय नांम दियो श्रीशांत ए  
 ॥ जिन गुण कुण जांखै कही ए, त्रिहुं नुवयो तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सलूखो हिरण्यो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नखै लोक कुरंग ए ॥ तो लंग्यो स  
 सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलजड्यो ए, जय जंजण सांमि सांजड्यो ए ॥ आणंदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंबन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणो घणी ए, नव नविय कुमार रायां तणी ए ॥ बल बल आ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जखी पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमार त  
 लों मंरुल समे ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणध  
 र जिसे ए, ऊपन्नो चक्रयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी जरह व  
 खंरु ए, वरतावी आण अखंरु ए ॥ चवद-रयण नव निहि सही  
 ए, वसु सोख सहस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, बत्तीस मौनबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, भिन्न  
 वे नमै बे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रद्वर जुजुवा ए, लख  
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस  
 सहस्र नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
 वण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोदग देहरी ए, ऐसी चौसठ सह  
 स्र अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
 यण जंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपुरे पुण्य प्रमाण  
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस  
 सहस्र पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं  
 तीर्थकरा ए, चिर पाखिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
 सार ए, बिहुं लोधी संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर  
 ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण  
 समाण ए, बिहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोरु-  
 हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण  
 ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,  
 बिहुं आगलि इंड अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि  
 गुण गावै सुरबदू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर ठत्र चमर विमल, बिहुं  
 प्रग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार जुवन जरी ए, बिहुं  
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो  
 परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणो चिंतामण सुर  
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि  
 हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उन्नव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय  
 हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण  
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते ज्ञोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण सुय जणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेस्संदन  
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजळो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपदिसी जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पडिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी बै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये  
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रणी जी, मोहनी तीनो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीष बधू ठक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोना आदरो जी, नव पखोना गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसन चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, नीने दंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पडिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ दिव पडिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सब्य तीन उरथनी जी, मा

या नियाण मिळयात ॥ चार कषायवेव गलथी जी, क्रोधादिक करा  
घात ॥ ११ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराघना जी, चरण त्रिन्दे सुद्ध  
होय ॥ ए पन्निदेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥  
इम पन्निदेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
वरतणा मुखथी, अरथ गणघर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-  
णी, सुणो जवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलङ्गिकीरत, मुख-  
थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पन्निदेहण तणी विध, लङ्गिकीरत गणि  
कही ॥ इति श्रीमुहपती पन्निदेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन स्तवन लिख्यते ॥

॥ दाढ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देखी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
थायै धणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित  
अने विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख  
आलोइयै, जीव निमल हुवै वख जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ क्रियाही  
कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकल्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरौ ॥  
कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प इण नांम करि दोष तीजो  
तिहां ॥ ४ ॥ विषसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकु-  
टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें चार ए अधिक एक एकथी,  
दोष धर प्रायश्चित लेह विवेकथी ॥ ५ ॥



॥ ठाळ २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागय आयो पुरंदर पास ॥ ए देवी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरश-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकासणो आंबिल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खंमिंत आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपमिलेह्यां परिमढनो तपधार,  
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं जेदे मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी सादमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी  
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथो वृद्ध ॥ बंधु वि ति चौरै-  
डिय हएयां वि ति चउ उपवास, संकटपादि चिहुं विधि डुगुणा  
डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ नहेही कुलियावरुना कीनी नगरा जंग, बहुत  
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन  
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोष उपवास विवेक ॥ १० ॥  
संकटपादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोड त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोयण जोड, बहु पंचेंडी उपडव ठठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकनी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ  
समकें लोक समकें राज समक, कुमा आल दियां डड चौधर ठठ  
प्रत्यक्त ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां वीस, इक लख  
अस्ती सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास  
॥ १३ ॥ सूआवरुना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधां बहु असर्ताने पोस ॥ करीय डवाखल बार हजार गुणो नव-

कार, मित्राडुकरु देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पन्तिकमणां  
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जणया, इ  
क२ आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंवसीनैं एकत्र, निबी आंबिल, जां  
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण  
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंबिल ऊप  
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग कियां  
वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,  
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी  
बुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री  
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परडोह  
चींतव्या, उपवास एकर-जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान,  
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जरव्या ए ॥ आलोयण उ  
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढ्या  
मिरखावाद, अदत्तां दानं त्युं, जघन्य एकासण जाणायै ए ॥ अति  
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दसरआंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठठ आलोयण धार ॥  
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥  
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिद्धा  
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी  
नववारि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनैं फरस  
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक  
पोसाध, ऐकेंडी सच्चिन् संघटे कीध ॥ बीसर जोले सच्चित्त जलप्री

ध, दंम एकासण आंखिल दीध ॥ १५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां  
पात्रै, एकासण तिम पुरिमद्ध मात्रै ॥ गइ मुहपत्तो आंखिल सारो,  
तिम नुवै अढम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार र्गिम्तो राखै, व्रत  
पच्चखांश करै पट् साखै ॥ दोषे मिच्छामिडुक्कम दाखै, आलोयण  
लेतां अज्जिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता  
नावै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि  
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने  
विधि पांमी ॥ जीतकळप ठाणागे आदि, वली परंपरगुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए  
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एइ करसी  
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधर्मसिंह कीधो, चौ  
पने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्रोप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ रूप  
ज्ञानन चंझानन वारिषेण, वर्द्धमानं मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥  
आठमो द्रोप नंदीसर अदञ्जुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेदनेमध्य  
चिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण  
सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रयुज सहस  
दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद  
प्रज्ञूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे वि  
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैश इकसो चोवीस, बिंब संख्या  
सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो जविजन जगते, सुध आगम कर सा  
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुतर, सो जोयण  
आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रज्ञूप्रासाद सुवामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई काया  
 रे ॥ जिन कट्याणक उज्जव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०  
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं नवरै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥  
 चाव३ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो  
 सठ सहस जोयण उत्तंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि  
 सि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥  
 ॥ ए ॥ बाव५ नै अंतर विदसै, रतिकर परवत रुमारे ॥ दोय२ संख्या  
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मानंदस  
 ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संगण जगत गुरु, नि  
 श्चय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,  
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपरिमाणी संख्या तेहिज, श्रीजिन  
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना बावन, नंदीसर  
 वर दीपे रे ॥ इय चाव विधि पूजा करतां, मोह महा जम जाणै  
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा  
 णो रे ॥ इम अधिकार नै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आयो रे ॥  
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा  
 व्यावो रे ॥ व्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो  
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्रोपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंड मनसुध विहरमाण जिणोसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै  
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, क्लिण २ ठामे  
 कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र  
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुझै सोह  
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥  
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणथी  
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिसि  
 एह ज़रत सुज क्षेत्र, पांचसे बबीस जोयण ठ कलां तेहने क्षेत्र ॥  
 उत्तरखंभेमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी गए  
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस ठसे चोरासी जोयण जाण,  
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससैं तेरे जोयण  
 एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने गण ॥  
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम, दोय विजाग, सोलै ५ विजय  
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत,  
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय  
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंरुरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंथर-  
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पश्चिम विदेह  
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वडविजय  
 बलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥  
 नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी  
 तिहां चोथो सुबाहु सुजाण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप  
 मऊार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा  
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन ५ धातकी खंभ ॥ पिहुओ चिहुं  
 लख जोयणे, मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज़रत दोय  
 एरवत, दोय बलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, उण-  
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंभ गिणीजै  
 दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥  
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांनिने,

ब्रह्मो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,  
 ठो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस  
 । १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥  
 पूरब धातकी खंरुमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली  
 बिहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नामे अनुक्रमे,  
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो  
 देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥  
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंझानन जिन, पन्नीम धातकी मांहि ॥ विचरै  
 च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी  
 खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-  
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींटीयो चूनी जेम विचाल ए ॥  
 सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥  
 उलाखो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पञ्चो  
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख  
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-  
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर  
 नामे मेरु तिहां वसै ॥ पन्निम विजुमाली मेर ए, इहां किण इतरो  
 नामे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नामे, अवर ठामे को नही ॥  
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कहो ॥ इम जरत एरवत  
 माहाविदेहे, नाम सरखो हेत ए ॥ तिणहोज नामे विजय सगली,  
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर  
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहनां ए विसतार ए,  
 पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिमहीज  
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जेजुंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
 अरध माहे, सरंबा जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन  
 सैतैरमो, श्रीमहाज्जड अछारम नित नमो ॥ देवजला गगणीसम  
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर  
 अरंध माहे, कह्या पश्चिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं  
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरातो पूरव लाख बरसा, आठ इक  
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो  
 ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ह ॥ दिव अत्कट्टे  
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनकर कहै, पांचे  
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचै तेम पांचै,  
 एरवत मिल दस हुवा ॥ इक १ विदेहे बत्तीस विजया,  
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोनि  
 नवसय केवली, नव सहस कोनी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते  
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै  
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन  
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस  
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजै  
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोरु ए ॥ दोय सहस कोनी सुसाधु  
 बीजा, नमुं बेकर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा  
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जारुया वीस विहरमाण  
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसै समै, सुखविजयहरख  
 जिनंद सानिघ नेह धरि भ्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप  
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खरुं ३ आधोपुष्करद्वीप एवं  
 ४ द्वीपसै ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मेजूमामें विच-

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाझाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र जणी ऊ  
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लोज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो  
मांहे ठाजै, आबू मारुनै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला  
गो, नुंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कहावै, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,  
एहनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ बह रुतु वास वषायो,  
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां  
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढारे वषाई,  
एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर झूमि विसाला, देवल  
दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्रेसरि देवी सहा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवार वंस वदीतो, जिणदलपति साहि जो  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेष करायो, पाहण आरास मंमायो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीणी२ कोरणी ऊरयो, दल माखण जेम नुकरयो रे जा०  
॥ नवी२ ज्ञांति वषाई, जिहां तिहां कोरणिया जिणाई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
जगसिस कोन सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुठै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इणदेवल  
समवर कोई, झूमंमल मांदि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो  
रहि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते



हवो जिणहर पासै, बार क्रोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देरा  
 एणी जेठाणी, आलानी अजब कदाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीठो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल  
 पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 न्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 धातो, जिगसिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा  
 लौ, जिण विंवनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 ज्ञोम सोज्जागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साहमी वज्जल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये बै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोळै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषज्ज्ञानन ब्रधमान, चंज्ञानन जिन, वारिषेण नामे जि  
 णा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिज्जुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा-  
 मणा ए॥ २ ॥ चेइहर सग कोरि, लाख बहुत्तर, चैत्य प्रतिमा

( ५२ए )

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,  
जुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद,  
चौरासी लाख, सहस गिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

द्विवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमृतीस सह  
स सत साठ अठै गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक  
वखाण, चउ५ चेईहर साठ सबे त्रिहुं गण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु  
रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति  
सुंदर वक्क सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी डह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य, वीस सत  
रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारसै सत्तर सुक्क ॥ कुंम त्रणसय असी  
ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थकर प्रतिमा शुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
सहस वलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबालै सब  
मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन  
खस्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्का ॥ द्विव प्रतिमा ग्यान कहीजै

( १३० )

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरैलै वेतालीस कोनी रे,  
अम्वन लख अधिके जोनी ॥ ठत्तीस सदस अधिक कहीवै रे,  
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाल ॥ ६ मी ॥

जोइस बितर प्रतिमा सासती, असंख्यात बलि जेहो जी ॥  
पायकमल तेहना नित प्रणमिबै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥  
बिनय करी जिन प्रतिमा बंदिबै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-  
तिमा चोविह देवता, बलिब विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥  
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥  
जविषणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥  
जीवाजिगम प्रमुख मांदि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥  
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं  
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज  
समयसुंदर गुण जणै अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो  
सदा मुऊ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥  
प्रज्जुजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥  
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवज्र  
सोहे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रजु देह ॥ २ ॥ ज० ॥  
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सधन घना-  
घन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

बदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघांती कर्म ॥ दूर  
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्थुं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
 संप्रति कालै रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन  
 लहियै रे प्रभु सुप्रसादधी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥  
 श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, छुटत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह  
 सुग्रह संपजै रे, समकित पिण दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-  
 रुना मुखधो सांजदबा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे  
 निज बित्तमें थरवा रे, नेनी सुत ज्ञाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 करावुं रे सुंदर लोजतो रे, मनथर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो  
 रे बिंब भराबिबो रे, सहस्रफला वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
 वसे आधियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
 सहु मेले अया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
 हनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलान्न सूरि-  
 श्वर दीपता रे, श्रीखरतर गढ ज्ञाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
 थुण्या रे, विबुध क्रमा कढयाण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
 जिन स्तवनं ॥

### ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारै हूं तो भरवा गइयीं तट जमुना के तीर जो ॥ १ ॥ चाल ॥

हारै मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुखो  
 ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारै मुंने आस्यै कोइयक  
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुखी तव आस्यै महारी सबि वगे रे  
 लो ॥ १ ॥ हारै कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-  
 वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारै मारे स्वामी सरि-  
 खो कुण ठै डनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
जो, ठाली रे सी करवी तेदथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांइ जूठूं खाई  
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो  
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि  
जाएयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
वञ्चल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
हारे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रक्षांथी  
होइ उन्नोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतरगतिनी विण माहा-  
राज जो, देजे रे इसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंसरुली अणियाली का-  
मणगारीयूं रे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे विण २ तुज जो,  
राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
ते पिण जाणज्यो करीनें इजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाव  
वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
गिरुआ थइ मन आंणो जलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं  
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरुप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
व्यार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,  
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जौयरा रे लाल, सूतां  
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
देस मेवारु ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो  
पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

સ્વંતા સુખ યાય ॥ મ૦ ॥ પાંચ પ્રાસાદ બીજા વલી રે લાલ,  
 જોતાં પાતિક જાય ॥ મ૦ ॥ ૫ ॥ રા૦ ॥ આજ કુતારથ હું થયો  
 રે લાલ, આજ થયો આણંદ ॥ મ૦ ॥ યાત્રા કરી જિનવરતણી રે  
 લાલ, દૂર ગયું હુલ દંદ ॥ મ૦ ॥ ૬ ॥ રા૦ ॥ સંવત સોલ ત્રિયં-  
 તરે રે લાલ, મિગસિર માસ મઝાર ॥ મ૦ ॥ રાણપુરે યાત્રા કરી રે  
 લાલ, સમયસુંદર સુલકાર ॥ મ૦ ॥ ૭ ॥ રા૦ ॥ ઇતિ શ્રી  
 રાણપૂરા સ્તવનં ॥

॥ અથ દર્શનદ્વાર શ્રીઆદિજિન સ્તવનં ॥

સમકિત દ્વાર ગુંઝારે પૈસતાં જી, પાપ પમલ ગયાં દૂર રે ॥  
 મોહન મારુદેવીનો લામલો જી, દેગે મીઠો આનંદ પૂર રે ॥ સ૦ ॥  
 ॥ ૧ ॥ આયુ વરજિત સાતે કર્મની જી, સાગર કોનાકોની હીણ  
 રે ॥ સ્થિતી પદમ કરણે કરી જીવેને જી, બીરજ અપૂરબનો ઘર  
 લીય રે ॥ ૨ ॥ સ૦ ॥ ઝુંગલ જાંગી આદિ કષાયની જી, મિથ્યાત  
 મોહની સાંકલ સાથ રે ॥ બાર કુષાના તમ સંબેગના જી, અનુજવ  
 જવેને બેઠો નાથ રે ॥ ૩ ॥ સ૦ ॥ તોરણ બાંધૂ જીવદયા તણૂ  
 જી, સાથિયો પૂરો સરઘા રૂપ રે ॥ ધુપઘટી પ્રજુગુણ અનુમોદના  
 જી, દ્વિગુણ મંગલ આઠ અનૂપ રે ॥ ૪ ॥ સ૦ ॥ સંવર પાણી અંગ  
 પલાલને જી, કેશર ચંદન ઉત્તમ ધ્યાન રે ॥ આતમ ગુણ રુચી  
 મૃગમદ મહમદે જી, પંચાચાર કુશમ પરધાન રે ॥ ૫ ॥ સ૦ ॥  
 જાવપૂજાને પાવત આતમાં જી, પૂજો પરમેસર પૂન્ય પવિત્ર રે ॥  
 કારણ જોગે કારજ નીપજે જી, ક્રમા વિજય જિન આગમ રીત રે  
 ॥ ૬ ॥ સ૦ ॥ ઇતિ શ્રી આદીસર જિન સ્તવનં ॥

॥ અથ શ્રીઆદીસર જિન સ્તવન ॥

આદિ જિનેસર અરજ સુણીજે, મોહન મહિર ધરીજે રે ॥  
 દિલરંજન પ્રજુ દરસણ દીજે, મ્હારો મનમો રીજે રે ॥ આ૦ ॥ ૧ ॥

प्रभु दरसन लखिबो जग झुलझ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नय एकांति दरसन आपै, पिंन जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते झूला जव आपे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-  
 द्वादनं संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदधन उपजै तसु अंगै,  
 सिद्धमरणे रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोमाकोमीमें जमतां, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जले  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरमो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण  
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दर-  
 सण दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां  
 ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे-  
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, होय निमित्तम जोग  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह नि-  
 हाळ ॥ तिम प्रभु जेकें जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अनेका ॥ निज  
 पद अर्थी प्रभुधकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 अदवा परमात्म प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तास्तो रे,

अमल अखंरु अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख अम  
 टटयो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अजिवाखीपणो रे, कर्त्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्यं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल यथा सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड  
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोमो बीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु  
 कपट मूकी करी जी, वात कहूँ आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ सु  
 ञ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन घणी जी,  
 सुजने डुत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,  
 दीक्षां डुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेदियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डुख जोजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुख ॥  
 परडुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुख ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोयण  
 लीधां पखै जी, जीव रुखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह  
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूयो गुरु  
 संयोग ॥ परमारथ पीबै नही जी, गरुरप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥  
 तिण तुज आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय  
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि  
 न धर्म सहू कहै जी, आपै अपणी जी वात ॥ सामाचार  
 जुइ जुइ जी, शंतय परुथां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, बोढ्या वत्सूत्र बोल ॥ रतने काग



उमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाष्यो ते किहा जी, किहां मुज करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं  
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उलूणी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥  
 सदज पढ्यो मुज आकरो जी, न गमें जूंमी वात ॥ परनिंदा क-  
 रता अक्रांजो, जायै दिन नै रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पढ्यो जी,  
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहंता गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं नितदीस ॥ को हितसीख जली दियै जी, तो मन आणूं  
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमांहे ऊपजै जी, मुज मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 १ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार १ जांजू वली जी,  
 बूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा  
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर गोरु  
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कहा जी, दाख्या अनरथ दंस ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खंस ॥ क० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा  
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विठवन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज ॥ क० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव  
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिठामिडुकमं  
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा  
 जी, प्रगट अघारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगसर माइ  
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार है एतलो जी, सरदइणा है शुद्ध ॥  
 जिनधर्म मीगो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥  
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिठामिडुकमं जी, देतां  
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब  
 तूं देव ॥ आण धरूं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सैत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस धर्णे, गणि सकलचंद  
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३२ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्रीरूपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमार चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, जर न चाहूं रे कंत ॥  
 रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जागे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥  
 प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

संगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥  
 कोइ कंत कारण काष्ट ज्ञापण करें रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो वाम न छांय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन मै नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखं कित एह ॥ कपट रहित  
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ माहं मन मोहं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथनो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तैं जीत्या रे तेणो हुं जीतियो रे, पुरुष कियुं मुज नांम ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ चरख नयण करी मारग जोवतो रे, जूलो सयल संसार ॥ जेणें  
 नयणें करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥  
 पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमे वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य  
 नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं  
 रे, ए आस्था अविजंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,  
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सेभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संज्ञव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रज्ञू जेद ॥ सेवन  
सेवन कारण पहली जूमिका रे, अज्ञय अज्ञेय अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥  
जय चंच लता हो जे परियामनी रे, द्वेष अरोचक ज्ञाव ॥ खेद  
प्रवृत्ति हो करतां आक्रिये रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥  
चरमावर्त्त हो चरम करण तया रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले  
चली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन चाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय  
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्र  
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण  
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण  
कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु  
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से  
वक याचना रे, आनंदधन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेन्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसियै, दरसन दुर्लभ देव ॥  
॥ मत२ जेदे रे जो जइ पूबिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अज्ञि०  
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिस्सण दोदखूं, निरणय सकल विशेष ॥  
अदमै घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥  
२ ॥ हेतु विवादे हो चित धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥  
आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥  
३ ॥ घाती डूंगर आमा अतिघणा, तुज दरिस्सण जगनाथ ॥ धी  
गइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्त  
ण२ रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहमे पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन जुव  
ज सुलज रुपायकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांशिये, परि तरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविबेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक य  
ह्यो, बहिरातम अथ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिं दिय गुण गण मशि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा  
तमतज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी अइ धिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टखै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इहा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उज्जय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
जयदांन ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण  
विशु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, नियंत्रता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञ  
ग त्रिजंजी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुजरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज  
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
नी वातर वसती उज्जय, गयण पायाले जाय ॥ लांप खायने मुखमुं  
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगति तणा  
अजिवाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अन्यासे ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं  
चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
धरनें हाथे, नावै किण विध आं० ॥ किहां कणे जो इठकरी इठकूं,  
तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो उग कहूं तो  
उग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुथी अ  
खगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंक्ति जन समजावै,  
समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए  
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,  
एहने कोई न जेजे हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स  
गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,  
ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डुराराध्य ते

( २४३ )

वंस आणुं, ते आगमयी मति आणुं ॥ आनंदघनं प्रभु माहरो आणो,  
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ जुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेठियै, जवना संषित पाप परा सब  
मेठियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंते एक  
कोसि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभु दूरधकी में ताहरो,  
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव  
चरण हूं सिर धरूं, जवसापरशी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥  
जुख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार त  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत यणी,  
एहिज वै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वामं  
जवोदधि हूं फिरयो, सहोया डुस्क अनेक न कारज को सरयो ॥  
मिलिया हिव प्रभु मुऊ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत  
जस दीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पासखण जिम दीपतो,  
जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आबेलाख,  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल  
सुगुण निधान ॥ आबेलाख, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-  
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आबेलाख, संकट सहु प्रभु  
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥  
आबेलाख, वाट विषमता पिण ठली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

बीता सहु बिखवाव ॥ आठेलाख, मन बंभित मुऊ सहु फड्या जी  
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया गो प्रजु आप ॥ आठेलाख,  
देज्यो दरिस्सण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतचर्म सुजाण, सीस कमा-  
कड्याण ॥ आठेलाख, वाचक इम बीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरितावाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,  
निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरुद्धा रे ॥  
तीन कमल मुऊ संग, आतम इरुद्धा रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,  
चंद लजायूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंयूं रे ॥ ३ ॥  
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण चिराजै रे ॥ हृदयकमल सुवेलास,  
आल ज्युं गजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण बिलोक, पंकज द्वारयो रे ॥  
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,  
श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साद्विष पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-  
गुण अनुजवनीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पात्तिक पंक, आतम संगेरे  
॥ ७ ॥ वरस अद्वार चोतीस, बदि बैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम होस,  
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुडारया रे ॥ श्री  
जिनचंद मुषिंद, बांभित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ बीनती गोमीचा, अखवेसर अवधार हो गोमी  
चाराय ॥ प्रगट अई पातालबी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख अई कृतावली, गो० ॥ दरसण देखण  
काज हो ॥ गो० ॥ पांशीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसण महा-  
राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साद्विष सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
ठै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-  
रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवरो, गो० ॥ सगली



( १४४ )

आति सदीव हो, गो० ॥ छंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति धालो  
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीगं ते  
न सुहाय हों ॥ गो० ॥ इक दीगं मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीगं  
उल्लाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाल्है माहरे, गो० ॥  
कीधी खरी सज्जीर हो ॥ गो० ॥ बरसण देवानी नकी, गो० ॥  
पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं  
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ बलि अवसर  
संजारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ सुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-  
सेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवनजन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण  
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-  
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अजिरामी रे ॥ चरणकमल  
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन  
वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें  
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-  
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-  
गकी येही अरज हे, जवडुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ सुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाई प्रज्जु-  
जी, धारी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन  
बांदावा, चित्तुमें लागी वै चूंप ॥ सवाईप्रज्जुजी ॥ १ ॥ अशिषा-

ली प्रभू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां०  
 ॥ नयण सलूण जी निरखतां, ऊपजै अधिक उब्हास ॥  
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा  
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीवो, दिख  
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांशियै, सो  
 य घनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवञ्जल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-  
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं  
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी  
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम  
 विन देख्यां एक घनी न रहाय, म्दारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे  
 अमारा हीयरुलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर  
 धार ॥ म्दारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०  
 ॥ चंद चकोरा जलधर नैं जिम मोर ॥ म्दारा जि० ॥ २ ॥ नयण  
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीघोजिम तिम करि  
 नैं चोर ॥ म्दारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥  
 आपो जवर चरणकमलनी सेव ॥ म्दारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-  
 नैं आवे जे तुह्य पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास  
 म्दाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थाबै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांशि-  
 ने करज्यो मादरी शुद्ध ॥ म्दारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुजु ऊ-  
 पर निवरु सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी ठिटक न देख्यो ठेह ॥  
 म्दारा जि० ॥ खरतर गणपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु  
 पसार्यै पत्रणें अनोपमचंद ॥ म्दारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

( ३४६ )

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने  
मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं ठै प्रजुजी म्हारो अंतर  
जामी, पूरव पून्यै थारी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तु-  
जनें जाण्यो ठै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज  
॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलमुं राज करीय सगाई, सुगण प्रजु  
जीस्युं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रजुजी ताह-  
रो दिलमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणनो वूं रसियो राज ॥  
सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रजुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेळूं  
प्रजुजी पलजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी म्हासे राज मोटा क-  
हीजै, लाहो लाखीणो प्रजुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥  
पिंजर तो फिरती राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे  
रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नदिय बिसरस्युं  
प्रजुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये  
जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-  
नचंड सदा साधारो, तारक प्रजुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०  
॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीग  
आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रजु, तिम२ वाधे प्रीत ॥  
तन मन मारा नलसै कांइ, रूनी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण  
कमलदल पांखमी प्रजु, मुखमो पूनमचंड ॥ दीपशीखासी नासिका  
कांइ, दीगं परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रजु,  
कंठै नवसर हार ॥ चंपकली सोहे जली कांइ, मुखमै ज्योत अपार  
॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं ठै जगनो वालहो प्रजु, थारे सेवग कोरु ॥ म्हासे

( २४७ )

सूहिज साहिबो कोइ, बंदू बे कर जोर, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज  
मनोरथ सब फलया, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तथा  
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करिने राज, दरसण वहिखो दीजै ॥ दीजै  
२ जी मादाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरुणी ॥ मुऊ मन  
जमरतणी पर मोह्यो, बोनायो नवि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,  
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने,  
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहबी मन बरतै, जाणूं जइ  
मिखुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर  
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सखूणो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने,  
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥  
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही ज्ञाखूं ॥ अमृत जेम  
खही तुऊ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन  
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें  
गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित  
गुण ज्ञाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुऊ गुण  
लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली  
इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,  
धात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,  
मेखो तिहां मंभायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, बांध्यो प्रेम  
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पलशमें ॥

( १४८ )

यास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करुं बिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ का  
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित धनमें ॥ मेरो मन प्रभु  
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर  
तेरी गति जांखै, अलख निरंजन बिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूंदी, साहिब तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव  
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध  
धया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे  
संघ ॥ साथे कुण आधारणी रे, परमानंद अर्जंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथनाथ ॥ वीर विहूणा  
जीवना रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
ढेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते बिष किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवत्तमुडनो रे,  
जव अटवो सत्तवाह ॥ ते परमेसरविष मिढ्यो रे, किम बाधे उत्साहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तथो रे, हुंतो परम आधार ॥  
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपनिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-  
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगधी रे, देव-  
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषज समोत्तरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा  
साधु अनंत, तीर्थ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगें

( ३४९ )

गया रे ॥ नेमीसेर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति  
जजो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश  
॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धें जररी रे ॥ मुक्ति  
गया महाबोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥  
अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज बंदीयें, चिर नंदीयें  
रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो  
रे ॥ फलोधी अंजल पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-  
मीजरो रे ॥ जीराबलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जादवो,  
शोमी स्तवो रे ॥ अंबरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ  
जात्रा फल तिदां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-  
चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुखा  
बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंइ इम जांखी ॥ जरतादिक  
नरपतिने आगल, इंझादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गि-  
रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख  
ओनीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
न्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजायें ॥ कोमि जवांरां पातक  
कीधां, एक पलरुमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सास्ततो तीरथ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इश गिरि तौले, बीजो कौड़  
ने दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें उलग क-  
रस्यां ॥ अन्नत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारत पीस्यां रे ॥  
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुढप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ ५  
हिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
गंदिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती  
झमती विच जंततां, जवस यर निवतरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव  
नवाणूं वार प्रथम जिन, राखण कंठे आया ॥ ए तीरथ शुज जावें  
फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरि  
वर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनवंद सदा हित वस्तव,  
प्रेम घोले वित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धांचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥  
मुनि जे झानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु  
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लहे, नवप्रैवेका  
हेठ ॥ २ ॥ दल चउमासा तीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा  
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या  
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री  
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनेपम माय  
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग ली  
ध ॥ पञ्चकाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥  
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण उल  
ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से हथ देखुं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चितवे जी, हो  
 सी सकल मुज आस ॥ पड़ मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो  
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ  
 यार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे बे पादुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कांन  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्युं  
 पारणो जी, हूं प्रभूने पणिजात ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय  
 विन वरसे आज ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊक्या गोचरी जी, श्री  
 सिद्धारप्रपुन ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणधरे पहुत ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिश्यास्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते  
 इम कहे जी, कांइक तिका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू ज़रने वा  
 कला जी, प्रभूने आंगी दीथ ॥ नीरानी तेही किया जी, तिहां प्र  
 भू पारणो कीव ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वज्रवे डुंडुनि जी, जै बो  
 ले कर जेनि ॥ हेम वृष्टि दुइ तिहां जी, साढोवारे कोनि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे म्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिक सहूए कहे जी, धन पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुज हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा  
 जित डुंडुनिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारणो जी, मनमें थयो  
 विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया  
 सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमाये जी, मारुमंरुल ठाम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मंतमाहि ॥ निर  
 धन जिमर चितवे जी, निमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास  
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर



राजियो जी, लोकास्थुं आणंद ॥ राय प्रश्न पूवे इस्थों जी, सुगुरु  
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
२१ ॥ राय कहे किरण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण  
घाढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
॥ २४ ॥ घनी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-  
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ सुकनगरमें आ  
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-  
पात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,  
जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे  
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोचन जीवरासि स्वभावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ द्विवे राणी पद्मावती, जीवरासि स्वभावे ॥ जांणपणो ३  
ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुऊ मिठामिडकं ॥ १ ॥ अ  
रिहंततीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु  
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख त  
ऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पनी, चव-  
दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंडी जीवना, वे वे लाख विचार ॥  
ते० ॥ ४ ॥ देवता तीर्थच नारकी, च्यारश प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
मनुष्यना, प लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव ते

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध कर वोसहे, डुरगति दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोळ्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा  
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेळ्यो कारमो, की  
 धो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ मै कीया, वलि राग ने द्वेष  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूना कलंक ॥ निं  
 द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाम्नी की  
 धी चोतरे, कीधो आंणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, जलो आं  
 ण्यो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खादकीने जव जे किया, जोवन  
 वध घात ॥ चिनीसार जव चिरकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ मागीर जव माठला, जाळ्या जलवासा ॥ धीवर जील कोली  
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने जवे, पढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंभ ॥ वंदीवान मराविया,  
 कोरमा बनी दंभ ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 क्री डस्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल मि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुया, फाळ्या पृथ्वी पेट ॥ सूत्राने दान किया घणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोविया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फल फूलना, लाग पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही  
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोगी जूट कोना पड्या, दया ना  
 वी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ बीपाने जव ठेतरयो, कीधारांगणपास  
 ॥ अग्नि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 पणे रणजूंजतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांत माखण जरण्या,  
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार् धातुनी, पाणो

उलंघ्या ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोते पाप ते सेव्या ॥ ते० ॥ २२ ॥  
 अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूत लेइ वोतरागना,  
 कूना कोलज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछी जव ऊंर गिह्या, गि  
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥  
 जामजूजातणे जवे, ऐकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पामंता  
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खामण पीतण गारना, आरंज अनेक ॥ रांयण  
 इंधण अगनिना, कीया पाप जदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विक्या च्यार  
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमारिया, रोदनवि  
 खवांद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने जणा,  
 मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विहु  
 सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसरु जीवतणे जवे, हिंसा  
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवने दूषण घणा, वलि गरज  
 गलाया ॥ जीवानी ढोह्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥  
 जव अनंत जमतं अकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध १ कर वो-  
 सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,  
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध १ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥  
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर  
 कहे पापथी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोयण सिंहाय सं० ॥  
 ॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विह्वात ॥ फासतणा गुण  
 गावतां, मुज मुख वलज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणदिलपुरे, अह  
 मदावादे पास ॥ गोमी ० धणी जागतो, सद्धनी पूरे आस ॥ २ ॥  
 शुज वेला शुज दिन घमी, महुरत एक मंभाण ॥ प्रतिमा तीने  
 पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

( ३४५ )

॥ दाल १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत सांचो जी ॥  
 धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमनीनो धणी जांचो जी ॥ गु० ॥  
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूँती जी ॥  
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी बाळ विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 जागंतो जक जेहने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि  
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रदळ  
 ठीने परगट करजे, मेधागोठीने देजे जी ॥ अधिको मळे जे ठगो  
 मळे जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा  
 रीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन ह्यगय हाथी,  
 लाब धणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मार्ग पहिलो तुजने मिळ  
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निखट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु  
 वदे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

ममसुं बिदतो तुरकमो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह  
 णातणो, संजलावे सदिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमां  
 देव हे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नहिर मारे सोय ॥ ११ ॥  
 पाठलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संज  
 लावे चकराज ॥ १२ ॥

॥ दाल २ ॥

एम कही यक आयो राते, सारथवाहूने सुदणो जी ॥ पास  
 तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूये जी ॥ १३ ॥ १४ ॥  
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी  
 पहुंचाडे धानक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ १५ ॥ १६ ॥ तुजने  
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना  
 पाया, प्रदळगीने गुणजे जी ॥ १७ ॥ १८ ॥ सुदणो देहने सुर चाढ्यो,

( १५६ )

आपणो आनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारग्रवाहू, हींने तुरकने  
जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिल  
कं निलामे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहुं लामे  
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुज घर प्रतिमा तुज्जे आपूं, श्रीपास जिनें  
सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुज आपे, तो मोख न मांगू फेरी  
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, आनक पहुतो रंगे जी,  
केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी  
रुमी रुनी कीधी, ते मांदि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या  
पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ नव्वे दिन  
अधिका आवे, सत्तर जेद सनात्रो जी ॥ ठामरना दरसरा करवा,  
आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन कळ  
प्रतिमातणो, तीरथ अळे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेवने, अल,  
अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिधणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥  
॥ २३ ॥ कुशल हेम तिहां अवे, तुज्जे मुज्जे जांण, सैंका बोनी  
काम कर, करतो मं करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ दाळे ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, बहाण एक वृषैन्न जोतरे ॥ पार  
करथी परियाणो करे, इक अल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश  
आथां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तैतले ॥ गोठी मनद विमासण अइ,  
पास जवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम कळ प्रयाण, कुट  
को कोइ न दीसे बहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंमाजं कि  
म घरथे वियो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंव रहस्ये किहा, सिलावटो  
किम आवे इहां ॥ चिंतातुर अथो निझ जहे, यकराज आवी इम

( ३५७ )

कहे ॥ २८ ॥ गूढली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥  
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी जलटस्ये खांण ॥ २९ ॥  
 श्रीकल सजल तिहां किय जुठ, अमृत जल नितरिस्थे कूठं ॥ खां  
 राकूआनो इह सहनांण, जूमि पळ्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सिं  
 लावटो सीरोही वलें, कोढ पराजिवियो किसमिसे ॥ तिहांअकी तूं  
 इहां आणजें, सत्य वचन मांहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन  
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुदणो दियो ॥ रोग गमानं ने पूरुं आस,  
 पास्तणो मंने आवास्त ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मान्यो ते वेण, हेम  
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिंलावटेने गया  
 तेरुवा ॥ ३३ ॥ सिंलावटो आवे सूरमो, जीमे स्त्रीरखारु घृत चूरमो ॥  
 घने घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज इ  
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो  
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाइ, स्वर्ग  
 संमो मंने आवास्त ॥ दिवस विचारी ईनो घज्यो, ततखिण देवल  
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ गुज लगन गुज वेला वास, पदासण वेठा  
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगने रहे वान ॥  
 ॥ ३७ ॥ दात पुराणी में सांजली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥  
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमोक्षण जह्म जंग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे  
 श्रीसंधने, देवामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरछ गौमीपांस जिन ॥ आपे  
 अरथ जंमार ॥ सानिध करे श्रीसंधने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥  
 नील पलाणे नील हय, नीलो थइ अंतवार, मारग चूकां मानवी,  
 वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

( ५५८ )

॥ शाल ४ ॥

वरण अद्वारतणी लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ ५  
वित्र थड समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४१ ॥ निर  
धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरपणो  
धरे, पार उतारे लढी वरे ॥ ४३ ॥ दोज्जागीने दे सोज्जाग ॥ पग  
विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेहने थे ठांम ॥ मन वंछित पूरे  
अज्जिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसायर ऊतारे पार ॥  
आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां  
साद दिये जकराज, जेहना मोटा अगे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि  
प्रकाश ॥ गुंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो दा  
तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेनीतणा, श्रीपार्श्व  
नाम अकर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूरा ॥

श्रीपार्श्व नाम अकर जपे, विश्वानर विकराज ॥ हस्तिथुद  
दूरे टले, डुख सींह सियाज ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विष  
अमृत उरुकार ॥ विषधरना विष ऊतारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥  
रोग शोग दालिज डुख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-  
हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ शाल ५ ॥ चाल कडलानी ॥

जैजततू २ जंज उपशम घरी, जै ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अकर ज  
पंते ॥ जूतने प्रेत जोटिंग वितर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते  
॥ ५१ ॥ जै ० ॥ डुख रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा ड  
जपंते ॥ गर्जबंधन ब्रह्म सर्प विहू विष, चालिका बाल मेवाजखंते  
॥ ५२ ॥ जै ० ॥ साइली माइली रोहणी रंकली, फोटका मोटका  
दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाज वि-

( १५९ )

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरणीं पद्मावती समर सोजावती, वाट  
आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंदो मिळे सुजस वेला वले ॥  
सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हरे  
कानपीना टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं  
प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
श्रीगोनीपार्श्वे जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
संति, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्त पुप्फेसु, जमरो  
आवि अइरतं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥  
एव मेए समस्सा बुत्ता, जे दोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,  
दाणज्जे सयोरया ॥ ३ ॥ वयं च वि चिं लब्धामो ॥ नहि कोइ उव  
हम्मइ ॥ अद्दागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार  
समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्तिया ॥ नाणापिं रियादिंता, तेण बुच्चं  
ति साहुणोचिचेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कळ्याण  
कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्बी  
रो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थलजज्ञाद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेश्वि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म  
रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥  
शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटंबरं ॥ २ ॥  
॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव  
झायाणं, आयुधं इस्तयोर्द्वंद्वं ॥ ३ ॥ ॐ नमो दोए सब साहुणं,  
मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले  
॥ ४ ॥ सब पावपणासणो, वप्रो उज्जमयोवहि ॥ मंगलाग्रं च स-



बेसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पदमं  
हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधाने देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा  
प्रज्ञावात् रक्षेयं, कुडोपइव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोजूता, कश्चिता  
पूर्वसूरिजिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य  
नस्यान्नयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा  
स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंदः )

॥ सुखकारण ज्ञप्तिवर्ण समये नित्य नवकार ज्ञानशाशन  
आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी सहिमा कदितां न लहुं  
पार, सुरतरु जिम चितित वंठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
मानव सेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञप्तिवर्ण कोरि  
॥ सुरठदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं  
जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि  
गति पुढता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक  
जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गण्डजार  
धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण वृत्तीते शोम  
॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंज्जीर, तीजे पद नमिये आ  
चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र ज्ञणावे सार,  
तप विध संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते क  
हिये जवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं  
चाश्रव टाळे पाळे पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार  
॥ त्रस थावर पीहर लोकमाहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमुं परमा  
रथ जिण लाघ ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण साइख जूत वेताल,  
सब पाप पणासे विलसे मंगलमाळ ॥ इण समरयां संकट दूर ट  
ळे ततकाल, जेपे जिण गुण इम सुरवर सीत रसाळ ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शेषो पास संखेसरो मन सुदे, नमूं नाथ निश्वे करी एक  
 बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो ज्ञव्य लोको जुला  
 कां जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पड्या पाश  
 मे जूतमाने जजो गो ॥ सुसधैनु वंझी अजाने अजो गो, महापंथ  
 मूंकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
 ग्रहे कोण राजाजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम कृपामने आक वावे,  
 महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु,  
 श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथ किहां अन्य  
 देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती  
 प्राणनाथ, सद्गु जीवने करे सह सनाथ ॥ महातत्व जाणी सदा  
 जेह ध्यावे, तेहना डस्क दाखिष्ट दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने  
 वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति  
 वासं विना वितरांग ॥ जजो जगवंतं तजो दृष्टिदरांग ॥ ६ ॥ उदय  
 रत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जांणी  
 ॥ मोरे आज मोतीअने मेह बूग, प्रभु पास संखेसरो आप तूग  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गौतम नाम जपो निश दीश  
 ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर बिलशे नवे निधान ॥ १ ॥  
 गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे  
 नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरुआ वंक  
 रा, तसनामे नावे हुंकमा ॥ जूत प्रेत नवि मंके प्राण, ते गौतम  
 ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे  
 वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिषागार, गौतम नामे जयशकार

॥ ४ ॥ शाख दाख सदा घृत घोख, मनवंडित कप्पर तंबोल ॥  
 घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ-  
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
 घोरानी जोरु, बारुं विलसे वंडित कोरि ॥ महियल मनि मोटा  
 राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम  
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधेवान  
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला-  
 वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये  
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
 बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहिनरी ए ॥ घट २  
 व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांदि जे वरी ए ॥ २ ॥ बाहुबल  
 जंगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषज सुता ए ॥ अंग स्व  
 रूपी त्रिजुवनमांदि, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला  
 बालपणेशी शीलवती शुद्ध आविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति-  
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी  
 नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम  
 लेइ देव डल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी, द्रुपदा नाम  
 वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि  
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,  
 शीयल सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौश-  
 बिक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घ  
 रणी मृगावती नामे सुरजुवने जश गजियो ए ॥ ८ ॥ सुलश

ताची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप  
 गुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का  
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जाणो धीज करता अनल  
 शीतल अये शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधो कू  
 वायकी जल काढियो ए, कलंक कृतारवा शतिय सुजडा चंपा बार  
 जयामियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद  
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल अइये बलिहारी तसु नांमनी ए  
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूता नामे कामनी ए, पांरुव  
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी  
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पनियां शीलज राख्यो,  
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विक्ताता कामित दाता, शोलमी  
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शाख ते साखी, उदयरत्न  
 जाये मुदा ए ॥ प्रह कर्णीनेजे नरजणसे, ते लहिये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ वृष्टवीकूख  
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजात संक रेख ॥  
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय  
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, जये गुरु

( ३६४ )

गणेशधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरमे  
लीन ॥ मुनि मन जखे चरण मीन, कुंदन युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥  
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संध वृंद ॥ फूलत घर कव्य  
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणो इन्द्रूति  
जगधरणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुदिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथ  
लकन्या कांधे कंबलियां, शिर शोजित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥  
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ज  
यणा कर मुखपंती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ धि  
वरकलप जिनमुडांधारी ॥ काटित कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥  
दे उपदेश जविक जनंतरक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥ ५ ॥  
करत रामरुदिसार बंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवन पद ॥

॥ राम नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध जई, मन अरिहंत रघ्याते हे ॥ अरि  
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय  
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत  
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,  
अपंबर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडुंडुनि नाद बजाते हे, धर्म के  
ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें  
लाते हे ॥ रामउद्धार कहे रुदिसार, तूं आधार प्रभु मोहै तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्ञाय ॥

॥ चोपाड ॥ श्रावक तुं ऊठे परजान, चार घन्टी ले पावली  
रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ  
 मारो ठे व्यवसाय, एवं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक ले  
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पन्तिकमणुं करे रयणी तणु,  
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्त करे पञ्चक्राण सूधि पाले  
 जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो  
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदें नीम, पाले दया जीवतां सीम  
 ॥ देहरे जाइ जुहारें देव, इव्यजावशी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें  
 गुरु वंदन जाय, सुणो दखाण सदा चित लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो  
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साह्मिीवत्सल करजे घणां,  
 सगणें महोटा साह्मिीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क  
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान, महोटाशुं  
 म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखनी, धर्म न मूकीश ए  
 के धनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंग अधिकानो परिहार ॥  
 म जशिकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म जांख ॥ ९ ॥  
 अनंतकाय कहिये बन्नीश, अजह्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जहण  
 नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ शत्रिजो  
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुं  
 ली, मधु धावनी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण  
 पास, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेवे वार, अणगल  
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंढी  
 करजे पुण्य ॥ बाणा इंधण चूजे जोय, वावरजे जिम पाप  
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर  
 म थोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे  
 ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं  
 म लेजे अनरथ दंरु, मिश्या मेल म जरजे पिंरु ॥ १५ ॥ समकि

त शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥ पांच तिथि म करो  
 आरंभ, पाँचो शीयल तजो मन वंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, ऊषादां मत मखो सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर  
 उपगार करो शुभ्रवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार;  
 चारे आहार तणो परिहर । दिवस तथां आलोए पाप, जिम जां  
 जे सघला संताप ॥ १८ ॥ संघ्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च  
 रण शरण जव जवे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवां, तीरथ शत्रुजे जा  
 यवा ॥ समेतशिखर आबू रिनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥  
 २० ॥ आवकनी करणी ठे एह, इथी पाये जवनो ठेह ॥ आठे  
 कर्म पळे पातलां, पाप तणा ठुः आः ला ॥ २१ ॥ बारु लहिये  
 अमर विमान, अनुक्रमे प. मे शिव रधाम ॥ कहे जिनदर्प घणसत  
 नेह, करणी डुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति आवकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिपोसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प  
 ज्ञासुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतणु वयसो एकंद कर  
 वि निसुणहु जो जविधा, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिजरहखित्त खोणी तल मंमण, मगददे  
 स सेणियनरेस रिउदल बलखंमण ॥ धणवर गुवर गाम नाम जि  
 हां गुणगणसजा, विप्प वसे वसुजुइ तच्च तसु पुहवी जजा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूवलपसिओ, चवदह विजा विवहरुवना  
 री रस बुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा  
 त हाथ सुप्रमाणदेह रुवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण  
 जेणवि पंकजलपानिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमानिय  
 ॥ रुवहि मयण अतंग करवि मेढ्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयवानिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण  
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इठ गुण मेढया संचिय ॥ अह  
 वा निचयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पठमा गवरि गंग  
 रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय रर कविय कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हीनि परवरियो ॥ करय  
 निरंतर यइ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण,  
 इंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासंमि  
 खोलीतल मंरुण, मगह देस सेखिय नरेसर, वरगुद्वरगाम तिहां,  
 विष्णु वसे वमनूइ, तसु पुहवि ज्ञाका, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ ज्ञास ॥ चर  
 म जिनेसर केवलनाणी, चोवेहसंघ पइघ जाणी ॥ पाषा पुरतामी  
 संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्ता ॥ ८ ॥ देवहिं समवसरण  
 तिहां किजें, जिण दंठे मिथ्यामत ठीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहास  
 सन बेदा, ततखिण मांह दिगंत पइघ ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म  
 दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासैं वाजी,  
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,  
 चउसठ इंडज मागे सेवा ॥ चामर ठात्र तिरोवरि सोहे, रूवहिं जि  
 नवर जग सह मोहे ॥ ११ ॥ नृपसम रसजर वरवरसंता, जोज  
 नवाशि वलाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहकंता, गयण  
 विमाणहिं रणरणकंता ॥ पेखवि इंडनूइ मन चिंते, सुर आवे अम  
 यइ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंकु जिम तेवहिता, समवसरण पुहता  
 गदगहिता ॥ तो अज्जिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाणयुं बोले, सुर जाणंता इम कांइ  
 मोले ॥ मो आगल कोइ जाण ज्ञाणीजें, मेरुं अवर किम उपम दी



जै ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर  
 महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण  
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन  
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुत्त तो जेयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञात  
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रजूय जूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं  
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पे  
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥  
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि  
 वर्जितजंगुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,  
 इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चित्तव ए, सेवतां प्रजु पाय  
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाले  
 तो ॥ एह असंजव संजव ए; साचो ए इंड जाल तो ॥ तो बोला  
 वइ त्रिजग गुरु, इंड्रजू नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,  
 फेरे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेव करे, जगतहिं ना  
 भ्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो  
 ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजू आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञासं  
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररण, आप्यावीर  
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमगुं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवां  
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय  
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंड्रजू इंड्रजू चढियो बहुमान  
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पढुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स  
 वे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम जवहि  
 विरत्त ॥ दिख लेई सिस्का सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञात  
 ॥ आज हुत्त सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्यजरो ॥ दीग गोमय  
 सामि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ समवसरण मकार, जे जे

संता ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूवे मुनि पवरो ॥ २३ ॥  
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो  
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरुं जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय  
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा  
 पद सेल, वंदे चढ चढवील जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम  
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणहर  
 संचरिय ॥ तापस पररसण, जो मुनि दीगे आवतो ए ॥ २५ ॥ त  
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ  
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुं ए अजिमान, तापस  
 जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि  
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, वंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥  
 पेखवि परमाणंद, जिणहर ज़रतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र  
 भाण, चिहुं द्विसि संठिय जिणहं विंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गो  
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं  
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंररीक, कंररीक अध्ययन जणी ॥  
 चलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साय,  
 चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांरु घृत आण, अमीय  
 वृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस  
 यां गुज्ज भाव, उज्जज ज़रियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क  
 चल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण  
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज  
 णवि पीयूष, गाजंती धन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी  
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण  
 पन्नरेसें, उपन्न परिरिय, हरिडुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग  
 गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाय निंदइ, चरमजिनेसर इम जणे,

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव  
 ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल  
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरत्त बहुत्तर संवसिय ॥ गव  
 तो ए कणय पन्नमेण, पायकमल संघे सद्धिय ॥ आवियो ए नय  
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमद्धिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर  
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीयलो  
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चितव्यो ए बालक जेम, अदवा  
 केम लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतदिं जोखें  
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए बीतराग, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लङ्ग,  
 रहितो रागे साद्धियो ए ॥ केवल ए नाण मुप्पन्न, गोयम सहज  
 उमाद्धियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविआ जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरत्त पञ्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससंजम, विजूमिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरत्त  
 तिहुअण नमंसिय, राजशुही नयरी ठव्यो, वाणवड वरसाठ, सामी  
 गोयम गुणनिखो, होसे सिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह  
 कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो  
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिर्यां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हैसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम महुवर राजीववने ॥ जिम  
 रयणायर रयणं विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि  
 मा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि  
 रिवर राजे, नर वइ धर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू  
 मीपती ज्ञयबल चमके, जिम जिनमंभिर घंटा रणके, गोयमलबयें  
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे  
 वंभिय काज, कामकुंज सह वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सांमी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पन्नणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥  
 श्रीमिति सौजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहु  
 जवज्ञायें णणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां  
 काय करीजें, देस देसांतर काय जमी जें, कवण काज आयास क  
 शे ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,  
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं  
 भंगल ए पन्नणीजें, परव महोन्नव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि क  
 ळयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण जयरें धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्षियो ए ॥  
 विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लण्ण पार, बरु जिम  
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास ज्ञणीजें, चउविह संघ  
 रजियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कळयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 ठमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासन बेस

षो ए ॥ तिहां ठेगी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसी,  
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो-  
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रज्ञाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां जोजन  
संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जं-  
मार ॥ जे गुरु गोतम समरिये, मनवंगित दातार ॥ २ ॥ पुं-  
ररीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीनें प्रणमता,  
चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुलकलियं, सुविशियं सबलदि स-  
पसं ॥ वीरस्स पदम सीसं, गोयम सामी नमस्तामि ॥ ४ ॥ सर्वा-  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिष्ठार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा-  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दहा ॥

॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास ज-  
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतीतरे, हु-  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिखदैत्य हजूर  
॥ २ ॥ वीर जिशंद सन्नवसरथा, सेत्रुंज ऊरर जेम ॥ इंडादिक आ-  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो,  
नही ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तेरथ सगला जोय  
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीग डुरित पुलाय ॥ जेटंता जव-  
जय टले, सेवंता सुख आय ॥ ५ ॥ जंभू नामे द्वीप ए, दक्षिण  
जरत मजार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ बाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंररीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतिक ॥ विम-  
लाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

( १७३ )

ने महागिरि पुन्यरांस, श्रीपदपर्वत इन्द्रकास ॥ महातीरथ पूरवे  
सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिखो  
तिण कीजे ज्ञक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥ ४  
श्वीपीठ सुज्जङ् केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नाम, जपेज बे  
ठा अपने गम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर जगवंत  
इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोगण परिमाण ॥ पिहुलो  
मूल उंचपण, उबीस जोगण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोगण जाणवो, बीजे  
अरे विसाव ॥ वीस जोगण उंचो कह्यो, मुज्ज बंदना त्रिकाल ॥  
२ ॥ साठ जोगण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोगण  
उंचो सही, ध्यान धरुं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोगण पिहुलपण,  
चोथे अरे मजार, उंचो दस जोगण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥  
४ ॥ बार जोगण पंचम अरे, मूलतणै विसतार ॥ दो जोगण उंचो  
अवे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर  
बत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ दाढ बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण गम रे ॥  
अनंत वली सिजस्ये इण गमे, तिण करुं नित प्रणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
जसाधू अनंता सीधा, सीजसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
रथ नही जेढ्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ २ ॥ ३ ॥ फागुण सुदि  
आठमने दिवसे, रुषजदेव सुखकार रे ॥ रायणकरुंख समोसरया  
स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ ४ ॥ ५ ॥ जस्तपुत्र वैत्री पुनम  
दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोन्हीसुं पुंर्रीक सीधा, ति

एष पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,  
बै बै कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण  
प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, न  
मीपुत्री चक्षुसदि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी  
धा एकदि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झवरु ने  
वारिखिछ रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी  
मुनिसुं निसछ रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी  
धा, नव नारद रुबिराय रे ॥ संब प्रऊन्न गया इहां मुगते, आवू क  
र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तीर्थकर, समवस  
रया गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग  
रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावञ्चासुत साथ  
रे ॥ पांचसैं साधुसुं सेवग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसेत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा  
म अने जरतादिक सीधा, मुक्तिवणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
जाखि मयाली ने छवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन  
ता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बै कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल वीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल छहार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार  
॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमशना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु  
षजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो  
चंदणने काज, थे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमहि मोटा  
अरिहंत देव, चोसठ ईड करे जसु सेव ॥ तेदयी मोटो संघ कहाय,  
जेहने प्रणमें जिनवराय ॥ ३ ॥ तेदयी मोटो संघवी कह्यो, जर  
त सुणीने मन गहंगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे से  
त्रुंज जात्रा क्रिये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुज, थे आपे

हूं अंगज तुझ ॥ इंद्रे आणया अकृतवात्, प्रभु आपे संघवीपद ता  
 त ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाळ, जरत सुजडां बिडुंने माल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष  
 जदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतली दीधी मन रली ॥ जरतें गणधर  
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेसं ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणो, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कौम  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सधली रुद्धि, जरते साथे ली  
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कदातां नाथे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कदवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥  
 संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठांमे  
 रही महोद्धव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पळ्यो ॥ केवलग्यानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी  
 स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,  
 जरतें दीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे  
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, जरत करायो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रत्नतली प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥  
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरतें करायो गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥



हार चोथी ॥ राग सिंधुदो, आसावरी ॥

॥ ज़रततणे पाट आठमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ ज़र-  
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज  
उक्षर सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा  
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-  
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलणो बिंब जंमारीयो, पञ्चिमदि-  
सि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल  
कियो अवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्य, दंरुवीरजथी जिवारो जी,  
इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा  
देवलोकनो धणी, मादेइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,  
ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इइनो कियो, ए ठठो उद्धारो  
जी ॥ चक्रवर्त्ति समरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
अजिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइइ करा  
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीने  
पोतरो, चंडशेखर नाम मद्धारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए  
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,  
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वां  
मी बारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ १२ ॥ पारुव कहे अमे पापिया, किम बूटां मोरी मायो  
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०  
॥ १३ ॥ पांचे पारुव संघ करी, सेत्रुंज जेख्यो अपारो जी, काष्ट चै

त्य विंव लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणानी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संय करी,  
 चापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अघोतर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवान जावरु करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतेरे; श्रीमाखी सुविचा  
 रो जी, वाइरुदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतेरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 स्यासियो, बैसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काखे सोलमो, ए  
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दृश ॥

॥ वलि-सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि  
 घनेतर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेब मानता, लाज दुवे तह-  
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण  
 समो लहे, पळ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 नीपावे कोय ॥ जीखोंद्वार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥  
 तिर ऊपर नागर धरी, लात्र करावे नार ॥ चक्रवर्चनी स्त्री थई,  
 शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती  
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीया दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक इ  
 त्या, पापची नाखे ठोरु ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जखी, जो  
 जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पखिलाज नां, अधिको तेहथी देख ८

॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप बूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप  
जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि  
ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं  
ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी  
करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैतुंज चढी, एक करे  
उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी  
कीधी जेषो जी ॥ सात दिवस पुरिमळ करे, तो बूटे गिरि एणो  
जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरिया नर नारो  
जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥  
से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेते सिद्धहेत्रो जी ॥ सेतुंज  
तलदढी साधुने, पमिलाजे सुधे चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राजरण  
जिणे हरया, ते बूटे ण मेळो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह  
ळ्ळी बहू वेळो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध  
आये एमो जी ॥ अधिको डव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो  
जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जेंस घोमा मही, गज अद् चोरणाहारो  
जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिदंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥  
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ बूटे गमासी  
तप कियां, सामायक तिण गमो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि  
ब्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत जाजे तेहने कह्यो, ग  
मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुषि,  
एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, बूटे तप कर  
तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दाल छद्दी ॥

॥ संप्रति काखे सोलमो ए, ए वरते ठे वद्दार ॥ सेतुंज यात्रा

करे ए, संकल करे अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी पालतां चालिये  
ए, सेत्रुंज कैरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि  
ल्ल्या बहु धाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पैखिये ए, वलि सत्ता  
नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, बनने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥  
से० ॥ पालीताणे पाजकी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेत्रुंजनदिय  
सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये दिंगलाजने हरे  
ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ वारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग  
उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी  
माय ॥ शातिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥  
॥ ६ ॥ वेस पोरवाने परगमो ए, सोमजी साह मवार ॥ रूपजी संघ  
ची करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा  
चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अदञ्जुत  
आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं  
अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥  
धरमंडवारमांहि नीतरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आर्ज आदिनाथ  
देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनाथ प्रणसुं मुदा  
ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत  
॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल  
श अगोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥  
अथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पग  
ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प  
गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी चूमि बिं  
बावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि  
हालिये ए, अति जखी उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध  
शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर वा

ज उतरुं ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवास इण पर करी ए, सी  
 था वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल  
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०  
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजवज्यो सहू कोय ॥ घर  
 बेठां जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव  
 त सोल वयासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत  
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर  
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल  
 चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम  
 यसुंदर उवजाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुखतां आणां द था  
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरु, रचस्युं रास रसाज ॥ तीरथ शि  
 खरसमेतनी, महिमा वनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,  
 प्रगळ्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरु, सिद्ध गए इह खेत ॥  
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन जे  
 टो जावसुं, ज्युं सुख संपद आय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,  
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती  
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब  
 जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी  
 ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

( १८१ )

नरैसर बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण  
नी खाण ॥२॥ जसु इंझादिक सेवा करे, इंझाणी अति उज्जव धरे ॥  
तीर्थकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु-  
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिढ्यो सहु जोग ॥ अवस-  
र दे सेवत्तर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावो  
प्रांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंजलसाहि,  
जव्यजीव प्रतिबोधन साहि ॥५॥ सिंदसेनादिक गणधर जया, पं-  
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरचा, आवक  
आवकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव  
यां जाणो सुविचार ॥ आवक सहस्र अठाणुं सही, दोय लाख  
संख्या गढगही ॥७॥ पांच लाख पैतालीस हजार, आवकणी सं-  
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण सरिर  
सुहाय ॥८॥ साढीव्यारसे धनुष सरिर, मान लह्यो प्रभु गुण गं-  
जीर ॥ गज लांठन प्रभुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण  
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत  
सहस्र मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥  
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणो ॥ जूवर खेच-  
र किन्नर सुरी, इंझादिकसहु उज्जव करी ॥११॥ थाप्पो तीरथ मोटो  
मही, अठाइ महोज्जव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते  
जवियण अकथसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे-  
त सुहामणो, प्रगळ्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही सांजन श्रीसीमधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावळीनगरी जरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप  
३६

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनारानी भीठी वाणी गुणानी खी  
 णा, जेहने सुत श्रीसंजव जनम्या सकल मुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 सररीर मनीहर प्रभुनो जाण, लंगन अश्वतथो सोहे प्रभुनो परधा  
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै ठव  
 पणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर  
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी बली ऊपर सहस बत्तीस, जूमंरुल विचरे प्रभु श्रीसंजव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट  
 लाख सहस बत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु ड  
 रितादेवी सानिधकार, विचरता प्रभु सकल संघमें जयप्रकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी शिखरसमेत, एक मास संलेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इषा गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवाण,  
 तीरथ महिमा महियल मोटी घइय मुजाण ॥५॥

॥ इरा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस-  
 मेत सोदामणो, जेठो तीर्थ मुजाण ॥१॥

॥ ढाल ब्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमपरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जखी, संबर राजा सोहे  
 मन रली ॥ सिद्धार्थ राणी प्रभु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 टथा चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी  
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंगन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोख ए ॥ तीन लाख मुनि  
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोख ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्ठासी  
 दो लाख श्राद्धनी, संख्या चौ लाख सचाबीसनी ॥ श्रावकहयारी संख्या  
 जाण ए, नायकयक्ष कालिका गण ए ॥ उल्लाखो ॥ ढाण ए शिखरस

मत ऊपर मात एक संलेखणा, इक सहस्र साधू परवरया प्रभु  
 मुक्ति पहुँचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
 गला, श्रीसुमति जिनवर जए नंदन सदा होत सुमंगला ॥ ३ ॥ चाल ॥  
 सोवन वर्ष धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥  
 पूरब लाख पव्यासी आज ए, इकसौ गणधर गुणगण आज ए ॥  
 उल्लाखो ॥ आज ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस्र बीस प्रमणां  
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥  
 संख्या इक्यासी सहस्र ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख  
 सोहै सहस्र तुंवरु मदाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
 संख्या सहस्र साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति  
 पुहुता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात  
 सुलीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलत  
 णो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई  
 सै त, कहौ, तीन लाख पूरब थित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥  
 लख तीन तीस हजार साधू बीस सहस्र लख च्यार ए, साधवी  
 दोय खल सहस्र बिहतर आवक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पांच  
 लाख बलि पांच हजार ए, आवकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
 देव श्यामादेवी कहौ, लाखवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लाखो  
 ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
 लेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पुहुता,  
 गिर शिखर महिमा जई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं  
 द गहजही ॥ ५ ॥

॥ दुरा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आरास ॥ जविजन ब्रह्म  
 रसु सेवतां, पांमे वंदित काम ॥ १ ॥



॥ बोल चोथी ॥ श्रीसीमंघर साहिब ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लाखे ॥ दे  
वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंगन सिष्ठ लाखे ॥१॥ श्रीसुपार्श्व  
जिनंद जी, बीस पूरव लख आयु लाखे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कं  
चनवरण मुहाय लाखे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा, सा  
धू त्रिण लाख होय लाखे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस सा  
धवियां जौय लाखे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लहनी, आवक  
संख्या आय लाखे ॥ च्यार लाख बली त्रेणवै, सहस आवकणी  
जाय लाखे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर  
वर लाखे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला  
खे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महेस लाखे ॥  
देवी माता लहमणा, सुत चंडाप्रभु वेस लाखे ॥६॥ श्रीचंडाप्रभु  
बंदिये, चंडवरेण तनु जेह लाखे ॥ लंगन चंडतणो जलो, धनुष  
दोढसे देह लाखे ॥७॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे  
सुरे नर यक लाखे ॥ दस लाख पूरव आजंखो, तेणवे गणधर  
दह लाखे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्र  
मणी तीन लह लाखे ॥ असी सहस संका कही, आवक बलि  
दोय लह लाखे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, आ  
विका चंड लह धार लाखे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
नो परिवार लाखे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव जूकुटीसुरी, स  
हस साधु परिवार लाखे ॥ संखेखन इक मासनी, पुहता  
मुक्ति मजार लाखे ॥११॥ श्री० ॥

॥ बुहा ॥

॥ जंय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जंगपति दिनदयाल ॥ समे  
तशिखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिछो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
मातां सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु  
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु  
सुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल  
ख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय  
लक्ष श्रावक कहा, अरु गुणतीस हजार ॥ एकचर चौ लख सहस,  
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा  
निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥  
मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह गेर ॥ तीरथ महिमा म  
हियलै, प्रगटी व्याहं उर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु  
शज्यो अधिकार ॥ जहिलपुर दठरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
७ ॥ लंठन सुज श्रीवठनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ  
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु  
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कहा, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥  
एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या उर ॥ सहस तयासी  
दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,  
श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सह संघ सानि  
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति  
गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर संगति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं  
चनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खरुग लंठन प्रभु पायजी ॥ धनुष अस्त्री

देहमांन चौरांसी, लाख वरसमो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर  
 बहुतर सहस चौरांसी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह  
 स वलि सहस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥  
 अरुतालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज  
 ह्म अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥  
 न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रज्जुजी सिखरसमेत जी ॥ मा  
 स संलेखण कर प्रज्जु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥  
 ५ ॥ दिव कंपिलपुर तात जूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या  
 मादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू  
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व  
 ह्मरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस  
 मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सहस  
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ ९  
 एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रज्जुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार  
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ १० ॥ नगरी नाम  
 अयोध्या नरवर, सिंहासेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत  
 जायो, प्रज्जुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ ११ ॥ लंठन श्येन सो  
 वन सम काया, धनुष पञ्चास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वह्मरनो  
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ १२ ॥ बासठ सहस  
 मुनीसर सोदे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय  
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १३ ॥ चार लाख व  
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यह्म श्रीसंघके  
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १४ ॥ आठसै मुनि  
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि  
 ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १५ ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ अस्ते धर्म जिणेसरू, पुढता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत  
गिरिंद पर, नमोश् जगज्जाण ॥१॥

॥ दाल सरतमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, ज्ञानुराय सुजाण ॥ राणी  
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने  
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंबन सुखकार  
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कहा जी, चौसठ सहस्र प्रमा  
ण ॥ श्रमणी बासठ सहस्रयूं जी, आवक दोय लक्ष मान ॥ ३ ॥  
ज० ॥ चार सहस्र बलि ऊपरां जी, चौ लाख एक हजार ॥  
आवकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥  
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सहस्र परिवार ॥ समेतसिखर मु  
गते गया जी, बांधू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथलापुर विश्वसेनना  
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन  
जयस्कारा ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांबन सोवन  
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, ठ  
चीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सहस्र मूनि ठसै जी, इगसठ  
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कहा जी, ऊपर नेऊ हजार  
॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस्र त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥  
गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसै मु  
नि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें  
जी, पुढता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें हथलापुर जलो  
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त  
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग  
लंबन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मान ॥ सहस्र पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रज्जनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैतीस गणधर दीपता  
जी, साठ सहस मुनि जान ॥ बसै साठ सहस वली जी, अमणी  
संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लकनौ जी, आव  
क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं  
ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब  
सा गंधर्वाकुंजुनाथ मुगते गया जी, माख संखेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५  
॥ दहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्थुं अब अधिकार ॥ श्रौ  
ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्यै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाढ आठ्ठी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू ॥ १ ॥ देसी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनसरू, तिहां नगरी अयोध्या  
चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंददेवीना नंद रे लाला ॥

॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंगन नंदावर्तनो, तीस घनुषदेहीनो मान रे  
लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥

॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख आवक ऊपर, बलि संख्या अधकी जाण रे  
लाला ॥ सहस बहुतर ताननी लक आविका संख्या आंश रे लाला ॥

श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परचार  
रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रज्जु, कर मास संखेखण सा  
ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री

कुंज राय रे लाला ॥ लंगन कलस पचोसनो, वपु धनुष सोवन  
सम काये रे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा

वन वर्षनी, शित गणधर अछाबीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति  
बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ ला

लीस सहस मूनेसरू, अमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस  
त्रयासी लकनी, आवकनी संख्या तार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥

( ५८९ )

श्राविका सित्तर सहस्रनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लावा ॥ सहस्र  
मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संखेखण धार रे लावा ॥ श्रीम० ॥ १० ॥  
राजमही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लावा ॥ श्यामव  
रण तनु शोभता, जे कपिल लंगन विख्यात रे, लावा ॥ श्रीमुनिसुव्रत  
स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वगर तीस हजार  
रे लावा ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस्र मुनिसर सार रे  
लावा ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस्र पंचवीसनी, संख्या ब  
हुतर हजार रे लावा ॥ एक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प  
चास हजार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी ज्ञानी,  
नरदत्ता सानिधकार रे लावा ॥ सहस्र मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
मंदल सुख सार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा  
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लावा ॥ नीलकमल लंगन  
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लावा ॥ श्रीनमिनाथ, जिने  
सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे  
लावा ॥ वीस इकतालीस सहस्र क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ एक लख सित्तर सहस्रनी, तीन ल  
क्ष सहस्र बलि होय रे लावा ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनक्रम  
करि संख्या जोय रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमंरुले,  
आया सिखर समेत मज्जार रे लावा ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,  
एक सहस्र मुनि परवार रे लावा ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ इहा ॥

परमैसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
रोमणि सहस्रफल, जगजीवन जंगतात ॥ १ ॥

॥ दाळ नवमी ॥ आदर जीव संपागुण आदर ॥ ५ देखी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम; पारस पारसनाथ जी ॥

सांविरियां साहिब जगनार्थक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
जय शिखर समेत सिरिमणि, श्रीसांविरिया पास जी ॥ ध्यावे  
सेवे जे नर तेहनी, पूरे वैभित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कांसी दे  
स चणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या  
तो, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंगन नील  
वरण भवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयु इसो वरस प्रमाणे,  
गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सदस मुनिवर  
असु अमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ जूमंरले विचरे जवि  
जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सदस लाख इ  
कं श्रावक, गुणधालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं  
ख्या, पार्श्वयंक सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते  
पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरष प्रगळो जग  
में, मुक्तितपो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बहरी पाले जे नर  
जावे, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवैभित फल पावे, ए सु  
रंतकनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै जक्ति, सं  
घपति नाम धराय जी ॥ सफल करै संपद निज पामी, जेहनो  
सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा  
आ करै गहगाटे जी ॥ साधर्मो वल्लभ मुनिजक्ति, पूजा उठव था  
ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूकर पर चरण प्रभूना, पूजा जविज  
न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक जे  
जाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
नवनिध थाय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म  
न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गहपति महिमाधारी,  
कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरेश्वर, अमृत  
वर्धन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्गे सीत जी ॥ बाखचंड निज मति अनुसारे, सोधो विबु  
ध जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत जगणोत्तै सितमोत्तर, सुदि  
वैशाख सुढाख जी ॥ रात अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल  
माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रात संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाययुग प्रणमू, तिवसुख वायक मनह  
उद्धात ॥ पुंनरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि  
कात ॥ १ ॥ प्रह तम सूषा साधु नमु नित, ज्ञावै श्रमण सुगुरु  
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालू, परमातंद सुमति विकसं  
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महामुनि प्रथम चक्रीसर, बाढूबल उप  
शम जंमार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनिसर, पांन्यो विमलाचल ज  
वंपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोनो  
लाख असंख, श्रीतेनुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी क  
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महा  
बल संजम सींह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न  
वम अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमल्लि  
नाथ पूरबजव नित्र ॥ पटुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि  
न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लवधि निधि, सं  
दक सूर्या सीत सय पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम  
ण सुकोतल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडवंत अकोजसु सा  
गर, प्रमुख आठ अखगार प्रधान ॥ श्रीरदनेमि नेमजिन बंधव,  
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने  
जवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रुषीसर,  
सत्यनेमि दृढनेमि सुबन्ध ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक  
षट् मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकसाख ॥ दंडण रुषि श्रीथावसा



सुत, सहस्र साधु संजतसु कृपाय ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसथांसु सेलग मुनि  
वरो ॥ सिद्ध अथा श्रीपुंरुगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥  
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोद ए, अं  
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध  
नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महारुषि कुंजवारे साधु नमुं  
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषज्जदत्त रतनत्रय मुणी, स,  
मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी  
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती बालक पूत्र मेहल धिवर  
आणंद रक्षियो, अणगार कासव धर्म ज्ञारुयो सोधि सिवपुर स  
रक्षियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमई, श्रीपुं  
रुरीक महामुनीसर प्रणमिये शुज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड  
बलकलची रीकेवली, श्री अयमतो मुनिवर मन रखी ॥ श्रीकरकंडू  
डुमह नमि निगया, निज देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री  
जुवा ए वृषजादि देखी अथा वरु वइरागिया, संजमसिरि जज मो  
हनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध अथा  
एकण समे, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहचा मुनि चरणे लय ला  
इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुद जयंती साहुणी  
॥ उल्लाखो ॥ साहुणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया  
॥ श्रीश्रमणजड सुजंड सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ  
तीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोत्रड गरुड गरि  
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुषीसर बंदिये, दसारण  
जड नमुं डख बंदिये ॥ अर्जुननाली सुख संजमधरो, मुददप्रहा

श्री सिवरमणी वरो ॥ उल्लाखो ॥ सिवरमणी वरो श्री कुरंगदू कमावंत  
 प्रसिद्ध, कोमिल दित्त अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 तम प्रबोधत सिद्ध पुढता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 गरुआ श्रीगुलासागर गार्ह्ये, प्रथवीचंड प्रणम्यां सुख पाइयै ॥ खं  
 दकुमार सदा अजिनंदिये, नमिह जरह मित्र मन आणंदिये ॥  
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष  
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्री ईड नाम निर्ग्रथ निर्मम  
 धर्मरुचि धर्मांगिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी  
 संरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदयर कर जगि २ जसतणो, श्रमण सु  
 दंतण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात रुषिचर  
 देवतांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हि  
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरखेव ए ॥ १७ ॥  
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुठ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुठ ॥ श्री  
 इखुंकार नृपति कमलावती, रांणी नृगुसुं प्रोदित सुन्नमती ॥ उल्ला-  
 खो ॥ सुन्नमती जेहनी जसान्जार्था पुत्र दोष वखाणिये, ए उहूं  
 लेइ चारु चारित्र मुगति पढुता जाणिये ॥ कत्रिय मुनिसर साधु  
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुतं  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्भापुत्र नमुं केवल कळयो, विषसुं शीतल  
 सिवकमला मिळ्यौ ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, बीरप्रशं  
 स्यो तप गुण बीर ए ॥ १९ ॥ श्रीबीर दीक्षित श्रीसुबाहुजड नं  
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥  
 श्रीचंमरुद सुसीस खंदग कमानिधि कदिये इण कलै, कुरुदत्त सुत  
 तीसग सरोरुद रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुखं रिष च्यारे आवरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नैकुमार  
मुनि अन्नयंकरो, दह्म विदह्मसु आतमः हितकरो ॥ उल्लाखो ॥  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनहस्र  
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने  
वंदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसाखजइ सुधेव मुनिवर समरंता  
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ हाळ ३ ॥ राग पन्थासिरी ॥

वक्रवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूतांमि ॥ प्रजव सिरयंजव  
परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ मद्दामुनिसर नित नमूं जी,  
नांमे घर नवनिधय वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा ० ॥ ११ ॥ जग संजु  
तिविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोषीसर जागतो, मुनिवर  
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य  
मुनीराय ॥ सीत परीषद जिणसह्या, सारथा २ आतम काजं ॥ म० ॥  
॥ १४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुद्धि विसाळ ॥ संप्रति वृष  
पन्निबोद्धियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजतांमि  
यसंसियो, अज्जसुजद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु मद्दिमा निलो, सींहगि  
री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि यिवर महामनी, श्रीवयर  
स्वामी मुनीराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमाय  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्त गुरु दह ॥ पुस  
मित्र गुण गहगह्यो, प्रभु डुरबलका पद ॥ म० ॥ २८ ॥ विंज सी  
धु मुविंषइ जेरयो, श्रीवंमिल सुविदह ॥ सूत्रअरथ रत्तेने जेरयो,  
हमाश्रमण देवह ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचेम काल मद्दामुनी, श्री  
डुपसे सूर दयाळ ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सदी, जिन आझा प्रतिपाल  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मजमी जिके, दुआ होख्यै अणंत  
॥ वत्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि राघने, साहुणी चंदनबाख ॥ आदिक सीतवती सती, त्रिक  
रण सुद्ध त्रिकाख ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल छीस ए, श्री  
विमलनाथ सुरसाख ॥ दिक्क कल्याणक दिने, गुंथी श्रीमुनिमाख  
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रत्नियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
सूरि विजय राजै सदा, संध सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
भतिजइ सुगुरुतणै, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीधै,  
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमाखका, गुणग  
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पाभै सुख नरपूर ॥ म० ॥  
३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
हासिद्ध घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाख  
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नू जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ वरतमान चौबीसी वंदू, मन सूखै नित मेव री माई ॥  
रुपज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥  
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंड प्रजु प्रणमं, सुविध शीतल श्रेयांस री  
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री  
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
पाल जिनंद री माई ॥ चौबीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा  
जेंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ डाल २ ॥ ग्रह सम सूषा साधु नमू नित ॥ ए देखी ॥

नित २ अतीत चौबीसी नमिचै, जेहना नाम प्रगट ए जाण ॥  
केवलग्यानी ते निरबाणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
॥ नि० ॥ सर्वानुजति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा  
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम  
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कतारण, श्रीजिनेसर सुद्ध

ति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे-जिनेवर चौवी  
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ गल ३ ॥ सकल सैसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहु  
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण  
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी  
जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए,  
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो  
साध ए, चौथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ द्वायुष जीव सिद्ध  
तमें जाणियै, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्ति इण नाम  
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठो स्वांमि सुलहीजियै ॥ संख  
आवक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन  
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक  
इतकीर्ति दसमो जण ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्य  
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव त्रिकषाय  
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर  
मम देव सुलता कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥  
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शंखजीव संकर  
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर जगणीसमो, कृष्णकोइजीव  
ते द्विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो,  
देव बावीसमो अंबउ आवक जण ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत  
बीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चौवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम  
चौवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ पर-  
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारथी साव कर सरदहा ॥ एण ॥

॥ बाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन बीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर  
शुगमंधर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु  
रुग्गानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रवर चंडानन  
चंडबाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा  
भद्र नेमुं बली, देवयसा यसोरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नाम  
लिशं नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ बाल ४ ॥ रे जीव जिन बर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थकर सासता, इणदिज अजिधान ॥ रुक्मनांन चं-  
डानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोनि ठप्पन्न  
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ठयासी देहरा, त्रिहुं लोक मज्जार  
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोनिया, विंन त्रेपन लाख ॥  
संदह अठवीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विज्जू  
जिणवर नाम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम  
कित सुद्ध आय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चौवीसी बीस विहरमांण चऊं जिणवर सासता,  
संथुआ सतरसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता  
मणितणा पर प्रबल वंठित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमै  
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री ठिन्नूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अय उपदेशमाला पौसह सिद्धाय लि० ॥

जग चूकामणिचूठ, उसजो बीरो तिलोय सिरि तिलठ ॥  
एगो लोगेश्चो, एगो चरकू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसन्न जिणो,  
उम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इह विहरिया निरसणा, जए ऊएउव  
माणेश ॥ २ ॥ जइता तिलोय दादो, विसइइं वहुचाई असरितज

शस्त ॥ इय जीर्यतकराई, एस्त खमा सबसादूणं ॥ ३ ॥ न चइ  
 ऊइ चालेउ, महइ मदावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग सदस्सेहिं  
 वि, मेरु जहा वायुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पदम  
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं; विम्हिय हियउं  
 सुणइ सब ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउं तं सिरेण इडंति ॥  
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयव ॥ ६ ॥ जह  
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पमाण  
 नरिंदो, गणस्त वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मदीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं काउं, बिहरंति मुणी  
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरुवो तेहस्ति, जुगप्पदाणागमो महुरवको  
 ॥ गंजीरो थिइमंतो, उवएसंपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगदसीलो अज्जिग्गहमई य ॥ अविकडणो अचवलो, पसं  
 तहियउं गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं  
 पइं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सुयलं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयळा सदस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ  
 माणं, परिय डइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स वमग, स्स  
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अऊ ॥ नेडइ आसणगहणं, सो विणउं सब  
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अऊाए अऊदिक्खिउं साहू ॥  
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो  
 पुरिसप्पज्जवो, पुरिसव रदेसिउं पुरिसजिणे ॥ लोएवि पइ पुरिसो,  
 किंपुण लोयुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाइणस्ससरसो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कत्ता सदस्समहियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥  
 तह वि य सारायसिरी, उल्लइंती न ताइया ताहिं ॥ उयरणिण  
 इके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिल्लाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊाउं इइ समत्त धरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

( ३९९ )

जहिं नहिं ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सत्किं  
सुकं ॥ इह जरहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिवता ॥ १९ ॥ वेसो वि  
अप्पमाणो, अतंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं  
न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेतो, संकइ वेसेण दिस्सिंत  
मिअइ ॥ उम्मगेण पमंतं, रक्कइ राया जणवत्तं यं ॥ २१ ॥ अप्पा  
जाणइ अप्पा, जह्मिंत अप्पसत्किंत धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह,  
जइ अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ  
जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥  
॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविस्सिंत ॥ संव  
जरमणसीत्त, बाहुजली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियममइ विग  
प्पिय चिं, तिणए सत्तंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहिं, कीरइ गुरु  
अणुवएत्तेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गबिंत निरवणा  
मो ॥ साहुजपास्त गरहिंत, जणेवि वयणिज्जयं लइइ ॥ २६ ॥  
ओवेण वि सप्पुरिसा, सणकुमारु इकेइ बुद्धंति ॥ देइ खणपरिहाणी,  
जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण  
वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥  
॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुखं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमद्धिदियए ॥  
जं च मरणा वलाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ जवएस सह  
स्सेहिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जइ बंजदत्तराया, उदाइनिव  
मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चइ रायलब्धीए ॥  
जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जगतो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू  
णवि जीवाणं, सउक्करा इति पावचरियाइ ॥ जयवंजा सा सासा,  
पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिज्जण दोसे, निथए सम्म  
च पायवनियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥  
इति पोसह सिखा ॥



॥ अथ राईसंथारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥  
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिज्जंतं ३, कहिये, अणुजाणह जि  
ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंमिअसरोरा ॥ बहु  
परिपुत्रा पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं,  
बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुरु पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जाए  
जूमि ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय परिजेहा ॥ दवाई  
उवनुगं, कसासनिरुंजणाखोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्जा पमानं, इमस्स  
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं ति विहेण बो रिरियं  
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ  
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिज्जत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, रकम  
ग संसग विग्घ जूआई ॥ डुगइनिबंधणाइं, अठारस पाववाणाइं  
॥ ६ ॥ एगो हं नज्जिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अवीण  
मणासो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासन्नं अप्पा, नाण  
इंसणसंजुत्तं ॥ सेसा मे बाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥  
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग  
संबंधं, सबं ति विहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं  
सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥  
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलि  
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा  
लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च  
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव  
ज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥  
अरिहंता मंगलं मझ, अरिहंता मझ देवया ॥ अरिहता कित्तिअत्ता  
णं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मझ सिद्धा य मझ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ आ  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ  
 देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त  
 जोणि लक्काउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्काउ ॥  
 ॥ १ ॥ विगळिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति  
 रिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्का यमणुएसु ॥ २ ॥ खमेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वजूएसु, वेरं मझं न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंठिअं सम्मं ॥  
 तिदिहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह,  
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज  
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति  
 संधारा गाथां स० ॥

॥ अथ निदावारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोळयां मद्दा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणो माय  
 बाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमा बलती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम ऊ  
 जला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजाखो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणो अवगुणो सहु जरयां रे,  
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेय रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेमहुटकवारो आय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो  
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जालअपार रे ॥ सु  
जाणें सीता ॥ जाणें केसू फूलियां रे लाल, राता खिरअझार रे  
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि  
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो  
शण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक  
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ कज्जी जाणें सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, कजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म दुशी इणें आगमें रे लाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बाँधयो हुवे रे लाल,  
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे  
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग  
में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगुं  
झरयो रे लाल, जिले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरणा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊं  
तरी रे लाल, साखें जेरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स  
हुको थयां रे लाल, सघले थया उबरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन इर्थ सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥  
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिधाय ॥

॥ श्रेष्ठक रयवनी चढयो, पेखियो मुनी ए केत ॥ वर रु  
पकाते मोहियो, राख पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेष्ठिकराय हुं  
रे अनाथी निर्ग्रथ ॥ तिलमैं लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
आकषी ॥ इण कोसंबी नगरा वसे, मुऊ पिता परि गल धन ॥  
परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सह  
जूरी रह्या, तोही पछे रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
गुण मन उरनी, उरनी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही,  
नाहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया,  
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेइया, पछा तोही रे दाह  
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेनं सं  
जमजगर ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥  
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमाई को केहनो नाहिं, से जणी हुं रे अनाथा ॥  
वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगर ॥ श्रे  
ष्ठिक समकित तिहां लहे, बांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गलि समय  
सुंदर तेदना, पाय वंदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिधाय ॥

॥ कर पन्तिकमणो जावसुं, दोय घनी शुन जाण ॥ लाल  
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥  
कर पन्तिकमणु जावसुं ॥ ए आकषी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे  
ष्ठिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंकी सोना तणी, दीये दिन  
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम

दीये ड्य्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लंगार  
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसडो, जलुं वंदन दोय  
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारो रे आपणां, ते जव कर्म नि  
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानसग गुजध्यानशी, पञ्च  
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते बलो, टालो टालो  
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादशी, लहीये  
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए  
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणां चार  
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोखतनो दातार ॥ हियमे रा  
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥  
 केवल ज्ञातियो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ ज० ॥ दूटे  
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए जारु  
 मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारुं तहतीक  
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारं  
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥  
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतमां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने  
 सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥  
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर  
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा  
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते  
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी  
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

भनेचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोन कळ्याण ॥ शुद्ध  
भने करी समरता हो ॥ ज० ॥ निर्वै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥  
ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर  
णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥  
॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥  
जोयमल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥  
॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ दंडण रुषीनी सज्ञाय ॥

॥ दंडण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूवा  
री लाल, अजिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेख्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं०  
॥ १ ॥ हुं० ॥ नितप्रति कठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार  
रे ॥ हुं० ॥ मूल नलै अणसूजतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं०  
॥ २ ॥ हुं० ॥ हरि पूढे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सदस अढार रे ॥ हुं०  
वां० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुजने कहो विचार रे ॥ हुं०  
॥ ३ ॥ हुं० ॥ दंडण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद  
रे हुं० ॥ कृष्ण ऊमाहो वादवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हुं०  
वां० ॥ ४ ॥ हुं० ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हुं०, बांदा कृष्ण  
नरेसरे हुं० ॥ कणही मिळ्यात्वी देखने हुं०, आयो जाव वि  
सेसरे हुं० ॥ ५ ॥ हुं० ॥ मुज घर आवो साधजी हुं०, ब्यो मोदक ठे  
शुद्धे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांशुरथा हुं०, आयां प्रभुजीने प्राप्त रे  
हुं० ॥ ६ ॥ हुं० ॥ मुज लंबधै मोदक मिळ्या हुं०, कहोने तुम्हे  
किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वळ ताहरी हुं०, श्रीपति लबधि  
निधान रे हुं० ॥ ७ ॥ हुं० ॥ एलेवा जुगतो नही हुं०, च्याळ्या परत-

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हूं० चूरे करम समाज रे  
हूं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती जावना हूं०, पांभ्यो केवल नाण रे  
हूं० ॥ ढंढण रुषि मुगते गया हूं०, कहे जिनदर्ष सुजाण रे हूं०  
॥ ए॥ ॥ ढं० ॥ इति ढंढण रुषि सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिंज्ञाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन,  
मनरै तो मांती रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,  
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममको रे किम परचावसुं  
॥ २ ॥ वस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु  
मति देतां रे जीज वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तोसै नारी हो धन्ना,  
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥  
बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले  
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥  
कोरु बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांलो रे धन्ना, वय  
पिण जांलो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणी ॥ ७ ॥ व्रत  
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क  
हावणो ॥ ८ ॥ घर १ जिहा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कदाणी  
रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ एक वारे सुणीये हो धन्ना, आ  
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांलो हो डुकर जोग वै ॥ १० ॥  
वनवासै रहणा हो धन्ना, परीसह सहलो मो० ॥ कोमल  
केतां रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जारख्यो हे अम्मा,  
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
सुख अजिलाषी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग  
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार  
थी मोरी अम्मा, बीर बखाण्यो परखदा सद्गुण्यो ॥ १४ ॥

में हम जाण्यो हैं अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-  
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे  
मोरी अम्मा, जो खिशा जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
रे मनमां गढ़गही ॥ १७ ॥ ठग पारणे हे अम्मा, विगय निवा-  
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरमर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
जम पावे हे अम्मा, दुषख टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ  
रूना जणै ॥ १९ ॥ संजम पाव्यो हे अम्मा, नव पखवामे मोरी  
अम्मा, मास संघारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन-  
रुषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ करम  
तणे वस सुख डुख पाया, सबल हुआ मदा निबला रे प्राणी, कर्म  
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव  
स रह्या जूला ॥ वीरने बारे वरस डुख दीधा, कपना ब्राह्मणी कूखै  
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस्र सुत मारया एकण दिन, जोध  
जुवान नर जैसा ॥ सगर हुस मदा पूत्रनो डुखियो, कर्मतला फल  
एला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस्र देसारे साहिब, चक्री  
सनतकुमार ॥ सोखे रोग तरीरमे कपना, कर्म कीयो तनु बार रे  
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्मदाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥  
बारे वरस लग अथ आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
॥ ५ ॥ इतिवाहन राजी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्युं  
चहुटामे वेची, करम एला ला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
आठमो चक्री, कर्म नगर नाख्यो ॥ सोखे हन जह उजा देखे,  
पिण किराही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे



बारमो बकी, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोइ जा  
 ववरो साद्विब, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांदि मूंत एकलनो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांचव पांच महा  
 पूजारा, हारी डोपदा नारी ॥ वारे वरस लग बन रमवनिया, ज  
 मिया जेम जिरह्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस  
 मस्तक हुंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलनै जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांण्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी  
 श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥  
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सत्सिख सिरोमणी डौ  
 पदि कडिबै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषन्ती हइ ते नारी,  
 शूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, ताचो राजा चंद ॥ मांदि कीधो पंखां कूकनो, कर्म नारव्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ते पारवती नारी, क  
 रता पुरुष कदावै ॥ अहनि स महिल मसांणमे वासो, जिहा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात दिवस रडे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंख्या नर कर्म,  
 प्राज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरण कर जोमीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि  
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परयांशकां, पानव पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सहू रा  
 जरिइ दि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जकण अवगुण घणा, करै  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवतो, नरक गइ  
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन  
 तली, चित धरी बलि चाह वि० ॥ छीपायण रिषि दहव्यो जा  
 वदे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चौथे विसने वे  
 स्थाधर बसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कथवन्नादिकनो गयो  
 कायदों, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेने  
 कुविसन साचवै, प्राणी इणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पइली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जायें मारियो, चावो हुंरक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जाणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 जव परजव आयांद अतिघणा, कहे भ्रमसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंहाय लिख्यते ॥

वीर बांदी बलतां थकां जी, चेलणा दीवो रे निग्रंथा॥राति वन  
 मांदि काठसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 णी राणी चेलणा जी, सतिथ सिरामशि जाण ॥ चेमराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 ढंगर सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे  
 बस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊबक जागी

कहे खेलणा जी, किम करतो दुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण  
वस्यो जो ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो  
जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो  
जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां  
जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे  
अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत  
लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे खेलणा जी, पामियो जवत  
षो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती खेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ झूलो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ झू० ॥ कुं  
ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे  
नही, निरमल राखो रे मल ॥ २ ॥ झू० ॥ केहना गेरु केहना  
वाढरु, केहना माय नै बाप ॥ उं जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
नै पाप ॥ ३ ॥ झू० ॥ आस्या तो मूंगर जेवनी, मरवो पगला रे  
हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ झू०  
॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी  
गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ झू० ॥ जवसायरजल  
डुख जरयो, तिरवो ठे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
बाय ने मेह ॥ ६ ॥ झू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो  
पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार  
॥ ७ ॥ झू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥  
वस्त्र विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ झू० ॥ मह  
मंद कहै वस्त बोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा  
रियै, लेखो ताहिब हाथ ॥ झू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिंहाय ॥

॥ राजंतणा अति लोभिया, जरत बाहूबल जूजे रे ॥ मूठ  
छपानी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजय  
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी जासै रे ॥ रुषज जिनेसर मोकली, बा  
हूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ़यां केवल न होई रे ॥  
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चरित्र लियो, बलि आयो अजिमानो रे  
॥ लघु बांधव बांदू नही, काठसग रह्यो शुज ध्यानो रे ॥ ३ ॥  
वी० ॥ वरस दिवस काठसग रह्यो, बेलनियां बीटाणो रे ॥ पंखी  
भाला मोमिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रघ में प  
रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
वालियो, मूक्यो निज अजिमानो रे ॥ पांव छपानी बांदिवा, ऊष  
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंचतो केवली परखवा, बाढ  
बल रुषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे  
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिंहाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढया गोचरी, तमके दाजे सीसो जी ॥  
पाय डवराणा रे वेळू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०  
१ ॥ मुख कमलाशो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने देगे  
जी ॥ खरै डपदरै रे दीगे एकलो, मोही माननी मीगे जी ॥ २  
॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणे वेधियो, रुषि ग्रन्थो तिण वारो  
जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उरिषि तेनी आणो जी ॥  
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी  
॥ नवजोवन रस काया कांड दहो, सफल करो अवतारो जी ॥  
४ ॥ अ० ॥ चंडावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगतै, तब दीगो निज मातौ जी ॥  
 ५ ॥ अ० अरणकश् करती माय क्रिरे, गलिबैर मज्जारो जी ॥ क  
 हि किए दीगो रे माहरो अरणको, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवा  
 रो जी ॥ धिग् २ पापी रे माहरो जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा बहै, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरु, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिद्धाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांशियै, धनदत्तसेवनो धृत ॥ नटवी देखी रे मो  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न बूटे रे प्राणिया, पूरब नेह  
 विकार ॥ निज कुल ठंढी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आथो रे नाचवा, जंयो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ बोल  
 पग पहरी रे पावनी, बस चढयो गजगेल ॥ निरकारा ऊपर नाचतौ,  
 खेलै नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजाये रे नाटकी, गावे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूँघर घमघमें, गाजै अंदर नाच ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिते रे राजियो, लुअधे नटवी रे सःअ ॥ जो पै नट  
 वी रे नाचतो, तो नटवी मुऊ हःअ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आयै  
 रे नृपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंतू रे रायनो, राय वंछै  
 मुऊ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथो मुनिवर पेखियौ, धनस साधु  
 नीराग ॥ धिग् २ विषया रे जीवना, मन आययो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संबरजावै रे केवली, ततखिल कर्म खपाय ॥ केवल मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिन्हाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीवौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति यो मुज आज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केणे जोळ  
 वयौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किए दूहव्यो रे, हूं नवि  
 धुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे  
 जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुख्यो जी, सहिया डस्क  
 अणंत ॥ सासोश्वासें जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तूं बालक अठे जो, जोवन ज़रथो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कान हे  
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ जुंई पाळा नित हीमणो जी, जाणसि तुज कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत ज़म्यो जी, धर्म डहेजो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ सृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिकां सेजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि  
 सुंहाली वेहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सद् ए सगो जी, अरस पखे सहु कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥  
 ॥ १० ॥ खमिश् मान पताय करी जी, मै दीधुं तुज डस्क ॥ दिन आदेस  
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें धुं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे जोयण जरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वठ सुखी हुयो

तिम करो जी, में दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १५ ॥  
 मणि मांणक मोती तज्या जी, तोछ्यो नवसर द्वार ॥ मृगनयणी  
 आठै रमे जी, दिव अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १६ ॥  
 कुमर जणै सुकुली धिया जी, बहु डुख ए संसार ॥ नेह तुमारो  
 जाणियो जी, जो ल्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १७ ॥ रथ  
 सिविका तब सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ  
 छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १८ ॥ इम  
 जांणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोनी पूनो जणै जी,  
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १९ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाई निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिंगसर मास, पदिली परुवा तीन विमास ॥  
 चौथी परुवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिजाइ ज्ञाख ॥ १ ॥ जां  
 लगि होली ऊने वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो  
 जय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने  
 केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जाण ॥ जूजै मछ मांदोमांदि  
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ जूपति परजत्र पोहतो  
 होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली बै असिजाइ, स  
 हुको सरदहज्यो मन मांदि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक  
 पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहर  
 सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पन्निवा लग  
 असिजाइ वकी ॥ पन्निवा बीज तीज चांदणी, समीसांज असिझाई  
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नक्षत्र न लागै जांम, गाज बीज असिजाइ ताम ॥  
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंडमहण  
 असिझाई जणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठ वि  
 चार, सूर्यमहण पोहर जघन्यै बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखे जविषण सरदही ॥ नगर प्रधानं मेरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिजाई होय ॥ ए ॥ वसतीशकी सातां घर मांदि, नर  
 विहमै अहोरति असिजाई ॥ पुरुष पञ्चो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो दाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी शतु दिन  
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन  
 गाइ ॥ असिजाइ सो कर मांदि, त्रिण्ह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाठै चौमासै दिने, पन्तिकमणा ठायांथी गिणै ॥ बार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई ठे बहु, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कहीं  
 संखेवि, हरखै पय प्रनू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतहार जेइ,  
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अहारै, तब कवि नाम  
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जि शासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिथ्यानत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सदि पालों  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार सिद्धाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि  
 यण मनरली ॥ दाखविण गुण परइ केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोन्नी नर कूनौ करौ, जांणी सावद्य रे अ  
 जक बावीसे परिहरौ ॥ वन पीपल रे पिलखण नें कटुंबरो,  
 ठंवरफल रे रखे तुमें जकण करो ॥ ३ ॥ उल्लाखो ॥ रखे  
 तुमें जकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम  
 करहा ठंनि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र



यणीजोजन, प्रथम डुरगति बारणौ ॥ मम करौ व्याखू अति अ  
 सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब  
 नाम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वैगण  
 रे तुछ फला सवि गंरु ए, आपणपू रे व्रत लीधो नविखंरु  
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फल  
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चखित रस होय  
 जेहनो ॥ संवर आणी अजक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥  
 गुरु वयण विगतैं बली पूढ्यौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥  
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जकण रे पातिक बोड्या  
 बै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं बली ॥ वजचूरण रे कंद  
 बहूं कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै  
 चतुर नर आंखिलो ॥ रतालू पिंमालू श्रेग थोहर, सतावरी लसण  
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवहुलौ, पछ्यंक  
 सूरण बाल बीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंस्तकारेला रे  
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी  
 रे जमरवृक्षनी बालनी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलनी ॥ ९ ॥  
 वेलनी तानु ताजा खिलोना ने खरसुआ, जूय जूंफोना ठा  
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोड्या  
 लहमीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी  
 ते सवि सुख लहे ॥ १० ॥ इति बावीस अजक तिजाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिद्धाय ॥

॥ संबेगरसमे जीवता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोह  
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनश गजसुक  
 भाल, तेहने करुं रे प्रणाम त्रिकाय ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रज  
 पास संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा  
 यवा अलजयो, परमै न दिन दस बीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,  
 पिण दिन जावे रे तो गेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय  
 कानसग रह्यो, तिण सांफि प्रभुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं  
 त्तवै, एहनै साची रै ठै मुंह मूठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुऊ सुता विन  
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाय ॥ सिगमी रवि सिर ऊपरै,  
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाय ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ  
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमै गुणगारै चढ्यो, मु  
 निवर पामी रे केवलग्यान ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,  
 ते रयण वरस हजार ॥ बांदवा आवी प्रह समै, पिण नवि देखे रे  
 आंणआवार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रभु मांकी करी, रातिनी बी  
 तग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो  
 यात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पामियो अविचलरा  
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिद्धाय ॥

॥ राज ठंकी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागै  
 मन बालियो, कांड लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा  
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे कानसग रह्यो  
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ बांह बेजं उंची करी, सूरज सांमी इष्टी  
 खगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, बीरजीने वंदन  
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु  
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां  
 रियो, जीव पळ्यो जंजाळ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूढियो रे,  
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे द्विषां मरे तो, सातमी नर-  
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंतै पूढियो रे, सरबारसिद्धि वि

मान ॥ बाजी देवनी डुडनी, मुनि पांभ्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥  
॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमदावारना शिष्य ॥ रिद्ध  
रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिधाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांदि विमास ॥ गरजा  
वाले जीवरो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नात्नी  
तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नानी ठै  
दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥  
आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर  
श्रवे तिण मांसघी, रूतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,  
तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित  
डरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, दिव हूतु अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥  
नानी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाखे  
ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लाख जीव  
॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी  
मिढ्यां, पांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥  
उ० ॥ ८ ॥ नव लाख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव ज  
घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य  
तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी धिति तिहां, उत्कृष्टी  
जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवरो, जंपै जग  
दीस ॥ फिर नर आवंतो रहे, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥  
महिला वरस पिचावने, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां  
पठै, थाथै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै,  
तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥  
१३ ॥ उ० ॥ दिव सामान्यपणै इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ व  
 रस तिर्थच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु  
 जंजाल ॥ ३० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार  
 ॥ शुक्र अने स्त्रोणिततणो, नही जूढ लिगार ॥ ३० ॥ १६ ॥ पर-  
 जापत पूरी नही, तिहां विसर्वावस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा  
 रिक मीस ॥ ३० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग  
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १७ ॥ ३० ॥ कठन  
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सरिरमें, इम करै प्र  
 कास ॥ १८ ॥ ३० ॥ बारै मधुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर  
 जतणी उत्तपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ १९ ॥ ३० ॥ कलल हु  
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदधी पेसी वधै, धन मांस  
 कदात ॥ २० ॥ ३० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमृतालीस टांक  
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २१ ॥ ३० ॥ सु  
 थिर मास बीजे हुवै, द्विज तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजे, मां-  
 ता मन आस ॥ २२ ॥ ३० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अं  
 ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २३ ॥ ३० ॥ पि  
 त रुधिर ठे पनै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे  
 सी सय पंच ॥ २४ ॥ ३० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोरि  
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोरि ॥ २५ ॥ ३० ॥ आठमें मा  
 सें नीपनो, इम सकल सरिर ॥ उंघै सिर वेदन सदे, जंपै जिन वीर ॥  
 २६ ॥ ३० ॥ सोणित शुक्र सखेपमा, लघु ने वरुनीत ॥  
 चात पित्त कफ गरज्जथी, थायै नर नीत ॥ २७ ॥ ३० ॥ मात  
 तणी सूँटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल  
 ॥ २८ ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी द्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख  
 चस वधै, तिम मीजी ने हाथ ॥ ३० ॥ ३० ॥ सबहु अंगे ऊज

स, सरवेग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥  
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विज  
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥  
 कटक करे वैक्रियपणें, ऊँजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी  
 करी, मरी सुर पिण थाय ॥ ३३ ॥ ऊँयै सुख गोना  
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुदी  
 जीव ॥ ३४ ॥ नर विण वख जलादिकै, ऊपजै आ  
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिल्वां, कह्यो गरजविधान ॥ ३५ ॥  
 ॥ ३६ ॥ कोइ उच्चम चितवै, देखी डखावास ॥ पुन्य करी तिम  
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३७ ॥ ऊँ कोमि चांपे सुई, कोइ  
 समंकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे बेदन बाल ॥ ३८ ॥  
 ॥ ३९ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती  
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ४० ॥ ४१ ॥ गरजथकी डख लख  
 गुणो, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां डख वीसै, धिगू मोह वि  
 कार ॥ ४२ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणो जिहां, मल मूत्र कलेस ॥  
 पिंर अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ ४३ ॥ तु  
 रत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर सुख ठवै;  
 पीयै दूध तिवार ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ दिन १ दीसे दीपतो, करै रंग अपा  
 र ॥ लारु कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ श्रोत्र  
 इग्यारे नारिं, नव नरने जाण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चेतो चतुर  
 सुजाण ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ सात धातु साते त्वचा, बै सातसै न  
 रि ॥ नवसे नारु पिंरमें, तिम तीनसे हार ॥ ५० ॥ ५१ ॥ संधि  
 एकसो साठ बै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,  
 ढांकी बै चरम ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब  
 सरीब ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोष सेर पुरीब ॥ ५४ ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती  
 स सुखेखमां, जायै जंगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाण्यकी  
 यदा, उठो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सररीमें, नवि वाजै काय ॥  
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोरुयो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खाने  
 पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै  
 दसके ज्ञायो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजै दसकै तेहने, जाग्यो  
 काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिस आनक तूं ऊपनो, तिसमें  
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोन ऊपाय ॥ ५१ ॥  
 उ० ॥ पहुंचतो दसके पांचमें, मनमें संसनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा,  
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ उठे दसके प्राणियो, बले परवस  
 आय ॥ जरा आई जोंवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥  
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो  
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,  
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलै, करे फोगट वात ॥  
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सांख  
 वचन बहुआंतणो, दिन फुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो  
 खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल दुकम हाले नही, दीयो परिजन  
 देह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पनै मुंहमे लाल ॥  
 बेटा बेटी ने वडू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्ट  
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो  
 जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निर  
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥  
 उ० ॥ कोहि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै  
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया  
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, ठै लोक मंहंत ॥  
 जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप  
 सवारधिया सहू, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,  
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां  
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥  
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो द्विवै, लाधो गुरु संयोग ॥  
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० ॥ श्रीनमि  
 रायतणी परै, चेतो चितमांदि ॥ स्वारथना सहूको सगा, कोइ  
 कणरो नांदि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहू, थया जे  
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥  
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति  
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलबेयाली अठै, एह  
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनै कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥  
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार तांजलि लिखे संजमज्ञार ए,  
 परि सिंह केरा सदा पावै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख  
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्ष सुसीत रंगै इम  
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्पत्ति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिष्ठा लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुट्टष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें  
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष धनी  
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,  
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने  
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुयुग्में, कज्जी तूं कु  
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन  
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंभमें, कज्जी कायदंभमें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी  
 अरतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी डुंगामें, कज्जी  
 कृष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तूं  
 रुद्धिगारबमें, कज्जी तूं रसगारबमें, कज्जी तूं सातागारबमें, कज्जी तूं मा  
 यासद्वयमें, कज्जी तूं नियाणासद्वयमें, कज्जी तूं मिथ्यादर्शनसद्वयमें,  
 कज्जी तेरे तेरेकाविया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अ  
 गरे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा दुष्टो, महा  
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं  
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं दुष्ट पापिष्ठ जीव,  
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानु  
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमो, विचारा तेरे खपा  
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा  
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव  
 जेसा कल्लोल तेरे उगल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य  
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें  
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन  
 नही लेवे सो पापी, उर लेकर जगि सो महापापी, तैं अनंतकाय,  
 अजक, शीलव्रत, जरदा, ज्ञांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन  
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तें पुज्जरे  
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,  
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ  
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो  
 जाउं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन  
 करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणेवालेकेही लोन्नका  
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, है चेतन ! तूं मनमें विचारतो



हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र  
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,  
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं  
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र  
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणो, किसी वखत स्त्रीपणो, जेसें ठगकी बेटी  
 नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो  
 गेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबतो उसने कहा, धिक्  
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,  
 आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका  
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, नर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क  
 नएकूं उमाणो चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि  
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-  
 कंबरी कुगुरुजके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म  
 आज्ञाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें  
 होय, विष्टामें कृमिपणो तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज  
 पर बाहूबल चढ़ा नर संज्वलनमान था, नर बाह्मी सुंदरी बहिना  
 जैसी समजाणेवाली श्री जय समजै, नर तेरे सो ऐसा मान, अरे  
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं नरतमाहाराजा जिलोके  
 केसीक राजशुद्धि सो केसीक ज्ञावना ज्ञावतां, धिःकार राज्यमें, धिः  
 कार पाठकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखेकूं,  
 धन्य श्रीतार्थिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पावते हे, धन्य  
 जो सर्वविरती धर्म पावते हैं, धन्य जो दान देते हे, धन्य जो  
 सील पावते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो ज्ञावना ज्ञाते  
 हैं, ऐसे ज्ञावना ज्ञावते नरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन  
 पायां, इस तरे रे जीव तूं उनोही बराबरी मतकर, वहतो तेसव

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका जरतकेंत्र-  
 का कीना उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-  
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों  
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि  
 सया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव ज्ञुवनज्ञानु केवलीजी, कमलप्र  
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तं दिगाय दिया, तो तेरी तो  
 विसायतही क्या, आठ करम अघावनही प्रकृती हे प्रजु केसें जीता  
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-  
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझामें रह सदागमसुं परि-  
 चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंतें तिर  
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,  
 बकायका पीयर, सात महाज्ञयका टालणहार, आठ मदका ज.प.  
 क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका  
 उजवालक, इग्यारे अंगका ज्ञणणेवाला, बारे उपांगका ज्ञणणेवाला,  
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि  
 प्रजुकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब उदै आवेगा, रे  
 चेतन तेरे उदय कहाँसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसत्र-  
 त्ती पाले जिके प्रजुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात उठ सामायक  
 करे, प्रमिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रजुजीकी द्वादसांगी वाणी  
 सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दान, तपस्या, सील, पर्वतिथी  
 पोसा, संध्याकूं देवसी प्रमिकमणा जिनाझा प्रमाणै षमावश्यक करै,  
 सुजेजी कज्जी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा  
 हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-  
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां-  
 चनेकी खप करो, जेसें जवसायर खीला तरो, सामायकवंतके यहू

लक्षण है, तू तेरी सामायक तो निंदा विकृष्टारूप है, तुझे पढ़ने गुणनेकी लगन नहीं, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते है उनोको ज्ञान दर्शनको प्राप्ति होती है, केवलज्ञान तू केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्तार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजांण सोना खंरी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तू इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नहीं, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकृष्टा कर खिज रहै; आरत रौड्यांन मन धरै, तू सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपना पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो थोमो आगम जणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायानुरा चाहता, अपना जला चाहता, वो पराया बुरा या नहीं चाह्या वो तेनें अपने आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपने आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अघातो है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन तू कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्र है जिनोको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्ते तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वहीत दिखता है, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, है रे जाइ तें तो एसी सामायक करता है, खुणे खाज मोमे

करमका, उंचतर्णा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-  
कारेगा जब लेखे लगेगा, डुहा-आत्मनिंदा आपणी, ज्ञानसार सु-  
नि कीन; जो आत्मनिंदा करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥  
इति आत्मनिंदा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसं मंदिर

जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-

निसीय सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकण्डसूत्रमें एसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदि-  
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंद उर श्रावककूं बेलेका  
मंद ॥ प्रथम श्रावक दो चार घन्टी रात रहे पिठली तब ऊठके  
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या  
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मज्ञानरणासे दिलको  
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके  
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,  
पीठे यथाशक्ति अष्टावस्त्र आज्ञापण पहरके घोसा हाथी रथ पाल-  
खी सिंघाई नोकर चाकर ज्ञाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक  
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर जगज्जीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता  
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे.  
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झोपडीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार  
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही  
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठना  
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे  
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल  
रस्कीथी सोजी गोने ३; (इसमें इव्यपूजा करणी मोकली रही )

तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल जावपूजाही करे, लेकिन् इयं पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक-ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रज्ञूके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक-मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक-प्रज्ञूकी अंग १ अंग २ उर जाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे, अब निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुंठजी देवकार्यकों ओरुके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ओमे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासे किया हे उस जीवके जावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फक्त शब्द उच्चारणे मात्र इयनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपणां शुद्ध करे, जावसे दुसरी निस्सही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमल अन्ना कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे विलेपन करे, शुद्धवर्ण शुद्धगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोष गुलाब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्ज्वल अक्षतोसे प्रज्ञूके सन्मुख अष्ट मंगलीकलाखे—दर्पण १ जडासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मङ्कयुग ५ कलश ६ स्वस्ति क ७ नंदावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्ट केसर चंदनके हठा देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्थित रायपत्तेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाज्जिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे, पीठे अंतरंग जक्तिले प्रज्ञूके सन्मुख नाटक करे, जैसे देवेइ दानवेइ नारद उदाशराजाकी राणी प्रज्ञावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया भैसें शंकारहित जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रज्ञूके सन्मुख नैवद्यादिक चढायाजावे सो अग्रपूजा २ प्रज्ञूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्जित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंमस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंमस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवल अवस्था कों विचारणा सो पदस्थ अवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब उठा त्रिक—तीन दिशा ओरके प्रज्ञूके सामने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ४ वांइ पिठामी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे सो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ८.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाएणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, कान्तसंग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ९.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावति चे इयाई इह संतो तइसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावति केविसाहू तिविहेण तिदंरु विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंता तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अज्जिगमन सावधणका दूसरा द्वार कहते हैं. स चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय उसकुं दूर धरदेशा १, उर राजचिन्ह मुगट बत्र खमग चमर पाडुका अक्षितवस्तुउत्तकान्ती ठोरुणा आज्ञूषण वगेरे पदरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकुं देखतेही नमोज्ञुवणबंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके जगवंतकुं वांड़े, स्त्री वांइ तरफ बैठके जगवंतकुं वांड़े.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदशामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसे उपरांत बैठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसां कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोब्रूणसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंभक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहौजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहौजे.

अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोम. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण आवक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाइण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ आवक नितप्रति नियम संज्ञाले दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका ठेदन जेदन, तरकारी फल परबल जीमी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.



दूसरा इव्य प्रमाण, तहां घातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे इव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक इव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी बेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढ़ी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापरु खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकेमेंसे सब इव्यमेसे जो चडिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक इव्यका नाम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे, जेसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक इव्यसे बणी जई हे तोजी एक इव्यही कहिये. इति इव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें आवककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ उर सदतका ४ रहे. ६ विगय--धृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमाउ मोजा अपना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लोंग इला यची बोटी उर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमाण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ षष्ठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ नूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पधनी १ जामा १ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहें जे. एसेंइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपर्दा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र जूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवना केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ अथ गानी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी कुंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब अलवाहन, पाणीमें चखणेवाले मोरपंखी वतक घुमदोर लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेश्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ठालका चमकेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोने परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ सोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४  
अश्लेषा ५ नैऋतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि  
शि ९ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपणो जाणे आणोका  
प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिठी  
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ बेर  
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रखे, घने प्रमुख  
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा  
नही गिराऊं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २  
बेर जीमूंगा अथवा चार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार  
धारणा प्रमाण रखे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका  
प्रमाण रखे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक् मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम, जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र  
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढ़ावे, पीठे अखंड  
तंडुल मुठे ३ थालमें रखे उस पर नारेल रुपया या मोहर  
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्तिकमे इन्नाका० सम्य  
क्त सामाद्विआरोहणार्थ चेइयाई वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं  
वण करे. बाधे पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीठे  
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर दासक्षेप  
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करवावे पीठे सतरे शुईमें नवकार १  
एकेकका कान्तसग्न करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्त  
का कान्तसग्न करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार  
गुणें शक्रस्तव कहे नमोर्हत् ० कहेके वना स्तवन कहे पीठे जय

धीधरोय कहे इति नेंही विधिः । पीठे खमासमण देई श्रुतसा  
 मायक सम्यक्तसामायक आराधणार्थ काउसंगं करावेह, गुरु कहे  
 करावेमो सम्यक्तसामायक आराधनार्थ करेमिसाउसंगं, ४ लोग  
 स्तका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ वेर नव  
 कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंरुक उच्चरे गुरु पाठ  
 बोले उसकी मनने धारणा रक्के, सूत्रं अद्वंजंते तुह्माणं सम वे  
 मिद्धताउ पत्तेकनामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ  
 अन्नतिठिवा अन्नतिठिदेवयाणिवा अन्नतिठिपरिग्गहिय अरिहंत  
 चेइयाणिवा वंदित्त्वा नमंसित्त्वा पुर्विअणाजित्तएणं आलवित्त  
 एवा तेसिअसएणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा  
 तेसिगंधमज्जाइ पेसिउंवा नन्नठरायान्नियोगेणं गणान्नि योगेणं बला  
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविइ तंजहा  
 दवउं खित्तं कालउं जावउं तउदवउं दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तं  
 जाव जरइमज्जिमखंने कालउं जावजीवाए जावउं जावठलेणं नउ  
 विज्जामि जावसन्निवाएणं नज्जविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवलेणं  
 एसो दंसण पालय परिणामो नपरिवमइ तावमे एसो दंसणान्निग्ग  
 हो अन्नठराज्जेणं सहस्तागरेणं महत्तरागरेणं सबसमादिवत्ति  
 यागरेणं वोसिरइ, पीठे उँ ह्रीं श्रीं अर्द्धनमः एते अक्षर श्रीगुरूके  
 पाससे हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासकेप चढावे, नवकार  
 पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वादे, पीठे श्रुतसामायक  
 धिरि करणार्थ सत्तावीस उव्सास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस  
 ग करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कछपवृक्ष पायके  
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावजीवं सुसा  
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतं, इयसम्मत्तंमएण्हियं. १. पीठे गुरू  
 धर्मदेशना देवे, मिश्रग्रावरूप सम्यक्ते पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी बेर कलंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाऊंगा, ज्ञान दर्शन चा रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिष्ठिमें पा लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कलंगा, दिनकी नवकारसी आ दिक रात्रिकों डुविहार तिथिहार चनु विहार उर धावीस अजक बचोस अनंतकाय विदल वगेरे ठोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमाण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टोप सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पितं निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मण्णं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पत्तिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरुक तीन बेर उच्चारवे ॥ १ ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहण्णेयाइहेअं कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं आपणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसेए दव्वनं खित्तनं कालनं जावन्नं सबन्नं मुसावायं खित्तनं इववा अण्णववा कालन्नं जावज्जीवाए जावन्नं जावगहेणं नगहेज्जामि जावगलेणं नगलज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिगह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखण्णायं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सच्चित्तचित्त वहुविसयं पञ्चस्कामि ववन्नं खित्तनं कालनं जावन्नं दव्वन्नं अदिन्नादाणं खित्तनं इववा अन्नववा कालन्नं जावज्जीवं जावन्नं जावगहेणं नगहिज्जामि जावगलेणं नगलज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

निगहं दुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहसा० महत्त० सब० वोसि  
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नं तुम्हाणं समीवे सुदारिय वेकिय जेयं थूलमेहुणं  
 पच्चस्कामि अहागदियजंगणं दिव्वंतिरिणं माणसियं एगविहं एग  
 विहेणं पच्चस्कामि दव्वं खित्तं कालं ज्ञावत्तं दव्वत्तं मेहुणं खि  
 त्तं इत्थं अन्नत्थं कालं ज्ञावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं  
 नगदिज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं  
 ज्ञं तुम्हाणं समीवे परिगहं पमुच्च अपरिमिय परिगहं पच्चस्कामि  
 धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग  
 दियजंगणं तंजहा दव्वं खित्तं कालं ज्ञावत्तं दव्वत्तं नवविह  
 परिगहं खित्तं इत्थं अन्नत्थं कालं ज्ञावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं  
 जावत्तं नगदिज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥  
 अहन्नं ज्ञं तुम्हाणं समीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दव्वं  
 खित्तं कालं ज्ञावत्तं दव्वत्तं दिसिपरिमाणं खित्तं धारणाप  
 माणं कालं ज्ञावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदिज्जामि जाव  
 त्तावअनिगहं अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहन्नं  
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोगेणं अनंतकायबहुवीया राइ  
 जोगेणं परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणां ईगालकम्माइया  
 ई बहुतावत्तां खरकम्माइयं राथाजियोगं च परिहरामि तंजहा दव्वं  
 खित्तं कालं ज्ञावत्तं दव्वत्तं जोगाव जोगवयं खित्तं इत्थं अन्न  
 त्थं कालं ज्ञावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदिज्जामि अन्न०  
 सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहन्नं ज्ञं तुम्हाणं समीवे  
 अन्नत्थं पच्चस्कामि अववज्ज्जाण पापोपदेशं हिंसोपकरणं  
 दां पमायचरितं चउविहं अन्नत्थं जहासत्तीए परिहरामि तंज  
 हा दव्वं खित्तं कालं ज्ञावत्तं दव्वत्तं अन्नत्थं खित्तं इत्थं  
 अन्नत्थं कालं ज्ञावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदि०

अन्नं० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नं जेते तुम्हाणंसमीवे  
सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविजागवयं जहा स  
तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिक्कावयं डुवा  
लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्नं० सह० मह०  
सवसं० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख उ ठंमी ज्यार आगार संयुक्त  
पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवनं देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणामी करो, वीस थांनक रे  
गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं  
गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ बूटक० ॥ धुणउ  
जिविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी  
स जिननी, पूंमरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण  
स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउअइ थानकि,  
आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ धिवर  
पूजा करो, नमो उवज्जायाणं रे उठइ थानक उचरउ ॥ वस्स कंबल  
रे बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ  
पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति  
करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते  
नमो विनयकारीणं विनय वमानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया  
कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो बंज  
धारीणं सदा, वृत्तधारी रे मन वचक्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय  
धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिधरणं रे रात्रइ गीत गान  
वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दांन ते  
पनरमे, नमो वांयगस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥  
सतरमे नमो वेयावचकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं  
 रे उगणीसमे ज्विया मुण्ड, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं  
 सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे  
 यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ  
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पन्निकमणे  
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नादण धोअण टालिये,  
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु  
 साधवी रे आवाक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म  
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, गणाने रे  
 सौधर्मसामि वंखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वंखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा  
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिल मुनिवर अने द्वादयुष शंख  
 शतक आवक रुली ॥ सुलसा रेवती आविकाये एह थानक  
 फरसिआं, सेवकजन कडयाणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥  
 इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥  
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥  
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कै, जेठे सहु जवि चित सुख  
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके  
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु  
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनिया, मुख सुंदर जास ॥  
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंरुल दोय जलकै, शशि सूरज सम जास ॥  
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥



प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसासं ॥ मे० ॥ लावचंद  
अरज सुनीजें, पुरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में  
खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में  
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन  
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥  
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी खेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखमली, मोरी रेन  
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आग्र उन  
दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया  
करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू  
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥  
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जयो मेरे, आनंद चित अब  
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिजु  
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत बिनति, तुम  
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये  
जिया जागरे ॥ रा० ॥ द्योय धमी तनकी अब रहियो, ऊठ धरममें  
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर जरम  
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए  
सूयो शिवभाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदः ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर  
छे मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ ब्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेढो जव  
की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो  
शाखें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ जहय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण  
अही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ करुखानी हेरी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज, सफलो  
गणुं, आज में सजत आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल  
धिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥  
प्रग पग नमंग धर पंथ नित पूजतां, धन्य दोष चरण तिहां चलत  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकतकी दिशा, आज धन दीह  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर डुर्गति टरी जात्र विधिशुं  
करी, पुण्यभ्रंशर पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि  
शिखर, रुषज्जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार, लाख रे ॥  
परमात्म परमेश्वर, आत्म परम आधार लाख रे ॥ श्री० ॥ १ ॥  
केवलज्ञान दिवाकर, जागे सावि अनंत लाख रे ॥ जासक लोकालो  
कको, हाथिक ज्ञेय अनंत लाख रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंड चक्रो  
सरु, सुर नर रहे कर जोरु लाख रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूते  
एक कोन लाख रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्रणकमल पिंजर वस्यो, मुर्छ  
मनहंस नित्यमेव लाख रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव  
देवाधिदेव लाख रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण गो तुमें, दूर  
हरो जवडुख लाख रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल  
सुख लाख रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

( ३४३ )

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनसो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि  
दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन  
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावन  
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरूं जी, दुःख दोहण  
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरेंतें जरायां जलां देहरां जी,  
सो जोंयरां झूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने  
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली  
जगरीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे  
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखनी जी, आवुं केम  
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह जगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रजु आशा  
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कढुक दिवासा  
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चानी चटकी जवमांहि जटकी, नाच्यो में  
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,  
लागुं प्रजुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत  
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक ह्याली  
वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी  
पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी  
मन शुद्ध धारी, श्रीधर्मसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥  
सांजलीने आळ्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक  
अरज करे ठे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सद्दु

कोना मनवाँछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद ठे राज तु-  
मारुं, किम राखो ओ दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने बलबलतो देखी,  
मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार  
न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक  
हरिसण दीजें ॥ धूंवामे धीजुं नही साहिव, पेट पछ्या पतीजें ॥  
॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंनण साहिव, वीनतनी अवधारो ॥  
कहे जिनहर्ष मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥  
जिनेसर ॥ साहेव वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ ॥  
॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आनो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु  
मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लामला, कागल धुं किर  
हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें  
दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता  
घणो मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलसो जीहो  
अवसरें, मिलशे सुकत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण  
जीहो तांजरे, वाढा तपो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥  
मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखी, फलशे ते दिन आश ॥  
॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥  
॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई वाजे ठे ॥  
नगर अयोध्यामाहे, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥  
मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ  
सहु देशमें रे, प्रगट ज्यो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इति ॥

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मञ्जन पूजन बहुविधे रे,  
भिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ ५ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,  
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख  
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदधव रंग रत्नो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत  
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥  
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥  
आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥  
आ० ॥ २ ॥ इंझाणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी  
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥  
आ० ॥ ३ ॥ इंझ हुकुम कर धरणीं पठायो, सब वसुधा धन,  
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखरत  
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासना  
व्याधि व्याधा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो,  
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चननीसय अतिसय जुन, वचनातिशये जुन ॥ सो परमेश्वर  
देख जवि, सिंहासन संपत् ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन बेग जग  
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीजे तुज निम्मल  
जाण, लहिजे परम महोदय दाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ  
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो  
वीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥  
( इतना कह कुसुमांजलि चढाई जे चरणोके टीकी दोजे ) ॥ गाथा ॥  
जोनिअगुण० ज रम्यो, तसुअनुजवएगत्त ॥ सुहपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-  
 गल संगेजे ह् अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो  
 न्नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह  
 गोमे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पदधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-  
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-  
 सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांयोके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म-  
 दिद्धिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोकृतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुत्तमवर जात गहेवी, तसु चरणो प्रण-  
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पोठे स्नात्रिया चमर ले के प्रभुजीकूं  
 ढुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि-  
 हि संठविय, करित धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर,  
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥  
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-  
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजक्की प्रमुख  
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर आनक बीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एदवी

ज्ञावता ॥ सब जीव कहूं शासन रसी, एसी ज्ञावदया मन उल्ल  
 सी ॥ ५ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम  
 लूं ॥ आजबंध विचे इक जव करी, अज्ञा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥  
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेंज सार ॥ म  
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥  
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर  
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिंह, लख  
 मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा  
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश  
 परूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण  
 सायर ॥ बारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि  
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥  
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य  
 उदय २, ऊपना जिएनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन  
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले  
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा  
 दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 चंडाजलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अबधे मन आ-  
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण  
 प्रगळ्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सन्नवाह, केवलना  
 णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल-  
 ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां  
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊळ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन  
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तब, कर अंजलि

प्रणमिय मन्त्र सत्य ॥ मुख ज्ञाषे ए कृष्ण आज सार, तिय लोय  
 पहु दीगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल  
 तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या  
 विष चूरण गरुवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समन्त्र, प्रगट्यो  
 तसु प्रणामी हुन्न सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कव करेवि, तव देव  
 देवो हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तवरंजा गीत गांन, सुरलोक हुन्न मंग  
 लनिधान ॥ नरहेत्रे आरज वंस ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥  
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उन्नव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥  
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥  
 शुन्न वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख  
 पाम्या त्रिजुवन सर्व जोव, वधाइष्ट अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ  
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत  
 का लेकर खना रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख  
 कार, नरखित्त मंगल उइ दिहंरुण जविक मन आधार ॥ तिहां  
 राव राणा हरख उन्नव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि  
 शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु  
 मरी गावती गुण उंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ  
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म  
 निम्मल करण कारण करित सूर्इयकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन  
 दीप दर्पण वाय वीजणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज  
 ननि मज्जाकार ॥ वर राखनी जिन पांण बांधी दिये इम आसी  
 त, जुग कोन्निओनी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला  
 लानी ॥ जिन रयणीजो इस दिसि उज्जलता घरे, मुन्न लगनेजो  
 ज्योतितचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,  
 तिण अवसरजी इंझासण पिण थरहरे ॥ बूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र



चित्ते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उच्चवकास जांणी अतहिं  
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ  
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनाथक गहगह्यो ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह  
 दिराव ए ॥ नरहेत्रेजी जिनवर जन्म हुन अवे, तसु जगतेजी सुरप  
 ति मंदिरगिर गवे ॥ ब्रूट० ॥ गवे मंदिर शिखर ऊपर जुधन जीवन  
 जिनतणो, जिन जन्मउच्चव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥  
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा  
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखावतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज  
 लजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांढमी  
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी  
 स्वामि वधाविया ॥ ब्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क  
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नाथक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे  
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मऊनवर करी, उठंग तुमचे वलिय  
 थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनाथकजी जिन निज  
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमार्थे स्तव्या ॥ नाटक  
 विधिजी तब बत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ  
 महे ॥ ब्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा  
 वती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो  
 ३ तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम त्रांण सरण आ  
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां  
 मुक्कवनभे चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥  
 तिहां आणीजी शेके निज खोले ग्रह्या, चोसवेजी तिहां सुरपति  
 आवी रह्या ॥ ब्रूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व  
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुदा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोरुने, जिन मज्जनारथ नीर  
 छयावो सबे सुर करजोरुने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव  
 कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि  
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति  
 अरु कलश कर सहस अघोचरा, उच्च चामर सिंहासण सुजतरा ॥  
 उपगरण पुष्प चंगेरी पमुहा सबै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे  
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता ज्ञावता  
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम  
 सगति शुचि जगति इम ज्ञावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म  
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे  
 सर्व आठ्या वही, शक्र उडंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥  
 हंहोदेवा अणाइकालो अदिठ्ठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥  
 मिञ्चत्तमोहविहंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिट्ठो २ हि  
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव  
 वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पडिया केविमिन्ताणुगा, केवि  
 वररमणे वयणेषे अइज्जगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअञ्चुय ५ इंद आ  
 वेस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्जुत  
 रूप सरूप जुय कवण एह पुहंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पा  
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जिषेस ॥  
 ॥ ५ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे  
 न्दाभे ॥ आतम निरमल ज्ञाव करता, वधते सुज परिणामे ॥ अ  
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंजाली  
 पमुहा, इम अज्जिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तबईसा  
 णसुरिंदो, तत्कंपज्जणेशकरिसुपसाठ ॥ तुम्हअंकेमहताठ, विणमि  
 त्तअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवडलम्भिबहुला

हो ॥ आणाएवंतेणं गिएहह दोउकयत्थाजो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)  
 सोहंन सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रज्जु अंगे ॥ करिय वि  
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरण अज्जंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय  
 रव कर, नच्चे धरि प्राणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पांभ्यो, ज्ञांज  
 सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोरु बत्तीस सोवन उवारी, वार्जते वर  
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रज्जुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥  
 आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो  
 थणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख  
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस  
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियं कण्ण गया सब निर्जर,  
 कहता प्रज्जु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इहा चित्त  
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥  
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद  
 जिन जगते गायो, जनम महोच्चव बंद ॥ बोधबोज अंकूरो उल  
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,  
 आतम हित काज ॥ तजिय विज्ञाव निज ज्ञावमा, रमता सिव  
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥  
 संपइ सीमंधर प्रज्जु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोच्चव  
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन  
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन  
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो  
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलोषतः, शुचि मनाः स्नपयामि वि  
 मुद्ध्ये ॥ नै ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गिनेन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं-  
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्च विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युतं  
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनैः, सहजं तत्त्व विकास कृतेर्ज्ञेयः ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ ३ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक-  
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुन्नवेः ॥ सुपरणा  
 म प्रसून धनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं  
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म  
 महोधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुज पु-  
 जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु मुहूर्धतः ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ जविक नि-  
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुज दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-  
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०  
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-  
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ अयति ज्ञव्यजना इति दर्श-  
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं  
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुजल संग विवर्जनं, स-  
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस ज्ञोजन नव्य निवेदनात्, पर-  
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी  
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥  
 विहत मोक्ष फलस्थ प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं ज्ञातः पूजयं-  
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व  
 मुद्रावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं ॐ  
 प० अर्थं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,  
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्ते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वा चर्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५० वस्त्रं  
यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नान करावै पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रक्वेवीमें कुंकुम तथा  
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रूपया १ कलसमें  
ढालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ  
के धूप देकर रक्वेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खड़ा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सतरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ जाव जलै जगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर  
सिद्ध कीधी डोपदी, अंग ठहै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदों ॥ ज्योति  
सकल जग जागती, हारि अइयो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सतर  
सुविध पूजातणी, पञ्जशिखु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विखेवण  
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणचं ४ पुष्करोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व  
न्नयं ७ चुन्न ८, परागय ९ अज्जरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय  
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरंच १२ अढमंगलयं १३ ॥ धूव जखेवो १४  
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा जणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध  
पूजा पवरं, झाताअंग मजार ॥ डुपदमुता डोपदि परै, करियै विधि  
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचि  
त मानी रे, अइयो ज० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुजृत  
मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगदं,  
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ जणिय कुस  
मांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंड जिम तिम अ  
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति  
सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

लौ पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाव जिनतनु  
 तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र  
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण बढ्योरी सुधारस, तप-  
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभुकुं विलोक नमि जंतन  
 प्रमारंजित, करत पखाव सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-  
 म निज वृजन पुखावत, पंककु वरप जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि  
 तरणि जवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥  
 शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदेवेल मरदनकी ॥ पू० ॥  
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिता शुभ  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सारंगजर करतां, आस फलो  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसु न्हवण कीज । डवे पांवके अंगुठे जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेतें अंग जिनविंवका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्यमिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर  
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारै देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै  
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-  
 मद कुंकम जेलियै, कर् लीयै हारै दे० क०, रयण पिंगणि कचो-  
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवै सिरै रे देवा, जाल कंठ जर  
 उदरंत रै ॥ डाल हारै हारि देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजियै ॥  
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, आवक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम  
 सुरगिरै, तिम करै हारै देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥  
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन,  
 ओजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजातां, लहे जवोदधि तीर  
 ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम  
 उपसमें, सुखमें समरसारींग ॥ २ ॥ राग वेलाजत्र ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद  
यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ कम जानु कर  
खंधै सिर जाल कंठ, नर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर  
त विलेपन, तपति बुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव  
२ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगै ॥ कहै साधु तन शुचि  
करो सुखलित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय  
विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ऐसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥  
लाज्ज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौरी ॥  
कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारि  
अश्यो० ॥ कनक मंन्ति हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति  
अधिवासिया ए ॥ हारि अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो  
यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-  
वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरानी ॥  
देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥  
तूही हे सबहि हितु तूही हैं मुगति दाता, तिण नमि प्रनुजी कै  
चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,  
देवदुष्य मिस देहु उत्तम वांगूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत  
पीतां, सब रानु डख संसय घुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-  
य वस्त्रयुगल पूजा ॥ (ऐसा कह प्रनुजो कूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासस्त्रपूजा ॥

॥ गोरी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण  
वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग  
सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो  
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासितें, पूजै जिन अंग  
 नवंग ए ॥ हा० लाठि नवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अन्नं  
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ मेरै प्रजुजीको पूजा आ-  
 नंदमेले, पू० ॥ वासन्नवन मोह्यो सबलो ए, संपदा जेले ॥ पू० ॥  
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमिच्छगुण  
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन  
 राज तत्ताथेइ, चतुर गति डुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥  
 इति चतुर्थी वासदेव पूजा ॥ ( एसा कह चूर्णवास चढावे )

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥  
 प्रजु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥  
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंदकिरण मचकुंद ॥ सोवन जाई  
 जूहिका, वज्रसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए,  
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन  
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई व  
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच  
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रजु हम सर  
 णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच  
 विधै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग  
 वंतकी, नविक नरां हारे ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ठो पूजाए ठती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण  
 गूंथी आपे गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज  
 री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमाजिका, मालिकासोग पारिध कली



ए ॥ जलां पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाळ  
 गुलाब पामुल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-  
 गरा वेनला मालती, पंचवरणै गुंधी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे  
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥  
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसाजरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक  
 एधतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि  
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमदै ॥ दे० ॥  
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोमरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे स०  
 होइ तिम बंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,  
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी  
 तोमर पूजा ॥ ६ ॥ ( एसा कह फूलमाला प्रभुकुं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवना, सोनै तेम सुगात ॥ चाढो  
 जिम चढतां दुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौनी ॥  
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद  
 गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी  
 अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥  
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥  
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामुल अरविंदो, अंस जुई वेनलवाती ॥  
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी जानी ॥ पं० ॥  
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥  
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा घूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेवहारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥  
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोदण अधिकारो जी ॥  
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुज करम चूरीजै जी ॥  
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तब  
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री  
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदरै, गोत्र  
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलां१ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-  
 ब्दहारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी  
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूद्व गीत समूल ॥ दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥  
 सहस्रजोयण१, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत  
 घुघरीय बाजै ॥ मृड समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद  
 ल सयल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न  
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर आवक ध्वज वहन, ति० ॥  
 आपै दान अजंग ॥ आप ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज  
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन  
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सवद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू  
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जांति वसन पंचवरण बन्यो री,  
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप  
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवल्ली चांदीके थालमें  
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गृहली कर धजा पर गुरु  
 पास वाससेष करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथाञ्च  
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे  
जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण  
कुंमल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंममद्धार ॥ आसावरी ॥  
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणैक लाल रसणिया, हीरा  
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-  
लना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जज्यो, काने कुंमल  
दारे अति जुगतै जुज्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक  
वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डखहारू  
रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहै मुगट मणि रयण जज्यो,  
रय० ॥ अंगद बाहुं तिलक जालस्थल, बहुनीको कवण घज्यो ॥  
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुं  
अलंकरयो ॥ डखकेदार चमर सिंहासन, ठत्र सिर उवरि धरयो,  
अलंरुत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक इयाभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फूंदै लहकै फूल ॥ महके  
परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥  
कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू  
ए ॥ ईशयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिष  
पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश  
मगेहे विच तोरणूं ए ॥ दारे अ० ॥ गुष्ठ चंडोदयं ऊंवकाउन्नयं,  
जालिका गोख चिचवोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो  
मन मोह्यो माईरी फूलघर आणंद जिलै, फू० ॥ असत उसत दांम  
वधरी मनोहर, देखत तवही सब डरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसुम मंनष अंज गुष्ठ चंदोदय, कोरणी चारु विभाण सजै ॥ इग्या  
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसैं तिपुरि जजै ॥  
॥ १ ॥ फू० मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसुम बादलिया फूल ॥ हर  
ण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज़ीम  
मलहार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज़री पुष्प वादल करी, जानु  
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,  
अधोवृंते नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिलै ज़मर  
ज़मरी ज़िलै, सरस रसरंग तिण डुख निवारी ॥ ज़िणप आगै करै  
सुरप ज़िम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥  
राग ज़ीममलहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-  
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥  
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥  
गुंजत२ मधुकर इम पज़णै, गुं० ॥ मधुरवचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०  
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥  
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥  
॥ ३ ॥ बारमी पूज ज़विक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥  
तसु ज़ीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥  
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै  
सुमतै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल  
मिळया, अखंर गुणै ज़िळया, साख रजततणा तंडुला ए ॥ श्लषण  
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥  
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्धि  
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वशी ते रसमें,  
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण ज्ञासन नंदावर्ष पुर्णकुंज, मन्त्रयुग  
श्रीवन्न तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण  
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेढहारस घनसार ॥ कर  
प्रज्ज आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलावल ॥  
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढहारस सार, गंध  
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेखियै,  
श्रीवास धूप दसांग अंवर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु  
कनक मंजित धूपधाणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जौंग रोग  
साग अशुज हरे ॥ १ ॥ राग मालवी गौरी ॥ सब अरति मथन  
मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ घामधूमावलिय धूसर,  
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म  
धिमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥  
आरती मंगल माल रे, मालवीगौरी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति  
चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥  
ज्ञावो अथकी ज्ञावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें  
आर्या ॥ यद्यदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण  
वर्षी तान वाद्यै, मात्रा ज्ञाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,  
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुपीयूषं  
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंजदि अ  
नाहत तानं, केवल जिम तिस फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विदुष

( ३६१ )

कुंमरी कुमरी आंखिपै, मुरज जेपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र  
बंध धूयो प्रतिमानं, आयति जंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबंद  
समान रुच्यो त्रिजुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर  
मोन शिव श्रीगीतं, पनैरमी पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सज सुंदर सिखागर ॥  
जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट  
काव्यं ॥ ज्ञावादिपवणा सुचारु चरणा संपुत्र चंदानना, सपिस्मा  
सिम रुव वेस वयसो मचेज कुंजतथणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्त  
रवई रागाईआ लावणा, कुमारी कुमरावी जैन पुरठ नचंति सिं  
गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहसयं कुमारिकुमरोठ सूरियाजे  
एवेवेणं संदिधा रंगमंनवेपविधा जियानमंता गायंता वायंता नचंतित्ति  
॥ १ ॥ राग नट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, जगन्दि तत्तायेइ  
॥ अ० ॥ जगन्दिशक श्रीगिशन, मुखेतत्तायेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे  
णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिखागर साजै ॥ तनन्नन्ननेईय ॥  
अईयो० ॥ प्रणय प्रणय प्रणयाय घुग्घरु धमके, रणससससेईय ॥  
॥ अईयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क  
रणी ॥ सोजेती कुमरीय ॥ अईयो० इस्तकं हावादिजावै, ददन्ती  
जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरयाजे  
रावन्न कीनी ॥ सुगंथ तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगते जविक  
खीणां, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजिन्न पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततवन सुखिरै आनधै, वाजिन्न चौविध वाय ॥  
जगत जेखी जेगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाथा ॥ सुर  
मदल कंसाखो, महुयर मदल सुवज्जेण प्रणवो ॥ सुरनारि नंद तरे,  
मुदणई तूं नंद जिणनाइ ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नदिआ

( ३६५ )

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंध परपरिध वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पज्जणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, शुय रंगे हम गाजै ॥ जवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सिद्ध आबाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, जणी में जगति हित काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध हय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रंकेवीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोर चरणकमलकी में जात बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग खंडन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहिं कीजै, जन्म को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोनी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपदे  
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्थ चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली  
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद  
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान खजली मिश्री पतासा  
ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलावजल अत्तर नारेल इग्यारे  
नवनालीकेकलस ॥ ९ रक्थी तसला आरसी मंगलदीपक धी अंगीसमोसरण थाप  
नामैं रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाननी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी उर ध्यान ॥  
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ ७ पद्म  
सन्नाय महेमयाणं, सप्पाणि हेरा सणसंविद्याणं ॥ सहेसणाणं  
दिय सज्जणाणं, नमो१ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनेंत संत  
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ अथा जेहना  
ध्यानयो सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क  
था कर्म दुममर्म चक्रचूर जेणें, जल जव्य नवपद ध्यानेन तेणें  
॥ करी पूजना जव्य जावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण  
कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना जव्य  
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त  
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कथा धातिया कर्म च्यारे अलग्गा, जवोप  
ग्रही च्यार ठै जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमै, नमो  
तेह तीर्थकरा मोहकांमै ॥ ५ ॥ ठाव ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,  
धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वरु  
वीरो जी ॥ तो० ॥ उच्चाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व  
जाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म जावे चरण शिरता वास्



ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतु  
 करुणावंत जगवंत जविकजनने थोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी  
 मंथर साहिव आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर थानक तप कर, जि  
 न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र  
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं  
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वुंदो रे  
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे  
 हने होय कढ्याणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि  
 क गुण अतिशयधारी, तेजिन नमि अघ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेइ  
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ९ ॥ महागोष महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्प्रवाह ॥ उप  
 मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 १० ॥ आव प्रातीहारज जसु गजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो  
 धैं करै जगजनने, ते जिन नमियें उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो अको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद  
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणोसर उपदिसै, सां  
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानि आतमा, रुद्धि मिले सब  
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान  
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमस्तिद्धचक्राय अष्टद्वयं  
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिख खुसियाल ॥ अ  
 शुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण  
 माणंद रमावयाणं, नमोऽशंत चउकयाणं ॥ सम्मग्न कर्मकरक

रगाणां, जन्मजरा दुष्क निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय  
 पार पांभ्या, जरा जन्म मरणादि ज्ञय जेस वाभ्या ॥ निरावरण  
 जे आत्मरूपें प्रसिद्ध, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्ध ॥ १५ ॥ त्रि  
 ज्ञागोनेदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत  
 सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥  
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल कय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ  
 व्याबाध प्रज्जुतामई, आतम संपत ज्ञूपो जी ॥ उल्लाखो ॥ जे ज्ञूप  
 आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपर्ये करी ॥ स्वद्वयक्षेत्र स्वका  
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि  
 द्दसाधन परज्जणी, मुनिराज मानसरइंस समवर, नमो सिद्ध महा  
 गुणी ॥ १७ ॥ ढाख ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग  
 विलेस ॥ अवगाइन लही जे शिव पुढता, सिद्ध नमो ते असेस रे  
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग  
 ॥ समय एक ऊरवगति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥  
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो  
 कंत ॥ सादि अनंत तिदां थिति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥  
 ॥ २० ॥ ज० ॥ सि० ॥ जाणै पिण न सकै कहो पुर गुण, प्राकृत तिम  
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांदे, ते सिद्ध दिनु उल्लास  
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,  
 विरसी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स  
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाख ॥ रूपातीत स्वज्ञाव  
 जे, केवलइंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु  
 ण खाणो रे ॥ बी० ॥ २२ ॥ उँ ॥ हँ ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूरै जाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरिणदूरीकय  
 कुग्गहाणं, नमोऽस्तस्मिन्पद्माणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ  
 स्कंढत्तोत्तुगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनैज्ञग  
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्बर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा  
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ जविप्राणिने देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा  
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो  
 शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवृत्तीसे  
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निक्कामो जी उल्लाखो  
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारथो ॥ वर  
 ज्ञान दरसन चरण बोरज, साधना व्यापारयी ॥ जविजीवबोधक  
 तत्त्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, उ  
 विघत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,  
 मारग जालै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या  
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वृत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान  
 जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥  
 ज्ञ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम जवएसे, नहि विकथा  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे  
 ज्ञ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पन्निचो  
 यण वलि जनने ॥ षट्धारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम  
 नने रे ॥ ज्ञ० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्यमिये जिन सूरज केवल, वंदी  
 जे जगदीवो ॥ जूवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो  
 रे ॥ ज्ञ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं  
 त्र गुप्त ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ते ह्ये आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवझायापद अरचियै, अनुजवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काठ्य ॥ सुनश्च  
 वित्थारणतप्पराणं, नमोश्वायगकुंजराणं ॥ गणस्तसंधारणसायरा  
 णं, सवप्पणावज्जियमठराणं ॥ १ ॥ नही मूरि पिण सूरिगुणने सु  
 हाया, नमूं वाचकात्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादिसूत्रार्थदा  
 नें, जिके सावधानें निरुद्धजिधानें ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु  
 णौघा, प्रवादिद्विपोहेदनेतुल्यसिंधा ॥ गुणीगठसंधारणेस्थंजपूता,  
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रभूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,  
 अज्जव मद्धवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥  
 उद्धाओ ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता गुप्तधरा ॥ स्या  
 द्वादवादं तत्वताधक, आत्मपरविजंजनकरा ॥ जवज्जीरुसाधनधी  
 रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदानंलमरथ, नमोपाठ  
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिंहाय करे जे, पारगधारण  
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उद्धास रे ॥  
 ज० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविज्ञागे, आचारज उवझाय ॥  
 जवत्रिण्डै जे लहै शिवरूपद, नमियैने सुपसाय रे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ सि०  
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पाहणने पल्लवआणै ॥ ते उवझाय स  
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणै रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा  
 जकुमर सरिखा गणार्चितक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते  
 नमतां, नावै जवज्जय सोम रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनचंद  
 नरस समवयणै, अहितताप सवि टालै ॥ ते उवझाय नमिजे जे  
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥  
 तपसिंहायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते  
 आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ नै ह्रीं श्रीपा.  
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमार्ग साधनज्ञानी, सावधानं अया जेह ॥

ते मुनिवरपदं वंदतां, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ सांख्ये सै  
 साह्यसंजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुतगुत्ताणसमाहियाणं,  
 मुणीणमाणंदपयद्विआणं ॥ करेसैवनासूरिवायगगणीनी, कंठवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुसैनहाकाम  
 जोगेबुलिता ॥ ४१ ॥ बलाबाह्यअज्यंतरेग्रंथटाली, हुईमुक्तिनेयो  
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निजं पा  
 प टाली ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिने, निक्का  
 मो निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणों देह निर्मम निर्मदा;  
 कानसगमुझा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 णमो हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरफूत्रै जमरो बेसे, पीना  
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचरंङीने जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, बंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥  
 ४५ ॥ सि० ॥ अढारसइस सीलंगना धेरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयलायुत बंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बरे बिध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमिअै जो प्रगटे, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढ़तै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमिअै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आतमा, स्युं मुनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं  
 साधुपदं अष्ट द्वयं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छद्मी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्ध नर, तत्त्वदानी परतीत ॥

( ३६९ )

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ्र रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिशु  
 तततेरुलस्कणस्स, नमो२ निम्मलदंसणस्स ॥ मिञ्चत्तनासाइसमु  
 ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहाडुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिच्छया,  
 टलेजेअनादीअजेजेकुपय्या ॥ जिनोक्कैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि  
 बैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेदथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि  
 चित्रंजवारणयकूपां॥प्रकृतितातनेउपसमैकयतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू  
 पी जी॥असु निरधार स्वप्नाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥चाल ॥  
 जे अनूप अद्वा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता ज्ञाव प्रग  
 टै अनुजव करुणा उठलै॥बहुमानं परणितवस्तु तत्त्वे अहव सुखकारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपत्ति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कयं उ  
 पशम जेदथी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश  
 म लहीजै, कयउपसमीब असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र  
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रमुं मूल ॥ समकितदर्श  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसेवेगादिक गुण, खयउपसम जे आचै रे ॥ दर्शन ते  
 हिज आत्मा, खुं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं  
 प० दर्शनपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धक तपमाह ॥ आ  
 ४४

राधीजै जुज्जि मनै, दिन२ अधिकं जंहाइ ॥ १ ॥ काठ्य ॥ अन्नाण  
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवारस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा  
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयांसगस्स ॥ दोइजेइधीज्ञानगुणबोधै, यथा  
 चर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणैजाणीयैवस्तुषट्ठव्यज्ञावा, नहोवै  
 विकन्धानिजेन्नास्वज्ञावा ॥ एए ॥ दोइपंचमत्थादिसुग्यानजैदे, गुरु  
 पासणीयोग्यतातेहवेदइ ॥ वलीझियदेयानुपादेयरूपै, लहैविचमंजै  
 मध्यानेप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र  
 काशक ज्ञावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजैद स्वज्ञावै जी  
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता,  
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंबना ॥ स्यादावस  
 नी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजैदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु  
 सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जेद अजैद न जे विण लो  
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान  
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान नै पीठे अहिंसा,  
 श्रीसिद्धांतै ज्ञारखुं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञानम निर्दो, ज्ञानीये सिवसुखं चा  
 ख्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूलते अध्या, तेहनुं मूल  
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित २ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये  
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेद सदागम, स्वपरप्रकाश  
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिजुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह  
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरध अथ तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि  
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेइथी, ते ज्ञाने मुज गुडी  
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म ठै, हय  
 उपशम तसु आयै रे ॥ तो दोइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता  
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ जै ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट इव्य यजा  
 मंहे स्वाहा ॥ इति ॥





॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन  
॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म  
हुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिवतवोवरस्स ॥ अणेगलक्ष्मीणनिबंधण  
स्स, दुसङ्कअत्थाणयसाहणस्स ॥ ७७ ॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धिं, विज्झास  
मिद्धं, पयमियसरवग्गंहीतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव  
थारं, तिजयविजयचक्रंसिद्धचक्रंनमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म  
कषाय टाळै, निकाचितपणें बाधिया तेह बाळै ॥ कह्यो तेह तप  
बाह्य अर्न्यंतर उ जेदे, कमायुक्ति निहेत दुर्ध्यान वेदे ॥ ७९ ॥ होई  
जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांगकपणे कर्म आवरण शुद्धि  
॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके  
ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवजव सिव  
जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा  
वै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इहा  
रोधन तप नमो, बाह्य अर्न्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व  
ता, पर परणति उबेदे जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उबेद कर्म अनादि  
संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुज योग संग आहार टाळी ज्ञाव अ  
क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी, निज आ  
त्मसत्ता प्रगट ज्ञावै करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न  
वपद गुणमंरुलं, चउ निक्केप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स  
म्यगज्ञानें जाणो जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणो गुणानो करइजे  
बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थायै निरमल ध्यान ए ॥  
इम शुद्धसत्ता ज्ञेयो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अकथ्य अनंत म  
हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख  
कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्झा सिद्धि मंदिर ज  
विक पूजो मन रखी ॥ उवज्ञाय वर श्रीरजसाग्रह ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोजता ॥ ८४ ॥ ढाल ॥  
जाणता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म  
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि  
काचित पण क्य जायै, कमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते  
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही  
पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र  
गटै, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव  
सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेइनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो  
वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां  
हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न  
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद  
धुणतो तिहांलीनो, हुठ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्रे  
खंनै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ  
न्नारोधन संवरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,  
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,  
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हुठ, परजावै मत  
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकलं समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि दा  
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम ठै साखी रे ॥  
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य ठै जिन कहा, नवपद मुख्यते जाणो रे  
॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल  
वारमी एहवी, चोथै खंनै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय  
न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ हँ ५० तपपदे अष्ट इव्यं  
यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्नात्रिया केसरसँ निलक करे, हांके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके जल कलस-ढाले फेर-केसरकी टीकी देकर चरणों पर वासशेष चढ़ावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढ़ावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी घजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी घजागोटा, उपाध्यायपदमें भूंग, साधूपदमें उडद, बाकी च्यारपद में चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चैत्रीपूनाम आसोजीपूनाम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि त्रवपदों के न्याये कह के चढ़ावे, गृहे मुजब पढ़े पर तब साधिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढ़ावे ॥

॥ ओली करणेवाला वासशेष पूजा करे तो एकैक पूजामें चालकी गाय तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासशेष यजामहे कहणा. एसे नत्रपदों की चाल और उछाला पद वासशेष चढ़ाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्दवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंठित दायकं, कुशल सूरि गुरेश्वरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाण्यरुजातं प्रदरिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ २ ॥ अथ धूपपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत्-षट्पद वृंदकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौक्तिकं पुंज वज्रज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री ५० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्वरजिर्वदकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकैः, विमल कंचनजाजन संस्थितैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिहुसुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पत्रा मोक्ष सदाफल कंकटै, सुसुखदैः

किंल श्रीफल चिन्तै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० फलं यजामहे  
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्रुप्रदीप  
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घ यजा  
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सद्गुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी  
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब  
दूर हरीजै॥जै०॥ १॥ बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूही सुख  
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरी सब दुर्म  
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक  
म धैर्यु पायक॥जै०॥ ४॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ स  
कलनो संकट चारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ष्ठी आंजोवज्र बिदारी, बिद्या  
पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साथी,  
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ अण विध सात आरती  
कीजै, मनवंजित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनदाज खर  
तर गणधारी, सद्गुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥  
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो  
नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ उर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके  
एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पामे, तो दिन १ एक सूतक ॥  
परदेशे मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,  
सांड, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हवां कले  
वर घर बाहिर लड़ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी  
नेषायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ उर जितना महिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥  
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये ११ बार  
 दिन देवपूजा न करे, उर मृतकके सूतक में घरका जो  
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥  
 उर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे, उर जो मृत  
 कको बुवा होवे, सो १४ चोवीस प्रहर पक्कमण न करे ॥ जो  
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरणामें  
 रहे, परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं, स्थापना  
 जीके हाथ लगावे नहिं, उर जो मृतकों बुवा न हो तो मात्र  
 आठ प्रहर पक्कमण न करे ॥

जैसेके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणों  
 कढ्ये, गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणों कढ्ये,  
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणों कढ्ये ॥

१ ऋतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न बुवे, प्रचार दिन  
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे, ४ रोगादिक का  
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता बीसे, जिसका  
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें  
 स्थापना पुस्तक बुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा  
 न करे, साधुकों पस्विजाजे, ऋतुवती तपस्या करे, सो तौ सफल  
 होय, परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न  
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा हे, जिसके घरमें जन्म मरणका सू  
 तक होवे, उहां ११ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बहारे,  
 सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव  
 पूजा न करे, निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत  
 कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा हे.

गायकै मूत्रमें २४ चौबीस प्रहर पीठें, जैषके मूत्रमें १६ सौल प्रहर पीठें, गामर, गधेनी, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीठें, संमूर्ध्नि न जीव उपजे, इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसे जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असञ्चायकी विगत कहते हैं ॥

१ धूंआरी पने, तासोम असञ्चाय जाणवी.

२ सर्वविशामां राती ठाया तथा अरण्य संबंधी रज उने, निरंतर पने तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

३ मेह वरसते बुडबुडाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

४ नाना ठांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असञ्चाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जालगें होय, तां सीम असञ्चाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असञ्चाय.

६ बुडबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असञ्चाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहंती पन्निवा लगें असञ्चाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउम्रावणठं काउस्तग करुं ? इठं. अचित्त रज्ज उम्रावणठं करेमि काउस्तगं. पवी लोगस्त उञ्चोयगरेना चार काउस्तग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंजीने पन्निवा लगें असञ्चाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असञ्चाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर ३ वे सीम असञ्चाय.

११ अकालें बीज उडकापात होय तो प्रहर १ असखाय,  
१२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज,  
इयारी असखाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असखाय.

१४ जूमिकेंपें प्रहर ८ आठ असखाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर ११ वार उत्कृष्टें, अने जयन्यें प्रहर  
८ आठ असखाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जयन्य प्रहर  
१२ वार असखाय.

१७ आसाढ चनमासा पक्कमण गथादूती प्रहर ११  
वार असज्जाय.

१८ कार्तिक चनमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पन्निवा लगें प्र  
हर वार असज्जाय.

१९ मांदोमांदे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्जाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्जाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असज्जाय.

२२ फागण चनमासे रजपर्वी ज्यां लगें रज उमे, अने उप  
शामें नहिं, तां लगें असज्जाय.

२३ दंरुको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी  
असज्जाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशामे नहिं, तां  
लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांदे प्रधान पुरुष विद्वत्ते, तो अहोरात्र असज्जाय.

२६ उपाश्रयश्री सात घरमांदे जो कोइ पुरुष विद्वत्ते, तो  
अहोरात्र असज्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणजळरे एतले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असद्याय.

२८ तिर्यचना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असद्याय.

२९ मनुष्यना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असद्याय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो मांहे  
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ त्रश असऊंजाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आल्वा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,  
बीजे, मेह वरसे, तो असऊंजाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ स्यात असद्याय. अने दीकरीने प्रस  
वे दिन ८ आठ असऊंजाय.

३४ कालग्रहण विसकी जखवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार  
असऊंजाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि  
रवदि १. ए चार दिवसैं सदैव असऊंजाय अने सूत्रनी असऊंजाय  
तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीत प्रहर २०, गाढी  
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबर्मा प्रहर २४,  
घोमवर्मा प्रहर ४, तळ्यां वर्मा प्रहर ४, पूनी प्रहर ८, रोटी प्रहर  
४, तथा ६. बाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्ण प्रहर १२, बा  
जरीकी खीचनी प्रहर ८, जवारकी खीचनी प्रहर ८, चावलकी



‘खीचनी प्रहर’ ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ज़ीजोड़ प्रहर ८, पाणीकीउसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वनी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन

विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्त्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली नर कांकणमोरा मंत्राय के बाँधै ॥ ( नमो परमेश्वरि नमस्कारं ) इत्यादि स्तोत्रसें गुरुआ-स्मरणा करावै. पीठै एक थालीमें १०, एक थालीमें ए, फेर एक थालीमें फेर ए, ऐसें ३८ नागरवेलका पान रखै. जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै नरजी पंचामृत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरे२ के गीले नर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्त्रात्रपूजा की थापना रखै, स्त्रात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पट्टे ऊपर जलका बीटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढ़ाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढ़ावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्य सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह अस्मिन् जं  
 वूदीपे दक्षिणऋतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो  
 ञ्चवे आगच्छ १ वलिं गृहाण १ उदयमञ्चुदयं कुरु स्वाहाः नैऋत्याय न  
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ ( पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट इव्य च  
 ठावै ) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्ये सायुधाय सवा  
 हनाय सपरिकराय अस्मिन् जं वूदीपे दक्षिणऋतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे  
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोञ्चवे आगच्छ १ वलिं गृहाण २ उदयमञ्चु  
 दयं कुरु स्वाहाः नैऋत्ये नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ  
 त्याय सायुं संवा ० सपरिहृदा अस्मिन् जं वु ० दक्षिण ० अमुकन ०  
 अमुकचैत्ये ० अमुकपूजा ० आग ० वलिं ० उदयम ० स्वाहा नैऋ  
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय  
 सायुं संवा ० सप ० अस्मिन् जं ० दक्षि ० अमुक पूजामहोञ्चवै  
 आग ० वलिं ० उदय ० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि  
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुं संवा ० सप ० अस्मिन् जं ० अमुकपू ०  
 आ ० वलिं ० उदय ० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम ॥ ५ ॥ अथ वा  
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुं संवा ० सप ० अस्मिन् ० द ०  
 अमुकचैत्ये ० अमुकपूजामहोञ्चवे ० आ ० वलिं ० उदयम ० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतेरा  
 य सायुं संवा ० सप ० अस्मिन् जं ० द ० अमुकन ० अमुकचै ० अमु  
 कपूजामहोञ्चवे आ ० वलिं ० उदय ० स्वाहा नैऋतेराय नमः उत्तर  
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुं  
 संवा ० सप ० अस्मि ० द ० अमुकपू ० आ ० वलिं ० उद ० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकू ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥  
 नैऋतेराय सायुं संवा ० सप ० अस्मिन् ० द ० अमुकन ० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० बलि० नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ उद्दिशि०  
॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०  
अस्मिन् दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० बलि०  
नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्व्य चढावै ॥  
ऊपर कसूमल वस्त्र बाँधै मौखीसे, पीठै ॥ नैनादिग्पालायनमः  
॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमद्व्य समेत नागरवेल्का पांन आदि  
सर्व द्व्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक  
दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय साबुधाय सवाहना  
य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणजरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक  
चैत्यै अमुकपूजामहोद्वे आगच्छ १ बलिपूजागृहाण २ नदयमच्युदयं  
कुरु ३ अत्रपीठेतिष्ठ २ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि  
अष्टद्व्यचढावै ) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंडाय सायु० सवा० स  
प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० बलि १०  
नदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैचंडायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

नैनमोजोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०  
अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे नदय० स्वाहाः नैजोमायनमः ३ ॥  
अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ  
मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० बलि० नदयम० अत्रपी०  
स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अष्ट वृहस्पति पूजा ॥ नैनमोवृहस्पतये  
सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक  
पूजाम० आ० बलि० अत्रपी० नदय० स्वाहाः नैवृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥  
अथ शुक्र पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं०  
द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० बलि० अत्र

पीठे नदयम० उंशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥  
 उंनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ३ नदयम०  
 स्वाहा उंशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उंन  
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै  
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० नदयम० उंराहवेनमः॥८॥  
 अथ केतू पूजा ॥ उंनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि  
 न्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे  
 तिष्ठ३ नदय० स्वाहा ए उं केतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर जाल  
 वल मोलीसे बांधे पीठे नागरवेलके धान आदि अष्टद्वय रोकन द्वय  
 संमेत सांमने जेट धरे फेर एसा कहे ॥ उंनवग्रहायनमः ॥ चारों तरफ  
 नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः  
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसदिग्पाल  
 की थापना करे ॥ जिस महोन्नवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो  
 ण्वका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल  
 से पवित्रपणे बसायाजया सधवल्लीके या पुरषके हाथसे पांचरंग  
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा  
 मालपूवा पांचरंगके लड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें  
 सब द्वय एकठे करै नुरघृत खांम अत्तर गुलाबजल पंचरंगेफूल  
 यहजी बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन वेर  
 बाकुलो पर वासहेप मालै, ) अथ वासहेप मंत्र ॥ उंहांह्रीं तवोप  
 ष्वंविंस्परकृष्वस्वाहा उंलमोअरिहंताणं उंशमोसिद्धाणं उंशमोआ  
 यरिआणं उंशनोन्नवज्ञायणं उंशमोलोएसबसाहूणं उंशमोआगास  
 गामीणं उंशमोचारणखद्दीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड  
 गंधर्व जक्ष रक्षत पिशाच न्यूअ नाइणप्पजइउ जिणधरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसवेविलेवण धूवपुष्पफलवड्वसंशाहिं वलिपमि  
 ङंता तुडिकराजवंतु पुडिकरा संतिकराजवंतु सवजणकुर्वंतु सबजि  
 णाणं संधणप्पजावज पसन्नजावतणे सबत्थरस्कंतुकुर्वंतु सबडुरियाणी  
 नासंतु सदाशिवमुवसमंतु संतितु ण्णुविसिवसत्थयणकारिणो जवंतु  
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासकेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठै आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखगेमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक आवक चौटीके बाल खों  
 लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा कैसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अ्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा  
 जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग  
 लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहैं.  
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बा  
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यज्ञांतयेसो  
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ ( एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलबाकुल चढावै ) ( अग्निकूशके सामने ) ॥ सदावह्निदिशो  
 नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यज्ञांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥  
 ( एसा कह बाकुलादिष्व्य चढावै ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलबाकुल चढावै वाजित्र बजावै ) ( नैऋतकूशकी तरफ ) ॥  
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनयस्य  
वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०  
वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिशि ) ब्रह्मलोकवि  
भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीठे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नैनमोईंजाय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणांर्धे अमुकन  
गरे अमुकचैत्ये अमुकमहोष्ठवे सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च गच्छश्च स्वाहा ॥  
पूर्वदिशाकी तरफ नैनंजायनमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ नैनमोअ  
ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च गच्छश्च स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणादिशि ) नैन  
मोयमाय दक्षिणादिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण  
मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मिन्० सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च गच्छश्च स्वा  
हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ नैनमोनेरुताय स्वरुगहस्ताय  
सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च गच्छश्च  
स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ नैनमोवरुणाय पश्चिम  
दिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु०  
सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च गच्छश्च स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायव्यकूणे ) ॥  
नैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्तश्च स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय  
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ१ स्वा  
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूणे ) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय  
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्  
 लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) नैनमोव्रह्मणे रा  
 जदंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
 अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
 नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इस  
 तरे पदे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढ़ै ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
 लोकपालादिशिविसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः आयातास्त्रात्रकाले क  
 लुषट्कृतिते तीर्थनाथस्यजक्त्याः न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु  
 खाः स्वरूपदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदयोंतुकट्याणा  
 म्नाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वकर्म  
 तंदेवः, प्रसीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि  
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश  
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसे स्नान  
 करे ( जलमंत्र ) नै ह्रीं अमृतंअमृतोन्नवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव  
 य१ स्वाहा ( इस मंत्रसे जलमंत्रे, पीठे ) नै ह्रीं अमलेविमले वि  
 मलोन्नवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिज्जवामिस्वाहा (इस  
 मंत्रको सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ नै ह्रीं आँ क्राँः॥ (सा  
 त वेर इस मंत्रसे वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ नै आँ ह्रीं क्राँ अर्हते

नमः ) इस मंत्रसें सात वेर गुरु पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. ( पीठै ) नै हूँ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वटगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे नैकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नर जब मंरुलजीके व्याहं तरफ मौलीमेंढल बांधे सोजी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तेरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोमके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढ़के गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंरुलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहिये, पीठै मं दिरजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढ़ावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढ़ावै, अतर चढ़ावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य ( नै क्षेत्रपाला यनमः ) एसा बोलता हुंवा चढ़ावै, पीठै मंरुलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढ़के जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढ़ावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढ़के ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढ़ाके दीपक करै. पीठै बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढ़के इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कुं १७ स्तुतीसें देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पन्निकमें ज्यार नवकारका काउसंग कर लागेस्त कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा घरतीपर रखे के मावागोमा नमी जूत करके चैत्यवंदन करै,



नमोऽनुषं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नहु० १  
 एक नवकारका काउसग्ग करै, नमोर्हत्तु सिद्धा० कहके यदंहीन  
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नहु० एक  
 नवकारका काउसग्ग इस शुईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्क  
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे, सिद्धाणं बुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 काउसग्ग शुईकी ४थी गाथा कहे, पीठै वेठके नमोऽनुषं कहके खना  
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करैमिकाउसग्ग वंदण  
 व० अन्नहु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिजिदोषै रं  
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ ( ततः  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तं करैमिकाउसग्ग० १ नवकारका काउसग्ग )  
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्जव्याय सुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति  
 मपनीयते ६ ( ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशालनीदियात्  
 द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ ( ततः श्री  
 जुवनदेवताआराधनार्थ० ) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ ( ततः  
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासां क्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ७ ॥  
 ( ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं० ) अंबानिहितमिंबामे सिद्धुत्तम  
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं० ) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुशे  
 पद्मवतःसामां पातु फल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा चिरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवज्जाञ्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअम्बुसादेवतानि० ) खर्गखे  
 टककोदंरं वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगममनाम्बुसा कळयाणानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्थ श्री  
 पार्थस्तूपरक्का श्रीकुबेरानगरारूढा सुतांकावतुवोज्ञयात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया  
 हीरसेवकः श्रीमस्तस्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥  
 ( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-  
 दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरेतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा  
 दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः  
 देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि  
 का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्तको कान्तस्सगकर स्तुति  
 कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु  
 चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्त कहके बैठे चैत्यवं० नमोबु०  
 जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांछण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी  
 पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै ( पीठे ) सो  
 ने चांदी बगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
 कलसलेके सात नवकार गुणै॥ नै हूँ जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु  
 स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात बेर जलको मंत्रके मंमलजीके चारों तर  
 फ धारा देवे, ऊपर जरा गीटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठे)  
 नवतारी मौलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे,  
 पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ  
 धाये (पीठे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ नै आँ हूँ श्री अर्हतेनमः॥  
 इस मंत्रसें मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका गीटा देवे ( ऊपर ) चा  
 वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साधिया चाव  
 लोंका वा नंथावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै, ( पीठे )  
 केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
 रै ॥ (पीठे) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ नै जूगसीजूतधात्रीविश्वा

धारैः नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंजुलज्जुमें तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरुवासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हत्पीठाय नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंजुलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंजुल को वधावे, नीचे चावलोंका साग्रिया करके रुपिया नालेर थापना को धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके ज़ीतरसे प्रतिमांजी लायके त्रिगमेके सिंहासण पर मंत्र पढ़के थापन करै, (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेश्वरिणे दिग्गुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ४२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ४ बेर पढ़के नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंजुलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सुरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एकरकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अकृत फल नैवेद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढ़ै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतोत्प्लसद्बोधा नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषे धनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतुन् यजैः समस्ता तिशयैकदेतून् श्रीमज्जिनानां बुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हत्त्रयो नमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै, अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढ़ावै, पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ मांशकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढ़ै (यथा) तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदं प्राप्तां निदधेऽक्षि निर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे गतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्ममधिगम्य शुद्धिं प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान् यजेशांतिकरान्नरार्णां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे त्रयो नमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेबीमें पीला गोटा,  
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण  
 स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंस्त्युषैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-  
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैर्कनिवा-  
 रणार्थं मन्यर्चयाम्ब्रहतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमःस्वा-  
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, ९५ मरकतप-  
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे, उपाध्याय पद पूजा पढे ( यथा )  
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्  
 पवित्रेष्विमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशान्त्यै पठंतिथेन्या-  
 न्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराञ्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज-  
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि-  
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २७  
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान्  
 साधुवासीसमुब्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-  
 त्तशयाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प-  
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥  
 पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व डव्य  
 हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेंद्रोक्तमनश्चन्द्रा, ल-  
 क्खणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं सभ्यगुदर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूलमें दर्शनपदकी

( ३९५ )

आपना पूजा करै इति ॥ पीठै ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,  
श्वेतवस्त्र, चावलो कालरु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य  
पढ़ै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाप्नेयप  
त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानायनमः  
स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥  
इति ॥ ) फेर ) रकेबीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे  
तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे, काव्य पढ़ै ( यथा ) सामाधि  
कादिजिज्ञैदै, श्रारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रैर्हमैश  
तेक्रमात् ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा ( नैश  
तकूणकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ )  
पीठै ) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व  
द्रव्य लेके काव्य पढ़ै ( यथा ) दिधाद्वादशधाजिज्ञं, पूतेपत्रतपस्व  
यं ॥ निधाययामि ज्ञत्तथात्र, वायव्यादिशि शर्मदं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः ( वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी आ  
पना पूजा करै इति ॥ अथ अर्थ ) निःस्वेदत्वादिव्यातिशयम  
यतनन् श्रीजिनेन्द्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणजृदाचार  
साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिशिरहाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं,  
स्तत्सिद्धयै पाठकानां यतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं  
अष्टदलंपद्मं, पूरेयदर्हदादिजिः ॥ स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त  
ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआज्जसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा  
रित्र तपसेज्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव  
परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुष्टयनमः ( इति मूलामंत्र )  
इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे एमें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंगलके मध्य ज्ञाग  
में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै ( पीठै ) दूसरे बलयमें  
धूम्रके आकार १६ कोठा होय ( जिसमें ) एकेक कोठाके अनं  
तर आठ कोठोंमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै ( ओर ) एकेक  
कोठा बीचमें खाली रहा हे उसमें अनाहतपद नै हौ एमो अरि  
हंताणं ) ऐसा पद स्थापन करै ( पीठै ) एक रकेबीमें मिश्री ल-  
वंग ( तथा ) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खरुा रहे. अनाहन  
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै ( यथा )  
( नै हौ एमो अरिहंताणं ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई  
उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ उ औ अं अः ( नै हौ स्वर वर्गायनमः )  
( इहां ) १६ दाख चढावै २ ( नै हौ एमोअरिहंताणं ) मिश्री  
लोंग ३ क ख ग घ ङ ( नै हौ व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख  
चढावै ४ ( नै हौ एमोअरिहंताणं ) ५ च ठ ज ञ त्र ( नै हौ  
चवर्गायनमः ॥ ६ ( नै हौ एमोअरिहंताणं ) ७ ट ठ द ढ ण  
( नै हौ टवर्गायनमः ) ८ ( नै हौ एमोअरिहंताणं ) ९ त थ द  
ध न ( नै हौ तवर्गायनमः ) १० ( नै हौ एमोअरिहंताणं ) ११  
प फ ब ज म ( नै हौ पवर्गायनमः ) १२ ( नै हौ एमोअरिहंता  
णं ) १३ य र ल व ( नै हौ यवर्गायनमः ) १४ ( नै हौ एमो  
अरिहंताणं ) १५ श ष स ह ( नै हौ शवर्गायनमः ) १६ पहिले  
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलेश दाख चढावै सब ए६  
( उर ) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ  
दाख चढावै इति ॥ दूसरा बलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अब तीसरा बलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ  
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके  
बीचमें बलाका तीन देवे तीनु बलाकामे २४ खाना होय एके

कं खानेमें १ दोय १ दोय लब्धिपद स्थापन करेसैं चोबीस धरो  
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( नैं हँ परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा  
८ वेर कदके ८ बीजोरा चढावै, उर लब्धिपदका नांम बोलके खा  
रका ४८ चढावै ( यथा ) नैं हँ अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नैं हँ  
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ नैं हँ अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥  
॥ ३ ॥ नैं हँ अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ नैं हँ अर्हणमोअ  
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ नैं हँ अर्हणमोकुब्बुद्धीणं ॥ ६ ॥ नैं हँ  
अर्हणमोबायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ नैं हँ अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥  
नैं हँ अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ नैं हँ अर्हणमोविठिविसाणं ॥  
॥ १० ॥ नैं हँ अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नैं हँ अर्हणमोस  
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ नैं हँ अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ नैं हँ अ-  
र्हणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ नैं हँ अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥  
नैं हँ अर्हणमोविजलमईणं ॥ १६ ॥ नैं हँ अर्हणमोदसपूव्वीणं ॥ १७ ॥  
नैं हँ अर्हणमोचउदसपूव्वीणं ॥ १८ ॥ नैं हँ अर्हणमोअङ्गनिमत्तकु  
सलाणं ॥ १९ ॥ नैं हँ अर्हणमोविजवणइट्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥ नैं हँ  
अर्हणमोविक्कादराणं ॥ २१ ॥ नैं हँ अर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥  
नैं हँ अर्हणमोपसासमणाणं ॥ २३ ॥ नैं हँ अर्हणमोआगासगामी  
णं ॥ २४ ॥ नैं हँ अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नैं हँ अर्हणमोस-  
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ नैं हँ अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नैं हँ अ-  
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नैं हँ अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥  
नैं हँ अर्हणमोअयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिणीं ॥ ३० ॥  
नैं हँ अर्हणमोअगातवाणं ॥ ३१ ॥ नैं हँ अर्हणमोअस्कीणमहाण-  
सियाणं ॥ ३२ ॥ नैं हँ अर्हणमोवक्कमाणं ॥ ३३ ॥ नैं हँ अर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोततंतवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ  
 -ह्रींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरपरिक्लमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोजलोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोविष्णोसहिपत्ताणं ॥  
 ॥ ४४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोसबोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोम  
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रींअर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हअरुयाललब्धिपेदञ्च्योनमः ॥ इत  
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका  
 चढ़ावै ॥ ( पीठे ) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे  
 ( जहांसे ) साढ़ातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे  
 ( क्रों ) एसा अक्षर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठ दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दानिमफल चढ़ाव  
 ( यथा ) ॐ-ह्रींअर्हत्पाडुकाञ्च्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रींसि  
 ष्पाडुकाञ्च्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींआचार्यपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ  
 -ह्रींगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींपरमगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींअष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअनंतगुरुपाडु  
 काञ्च्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रींअनंतानंतगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ  
 -ह्रींअष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनमः स्वाहाः ॥ इत तरे ठेके वलयमें ८ दा  
 रुम चढ़ावै ( पीठे ) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावे ( यथा ) ॐ-ह्रींजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रींजंजयायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींविजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रींथंजयायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींजयंत्यैनमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअपराजित



यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अं धायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इसी  
 तरे ) सातमें बलयमें ८ नारंगी चढ़ावै ( पीठै ) आठमें बलयमें  
 १६ बिद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके बर्न लपेटी १६ सुपा  
 री चढ़ावै ( यथा ) ॐ ह्रीं रोह्यै नमः ॥ १॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञासैनमः ॥ २॥  
 ॐ ह्रीं वज्रशृंगलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ  
 ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं  
 काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं माहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं  
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र  
 महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥  
 ॐ ह्रीं वैरोध्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अश्रुतायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं  
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं माहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे  
 आठमां बलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी  
 ठै नवमें बलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की आपना  
 कर पूजा करै ॥ १४ पुंगीफल चढ़ावै ( यथा ) ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १॥  
 ॐ अजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ इरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः  
 ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ नृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः  
 ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंद्रायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदि  
 तायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदप्पाययिनमः  
 ॥ १५ ॥ ॐ मिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धार  
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः  
 ॥ २० ॥ ॐ गंधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव  
 त्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धाधिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दहिणे त  
 रफ १४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥  
 ( यथा ) ॐ ब्रह्मशांत्यैनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २५ ॥ ॐ गो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २१ ॥ नवैरुणायनमः ॥  
 २० ॥ नैकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैयङ्गराजायनमः ॥ १८ ॥ नैगंध  
 र्वायनमः ॥ १७ ॥ नैगरूपायनमः ॥ १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥  
 नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैषण्णमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमाराय  
 नमः ॥ १२ ॥ नैयङ्गराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥  
 नैअजितायमः ॥ ९ ॥ नैविजयायैनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः  
 ॥ ७ ॥ नैकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ नैतुंवुरुयैनमः ॥ ५ ॥ नैयङ्गनाय  
 कायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ नैमहायङ्गायनमः ॥ २ ॥  
 नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी  
 स्थापना कर के पीठा बलवाकुल चढावे ( यथा ) नैकुसुमायनमः  
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैवामनाय  
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥  
 पीठे चार विद्विस्तकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे  
 ( यथा ) नैमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ नैपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ नैक  
 पितायनमः ॥ ३ ॥ नैपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें बल  
 यमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल  
 सहे आकार ऊपरसे कियाज्या सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि  
 काणे नवनिधान पढ़ै तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति  
 रोकनाणा मालके स्थापन करै ) ( यथा ) नैनैसर्पकायनमः ॥ १  
 ॥ नैपांडुकायनमः ॥ २ ॥ नैपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ नैनहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ नैकालायनमः ॥ ६ ॥ नैमहा  
 कालायनमः ॥ ७ ॥ नैमाणवायनमः ॥ ८ ॥ नैशंखायनमः ॥  
 ९ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे  
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणेनेत्रके बराबर पासमें बंगली  
 का आकार किया है ( जहां ) नैहीविमलस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ एसा

कदकेचढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंग-  
 लीमें ( उँहैत्रपालायनमः ) एसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा  
 कोइलाफल ) हाथमें ले के नीचै पीँहिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें )  
 उँचक्रेश्वर्यैनमः ( एसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ ( पीठै ) चौथा को  
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पीँहिके वांये तरफ वंगलीमें ( उँअप्र  
 सिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः ) एसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ ( पीठै )  
 दसूं दिशामें इँडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, बणासकेतो अ  
 पणा २ वर्षा मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों  
 एक इव्य सर्व समान चढ़ावै ( यथा ) उँइँडायनमः ॥ १ ॥ कनक  
 वर्ण चंदन केसर चंपो द्राव पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आ  
 दि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ ( अग्निकूणे ) उँअग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिति ) उँयमायनमः  
 ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नैऋतकूणे )  
 उँनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ( पश्चि  
 मदिश ) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ ( वा  
 यव्यकूण ) उँवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च  
 ढावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिति ) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव  
 र्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूण ) उँईशाना  
 यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥  
 ( अघोदिति ) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य  
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ ( उर्ध्वदिशि ) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका  
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था  
 पन पूजन करै ॥ ( पीठै यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया  
 जया दे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै ( यथा ) उँसूर्यायनमः  
 लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ उँसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लीं  
 खरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँमुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ७ ॥ कालेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ८ ॥ ठीटरंग व  
 स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
 करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क  
 इकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
 वास्तकेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ  
 मीं वास्तव्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये  
 ( जब ) कोइ श्रीमंत मंगलीकी तपस्या करै तब तो गए महीने मं  
 गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ चरसे तप पूरण  
 जये बाद उँडव के साथ मंगलपूजा कराकें नव२ उपगणोसें उ  
 द्यापन करै. जलजात्रादि अष्टाईमहोत्सव कर धर्मशालासिणगरै  
 ( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
 ढावै. रुद्धिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै ( उर ) पंचा  
 यती संधकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा  
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा ॥ १४ ॥  
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तम्भेन्द्रनाथसर्वज्ञा ॥ २० ॥  
 श्रीशान्तिरुतसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ अनंतरुतसर्वज्ञा ॥ २२ ॥ गर्जेन्द्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा ॥  
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय ॥ २८ ॥ नेमिन्द्रसर्वज्ञा ॥ २९ ॥  
 अजितन्द्रसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा ॥ २ ॥ नीलकांत  
 सर्वज्ञा ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व ॥ ७ ॥ मुनिमृ  
 र्तिसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा ॥  
 ॥ १० ॥ कुक्तिनाथसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 महल्लनाथसर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥ जलंमृत  
 सर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ पूर्णमेन्द्रसर्व  
 ज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा ॥  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥  
 २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञाय ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजणसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा ॥ २५ ॥  
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा ॥ २८ ॥ श्रीकुमंगदत्तसर्व ॥ २९ ॥ श्री  
 वज्रधरसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीती  
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ पातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा ॥ १ ॥ श्रीनूमिपतीसर्वज्ञा ॥ २ ॥  
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ श्रीपेश  
 नाथसर्वज्ञा ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व  
 ज्ञा ॥ ७ ॥ श्रीमहाद्योषसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा ॥  
 ९ ॥ श्रीनूमिपालसर्वज्ञा ॥ १० ॥ श्रीसुमतिपेशसर्वज्ञा ॥ ११ ॥  
 ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय ॥ १२ ॥ श्रीललितगंगसर्वज्ञा ॥ १३ ॥  
 श्रीतीर्थनूतिसर्वज्ञा ॥ १४ ॥ श्रीअरचंइसर्वज्ञा ॥ १५ ॥ श्रीतमा  
 धिसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंइसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंडनाथ  
 सर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर  
 सर्व ॥ २० ॥ श्रीवैवेदनाथसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा ॥  
 २२ ॥ श्रीज्योतनाथसर्वज्ञा ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा ॥  
 २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा ॥  
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा ॥  
 २८ ॥ श्रीशिवारनाथसर्वज्ञा ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा ॥  
 ३० ॥ श्रीसहस्रान्नसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्रमयमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा ॥ १ ॥ श्रीजाविकृषिकसर्वज्ञा ॥  
 २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा ॥ ४ ॥  
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ श्रीज  
 गत्सूज्यसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ श्रीमहाम  
 ५१

हैद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरभूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलभद्रसर्व  
ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०  
॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीभोक्तृनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ ओषुष्पकेतु  
सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस  
र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व  
ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
७ ॥ श्रीयशोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री  
वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीर्ज  
मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुभूतसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजगुप्तसर्व  
ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुदधसदस्त्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा०  
॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा  
॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मभूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा०  
॥ २४ ॥ श्रीवरुणादत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६

नागेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतत्र  
हनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेन्नरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०  
॥ १ ॥ ( धातकीखंमेप्रथमन्नरते० ) सिद्धंतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥  
( धातकीखंमे द्वितियन्नरतेजिननाम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥  
॥ ३ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमन्नरतेजिननाम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४  
॥ ( पुष्करार्द्धेद्वितियन्नरतेजिननामः ) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ ( जं-  
बुद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात  
कीखंमेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ ( धातकीखंमे  
द्वितियएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमएरव  
तेजिनना० ) आग्नाहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ ( पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि० )  
श्रीबलिन्ननाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका  
गुणना संपूर्ण ॥ ११६ स्याम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०  
श्वेत, सर्व संख्या १४० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैलोक्य जिनचंद ॥ त-  
रुपद नामी कंधरा, कारण तिव सुखकंद ॥ १ ॥ वाश्चैकासरदातणो,  
उर धरि समरणा शक्ति ॥ सस्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु  
वि भक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥  
पूर्वापर जवि तेहने, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु  
प्रतिदिशा, कयनामै युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि  
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन  
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां



शिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्थ ज्ञाग जसु उत्तमें, भिरि युग  
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तीस  
 ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाइ  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाव्यो  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरया जे जिनरा  
 थ ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (दाल  
 पारखेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्विकजन ध  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां  
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चरया महियल बोधता जी, विजय मऊार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंचर ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता  
 रता जी, समरथां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यांमवरण सोले कहा जी,  
 अकल कला द्युतिवान ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कहा जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर  
 ण बत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्विक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुज्जातमां जी, घरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवल्लभ कथनधर जूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-  
भ जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री  
सिद्धान्तमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धान्तमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि  
द्धि० ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, ( दर्शनावलोककर्मकी नव  
प्रकृती ए )—चक्रुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्रुदर्शनावरण  
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निज्ञकर्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, श्रीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकृति २ )—सप्तावे  
दनीरहितायश्री० १५, अशाप्तावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्रकृती १८ )—सम्यक्तमोहनीर० १८, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिश्रयात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोचनर०  
२१, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचनर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोचनर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर०  
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचनर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुंगमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्रकृति।

४ )-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आहारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषज्जनाराचसंघयणर० ८६, रुषज्जनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंरुक्तसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, डुरज्जिगंधर० १०४, तिक्रसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लसर० १०७, कषायसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, ज्ञारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, षरखराफरसर० ११४, सुक-  
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०  
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी  
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविहायोगति १२२, अशुज-  
 विहायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, कृतासनामकर्म  
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ  
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थीकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम  
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बाह  
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म  
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम  
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,  
 यशनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूहमनामकर्म १४३,  
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर  
 नामकर्मर० १४६, अशुह्यनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०  
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश  
 नामकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृति २ ) उच्चैर्गोत्र १५२, नी  
 चैर्गोत्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर०  
 १५४, लाजांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप  
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥  
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंज्ञव जिनराज ॥  
 भूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकुं  
 द्य करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा  
 नंद विदघन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयमि विस्ता

२ ॥ वरणं जविजन हितजणी, प्रवचनने अनुसार ॥ ३ ॥ (हाल ॥  
 ॥ रामचंदके वाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कहा  
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आत्मगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण  
 आवर्ण, वेदनी मोह वूरो री ॥ आठखो नाम कर्म, कर्मातराय चूरो  
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,  
 तीस कोनाकोनि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस को-  
 नाकोनि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, दिव मोहनीय भुवे री ॥  
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोनाकोनि सागर मान जण्यो री ॥ ए उत्कृष्ट  
 श्रिति जोरु, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,  
 अंतरमुहुर्त्तणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री ॥  
 ॥ ६ ॥ अकपाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वदे री ॥ वारे महुरत  
 मान, शास्त्रानुसार मुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच जेद  
 जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो जेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शना  
 वरण नव जेद, आयु च्यार विधे री ॥ मोह कर्म अरुवीस, सौ त्रिक  
 नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अष्टावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥  
 अष्ट करमना जाण, सर्व विकल्प सही री ॥ १० ॥ हाल ॥ नण  
 दल चुरले जेवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण  
 ठे, दर्शनावरण प्रतीहार, जवियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु  
 लिप्ता असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ जविय० ॥ १ ॥ म  
 दिरागक समान ठे, मोह सुजट महाराण, जवि० ॥ खोने बंदीखान  
 सारखो, आयुर्कर्म प्रमाण ॥ ज०क० ॥ २ ॥ चीतरे सम नाम कहीजे,  
 गोत्र कुंजार समांन, ज० ॥ श्रीघर जंफारी सम दाख्यो, अंतराय  
 कुव्यांन ॥ जवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए ज्ञावना, वीर वदे व्या  
 ख्यान, ज० ॥ कर्म संसार स्वरूप ठे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ ज  
 वि० क० ॥ ४ ॥ निष्ठ सात्तादन मिया रिति, देसदिरिति प्रमत्त,

॥ १० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क० ॥ १॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज संत बंध, ज० ॥ सुदुम. संपराय दशम गणें, विन मोहायु षट खंय ॥ जवि० क० ॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कल्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, यो म युगत व्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद होय ॥ जवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयनी कर्मबंधमें, कर्मतणो निरधार, ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चउत्थजत तप सार, जवि० ॥ त प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण जला, अष्टगंगल वृद्ध थाल, जवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा शोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १२ ॥ कलश ॥ जिन-चंद सूरि मुखेंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु बचने स्तवन कीथो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद फाल्गुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयनी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरबंतणो, नव निधि सिधि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमस्तव वरं विस्थातं,  
 सात गुरु अकर, नव पद आवे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,  
 जाये अस्करे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर दीपार्द्र,  
 सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चखाण, करने  
 तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी बेअ,  
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-  
 सिंद, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत  
 नपुरी यसोज्ञ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति  
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु जणूं ए ॥ ५ ॥  
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥  
 नवकारने परजाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥  
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री  
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज ठामो जी ॥ सेठ सु-  
 जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
 मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम  
 न मूके हणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने  
 कुटंब सद्गुं प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 कितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन वूगो मेहो जी ॥ नदीपूर  
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद  
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जह करे  
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी  
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो  
 अह्यो, बूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी  
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

ज्ञज्ञ नांमे नारि सुहाया ॥ चंरुर्पिगल चोरयो नृप हारा, गणिका  
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूखी  
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे  
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित  
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥  
 ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिखदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥  
 एकदा चोरो करतां जाड्यो, राजा हुकमें सूखी घाड्यो ॥ ४ ॥  
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार  
 दीधो उपगार आणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥  
 चंपानगरीमें जे कीधुं, सुजज्ञ सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार  
 प्रसाद ते जाणो, मनमें एहनी आसति आणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥  
 जस्तनृप ज्ञावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावति पूनिम करी ए, वांजल  
 वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृद्ध उपानी चलावियो ए,  
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ बाढरूया एक चारतो ए,  
 नदिय प्रवाह्यो बाळ, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो  
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी हवे ए, वली कर्या पाप  
 अनेक, न० ॥ ठुटकरबारी एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥  
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती  
 धीकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २  
 अधिकी संपदा ए, मनवंठित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक  
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका  
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुजदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका  
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥२०००॥



गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥  
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा-  
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवहायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए  
 सबसाहूणं ॥ उपवास ५ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥  
 ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसबोसिं ॥  
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंदवइमंगलं ॥ उपवास ५ ॥ एतें नवकार  
 भंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वप्पानवकार अथवा ऊपर  
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका  
 उच्चव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक  
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जत्ताव सवि जिनतणा, पंच कल्याण  
 दिणं जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कचीतणै पक्खि पंचमि दिणै,  
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण  
 सुरजवणथी बारसै, पउमपद जम्म वलि दिक्क तसु तेरसै ॥ वीर  
 सिवमां वसै पक्खि दिव ऊज्जै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार  
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जन्मि  
 थो, सोइ ठहै रे संयमधर सुर पणामियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-  
 यम आदरथौ, इग्यारसि रे उपमप्पद सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ  
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति  
 पिण तिण दिवस पत्ते व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि  
 मह्जिजिणने जम्म दिक्क सुनाणीया, वलि मह्जि दिक्का नाण ठहै  
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा  
 थियै, कइ कोइ रे अवर देतु पिण जावियै ॥ ते परि सक्कि रे गीता-  
 इय सदगुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सददे ॥ सबहै

सहूयै ते प्रमाणजि बलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कढ्याणक  
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पुनिमें संजव दिस्का पांमी दया  
 धरि जगजोवनी, हिव पोस वदि वसमी इग्यारस जनम दिस्का  
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, बलि तेर  
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल अयो के-  
 वली, पोसह सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी बलि थयौ  
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पुनि  
 मै धम्मै वसें ॥ माहाइ ठठे पउम चवियो बारसें शीतल अयो,  
 बलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥  
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें हिव  
 अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कढ्याणकरे ज  
 नम गंण अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मानों बिहू बीजे विमल धरम  
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि  
 या ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी बारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथें  
 सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास  
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम बलि तसु मुगति चंडप्रभु नाणें जुत्तो ॥  
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुब्रय नाण  
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि वंत सिज्जंत तणो चवदस वसु  
 पुज्ज, जम्म दुउं अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि  
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुब्रय वय  
 उडव ॥ ८ ॥ ( ढाल फागनी ) चैत्र पढम परिकि चउथि नाण च  
 वणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥  
 बलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव  
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं  
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण बलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमेना  
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ दिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,  
कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ गढे, श्रीशी-  
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम  
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनंम हुळ श्रीकुंथु  
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध-  
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम-  
तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ-  
णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा-  
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि  
ठह, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति  
सोपत्त, तेरसं चवदसि, संति जम्म सिव वय हुळ ए ॥ धरमनाथ  
सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास  
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥  
ज्ञास ॥ दिवै असाढ वदि चउथि रिसदेस, चवण सत्तमिदि तिरि  
विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय गढे चवण ॥ वीरनी  
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, ठ सय वर साधु  
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदणि सुग-  
ति रमणी वरयो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि दिव तीज सु-  
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविठ अणंतनाह अठमि नमि जा-  
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुळ अह निम्मल बीजै, सुमति  
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ गढे मुनिवर ने-  
मि हुय, अठमि सीथो पास ॥ मुनिसुवय पूनिमरयणि, चविठ गु-  
णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञास्व वदि सत्तमें संति सति चवण जव-  
स्काय, अठमि चविय सुणस नवमि सुदि सुविभ सिवंगय ॥ दिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गङ्ग ॥ हरण अम्मावसी  
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण  
 पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि  
 ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि  
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मने ॥ कळयाण नीते  
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी  
 एह कळयाणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच ज़रते ऐरवत करि एक  
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चव  
 घणा ॥ जिम दूआ ते तिम वलो होस्से पंच कळयाणक सदा, श्री  
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच  
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ अथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप  
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रज्ञात समय सुणें. रुषिमं  
 न्डलमें जो मूल मंत्र हे सो शुज दिन शुज घनी हाथमें फल  
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-  
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप  
 आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हर्मस करै, नहीतो  
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा  
 करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ बेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो  
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष नक्ति  
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुनक्ती करे, साहमीवच्छल करै.  
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा  
 ले ज्ञव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उच्चाहरहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूदा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

कृष्ण चरण अंगूठनो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का  
 उसग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो  
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥  
 कर कंने प्रजु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय  
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजाबले जवजल तर्या, पूजो खंध म  
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसराम ॥ ना  
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल घांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल  
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने द्वेष ॥ हेम दहे वनखंमने, हृदयक  
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देश देसना, कंठ विवर वरतुल,  
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्धकर पद  
 पून्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जाल  
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व  
 सिया तिण कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव  
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुज  
 वीर मुखिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उदा ॥

### ॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें  
 परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,  
 जल विन कुंज न होय ॥ झनिं बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न  
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे  
 गुरुवाणी वेगला, रम्वमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,  
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
 पांच कोमीनें फूलने, पांभ्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व  
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक  
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कय  
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसैं, जयो वर अविन्यासी ॥  
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद  
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-  
तित्थं० नमोर्हं ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री  
तेरम गुण बसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवै हीन ॥ म० ॥ १ ॥  
बादरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध  
मकार्यतें मन वच रोक, निज वीथैं ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥  
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंझीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि  
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ एषां योगथी समवैं एक, होना संख गुणो कर डेक ॥ म० ॥  
समयासंखे जोग निरोष, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥  
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें  
गुणमें गुण समैं देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥  
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल  
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणो करि पूरो जी ॥ ताजै जव  
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ  
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वे प्रांत, तनुर्दिनत जागी ॥ पुब पन्थपसंग  
सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण  
निरागी ॥ चेतनचूषे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल  
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,  
वंदे धरि शुभ्र ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारे महिलां ऊपर मेह झरोखे बीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥  
नत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजे  
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता;  
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाकर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०,  
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे  
नगरऊसें अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुब पयोग असंग स्वज्ञाव  
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहै  
कंदी, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निरालंबन सही, म्हा०  
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-  
क्षथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चारा नाम  
सिखासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें ज्ञाग अलोककुं स्प-  
र्शने, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाण जगहाहा, म्हा०  
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥  
मिलिया एकमें नंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि  
रम्य सिरिहो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म  
नगेहमें, म्हा० घ० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०  
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद शुई ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदससी जी ॥ परमात्मपद पूर-  
ण विलासी अध घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव  
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्धि ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवन्दन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥  
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१॥ रुज्वादिक जि  
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन  
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं  
वंदे हीरधर्म, अघोतर सौ वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेणे, हणयो क्रोध सुजट समं देणे हो, गण  
पति गुणपेखी ॥ ८८ ॥ मान महा गिरिवयेरे, अति शोभनं महाव वयेरे  
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ इंद्ररूप विसवेखी, वर अज्जवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥  
मुंढीवेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन  
नाग मद हीनो, जिण दमसमं जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा  
मल्ल ताळ्यो, पुण वैराग मुगरे पाळ्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गवंद  
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेया,  
सुरवर पिण जिण णिषेया हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृति गुणथी लीणो,  
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी  
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्धि ॥

॥ पंचाचारकुं पाळै उजवाळै दोष रहित गुणधारी जी, गु  
ण उचीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन  
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कृमा सहित जे संज  
म पाळै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥



॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री जवज्जाय राय । सठता धन जंजन । जिन  
वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणबण जं  
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें ।  
जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद  
तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांबलिया अलगा रहोनें ॥ ए देवी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन ज्ञाषै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं  
मुऊ पास क्युं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी  
॥ तो संगै निज पंचेंडोनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी  
खयजवसमसें, ज्ञावेंडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजासे  
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किय क  
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला  
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में जयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥  
उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन  
पीनानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर  
आगम, सूत्रसें ते जवज्जाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकूं, चेतन  
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इर्यारै चवदै पूरब गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र  
अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर  
आगम पूरा नय निहोपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल  
शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनजूत, समदम अजिरामी  
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरघो ए, पंचम पद मुनिराज ॥  
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ माछनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चञ्चलति वसनसें रोस हो,  
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो  
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठहै पूरब कोरु हो  
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो  
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानदीनिद्रा नवै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच  
लानिझामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि  
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो  
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥  
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपर्ये, सा० साधन पर वर जीव हो मु०  
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०  
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद शुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी,  
षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म  
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुद्ध उजवालै जो, रूपकश्रेणि कर कर्म  
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अह परमित संसार ॥ गंढिजेद  
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ दायक वेदक शशि असं  
ख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव  
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिराम ॥  
दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहतिर करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ जणयो री ॥ धर्म जिने  
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितयो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज ससम  
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥  
मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंद लहेरी ॥ उपशम कार्यक वेद, ई  
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताधि क  
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद  
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें  
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद युई ॥

॥ जिनपसुत्तत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,  
जेइ वेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्या-  
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणवर अरिहंत मूरा जी, ए दर्शनपद  
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि  
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि  
उद्दि होय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के  
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ ससम  
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उज्जरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया  
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन  
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जकाजक कुपंथा सुपंथा, पे-  
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें  
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मति होय ठै इंडी तारु,

तेषां परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उही मण केवल हे वारू, जीव  
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्त वलें जग जाणें,  
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायै,  
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम  
कयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि  
जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद युई ॥

मति श्रुति-इंडी जन्मिंत कहियै लहियै गुण गंजरीरो जी,  
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म  
नपर्यव-केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो  
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति युई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र  
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंताराय, करि  
कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इख-  
कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरितकुं हीर  
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्संग ॥ सुग्यानी  
साज्जलो ॥ टेरे ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०  
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो  
गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्यासा लघु जो  
गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते दौते  
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सइकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥  
सु० ॥ प्राप्ता घन प्रकारता, सप्त धृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडे  
घन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद शुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे  
जावना सूधी ज्ञावै सागर पार कतारै जी ॥ खट खंर राजकूं दूर  
तजीनें चक्रा संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम  
गुण दितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तजव सिव जाण ॥ बिहि अं  
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स  
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दृघन कर्म  
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसैं  
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे  
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा  
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्तारे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स  
मता सहितें जिनतें ज्ञारी, जली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे  
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसैं कर्म कचौरा, दहे तप पावकका जोरा  
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे शद्धि, देव नरनी  
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप  
ज्ञानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहियें  
वारू, लब्धा सगली जगदितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुकर फुन  
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा  
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक  
आहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं ज्ञासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

( ४३५ )

॥ अयं तप पदं शुद्धं ॥

इन्द्रारोयन तप ते ज्ञास्यो आगम तेहनो साखी जी, इन्द्र  
ज्ञावस्ते द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण  
परशित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लवधि संकलनो कारण  
देखी ईश्वर ते मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अयं श्रुतिविरचित जिन स्तुति ॥

श्रीमद्भुषण सर्वज्ञ, वृषज्जांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवादा,  
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न  
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाद्याः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज  
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांगन शालिना ॥ जितसत्रु  
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगव-  
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोधेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥  
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनुपतेर्वर्यात्, संजवः संजवान्जियः ॥  
सेनाया नंदनो हेम, वल्लो गंधर्व लांगनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,  
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ सुनिनां धूंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥  
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्व, वीतरागं जग-  
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, ह्रवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन  
नामानं, विशुद्ध हृदयं तदा ॥ वस्तौति परया ज्ञक्या, सनालोकेजि  
नंधते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेवाजिय धरि त्रोट, तन  
यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जूष्म, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं  
सुनतिनाधेश ॥ सुमतिं तनु सचमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग  
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुनति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र  
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपेज्जुनः, पद्म लक्षण  
धारकः ॥ ११ ॥ जवान्यौ जव संकीर्णो, दुस्तरे पततां नृणां ॥  
ज्ञाणाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वोत्तिष्ठोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥  
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रीमीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र  
 इव गंजीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्धः परमब्रह्मा, रतं  
 नौमि सदा विजृम् ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र  
 ज्ञोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह विं  
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा  
 पुत्रमां स्वामि, ज्ञव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञ स्तुति ॥  
 ( अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तुतोबोदवत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः  
 ॥ सुविधिर्वाग्वितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा  
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलाग्निः  
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविर्मा ) ॥ श्री  
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्सांहां  
 कधारक ॥ १९ ॥ स्वदीयचरणांज्जो, सेवकानांविपुर्जृतां ॥ प्राक्क  
 तंरुंजनव्यूहं ॥ उष्टंशंज्जोयदेविज्जो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु  
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोदिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज  
 स्त्रं, खड्गलाग्निजृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्ध, श्रेयांसश्रे  
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां  
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीहा, ज्ञवतांश्चदि ॥ ऊटितिष्ठे  
 दितुंचित्ते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमकरं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्वमेनंहि, वासु  
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ  
 ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्भिमलनार्येण, कृतवर्मसमुन्नवः  
 ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंड्वदिमलज्ञान,  
 त्वदायस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६  
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंह  
 सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्णानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ ईशद

योपियस्यांतं, गुणानांलेजिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, ह्रमोवक्तुं  
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंतं स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,  
 आनुवंशार्कसन्निजः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाम्नाजिनेश्वरः ॥ २९ ॥  
 तबागोपिपुराहारी, नृतलेषारयशोकतां ॥ अनुचरफलाः संति, सती  
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी  
 सं, नन्दनमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंतुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥  
 ॥ ३१ ॥ संश्रीमन्नांतिनाम्नानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राच्यांसुमनसां  
 वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शान्तिनाथ स्तुतिः ॥ श्री  
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करदिरण्यज ॥ सूरिज्ञूपतिसंजात, जगल  
 कणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थकरजगत्पते ॥ मदीयं  
 पापसंदोहं, ज्ञवांतरकृतघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः  
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तकसंयुतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवोपुत्रसु  
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यायुगाः सर्वे, धुर्यप्रज्ञुतयाजिनं ॥ चरी  
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १७  
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकनृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त,  
 नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रप्रययुतोज्ञाति, देवयोविष्टपत्रये  
 ॥ तस्यश्रीमद्विनाथस्य, स्मरलेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना  
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल  
 कणनृकुर्म, दाचकस्यामलव्ये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक  
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वमेव्ययीज्ञावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ  
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ ३० ॥ श्रीमद्विजयज्ञूपाय, कुलोत्तंसद्विर  
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते  
 पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वरं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र  
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव  
 र्थं, समुद्विजयोन्नवे ॥ हरिवंसहरौशंजौ, शंखाकिकमलप्रज्ञे ॥ ४३



॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र  
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना  
क्षत्रूपात्र, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान  
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास  
नचिन्दाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥  
श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्मणौ ॥ महानादध्वजाहृत, क  
व्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थरुद्धीर, मोहेज्जहनेनमृगात् ॥  
त्वन्नक्तिदत्तधिताय, कमलादेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः  
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकव्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजाके उलीके देववंदनमें कहल्लोका चैत्यवंदन प  
हली लिखा हे ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी तम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥  
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥  
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी  
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उज्जासी  
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल कय करी, यथा सिद्ध  
सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावधी, जे आगम  
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उन्नीसे सोजता, सुंदर  
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अविकारी  
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध  
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोषे पद पाठक नमो, संवेग  
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,  
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं  
दरुजानी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उल्लेखै,  
श्रुत श्रद्धा आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ बडे गुण दरसल नमो, आ-

तम शुद्ध ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ४ ॥ ग्यान नमो गुण  
 सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक  
 दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चा  
 रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्वादिक  
 दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे  
 वलि तपपद नमो, बाह्यान्त्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या  
 काल अनंतना, जे कर्म उन्नेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए  
 नवपद बहुमानशी, ध्यावै शुद्ध ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप  
 श्रीपालतणी परै, मन बंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥  
 आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥  
 नव तंली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥  
 ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ०  
 व० ॥ श्रीजिनलान कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
 अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध  
 अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥  
 धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण  
 धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दा  
 यक सुविदास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोजता जी,  
 साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥  
 ज० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण बै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥  
 ए नवपदना ध्यानशी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥  
 अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु  
 जव कारणे जी, नितप्रति नमत कळयाण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, ज्ञविका न० ॥ मन वच काया कर  
एकेंते, विक्रमा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणै  
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं  
मार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंमलमाळा, संपति  
सदज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरुबीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाथ रे, जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो  
अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ कर्म  
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इ  
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद आय रे ॥ जी० ॥ इय  
जिन ज्ञे आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहं  
सिद्ध उर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व  
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दर्शन ज्ञान  
चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज  
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार  
जगतमे, उर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज ज्ञाव, दिव कारज सि  
द्धिनो लाघो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुलाय,  
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज आय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न  
मिथै सिद्ध सूरि उवजाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुदाय ॥

दुग विधि चारिन्हें बुध विध तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि  
 रुषम शिवसुख आव ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री  
 गुरु उपदेशों सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा  
 र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंगम ॥ ३ ॥ जिनधरम अ  
 नुरागी चक्रेसरि सुखकार, सेवकर्ते आपे सुख संपति परिवार ॥  
 हिव निहि उदध करि चारित्रनंदी मम जाय, जिनचंद सूरिसर  
 खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू  
 करे, कज्जी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वही होय तो ८ सें  
 सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध  
 करके मांरणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टेपर सिद्धचक्र थापके त्रि  
 काय पूजा करै. प्रजातसमें राईपन्निकमणा करके पीठे वस्त्रोंकी  
 पन्निदेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे  
 शक्रस्तवे देव बांटे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव  
 चैत्यवंदन करै, वासुदेव पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.  
 गुरु पास आयके अश्रुछिन्नमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प  
 चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग दे इस वास्ते चावलोंसें  
 उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु  
 णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इडा  
 मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ जामंरुख प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ डुंडुजि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ उन्नत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नबूसलियेणं कहिके १२ लो-  
गस्तका कानसग्न करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक  
जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंबिल करै, पदले वखत  
जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे श  
क्रस्तवे देव वांढै, गुणनो ( १००० ) ॥ नुँ ह्रीं एमो अरिहंताणं ॥  
इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे, पूरा पहर दिन रइशेसैं तीसरी  
वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांढे, पीठे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार  
पञ्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति  
क्रमण करै, आरती के वखत दोप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पद-  
ले आरती वगेरे करके पीठै पम्किमणा करै, ( सोणे के वखत )  
पदले इरियावही परकमके चैत्यवंदन करै, फेर राइ संघारा गाथा  
सुणें ॥ मिडा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी  
पदले मुजब करके सिद्धपदका लाख रंग हे इत वास्ते गेहूंकी रो;

( ४३३ )

टीसैं आबिल करै ॥ नैं हँही एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हज़ार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण हे. ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नद्वसति ८ कहेके आठ लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रज्ञात कर्तव्य करै. आचार्यपद पीले बर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ नैं हँही एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हज़ार जाप करै. आचार्यके ३६ गुण हे. उत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गांजीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ८ अपरिभ्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १९ द्वादश विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इति षट्त्रिंशत् आ०

॥ यह ठत्तीस नमस्कार करके अन्नहूससि० कहेके ठत्तीस  
३६ लोगस्सका काउसग्न करे, प्रगट लोगस्स कहे, पूर्वोक्त करणी  
क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं णमो नवज्ञायार्णं ॥ इस पदका २, हजार जाप  
करै. हरेमंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके  
नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २६ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगर्भागसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीगणेशसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगरुदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥



१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥

१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०

२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२४ क्रियाविस्तारपूर्व पठनगुण यु० ॥

२५ लोकविडुत्तार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खमा हो के अन्नबूँ कहके २५ लोगस्तका काजसग करै, प्रगट लोगस्त कहके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

जै हँही एमो लोए सब साहूषां ॥ इस पदका २ हजार गुण-  
ना करै, साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते जुमद के बाकलोसैं आं-  
बिल करै, सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ६ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ६ रात्रिज्जोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ७ पृथ्वीकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ८ अप्पकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ९ तेजकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १० वाङ्मकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ११ वनस्पतिकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १२ त्रसकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १३ ऐकेंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १४ बेइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १५ तेइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १६ चोइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १७ पंचेंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १८ लोन्न निग्रहकाय श्रीसा० ॥  
 १९ कृमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २० शुन्नजावना जावकाय श्रीसा० ॥  
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥  
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥  
 २७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥  
 इत वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका काउसग करे,  
 प्रगट लोगस्स कहिके पारे. पीढै पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसें १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ जै ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके समस्त गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सबसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सह० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सह० ॥

( ४३९ )

- ५० संसारे जिनमत स्थित साध्यादि सारमिति चिं० ॥  
२१ शंकादूषण रहिताय सह० ॥  
२२ कांक्षादूषण रहिताय सह० ॥  
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सह० ॥  
२४ कुदृष्टिप्रशंसदूषण रहिताय सह० ॥  
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सह० ॥  
२६ प्रवचनप्रज्ञावरूप सह० ॥  
२७ धर्मकथाप्रज्ञावरूप सह० ॥  
२८ वादीप्रज्ञावरूप सह० ॥  
२९ नैमित्तिकप्रज्ञावरूप सह० ॥  
३० तपस्वीप्रज्ञावरूप सह० ॥  
३१ प्रज्ञायादिक विद्याभूतप्रज्ञावरूप सह० ॥  
३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावरूप सह० ॥  
३३ कविप्रज्ञावरूप सह० ॥  
३४ जिनसासने कौसल्यता जूषण सह० ॥  
३५ प्रज्ञावनाजूषणरूप सह० ॥  
३६ तीर्थसेवाजूषणरूप सह० ॥  
३७ स्थैर्यताजूषणरूप सह० ॥  
३८ जिनसासने भक्तिजूषणरूप सह० ॥  
३९ उपशम गुणरूप सह० ॥  
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥  
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥  
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥  
४३ आस्तिका गुणरूप सह० ॥  
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सह० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सह० ॥  
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सह० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥  
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
 ५० राजाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५१ गणाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५२ बलाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५३ सुराज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५४ कांतरवृत्त्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्धारमिति चिंतन श्रीसह० ॥  
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ६० चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसह० ॥  
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥  
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
 ६५ सचजीव कृतककर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०  
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥  
 ॥ इस वजे समस्त नमस्कार कर खरा दोके अन्नबूँ कदके

६७ लौगस्तका काउसंग करै, एक लौगस्त प्रगट कहके पारै, पीठै  
पूर्वोक्त करणी करै, इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्त दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै,  
ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण, तंडुलका आबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद  
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ६१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
- २१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
- २२ मनैनापाय मति० ॥
- २३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
- २४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
- २५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
- २६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
- २७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
- २८ मनोधारणा मति० ॥
- २९ अकर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
- ३० अनकर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
- ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
- ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
- ३३ सम्यक् श्रुत० ॥
- ३४ मिथ्या श्रुत० ॥
- ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
- ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
- ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
- ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
- ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
- ४० अगमिक श्रुत० ॥
- ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
- ४२ अन्नंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
- ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
- ४४ अणूगामि अवधि० ॥

४५ वद्धमान अवधि० ॥

४६ दीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० झा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खमा होके अन्नदू० कहके एका वन लोगस्तका काजसग करै, एक लोगस्त अगट कहके पारे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अब अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्रस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै. चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तंडुलका आंवित्र करै, सत्तर भेद चारित्रपदके चित्तके नमस्कार करै.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राथ नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ भैशुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्लमाथर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडताथर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तथर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥



- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ ब्रजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रखीरकासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरकासंयम चारि०
- १८ तेज्जरकासंयम चा० ॥
- १९ वाक्तरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेङ्दीरकासंयम चारि०
- २२ तेङ्दीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौङ्दीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेंदीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ भेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्जादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेशावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेशावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेशावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४२ गणवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि० ॥  
 ४७ कुमयंतरसहित स्त्रीहावज्राव सुणन वर्जन व्र०  
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०  
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५१ अंगविज्ञूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५२ अणसण तपोरूप चा०  
 ५३ नणोदरी तपोरूप चा० ॥  
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥  
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥  
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥  
 ५७ संखेखणा तपोरूप चा० ॥  
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥  
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥  
 ६० वेपावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिञ्जाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्याम तपोरूप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरूप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसिद्धचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खमा दो के अन्नबूससि०  
७० लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त क  
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ उँ ह्रीं एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणाना करै,  
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, पचास  
जेद तपपदके चित्तवं के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपजेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यज्जपोदरी तपजेद तपसे नमः ॥

४ अर्ज्यंतरज्जपोदरी तपजेद त० ॥

५ इव्यतपवृत्ती संखेप तपजेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

- १० कायकिलेस तपजेद तप० ॥  
 १० रसत्याग तपजेद तप० ॥  
 ११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥  
 १२ स्त्री पशु पंढकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥  
 १३ आलोयण प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १४ पम्क्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥  
 १६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥  
 १८ तप प्रायश्चित्त त० ॥  
 १९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥  
 २० मूल प्रायश्चित्त त० ॥  
 २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥  
 २२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥  
 २३ ग्यान विनयरूप तप० ॥  
 २४ दर्शन विनयरूप तप० ॥  
 २५ चारित्र विनयरूप त० ॥  
 २६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥  
 २७ वचन विनयरूप त० ॥  
 २८ काय विनयरूप त० ॥  
 २९ उपचारक विनयरूप तप० ॥  
 ३० आचार्य वेयावञ्च त० ॥  
 ३१ उपाध्याय वेयावञ्च त० ॥  
 ३२ सायू वेयावञ्च त० ॥  
 ३३ तपस्वी वेयावञ्च त० ॥

- ३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥  
 ३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥  
 ३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥  
 ३७ संघ वेयावच्च तप० ॥  
 ३८ कुल वेयावच्च त० ॥  
 ३९ गण वेयावच्च तप० ॥  
 ४० वायणा तपसेनमः ॥  
 ४१ पृच्छना तपसे नमः ॥  
 ४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥  
 ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥  
 ४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥  
 ४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥  
 ४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥  
 ४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥  
 ४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥  
 ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥  
 ५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपवृद्ध ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै, खना होके अन्नबूत्तसि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्न करै, एक लोगस्स प्रगट कहै, पीवै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करनेको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ्र धनी देखके अन्ना वस्त्र आभूषण पहरेके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अकृत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता ज्ञया गुरुके पास जावै, दादशावर्च वंदना करके ग्यानपूजा करै

पौठे प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणैकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणैकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उंलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसँ सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद३ के रंग भुजव गुण प्रमाणसँ रत्न चढावे ऊँर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपरो३ रंग भुजव धीतुरेसे जरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलबमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे बलबमें ४८ ठूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्कान्न रंगरंगे चढावै, इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरातरमें करै. ऊँर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ए ॥ ३ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसँ सब विधि गुरुके हाथसँ करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि त्र बजावै, महा महोन्नव उदार चित्तसँ करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै, दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उंलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञातिके कारण ए पूठा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव३ चीज बणावावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकुं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुद्धदेवमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ४ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण ऐसा हे—बारे महीनोंमें तीन अष्टादश महोद्भव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अष्टाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोंमें व्याहंनिकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते जये अष्ट ड्यसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे२ जन्मकुं स फल मानते जये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अष्टाई आसाठ चोमासेकी (१४) पीठै (४२) दिन जाणेसें संवत्सरी पर्व साचवणेकुं (८) दिन तक अष्टादश महोद्भव करै. लेकिन यह अष्टादश सास्वती नही कही, कोइ वखत व्याहंनिकायके देवता ए कठे होकर नहीज्नी जावै, पहली पीठैज्नी करलेवै ॥ यह नवपदजी की उली शाश्वती अष्टादशमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके जयजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्बाहूस्वामीनें इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोंको यह तप प्रमाण हे, उर जो अज्जी अपणी अपणी कुर्युक्तिये लगाकर खंनन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें जमेगे. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम बीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं उर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकुं तोरुके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुतंगणहररइयं, तदेवपत्तेयबुद्धर इधंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अज्जिन्नदसपूविणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ.) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकुं जगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक





जिनेश्वरके नामके चिठी उत्तर पर बरक चढ़ा सुपारी चढ़ावे.  
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाज्ञेयजिनेश्वरं, नंदायत  
 सितान्शुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितान्शुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीं अर्हं ऐं श्रीरुषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहा ॥ १ ॥  
 उपाध्वमजितं ज्ञत्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्घोधितं ज्ञानं, कंद  
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी ॥ २ ॥  
 श्रीशंभुवप्रपन्नाये, समर्थतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनान्मुक्ति, समर्थ  
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभुवस्वामी ॥ ३ ॥  
 येज्जिनंदनतेतीर्थं, राजपादसत्ताजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा  
 दसत्ताजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजि० ॥ ४ ॥ पूजि  
 तां ह्रीं दयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनादः, कांतारा  
 जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ  
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांतिपूयेव, जूरिशोभात  
 पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रज्ञ ॥ ६ ॥ सुपार्थ  
 तत्श्रुतं श्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवः शान्ता, दर्पकोप  
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्थ ॥ ७ ॥ जवांश्चंद्र  
 प्रज्ञेदेण, यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र ॥ ८ ॥ सुविधेस्त्वन्निधिप्राप्य, प्रमाद्यंत  
 समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ  
 ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न  
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्जन्नेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अर्हं ऐं श्रीशीत ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूज्जाजां, परमोक्षगतिर्जवा  
 न् ॥ अनंतानसत्त्वविश्रान्तं, परमोक्षगतिर्जवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अर्हं ऐं श्रीश्रेयांस ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णं, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर  
 स्त्वंदिरहं मोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि  
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं  
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र  
 शीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं अनं  
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि  
 नक्ष्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥  
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनादेहि, सारंगविदधेष्टुतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,  
 सारंगविदधेष्टुतिं ॥ १६ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥  
 कुंभुनाशस्तुपंथानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि  
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंभु० ॥ १७ ॥  
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽग्रनाथकुधीर्जग्या, व  
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री अर० ॥ १८ ॥ नां  
 ह्रिपद्मसुतःसिद्धि, पतिपद्मसुदारुणः ॥ येनतेज्जिद्यतेमल्ले, प्रतिपद्म  
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥  
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मकमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद, मक  
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥  
 देव्योपित्वहुषोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जत्त्या,  
 सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥  
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-  
 भेजनताराध्य, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाहारतरंगिताः ॥  
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥ २३ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री  
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि  
 भ्रन्नमेषुनिस्तीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ नै ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठत स्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस मादाराजकी पूजा करावै, पीठै बलबाकुल दैके दिग्पालों को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व ५ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसें समजके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसेही रुद्रिबंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोत्सव पूजन करणा चाहिये, इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पूंजसें तैलजयपर्वतकों स्थापन करै ( तिस पर ) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर ( वा ) श्रीरुषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै, अकृत मोतियोंसें पर्वतको बधावै, केसरचंदनसें पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श॥चन्द्रबद्धअठम, दसमदुवाखस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके श्रुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ स्वप्ता होके ( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस ५ जघन्ये नारेल १ सुपारी १० ठर फल

फूल यथासंज्ञ चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वाँदै, १० ख  
 मासमण देके ( श्रीसिद्धकेश पुंरुरीक गणधराय नमः ) इस पदका  
 १० वेर नमस्कार करै, पीठै ( श्रीसिद्धजय पुंरुरीक आराधनार्थ करै  
 मि काउसगं अन्नबूससि० ) कहके १० लोगस्तका काउसग करे  
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उन्नव होय वखत कम रहे तब  
 एक लोगस्तका काउसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाकां  
 स्तवन कहे ) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम  
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।  
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाही विशेष हे ) दूसरी  
 पूजामें १० के ठिकाणे ३० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
 की जगे ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की  
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
 केश श्रीपुंरुरीकाय नमः ) इस पदका दो हजार गुणानो करै, उ-  
 त्कृष्टें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये  
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरुके मुखसे लेके जघन्य १ वर  
 स, ज्यादा हो सके तो ४ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
 तपस्या करै, गुरुके मुखसे उपदेस सुनै, संपूर्ण तप हुआं पीठै  
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, सा-  
 दमीवन्न करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी  
 के प्रथम गणधर श्रीपुंरुरीकजी पांच कोसी साधू साथ अह्म्य  
 सुखको प्राप्तजये, ( इसवास्ते ) जरत प्रथम चक्रवर्तीनें चैत्री  
 पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि  
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसें इस जन्ममें अनेक सुख  
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, नर

( ४९६ )

आधिव्याधि सौग संताप सब दूर होय, परजन्ममें देवादिक कष्टि प्राप्त होय, क्रीणकर्मों होखेसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणामी रे जिनवरना सुपसाजलै, पुंरगिरि रे गार्हस हूं सुज जाजलै ॥ मति सुरगिरि रे सहस जीज जो मुख दुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण ठै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना डुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरें चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंररीक गुणगण निजो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उल्लाखो ) गुण जलौ अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरो, पुंररीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोमि साथे दिमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंररीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सैत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावै तेण दिवसै पंचकोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरती सरदही ॥ चंडय ठै रे अठम दसम डवाखसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन बसै ॥ ( उल्लाखो ) मन बसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले बली, सामन्न

धूपै परकनौ फल जे करे मननी रखी ॥ हिंव पूजनी विधि जैम  
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंणी सुणो जवि  
 यण सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु  
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी  
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल  
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ ॥  
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
 कृष्णा थई नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला  
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उरकेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
 शंकरस्तव पांचे देव बाँदै, जघन्यना वंदण पाप बैदे ॥ दसे नमस्का  
 रं करंत जैती, राखी करी वृष्टि जिनेइ सैती ॥ ९ ॥ आराधिया  
 काजे काडसग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगसगज्जोय दसे  
 चखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणु ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज  
 एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,  
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
 जै, एकेरु पूवै अथवा गिणीजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्वा  
 प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
 योगै संघपूजा आदरो, साहंमोवञ्जल करो जविका जवतसुइ ला  
 लावरो ॥ संपदा सोदग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, ओअमर  
 माणिक सीस सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यतै ॥

स्तवन पहली वने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाया. अथ शुज  
 धनी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपत्रदण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारु  
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस्य ( ५२ ) वावन उपवास

करै, जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, जो लिखते हैं ॥ १ श्रीरूपज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) चार नामकूं ४ बेर जलटा, ४ बेर सुलटा गियो ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणसें एक ठली होय, ४ ठली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावे, इत्यादि महोन्नवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीबल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे २ पदामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे, इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरबेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इ व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके मर्हानेमें मित्ती वेसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे, इस दिन श्रीरूपज्ञदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे वारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्यांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साहीवारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुजी वाजित्र ५, ऐसे पांच इय प्रगट किये, श्रेश्यांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

( ४५९ )

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालूम आई. इस दानके प्रज्ञावर्से श्रेश्ठांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आशेसे वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पोछे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगल कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस मासक इस पर्वको जो ज्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणेसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कज्जी श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्रतुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) जो जव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं



मंरुलानि अलंकाररूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो यह सामायकको आद लेके जो धर्मरुत दे सो चोमासेके मंरुण दे, अर्थात् अलंकार समान दे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पस्त्रिमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसे वण, आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसे धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससे सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरोंमें दर्शन करणेको जाणा, पांच शक्रस्तवसे देववादै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका लोगन लेवै, सांजकूं चोमासी पस्त्रिमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कौंजी सेवन् करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ ज्ञव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे १ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे २ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस, देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ २ तरेकी तपस्याये करती है. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ ठुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमठ १, एकासण १, नीवी १, आंविख १, उपवास १, ( यह १ ठुली ) इस तरे पांच ठुली करै. तपोदिन २५. ऊजमणें २५ लाडू चढावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंविख १, उपवास १, इस तरे

उंली ब्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ ३ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उंली ३ करै. तपोदिन ९. ऊजमणें ९ लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलगा उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें झा नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें मौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अधमः १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलगायो १, दति, १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उंली. इसी तरे उंली आठ करै. तपोदिन ८८, ऊजमणें रूपेका वृह, सोनेका कुहाना करायके ग्यान, खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूखतपः ॥ ७ ॥

जाइवा वदि चउथरें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास, या अथवा विआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकारें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्तरिके दिन कलस ऊपर नारेख रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक, रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी, सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरु के पास स्तवन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखेगें ) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसैं, ज्ञानजकि गुरुजकि करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपदके पांचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पांच

( ४६९ )

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः ॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारण्ये आंबिल ८, एवं दिन १६, ऊजमण्ये ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०, ऊजमण्ये सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-  
जाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पद्मिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उप-  
वास करे, जो तिथि जूले सो तिथि उर करै, ऊजमण्ये एकसो बीस  
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपत्तितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टा-  
लके गोटो पांचमतप सख करै, अंधारी उजवाली पांचम मास ५  
लग एकासणादि तप करै, ऊजमण्ये ज्ञानपूजा करै ॥ इति गोटो  
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास  
के दिन देव वांढणादिक क्रिया करै, ऊजमण्ये पुस्तकादिक ज्ञानोप-  
गरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा  
करावै, साहमी वञ्चल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पद्मिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-  
णादि तप करै, अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस  
तरै वरस १ तप करै, ऊजमण्ये चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा  
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण  
वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंने लोकनाथ वंशके साते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धेत्र ( उसको ) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १७ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इस तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चोवीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १८ ॥

सुदि पङ्के ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्मि देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपङ्क अथवा सुदपङ्क के दशम के दिन इस उपवास अथवा बीस एकासना करै. ऊजमणें अखंमिति धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितिदशमीतपः ॥ २१ ॥

चदिपङ्क अथवा सुदिपङ्कमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशना, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अंशकी पूजा करै ॥ इति श्रीङ्ग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपङ्कके १४ के दिन एकासनादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) दापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लक्ष्मसे पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुको बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो  
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगनेमें जीत होय॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥  
उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १, उपवास  
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पस्त्रिजानै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दक्षिणहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, वेइंद्रिये ठठ १, तेंद्रिये अष्टम १,  
चौरिंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कायें चतुर्दसम १, तप करै.  
ऊजमणें मुखमीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठक्कायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अष्टम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्त्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणोकीं आवक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उद्घा  
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
साहमीबल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुंजकेत्रोमें अपणा धन

स्वरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावसे इस ज  
वमें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा  
होय, परजयमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय, ( किंबहुना ) इति वृट्  
कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञाड्व महिनेमें मिति ज्ञाड्वा सुद ४ तथा केइ मतकी  
अपेक्षासे ५ तिथिओं संवत्तरी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस  
संवत्तरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जेसे जगत्रमें अनेक मंत्र हे  
पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रंजय समान कोइ  
तीर्थ नही २, पांचदानमें अजयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही  
३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष  
नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा  
जल ९, अलंकारमांहे चूनाभूषण १०, ज्योतिषोंमें चंद्रमा ११, ते  
जवंतमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तु  
रंगमें पंचबल्लजकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे  
नंदन १७, काष्ठमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९,  
न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२,  
शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५,  
बाजित्रमें जंजा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दात  
रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें  
अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एकश् चीज  
उत्तम होतो है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री  
संवत्तरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्यूपण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर  
स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूपणपर्वके आणसे प्रथ  
म श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तेलका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें जगवंत  
 की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघमें खमावै ५, यह पांच कारण  
 के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोनें पर्युषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब  
 शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकुं आठ दिन अठाइ महो  
 ञव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी  
 जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकुं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रोजागर  
 ण करावै, प्रज्ञातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकुं निमंत्रण कर यथा  
 योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछे पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र  
 आजूपण पहरेके मुगट उत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्र  
 दाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं  
 गलीकरचित आलमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें आल धरके दोनुं  
 तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आजूपण पहरेके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वा  
 जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन  
 करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पिण  
 खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रक्के, श्रीसं  
 घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जने अमारिपदह  
 वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जमजूजा इत्या  
 दिक सबका आरंज ठोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी  
 नाखेरादिक की प्रज्ञावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें  
 पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे हो  
 कर सर्व मंदिर दरसन करणको जावै ५, सचिन्ता परिहार करै  
 ६, ब्रह्मचर्य पावे ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने  
 वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका उठव करै ९, अठपहरी पोसा  
 करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसह्य होके सर्व श्रीसंघ  
 सें खमावै १२, पारणके दिन पोसह पम्कपणवाले साधर्मिजाइ

घोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी, चञ्चल करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे, आराधन करखेसे आठ जवसे मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है ( उर ) केइवक जवज्जीव अत्यंत शुभ जाब धरतेजये अदमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते है उर सुणनेवाले प्रमाद निझ वि, कथा ठोरुके अदमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धजाव रखके इक वीस बेर सुणते है, सो जव देवयतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि, द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो जव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीक है, अपणी लक्ष्मीसे, धर्मका उद्योत करते है, उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है उर नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नबमेंपूर्वसे उद्धरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा, अध्वयम है. सर्व श्रीसंवके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है. जेसे सर्व नदीके बालू के कश होय उससे जी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीन करके कहे तोजी महात्मका एक अंस जी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाणओ जव्यजीव शुद्ध जावसे सेवन करेंगे सो अनेक तर से रुद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. उर परजवमें देवादिक रुद्धि पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ४ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की उली तथा अष्टापदजीकी उली विधिसंयुक्त करै, सो सब विधि पहली लिखी है उसी माफक करै ॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिती कार्तिक वदि अमावस है सो दी-



पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कबसें ज्ञायां सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमासी मध्यमपांवापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व वात ज्यज्जीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्लशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देखके निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणको प्रतिबोध देणेकूं जेजा. पि गानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंन देसना देते जये बहुततर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि ठली दो घनी रात रह्योसें सिद्धिस्थानको प्राप्त जये. जिस समय जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आपो जाणोसें वना उद्योत जया, उर जो राजा पोषधमें बैठे जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इव्य-उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपने ज्ञाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें ज्ञाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणै । गोतमरास सुणै. इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकारों दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व ज्ञव्यजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होषेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूठा विटांगणादि चढ़ावै. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसाभंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूर्वि ॥ ज्ञत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुष्पं पसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तद्देवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरसंएहिं ॥ पूंयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्तत्ताज्जायन्नवस्त्रयाय ॥ २ ॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठै जावपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के. इरियावही पण्डितमें. लोगस्त कहे. बेठके. मुंहपत्ती पण्डितेहे. अणूजाणह मेमिउगहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीठै पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञान

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ सं-  
 यमतप आनन्दकंद अन्नाण निवारण, सार विकार द्रव्यर साध तापि-  
 त जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म क्षणति पन्निबोहण,  
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर  
 मिथ्यात्व पलासण, आत्मशक्ति अनंत शुद्ध प्रचुता परगासण ॥  
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विशुद्ध नाण मणपङ्कव केवल, जेद प-  
 चास द्वायोपसमिक एक द्वाधिक निरमल ॥ दोष परोक्ष प्रथम तिहां  
 डग परतद्ध दीसत, सकल प्रतद्ध प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर-  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर  
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पन्नि-  
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-  
 गी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यासो अग-  
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत  
 अबधै, देवचंद्र आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोदा  
 मणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा-  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो  
 त्थुणं० जावंतिचेइयाई० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हेत् सिद्धा० । कह-  
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी-  
 यराय० कहै, वंशव० अन्नहू० कहके एक नवकारका कान्तसग-  
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरुवि-  
 याणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं-  
 चमोए, पूयातवोगुणरायाणजियाणदितु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके  
 ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि कान्तसगं ) तस्सुत्तरी० अन्नहू०  
 कहके । लोगस्सका कान्तसग करै, ( पारके ) बोधागाधं० ( इत्या-

दिगाथापढ़के) पीठै ॥ अज्ञसिबोहियनाणें । सुयनाणंचेवडहिनां  
 णंच ॥ तहैमणपञ्जवेनाणें । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कहके । इन्नामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 सभस्त लोकालोकज्ञास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५, इस तरै पाँच  
 नमस्कार करै, थिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो पूवें नवपदजीके गुणनेमें लिखवा है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठै ( छैं हूँ एमोनाणस्त ) इस पदका २००० गुणना करै, कम  
 थिरता होय तो इग्वारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणै, सो लिखते हे ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीवानी ॥ पहिलो अंग सुद्धामणो रे, अनुपम आ  
 चारांग रे ॥ सुगणनर ॥ वीर जिनंदे ज्ञाबियो रे लाल, उववाई जात  
 जवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाडं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आवरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 ब० ॥ १ ॥ सुयखंड बोध ठै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिज्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अद्वार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 चने वेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेहमां रे, बलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परिचो ठै इहां  
 रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबड निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम नखसे  
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ निधिपूर्वक तुमे सां  
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिझांत  
 महिमानिलो रे, उतारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाख, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारंग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाख रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंतीतणो, मत खंढ्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र गंजरीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, हीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखं व दोय ठे, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो० ॥ उहेसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मी० ४ ॥ नव निक्षेप प्रमाण जरया, पद ठचीस हजार ॥ मो० ॥ संख्याता अकर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कदा, जिन पणत्ता रे जाव ॥ मो० ॥ ज्ञाणी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ८ ॥ ८ ॥ इति सूयगमांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ घाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाख ॥ आठ ठके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ त्रीजो अंग जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीगणांग ॥ मोरो मन भगन थयो ॥ हारे देखी २ जाव, हारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सबल जगत करी गजंतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुऊ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २  
 ॥ कूट शैल सिखरी शिखा रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥  
 गहर आगर डह नदी रे जि०, जेहमेंअठे रे उदंरु ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त  
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि  
 लोक निजुत्तपुं रे जि०, संगइणी पमिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-  
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुयतां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय  
 खंघ इक राजनोरे जि०, दश अध्ययन उशर ॥ मो० ॥ उद्देशादिक  
 वीस ठै रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा  
 सन तणो रे जि०, सुणो सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै  
 ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिज्ञाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजबी ॥ एचाला ॥  
 चोथो समवायांगसुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा  
 उपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागघो ज्ञावा  
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-  
 मल व्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव  
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहयो ज्ञाव विरोध कांइ नथो,  
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल  
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥  
 एकग्रकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र  
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत  
 णो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठै एहना  
 सही, हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुयखंघ अध्ययन उद्देशादिके जला, हो  
 लाल उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाख सहस तेउत्तरा, हो० स०, पदनें अग्रउदय सं-  
ख्याता अकरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा,  
हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥  
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर  
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं  
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०  
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर  
शिर सुरगंग तज्जी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-  
अग्रतणो जुगते वनो, हो० त०, साकर सेलमी डाख अकी पिण  
मीठनो, हो० थ० ॥ स्थुं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो०  
वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंधोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन  
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकड्या रे, मानुं पर  
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगमी रे, जेहनी  
बै न्हाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिली रे, मांदिजा  
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंभ एक अति  
जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार नदेसा जेह  
ना रे, जिहां किण प्रश्न उत्तीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय  
लाख अरथे जरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो  
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥  
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥  
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०  
५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम  
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विघसुं ए सूत्र आरायतां रे, इण जव  
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन  
मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागी राजांजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥  
बघो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना ठै अरथ अनेक उई  
रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातनी जी ॥ श्रवणो  
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥  
म्हा० १ ॥ जंबुदीवपन्नती उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन  
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ  
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ  
द्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने  
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह  
लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि  
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥  
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चस्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ्र  
कुल उत्तपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान्न बलि तंत ते अंतक  
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंघ हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना  
उगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुवं  
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोनि तिहां सकल कथानक जाणिया जी,  
प्राण्या बलि उगणीस न्हेस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला  
पद एहना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥  
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल  
दोय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन बसिया विनयचंडने जी, सो मांहे  
मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥



॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ द्विवै सातमो अंग ते सांजलो, उपा  
संगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती  
उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो जव वैराग तरंग  
रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म०  
२ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन उदस विचार रे ॥ दस२  
संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनं  
दादिक आवकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे  
मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां  
चतां, गीतारथ पामे रीज रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो  
करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस आवक तो इहां ज्ञाषिया, पिण  
सूत्र जणो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध आवक जणी, एक अरथ  
नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक  
पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्तुं अयो, जो कुमती क  
श्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिद्धायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राखी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आ-  
ठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के  
वली जे अया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म क  
ठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञो  
सता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न  
य जंगथी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिप  
का जी, कळिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध  
इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ उद्देसा  
ठै वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगनां पांठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुजव रस  
ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे  
हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो  
जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती  
जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इस सुत्रना जी,  
तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ दाख ॥ नखदख विंदली लै ॥ ए बाख ॥ नवमो अंग  
अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ आवक सूत्र सुणो  
॥ सूत्र सुणो हित आणी, एतो वीतरागनी बाणी हो ॥  
आ० १ ॥ जसु कट्याणवतंसिका नामै, सोहे उपंग प्रकामे हो ॥  
आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥  
आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम२ अंतरगति जीजै  
हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥  
॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इगमें गाया  
हो ॥ आ० ॥ नगरादिक जाव दखाण्या, ते तौ बढै अंगे आण्यो  
हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोद्वारू  
रे ॥ आ० ॥ उहेला त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥  
आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अंगे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥  
आ० ॥ ओताथी प्रीत लगवूं, निंदकने मुंह न लगवूं हो ॥ आ० ॥  
६ ॥ जे सुणातां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥  
आ० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगै सहुकोराचो हो ॥  
आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ दाख ॥ आधा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कटपतरु सेवे ते तो, चि  
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाश तुमने सूत्र सुणाउं ॥  
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग  
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु  
ष्टादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रूना ॥ ते वै अष्टोत्तर सत  
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूना ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां  
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद  
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुयखंध एक ठै दसमे अंगै, पणयालीस  
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा  
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥  
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥  
सूत्र मांहि तो मारग दोषवै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै  
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कनखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग ॥ इगारमो,  
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि  
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुज किंपाक सम  
डुकुतफल जोगवी, नरकमें गरक अया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जो  
गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोषश्रुत  
खंधने वीश अध्ययन बलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजै ॥ सहस  
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल त्रमर चित्त गुंजै ॥  
सु० ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि  
माटै ॥ सूत्र उपगार तेदुथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-  
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोहना बेनं कारणअवै, डुकुतने  
सुकुत जेवो विचारी ॥ डुकुतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंदा नि-  
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज  
सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली घरमंधै ॥ सु० ६ ॥ सुस्क  
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो  
वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंद्र गुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥  
आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥  
जाण्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-  
णी ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू  
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी  
जे सांजलै, स० ॥ कुश बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू  
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी-  
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जास करी ए अंगनी,  
स० ॥ वरत्या जयस्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,  
स० ॥ वरषास्तु नजजास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्कमां, स० ॥  
पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,  
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगढना राजिया, स० ॥  
तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रदखनिधान जो, स० ॥  
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग  
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग तुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप  
गारी सुगुरु वताई, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन  
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान  
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,  
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक धरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलौ, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो  
॥ आंकणो ॥ अरुं श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणधरगुरु  
जाण्यो, तडुजयश्री जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहश्री जग  
जाव सकल जाणो, नव एकांत मुनिजन नवि ताणो, निश्चय विवहार  
ते मन आणो ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपंग वै अति रूमा, उ ब्रह्म  
पंथना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां  
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि जाण्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे  
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु आवक मारग लहियै,  
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०  
५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,  
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे  
गुण गावे, शुद्धशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकट्याण सदा पावै ॥  
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवन ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानेमें भिति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब  
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक  
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आताढ चोमासे मुजब  
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णयासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा  
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पन्तिकमणा करै, देववंद-

( ४८१ )

नादि करै, ( मैं हूँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धाय नमः ॥ ) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमेके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अगई महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, ( ११ ) बेर सेत्रुजरास सुणे ( मैं हूँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसैं २१ जेती देवै, ( कदास ) सिद्धगिरी जाणेंकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंसा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेंकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, उच्छ्रित कर के वा चतुश्चक्र करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुज्ञप्ति करै, सा हंमीवह्वल करे, इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावर्ग वारखिल प्रमुख दस कोनि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त जए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका निश्चे दशकोनि गुणा फल होता है ॥ इस नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही, संवत् १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था, उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोंके वरसण करके गिणती देखणेंमें आई सो बारे हज्जार तीनसैं अठारवनकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधु अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत जय्यी जीव होंगे सो शुद्धजावसैं इस तीर्थकों सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे, गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थआसातनाकारी देवद्रव्यजहक जतीसाधु जो संवेगपह्नी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक वृत्तिसैं जीणोंद्वार तथा नोकारसी प्रमुखके बाढ़नेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जय्यजीवोंका धन ठगणेंकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनंत संसारका जवज्रमण समझके वर्जना, एसैं डरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगजीन करणा. शुद्धज्ञावसें सिद्धगिरी सेवे ताकुं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरवानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभुत कुंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जौली जगत जली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो-लनी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० २ ॥ रुमी रायणांढमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसख्या हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ३ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ४ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभुत नलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवर सेतुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये नित रंगरोल ॥ मो० ५ ॥ इण सुंगर दीठा अकां हे, जो रे० ॥ ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर बांढमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ६ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंडाप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-तुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसख्या रे, प्रथम जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसख्या

तेवीस रे ॥ नमो० १ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-  
 हिज ठोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोनि  
 रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कढ्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत  
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०  
 ४ ॥ कोनि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-  
 जुंजै सनमुख चालतां रे, पगर ते सद्गु जाय रे ॥ नमो० ५ ॥  
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, बहिस्युं सेजुंजे केरी वाट रे ॥ ठहरी  
 यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर  
 जन्मव अतिथणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी  
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-  
 दती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्युं रे, रजत सोवन जर  
 थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-  
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्युं रे, नाजिनंदन जिनराय  
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥  
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥  
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव ब्रमण  
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन  
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पाभियो  
 रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नार्थ धूलेवा सुपसा-  
 थथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-  
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीरानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिथणो, जेटवा  
 विमलगिरिंद रे पंथीराना ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-  
 देवानंद रे पंथीराना ॥ बहिलुं बोले रे पंथी म्हारा बहिलुं बोले रे ॥



सेतुंजो है कितनी दूर रे पंथीना ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर  
 सोहामणो, रुमी ललतासरनी पाल रे पंथीना ॥ जिहां अंबला रे  
 वमला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीना ॥ वहि० २ ॥  
 धन ते पंखी पारेवना, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीना ॥ ऊमा  
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते दोर रे पंथीना ॥ वहि० ३ ॥  
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीना ॥  
 मैला थावे संघना कापना, निरमल थावै देह रे पंथीना ॥ वहि०  
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीना ॥  
 जिहां मिले घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीना ॥ वहि०  
 ५ ॥ घस केसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीना ॥  
 फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अन्नंग रे पंथी-  
 ना ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरै, ऊपजै परम आनंद रे  
 पंथीना ॥ मोने जेटणरो जी कोरु है, प्रेम घणै जिनचंद रे पंथी-  
 ना ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निना  
 णूं वार सेतुंज गिर, रुषज जिनंद समोसरियै, सेतुंजगिर यात्रा० ॥  
 कोमिसहस जव पातक तूटै, सेतुंज सामे रुग जरिये ॥ विम०  
 जात्रा० १ ॥ चोख ठठ दोय अरुम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥  
 विम० जा० ॥ पूरुकीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥  
 वि० जा० १ ॥ पापी अन्नबी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरि  
 यै ॥ वि० जा० २ ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह-  
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे  
 पद चरिये ॥ वि० जा० ४ ॥ पक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापपन-  
 ल विष हरियै वि० जा० ५ ॥ कलिकावै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै  
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रज्ञाती ॥ जात्र धर धन्य दिन आज सफजो गिणयो,  
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-  
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०  
॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूठनां, धन्य दोष चरण जिहां  
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जांगी सुकृतकी दिशां, आज  
धन दीह में सुजल गायो ॥ जा० २ ॥ डुर डुरगति टरो जात्र  
विवसुं करी, पुन्यजंरार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-  
रगिरसिखर, कृषज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भिगसर महीनेमें मिती भिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कढ्याणक जये-हैं सो  
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कढ्याणक श्रीमल्लि-  
नाथस्वामी के जये, श्रीअरग्रनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी, श्री  
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया, एतें इस जरतक्षेत्रमें वर्तमान  
चोवीसीके पांचकढ्याणक जये. इस तरे पांच जरत, पांच एरवत  
में, चोवीसीके पांचर कढ्याणक मिलाएसें पच्चास कढ्याणक जये.  
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कढ्याणक जये.  
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास  
करै, अठ पहरा पोसा करै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह  
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे  
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे  
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पहरकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-  
वसैं सुणै, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढेवालोंकों सहाय देवै,  
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं  
करै. ( समवसरण बैठा जगवंत ) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्व  
लिख्या हे सो पढे वा सुणै. पीठे उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी  
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवञ्जल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच क-

२४ जिन पंच कल्या

ल्याणक नमः ॥

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ प्रथम ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिअर्हतेनमः

६ श्रीशुभ्रंकरअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिनाथायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

७ श्रीसत्तनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४

जिन पंच कल्याणक ॥२॥

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

११ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१९ श्रीमल्लिनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ॥३॥

जिन पंचक० नाम ॥६॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः	६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः	६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः	६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः	७ श्रीविशिष्टनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि	घातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत
नपंचकल्याणक० प्रथा॥७॥	२४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥
४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः	४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः	६ श्रीहरिज्जअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः	६ श्रीहरिज्जनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः	६ श्रीहरिज्जसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाज्ञतनाथायनमः	७ श्रीमगधाधिनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन	घातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान
पंचकल्याणक । ८ ।	२४पंचकल्यालकना० ॥११॥
२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः	२१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः	१९ श्रीअक्षोजअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः	१९ श्रीअक्षोजनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः	१९ श्रीअक्षोजसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः	१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः
पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन	घातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-
पंचकल्याणकनामः ९	त २४ जि०पं०क० १२
४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः	४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्तिअर्हतेनमः	६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्तिनाथायनमः	६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञायनमः	६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः	७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन  
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४  
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीवीपरीतअर्हतेनमः

१ए श्रीवीपरीतनाथायनमः

१ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत  
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअमणेंडअर्हतेनमः

६ श्रीअमणेंड्रनाथायनमः

६ श्रीअमणेंड्सर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषन्नचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत२४जिन  
पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४  
जि०पंचक० ॥१६॥

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअजिनंदननाथायनमः

६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४  
जिनपंचक० नाम ॥१७॥

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१ए श्रीमरुदेवनाथायनमः

१ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि  
नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

४ श्रीनेदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत२४  
जिनपंचक० नाम ॥१९॥

४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिकअर्हतेनमः

- ६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः  
 ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः  
 धातकीखंडेपूर्वएवतेवर्त्तमान२४  
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥  
 २१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः  
 १९ श्रीसंतोषितग्रहतेनमः  
 १९ श्रीसंतोषितनाथायनमः  
 १९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीकामनाथायनमः  
 धातकीखंडेपूर्वएवतेअनागत२४  
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥  
 ४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीदिखादित्यनाथायनमः  
 धातकीखंडे पश्चिमएवतेअतोत२४  
 जिनपंचक० नाम ॥ २५ ॥  
 ४ श्रीपुरुवसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीअवबोधग्रहतेनमः  
 ६ श्रीअवबोधनाथायनमः  
 ६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीविक्रमैश्वरनाथायनमः  
 ६ श्रीवशिक्नाथायनमः  
 ६ श्रीवशिक्सर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वएवतेवर्त्तमान२४  
 जिनपंचक० नाम ॥ २३ ॥  
 २१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः  
 १९ श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः  
 १९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः  
 १९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअना० २४  
 जिनपंचक० नाम ॥ २४ ॥  
 ४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीरविराजग्रहतेनमः  
 ६ श्रीरविराजनाथायनमः  
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीप्रथमनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४  
 जिनपंचक० नाम॥२८॥  
 ४ श्रीअश्वत्थसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः  
 ६ श्रीकुटिलनाथायनमः  
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीहरअर्हतेनमः

१ए श्रीहरनाथायनमः

१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४

जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्कराद्धेंपश्चिमएरवतेवर्त्त०

२४जिनपंचक०ना०२९

११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्कराद्धेंपश्चिमएर०अना०

२४जिनपं०क० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें नेढसें माला होती है. जो जव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशोष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंधमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चकाण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करणेंको जावै, जो कच्ची यात्रा करणेंको नही जा सकै तो जहां

( ५९ )

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोन्नव संयुक्त दरसन करणें जावै, जलयात्रादि महोन्नव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकढ्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उन्नव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक ) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणेंसँ आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेंसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जग तिलो ) सुणै वा पढ़ै सो नर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥ इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषजदेवस्वामीका निर्वाणकढ्याणक दे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगै चढ़ावै, बीचमें १ वना मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसे पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंदावर्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरुषजदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हज़ार गुणना करै, नर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेंके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उन्नवसें ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवञ्चल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसँ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पुत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै



तपस्या करी. तपस्याके कारणसे पांगलापणोका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण ज्ञयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवत्समेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, वदोत तरेसें ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका हय करके अनंतसुखकों प्राप्त ज्ञया. जो ज्ञव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस ज्ञव ज्ञर पर ज्ञवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्युणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहनेमें मिती फाल्गुन सुद १४, सोतीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ अमराजगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ जली, १ पर्युषण. जिसमें जली २ का ज्ञर पर्युषण का एवं ३ अठाईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी जेसा बीकानेरमें खरतर गहवालोका पोया अर्थात् पुस्तकका ज्ञव हाथीके होदे वने आरंभसें होता हे वा वरघोमा पुस्तकका सुव-इमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नहीं. ज्ञर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जी वदोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें त था पर मतमें कहाँ जी ज्ञारतवर्षमें हमने देखा नहीं. दक्षिणमें मल्ले-वार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेज आगरा काली पटला तक में नहीं देखा. जगणीसें वावनके वर्षमें हमने यह ज्ञव कलकत्तेमें देखा था, ज्ञर फाल्गुनमहोत्सव मकसूदावादका वदोत अथा होता

हे, जगणीससैं सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगे नही कहाँ ज़ी देखा, लेकिन किसीज़ी धर्ममहोदयमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही, एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञान्यवानलोक धूपके मरसैं रेतिके मरसैं आप-तो जते नही फक-त बेसमज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उठावादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकुं सम्पत्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसैं धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल हे, वोही महोदय लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मारथी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेतका चोमासापर्शुजाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योग करतेजये शुजध्यानरूप अक्षितैं अष्ट कर्म-रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठै सुबोधजलसैं स्नान करके अत्यंत सुंदरताकुं प्राप्त होते हैं, अब यह होलीपर्व दो प्रकारसैं हैं, इवें ठर जावै, सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥

॥ इस फाटगुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये थके लक्ष्म ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं, दूनरे दिन मलमूत्र रेतिसैं क्रीमा करते हैं, खोटे बचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते हे, अनेक जीवोंकों डंख देते हैं, ऐसे जीव बीतरागकी आज्ञा ठेरुके ज्ञान जरमोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठेरु पेसाव पीते हैं, ऐसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै डुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंभसैं अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते हैं, इसवास्ते आत्मारथी ज्ञव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै, सो इस मुजब-प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ए करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवृत्त करै, साधर्मिजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतरुतु आणेंमें मदन महोत्सव करणेंकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें बहोत जगे वांचणेंमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूसरें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेषा करणी, कुल मर्याद भंगणा, वरेरोकी लज्जा भंगणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोंकी चलाइ जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हजार वर्ष करीब जया. पीछे स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसे धीरे-धीरे अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्त्तव्यता किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणेंमें आई. देखो केली आश्वर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वक-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, नर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जई बहिन सबोंकी लज्जा भंगके बहोत दिलमें खुतब-खती मानताजया पागलके माफक ज्ञानोंकी तरे बकते फिरता हे. कोइ वैस्यानका नाच होता होय उहां तो हजारों रुपे खर्च कर देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तत्व नजरसे देखे नर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेंमें आये. ऐसी लज्जाभंगके जिनमंदिरका महो-त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, ऐसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्य नर ज्ञावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, नर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें नर

सच्ची वातकूँ कुयुक्तियोंसें जूठी गहरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो  
 ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल  
 इसमें अनर्थ दंभ लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाईब-  
 धोंकोँ ऐसा करते देख हमज्जी करते हैं, हमसें रहा जाता नही.  
 परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अन्धो है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजो-  
 वो इसमें समुदायी कर्म बंधता है. गोमे सो धन्य है. नरकके जाते  
 का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी  
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नही करते  
 उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख दुसरेकोँ बचना चाहिये.  
 काम वो करणा जिस्में दोनों जवमें लाज होय. इस इव्यहोलीके  
 खेलमें वनीर लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-  
 लसें पुष्करणे नर जोजकोँकी लमाइमें तमाम उजार होगया.  
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.  
 इस बावत जो जो कठोर लबज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे  
 पर गुस्ता नही लावेंगे. जो कुछ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-  
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समजके गोरुणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे  
 तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-  
 समें जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुछ  
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुक्कं ॥१॥ इति पा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव  
 ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-  
 थाणो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १ ॥ लेस्या मा-  
 दल जाव रुफरे, क्रोध मान होय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी  
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० १ ॥ सुमताकेसर घोलियै रे, दमवाको

( ४९६ )

ठिमकान्न ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥  
हो० ३ ॥ ऐसा साज वषायकै रे, रुषजदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-  
नचंद्र इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-  
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केस-  
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्यामघटा  
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रजु अदजुत ज्ञानी, करुणा  
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उमाय वाय ज्युं वादल, जीत  
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा नदरे जिन जाया,  
राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-  
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रजु  
प्रारत, जैसी ढाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान  
गुलाल अबीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत  
रूप धरम जिनवरको, शुध कृमा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥  
संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥  
मोह ठोर गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०  
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिब, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो  
रे ॥ या० ४ ॥ वार१ मेरो वंदना होयज्यो, चंद कहै मन  
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ० ॥  
इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर पमत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥  
क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, अहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥  
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमैसर, दूर करो दुखकी बेरी । ६० ४ ॥ परम  
ह्मप्रागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ६० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी बिव वरणी न जाई  
सा० ॥ श्री ॥ अश्वत्तेन वामा नंदकी, कीरत त्रिजुवन गई ॥ समे-  
तसिखरगिरि मंरुल प्रजुको, देख दरस हरखाई-हृदय मेरो अति  
हुलसाई ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वथा  
ई ॥ तीन जुवनको नावरु निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई-सफल  
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रजुके दरस सरस विन पाये, ज-  
वश् नटव्यो में जाई ॥ अब प्रजु चरण सरण चित चाहत, बाल  
कहै गुण गई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर-  
खी ॥ ने० ॥ जवश् संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु-  
मति वधारण कुमति विनारण, ज्ञान विमल ललसाई ॥ आ० १  
॥ वामानंदन अति ठबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-  
याल दयाकर बीजै, आनंद हरख सवाई ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एतैं फागुण मस्त महीने च-  
लोरी, देखो स्वाम सखी मोपै जोरी ॥ एतैं० ॥ ब्रजकी सखी सब  
वनश् निकली, खेलत मिलश् होरी ॥ नरे गुलाल अवीरमुहोत्तर, अप-  
ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वनश्के,  
मधुर२ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम२  
गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रत अनरत रात रसे रस, सरस दरस  
प्रजु मोरी ॥ प्रो १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥  
च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्वामसैं कहियो मोरी, ने० ॥  
समुझवैजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी  
॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥  
तोरणसें रख फेर चले हो, चढ गए गिरकी ज़री—मदन महा रिपु  
तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख  
कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजारी-  
खंगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन थिर करकै, हो०  
॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर क़त्तावो जोलो जरशकै ॥  
हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित धरके  
॥ हो० २ ॥ अनुजव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस मदम  
हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूरु उढावो, ज्युं तेरा पाप सब-  
ल थरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजु जज विलं-  
ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारे तूं  
तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर  
जोरी, हारे तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग  
आजूपण अंगै, हारे तूं तो जावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-  
रंजन प्रजुना गुण गावो, हारे तूं तो आतम अनुजव वर रे ॥  
हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारे तूं तो गूंजत मन  
मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हारे तूं तो ज-  
गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ अोजिनलान कदै प्रजु संगै,  
हारे तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग  
खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन बतरंगमहिलमें, दीपक बोध बनाई  
॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कमा मृडना मिल, रजुता मुक्ति सुहाई ॥

उर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगई ॥ आ० वा० १ ॥  
 ज्ञाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण  
 गान संगीत निरत धुनि, जकि जिणंद बढ़ाई ॥ आ० वा० २ ॥  
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बढ़ाई ॥ अब कुमता  
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुदाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चउरा  
 सी जव जमतां २, नरज ३ पाषो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर  
 ज्ञावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं खटक्यो ॥ स० २ ॥  
 पुन्य संजोग मिळ्यौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥  
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासे तेरो मन अट  
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु  
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रजु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें  
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रजुजीको, वि० ॥ प्रजुजीको ना  
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-  
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर दे टीको ॥ वि० २ ॥  
 ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको  
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥  
 बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥  
 सब बादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०  
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोमै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०  
 ने० ३ ॥ जनघरजूषण कहै जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे  
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेलै ने-



मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जर्यौ, दिशि दूजी गिर  
वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण माहे खेले नेमकु  
मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवना केतकी, विच फूड्या मरुआमचकुंद  
॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥  
आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै  
पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं  
ब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजुं  
नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,  
विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठां  
ठे-यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जेरें य-  
डुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी माता ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर  
पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुषज्जिणंदा, जिण  
मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर,  
गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंदेली दोनुं मरुआ,  
फूल चढानं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती, मुख  
बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानसंदिरकी ऐहि बीनती, जव  
दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंननगरमें, फा-  
गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही  
हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके अं-  
गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाब  
नुमाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित  
लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निबिम्ब डुरित ज्वर शिखर जि डुरकी, ज्वसागर तारण तरकी ॥  
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी  
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब तनको, बंढित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरुल मंमनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाम्नेय जिनेसर-  
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम  
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-  
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज  
 लंघन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूर्ति, देखत  
 परमानंद जरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, जवश्  
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, भेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥  
 त्रिगढ़में विराजमान, डंडजि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत  
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासन विराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, जामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,  
 छद्मदश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥  
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला  
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता  
 दीजै सादिव मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात जयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज  
 खंढन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण  
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण  
 सुद्धसें त्रिजुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैनुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानेकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैनुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरब निनासुं  
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया  
 ॥ सा० ७ ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण-पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥  
 जवडुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम  
 ता संग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग बधाई, घर-मंगलाचारो ॥ रथ महोन्नव रचना रची हद, मुख

जय२ सवद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी,  
सेवक सुगुण संचारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, जवसा  
घर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वषाय सखी सब, शिखर  
सैल जेसैं चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,  
मोसैं प्रीत लगाइ नामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि ठोमी,  
कोन चूक मोपै काही नामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ मेंन तजुंगी  
नव जव फेरी, प्रात वणी जेसी इंधु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै नई सुगति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेल ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया घर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उमाय जगतमै, वैठै शिवपुर आन ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥  
हो० रं० ६ ॥ एसा खेल नविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेलै फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग बजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाल तड़ा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित  
केसर चीर रंगान, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठांमी, ज्यारुं गतिसैं जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल नविकजन  
धरै, पावै नवजल आग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,  
समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज  
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर उमावो, कमा  
करो रंग लाय २ ॥ ड० हो० १ ॥ शीख संजम व्रत पान मिठाई,  
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ ड० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह  
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ ड० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-  
रज वीनती, सरण गही में तेरी जाय२ ॥ ड० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी  
वात पूर्व कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग नस्थो रंग शी-  
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषन बेठै अलवेसर, मारो गुलाल  
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
आ२ चंदन लुर अगरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
रतनजन्मि शिर ठत्र बिराजै, अंगी जनाव जमी जरकै ॥ बावो०  
२ ॥ बांहै बाजूबंध बहिरखा बिराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये नवि आदीसरसैं ॥ बा०  
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपखे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,  
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ नवःडुख वारण शिवसुख कारण,  
देखत नवनही पंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-  
न, प्रणमुं रुषन जिनंदना रे ॥ जि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
तुमारो, जिम चातक दिख चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥  
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-  
स कोसथो दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥  
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनसरको ॥ द० ३ ॥ अब  
जिनवरके शरणे आयो, रस्तो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ॥ ५०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-  
घयात्रा करणसैं पाप कटत है, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि  
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषज जिनेश्वरजीको  
दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै  
नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि  
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूँही रंग रे ज तूँही है, संजम रंग  
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो है अना-  
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-  
द्रि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥  
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग है, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥  
जूधरदास कहे समकित है, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत  
वसंत ॥ ज्ञान गुलाब विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥  
॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत  
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मे० २  
अंग आजूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-  
हिर कसूँवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच माहा  
व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रजुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मज्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी,  
रं० ॥ पास प्रज्जु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा०  
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महुके अपार रे ॥ चा० २ ॥  
लाल गुलाल अबीर जमावत, पासजीकै दरबार रे ॥ चा० ३ ॥  
जर पिचकारी गुलाबकी ठिठको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
ताल मृदंग बीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
॥ रत्नसागर प्रज्जु जावना जावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो  
मोरी ॥ तोरण आए किण जरमाए, ठोरु चलै अजिमाणी ॥ हां  
रे लाला ठो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-  
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसैं कहियो,  
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं  
ज्यानी-श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
बेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
रंग विजय सुख दानी-आवा जर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ६०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन०  
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा,  
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-  
लवामी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
अंग अनोपम, शुक्र ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद  
चिंतामणि चित धर, तुजसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ६०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी आवक मिल आये, आशी जाव  
 अजंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी जांत जलो हे, वुंठिया  
 नवशं रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना  
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोष कुंमल, बाजूबंध  
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥  
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ जाबना जावो जिनगुण गावो, अमर घणै नवरंग  
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंजित फल पा-  
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंजित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ मु-  
 ठियां उगावो रे ॥ वंजित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिरकावो, जा-  
 व शुक्ल जल जावो रे ॥ वंजित० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुद्गल ब-  
 नावो, दीपक ज्योति दीषावो रे ॥ वंजित० चिं० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंमर जरावो रे ॥ वंजित० चिं० ३ ॥ वा-  
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंजित० चिं०  
 ॥ अमरलिंगुर आनंद बजावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत नारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोदाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाजं, पहिहं मन  
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोहूं, च्यारों गति  
 सोदाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-



सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इषा विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुमहो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कीजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद  
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसैं, कर्म कटै ज्युं शुद्ध  
ध्यानसैं ॥ आ ० ॥ पुद्गल जीव स्वरूप पिठाणयो, समता मिट  
गई सारी जानसैं ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास ज्यो सब ज्ञानजानसैं ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमात्म  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल आनसैं ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरलकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निजा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुसिया-  
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लज्जन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,  
योही विचार करो दिख अपनैं, होत कर्मसैं ज़ारी ॥ लाल ते ० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही हैं, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द ० ॥ चो-  
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०  
१ ॥ पुन्य उदय आवक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत ज्यो ॥ द ०

१॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत कृमाकळ्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत बोफो मोने थूंही रे, कोइ चूक बतावो  
 ॥ म० । अवीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊनी अरज करत हे, एक वार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवन्ध लंछन जनम जदिलपुर, कुल  
 इहवाग नदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोजित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु  
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३  
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासै संयही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करता जयजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद विक्रम माष सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धतरतर गड पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के दे सो सर्व जयजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( ओर विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करनेवाले जयजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासै पंच कल्याणककी टीप दि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१५ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनिमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनिमनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्हतेनमः

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥  
 १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०  
 १३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः ए श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०  
 माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजितनंदनजीसर्वज्ञा०  
 ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०  
 ११ श्रीशीतलनाथजीअर्ह० माघशुक्लपक्षे ॥ ए  
 १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजितनंदनजीअर्ह०  
 १३ श्रीशुभ्रदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०  
 ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०  
 फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः  
 ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०  
 ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ७ श्रीअजितनाथजीअर्ह०  
 ७ श्री चंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन० ए श्रीअजितनाथजीनाथा०  
 ए श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० १२ श्रीअजितनंदनजीनाथा०  
 ११ श्रीशुभ्रदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०  
 १२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः फाल्गुनशुक्लपक्षे । ५  
 १२ श्रीसुमिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०  
 १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ४ श्रीमह्विनाथजीपरमेष्ठि०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः ७ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०  
 ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः ११ श्रीमह्विनाथजीपारंग०  
 चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीसुमिसुव्रतजीनाथाय०  
 ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ७  
 ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०  
 ५ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने० ५ श्रीअजितनाथजीपारंग०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः  
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०  
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९  
 १ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः  
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०  
 ५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः  
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्ठि०  
 १० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०  
 १३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०  
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥  
 ८ श्रीसुनिसुव्रतजीअर्हते०  
 ९ श्रीसुनिसुव्रतजीपारंग०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०  
 १४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०  
 आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०  
 ४ श्रीविमलनाथजीपार०  
 ९ श्रीनमिनाथजीनाथा०  
 श्रावणकृष्णपक्षे ॥ ४  
 ३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०  
 ७ श्री अनंतनाथजीपर०  
 ५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०  
 ५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०  
 ९ श्रीसुमतिनाथजीपारंग०  
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०  
 १३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः  
 १५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०  
 वैशाखशुक्लपक्षे ८  
 ४ श्रीअजिनंदनजीपरमे०  
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०  
 ८ श्रीअजिनंदनजीपारंग०  
 ८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०  
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०  
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०  
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥  
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०  
 ९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्ठि०  
 १२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०  
 आषाढशुक्लपक्षे ३  
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्ठि०  
 ८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०  
 श्रावणशुक्लपक्षे ५  
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०  
 ५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

( ५१३ )

- ८ श्रीनामनाथजीअर्ह०      ६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०  
 ९ श्रीकुंथुनाथजीपरमे०      ८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०  
 भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥      १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्ठि०  
 ७ श्रीचंडाप्रज्ञजीपारंग०      भाद्रपदशुक्लपक्षे १  
 ७ श्रीशान्तिनाथजीपरमे०      ९ श्रीसुविधनाथजीपारंग०  
 ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०      आश्विनशुक्लपक्षे १  
 आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २      १५ श्रीसुविधनाथपरमेष्ठि०  
 १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०  
 ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०  
 इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घण्टा गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चस्काण करै, तीन टंक देववंदन करै, पम्कमणा करै. जिस दिन जो मा- हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै. नर पद्वली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढ़ै. जहां जगवंतकी कल्याणक जूमि होय उहां वने महोन्नवर्त्ते संघ समेत यात्रा करणैको जवै. उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतोके पंच कल्याणकका उन्नव करै. जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उन्नव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रज्ञके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्ठिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उन्नव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककुं (अर्हतेनमः) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोन्नव करके अष्टो-

( ५१४ )

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कढ्याणककों ( नाथायनमः ) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-  
क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उन्नाव करै, घृत गुरु वस्त्रा-  
दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कढ्याण-  
ककों ( सर्वज्ञायनमः ) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतकों  
विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उन्नाव करै,  
वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-  
र्वाण कढ्याणककों ( पारंगतायनमः ) कहियै. इस दिन निर्वाण  
कढ्याणकके ज्ञावगर्भित उन्नाव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और उन्न  
गर्भापहार कढ्याणकका उन्नाव करणा होय तो ज्यवनकढ्याणकके  
उन्नाव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कढ्याणकका उन्नाव करै,  
तपस्या पूर्ण होणैसैं पंच कढ्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुजति  
करै, साहमीवन्न करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो  
ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकढ्याणक  
तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ प्रखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,  
दक्षिणजरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर  
अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख आय  
॥ मनवंडित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै  
तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-  
गुणै अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश  
॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पढम  
पक्ष अष्टमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोन्नव सुर करै, त्रिजुवन  
हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काठवो, बीस धनुष तनु मान ॥ श्री०  
 ६ ॥ परखो नार प्रजावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख  
 भोगवै, पूरै वंजित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-  
 वि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीघो संजम जार  
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधरं निरमल ध्यान ॥  
 व्यास करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (ढाल १ ॥  
 सुख कारण जवियण ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-  
 लिया सुरनर कोमि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोमि ॥ बेकर  
 जोमि मझर ठोमि समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-  
 गमो उत्रत्रय जलकंत ॥ सिंहासन बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म  
 प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्लासै ॥ १० ॥ त-  
 पने अधिकारै परखवासों तप सार, पनवाथी कीजै पनरह तिथी  
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-  
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांदी देव उल्लास ॥ तप ऊजमणै  
 रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिन  
 वर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनो जेम, म-  
 नवंजित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वं-  
 छजन जरतार, जस कीरत सोजाग वनाई महियल महिमा जाण  
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, एं तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर आपी  
 चतुर्विध संयतणो अधिकार, जखवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-  
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंडक पंच सयां परिवार, कार्तिक-  
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सइस वरष आ-  
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुइता मुग-  
 ति मऊार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुणिया त्रिभुवन ताय,  
 मुनिसुव्रतस्वामी बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय



जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीत, वाचक समयसुंदर इम पञ्चणै पुरो मनह जगीस ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१) पन्निवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं होयतो प्रथम सुदि पढ़की पन्निवा १, दूसरे सुदि पढ़की दूज, ऐसे अनुक्रमसें पनरे सुद पढ़में तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी के पांच कल्याणक जावगर्जित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय तो गुरुके पास सुणै. ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० दो हज़ार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसें उत्तम फल मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगमै बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिला समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किता कहा, कीथां कवण फल आय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां अकां, लहिये अविचल गम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी ३, साढपोरसी पुरिमह ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवछि ॥ श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रज्ञा १, सर्करप्रज्ञा २, बालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥  
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम  
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज गोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन  
 तारुना, चूख तृषा बलि त्रास, रोम २ पीना करै, परमाहम्मी  
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां  
 सुस्क ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःस्क ॥ श्री० ९ ॥  
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विगुह ॥ सो वरस नरकनो  
 आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,  
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप बलि पावला, निरमल होवे  
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल तिर तिलो  
 ॥ ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, मदा मोटो फल होय ॥  
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि  
 जै नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-  
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥  
 करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति  
 मांहे नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-  
 दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्व करै नित जीव जे, नरके  
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्व करम खपाय ॥  
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःस्क अनंत ॥ इतरा  
 करम एकासणैं, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां  
 लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणो  
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम  
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात  
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,  
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंगिजनो फल बहु कह्यो, कोमि

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंबिल अधिकार ॥ सु०  
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मजार ॥ उपवास  
 करै इक जावसुं, तो पामे मुगति मजार ॥ सु० २२ ॥ (दाल ३॥  
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-  
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ बढमं तप करतां थकां, सही  
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,  
 जीव लहै तिहां डुस्क रे ॥ ते डुख अढमं तपहुंती, दूर करी पामे  
 सुख रे ॥ गो० २४ ॥ बेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ  
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०  
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर  
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-  
 शेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला,  
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं  
 करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां  
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै  
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जेव पार रे ॥  
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं  
 त जवाना पापथी, बूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती  
 पापी तरया, निसनरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,  
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,  
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण बै घणा, करतां बेदे  
 त्रय वेद रे ॥ गो० ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विष फल  
 परुष्या महावीर जिणदेवए, जे करै जविअण तप अखंति तासु  
 सुर पर्यसेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अथ शशि वलि पोस सुदि  
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शिस गणिवर रामचंड तप विधि

ज्ञे ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चकाणके स्तवनमें खुदासा दस पञ्चकाणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक त-  
पस्या करणोके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब  
उत्तम पुरुषोने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तव-  
नकों पढ़के तपस्या करणोमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश  
पञ्चकाण तप करणोकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दु-  
सरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चकाण दस दिवसे  
सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक  
उद्यापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसे डुरगतिबंध दूर करके अच्छी  
गती पावे, महा ऐश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवि-  
यै, धर कर शुभ्र परिणाम लाख रे ॥ तीजै नव सेव्यो अको, वां-  
धे तीर्थकर नाम लाख रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही,  
ज्ञाताअंग मजार लाख रे ॥ सुणजो जवि तुमे जावसुं, चित्तसें करिय  
उच्चार लाख रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक  
तप एह लाख रे ॥ निरदूषण शुभ्र महुर्ते, उचरीजै ससनेह लाख  
रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ शिवर ५ नव-  
ज्ञाय ६ लाख रे ॥ साधु ७ नाथ ८ दंतण ९ अरु, विनय १० नमूं  
उलसाय लाख रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे  
१३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाख रे ॥ चारित्र १७  
ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीस लाख रे ॥  
वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाख रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, बीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक जली पट मासमें, पूरी जो नवि होथ लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोथ लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-  
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै  
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर  
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,  
 सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पन्तिकमणो दोय टंकही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक जली करो  
 वीस लाल रे ॥ बीसाबीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित  
 धार लाल रे ॥ काजसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रूतुकाखमें, कबि धारथो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावज्ज त्यागपणो करै, सोक न धारे चित लाल रे ॥ शील  
 आनूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ  
 आसाठ वैशाखमें, मिंगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे  
 मांहिनें, व्रत ग्रहिये वमज्जाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारिनें,  
 उच्चव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ वीस२ गिणती तणा,  
 पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद

लाख रे ॥ वी० १ए ॥ फलवधी नगरनी आविका, कीधी विंध चित  
लाय लाख रे ॥ जनस सफल करवा ज्ञानी, उहिज मोक्ष उपाय  
लाख रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार  
चित्त मजार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी  
शशि गढ खरतर ज्ञानी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ्र महुर्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि  
हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जली दो  
महीनेसे लेकर ब महीने पूरी करै. कदास ब महीनेमें पूरी नही कर  
सके तो वो जली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी परती है.  
एक जलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
जुदा२ गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरै  
वीशों दिनमें दूसरा पद, एसे वीशों पदकी वीश जली करै. तिहां  
पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अछम तप करिकै आराधै. वीश  
अछमसे एक जली होय ( एसे ) वीस जली ४०० से अछमसे आ  
राधै. और उससे कम शक्ति होय तो बढे आराधै. उससे कम  
शक्ति होय तो चोबिहार उपवास करै आराधै. उससे हीन शक्ति  
होय तो तिविहार उपवास करै आराधै. उससे हीनशक्ति आंबिल  
( तथा ) तिबिहार एकाशना करै आराधै. उसमें जो शक्तिवान  
होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति  
दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति  
सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिंदर  
पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-  
में ७, यह सात आनक पद तो पोसह करैही आराधै, जो इतनी

ज्नी शक्ति नहीं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार बोनै, सो शक्ति ज्नी नहीं होय तो यथाशक्ति तप करकै आराधै, अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नहीं गिणै जावै, स्त्रियां ज्नी श्रुतसमयका तप नहीं गिणै, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो वदोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उन्नय टंक पक्कमण करै, तीन टंक देववन्दन करै, दो हज़ार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नहीं करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनज्जक्ति करकै पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नहीं होय तो उसी दिन श्रीजिनज्जक्ति करै करावै, जावना जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासँ काउसग्न करै, इतनाही तज्जुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदशा करै, उस पदका गुण याद करकै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, दर्शित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्नका प्रमाण लिखते हैं॥

( एमो अरिहंताण ) १००० गुणना लोगस्त १२ का काउसग्न ॥ १ ॥ ( एमोसिद्धाणं ) २००० गुणना लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्त ) १००० गुणना लोगस्त ७ का काउसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ३६ का काउसग्न ( एमो थेराणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ५ ॥ ( एमो उवज़ायाणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ३५ का काउसग्न ॥ ६ ॥ ( एमो लोए सब सादूणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त २७ का काउसग्न ॥ ७ ॥ ( एमो नाणस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काउसग्न ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १७ का

काउसग ॥ ए ॥ ( एमो विषयसंप्रसाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का काउसग ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्त ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्त ६ का काउसग ॥ ११ ॥ ( एमो बंजवय  
 धारीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ए का काउसग ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरिआणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त २५ का काउसग  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्तीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १५ का  
 काउसग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त  
 १७ का काउसग ॥ १५ ॥ ( एमो जिषाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का काउसग ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्त ) दो हज़ार  
 गुणना लोगस्त १५ का काउसग ॥ १७ ॥ ( एमो नाशस्त ) दो  
 हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काउसग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 एस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १० का काउसग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिष्ठस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काउसग करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उंलीमें सर्व पदके उच्चव महो-  
 च्चव प्रज्ञावना कृजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उंली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें  
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरुका  
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुखें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अपनी शक्ति माफक वीसर ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,



साहमी वछल कैर, इत्यादिकं इयें नर जावै विधि संयुक्त शुद्ध  
जावसैं जो जव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकैं तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगें, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप नवी विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणंतविन्नायसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥  
जवज्जोवविन्नयणेवारणाणं, एमोवोदियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धज्यो नमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनें पूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणंसिद्धाणमशि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्कयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्यो नमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्त, दुस्कंधयारुग्गदिवाकरस्त ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्त, एमो२ संधचनबिहस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनाय नमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसरारं-  
मुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्यो नमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतितजविजन अतिहथिरकरताजला ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ  
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविराय नमः ॥ अथ षष्ठ पद ॥ सबोद्धिबीजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुबोद्धिदंतीहरिणसरारं ॥ विष्णो-  
यसंतावप्रयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ सन्नाय पज्जायतरूवणाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं समग्रगुसाधुभ्यो नमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपज्जा

यगुणाकरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मिञ्चत्तअन्नाणतमोहरस्त,  
 णमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ८ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि  
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्त, णमो२निम्मलदंसणस्त ॥  
 ९ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्त, कुंदिंडुयादामलताचणस्त ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्सदयासयस्त, णमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ उँ ह्रीं  
 श्रीं सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोघकंतरदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्त, णमोचरित्तस्सगुणापणस्त ॥ ११ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुहप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सब्बयान्नुषणन्नुषणस्त,  
 नमोहिशीलस्तअदूसणस्त ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविज्जुषणस्त, सुलद्धिसंपत्तिस्सु-  
 पोषणस्त ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धक्रियापदस्त ॥  
 १३ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुरूवसंदग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो  
 कुहडुहवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर  
 स्त, डुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धासाजयगोयमस्त, नमोग  
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ उँ ह्रीं श्रीं गौत्तमायनमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससत्तातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-  
 वंदियाणं ॥ रवींडुबिंबामलसगुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ उँ ह्रीं श्रीं जिनेज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सविंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणावेगारी ॥ महान्

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्चारित्रधारीऽद्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठार्वे ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविखंरुणस्त ॥ मुत्तीउपादा  
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसर्मे श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 द्धीवनवारणस्त, सुबोहिबीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-  
 यस्त, नमोदयामंदिरसठयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतयै  
 नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसर्मे तीर्थपद ॥ तुच्यंनमःसकलविश्ववशं  
 कराय, तुच्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुच्यंनमःचुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुच्यंनमोस्तुजिनपंकविखंरुनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री स  
 म्यग्तीर्थपदेऽनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इय चढावै (पीठे)  
 ६४ इडपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधर्मेऽयनमः १ ॥ ॐ इशाणै  
 ऽयनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारैऽयनमः ३ ॥ ॐमाहैऽयनमः ४ ॥  
 ॐब्रह्मैऽयनमः ५ ॥ ॐलांतकैऽयनमः ६ ॥ ॐशुक्रैऽयनमः ७  
 ॥ ॐसहस्रारैऽयनमः ८ ॥ ॐप्राणतैऽयनमः ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतैऽयनमः ॥ १० ॥ ॐचंद्रैऽयनमः ॥ ११ ॥ ॐसूर्यैऽयनमः ॥ १२ ॥  
 ॐचर्मैऽयनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींऽयनमः ॥ १४ ॥ ॐधरैऽयनमः  
 ॥ १५ ॥ ॐभूतानैऽयनमः ॥ १६ ॥ ॐवेणुदेवैऽयनमः ॥ १७ ॥  
 ॐवेणुदालींऽयनमः ॥ १८ ॥ ॐहरिकितैऽयनमः ॥ १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हैऽयनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखैऽयनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वैऽयनमः ॥ २२ ॥ ॐपूणैऽयनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टैऽयनमः  
 ॥ २४ ॥ ॐजलकितैऽयनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रज्ञैऽयनमः ॥ २६  
 ॥ ॐअमितगतींऽयनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेऽयनमः ॥ २८ ॥  
 ॐवेलवैऽयनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेऽयनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषै  
 ऽयनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषैऽयनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालैऽयनमः

॥ ३३ ॥ ॐ महाकालेन्द्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐ स्वरूपेन्द्रायनमः ॥ ३५ ॥  
 ॐ प्रतिलेखेन्द्रायनमः ॥ ३६ ॥ ॐ पूर्णचन्द्रेन्द्रायनमः ॥ ३७ ॥ ॐ माणज्जिन्द्रेन्द्राय-  
 नमः ॥ ३८ ॥ ॐ ज्योतिरेन्द्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐ महाज्जिन्द्रेन्द्रायनमः ॥  
 ४० ॥ ॐ किन्नरेन्द्रायनमः ॥ ४१ ॥ ॐ किंपुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४२ ॥ ॐ सत्पुरुषे-  
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ ॐ महापुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४४ ॥ ॐ अमितकार्येन्द्रायनमः ॥  
 ४५ ॥ ॐ महाकार्येन्द्रायनमः ॥ ४६ ॥ ॐ गीतरतीन्द्रायनमः ॥ ४७ ॥ ॐ गीत-  
 यशेन्द्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐ सन्निहितेन्द्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐ सामानि-  
 केन्द्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐ धात्रेन्द्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐ विधात्रेन्द्रायनमः  
 ॥ ५२ ॥ ॐ रुषिन्द्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐ रुषिपालतेन्द्रायनमः ॥ ५४ ॥  
 ॐ ईश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐ महेश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐ वत्सेन्द्रा-  
 यनमः ॥ ५७ ॥ ॐ विसालेन्द्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐ हास्येन्द्रायनमः ॥  
 ५९ ॥ ॐ श्रेयसेन्द्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐ हास्यस्तेन्द्रायनमः ॥ ६१ ॥  
 ॐ पद्मेन्द्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐ पद्मपतेन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐ महाश्रे-  
 येन्द्रायनमः ॥ ६४ ॥ इति चोत्तम इन्द्रनाम पूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॐ रोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ-  
 प्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐ वज्रशृङ्खलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ वज्राकुशायैनमः  
 ॥ ४ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ पुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ का-  
 ल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ गौर्ध्न्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ  
 गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ मानव्यै-  
 नमः ॥ १२ ॥ ॐ वैरोध्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अटुसायैनमः ॥ १४  
 ॥ ॐ मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-  
 रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-  
 पारी चढावै ॥ ॐ ब्रह्मशान्तिायैनमः ॥ २४ ॥ ॐ पा-  
 र्श्वकायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायैनमः ॥ २२ ॥ ॐ नृकुट्टायैनमः  
 ॥ २१ ॥ ॐ रुक्मायैनमः ॥ २० ॥ ॐ कुबेरायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ य-

कैशायनमः ॥ १८ ॥ नैगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ नैगरुद्रायनमः ॥  
 १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैप-  
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमारायनमः ॥ १२ ॥ नैयक्षराजाय-  
 नमः ॥ ११ ॥ नैब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ नैअजितायनमः ॥ ९ ॥  
 नैविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः ॥ ७ ॥ नैकुसमायनमः ॥  
 ६ ॥ नैतुंबुरैयनमः ॥ ५ ॥ नैस्कनायकायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखा-  
 यनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥ नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥  
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षी नाम लि० ॥  
 नैचक्रेश्वरैयनमः ॥ १ ॥ नैअजितवलायैयनमः ॥ २ ॥ नैडुरितारैयनमः  
 ॥ ३ ॥ नैकालिकायैयनमः ॥ ४ ॥ नैमहाकाट्यैयनमः ॥ ५ ॥ नैद्या-  
 म्मायैयनमः ॥ ६ ॥ नैशांतायैयनमः ॥ ७ ॥ नैनूकुट्यैयनमः ॥ ८ ॥  
 नैसुतारकायैयनमः ॥ ९ ॥ नैअशोकायनमः ॥ १० ॥ नैमानव्यैयनमः  
 ॥ ११ ॥ नैचंदायनमः ॥ १२ ॥ नैविदितायैयनमः ॥ १३ ॥ नैअंकु-  
 शायैयनमः ॥ १४ ॥ नैकंदपार्यनमः ॥ १५ ॥ नैनिर्वाणैयनमः ॥  
 १६ ॥ नैबलायैयनमः ॥ १७ ॥ नैवारिण्यैयनमः ॥ १८ ॥ नैधरणप्रियायैयनमः  
 ॥ १९ ॥ नैनरदत्तायैयनमः ॥ २० ॥ नैगांधारैयनमः ॥ २१ ॥ नैअं-  
 विकायैयनमः ॥ २२ ॥ नैपदमावत्यैयनमः ॥ २३ ॥ नैसिन्ध्यायकायै-  
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ नैनैसैर्षका-  
 यनमः १ ॥ नैपांडुकायनमः २ ॥ नैपिंगलायनमः ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः  
 ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ५ ॥ नैकालायनमः ६ ॥ नैमहाकालायनमः  
 ७ ॥ नैमाणवायनमः ८ ॥ नैशंखायनमः ९ ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 नैविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ नैक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ नैचक्रेश्व-  
 रैयनमः ॥ ३ ॥ नैधरणेन्द्रायनमः ॥ ४ ॥ नैपद्मावत्यैयनमः ॥ ५ ॥  
 नैइन्द्रायनमः ॥ ६ ॥ नैअग्रयैयनमः ॥ ७ ॥ नैयमायनमः ॥ ८ ॥

उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ उँवरुषायनमः ॥ ५ ॥ उँवायैठ्यैनमः ॥ ६ ॥  
 उँकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ उँईशानायनमः ॥ ८ ॥ उँनागायनमः ॥ ९ ॥  
 उँव्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ उँसूर्यायनमः ॥ १ ॥  
 उँवद्रायनमः ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ उँब्रुयायनमः ॥ ४ ॥  
 उँरुहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ उँशनैश्वरायनमः  
 ॥ ७ ॥ उँराहवैनमः ॥ ८ ॥ उँकेतवैनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंरुल पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंरुल प्रतिष्ठा  
 बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंरुल पूजामें लिखआए  
 हे उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-  
 छजन गुरूकों पूठके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंरुल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुलो  
 अक्षर जगति जणी सनजई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तपो ए  
 जिणारा गुण गाडं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंडित फल पाडं ॥  
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस वै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वधरो ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इस नामै,  
 आठ पूत्र जाया जिणै ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामै  
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रों ऊपरां ए तिण लागै प्यारी  
 ॥ बाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय  
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवमी ए घर अंगण वैठी,  
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विचएदवी  
 ए नदी दूजी नारी, रंजा पडमा गवर गंग इस आगल हारी ॥ ४  
 ॥ पुरुष न दीबै कोइ इसो जिणनें परणाडं, आख्या आगल साल  
 वधै तिण चयन न पाडं ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेमाया,

संवल सजाई साथ करी नरपति पिए आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए ठै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा दैखै सकल लोक चढ़िया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,  
 रलियायत थयो देखने ए संरो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व  
 खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर  
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रज्जु प्रणमुं रे पास जिणोसर थंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र दूवा जला,  
 चढ़ते पख रे चंद्र जिसी चढ़ती कला ॥ ( उल्लाखो ) चढ़ती कला  
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री  
 ना अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढ़ी इष्टे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूथो, हुं एकज रे तिण  
 अधिकेरो डुख हुउ ॥ ( उल्लाखो ) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदैं कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुऊने त-  
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीना नवि लहै ॥ ए  
 डुखणी रे पूत्र मुथे तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उल्लाखो ) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरवगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाल्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी  
 तलै नारुथो तिसै हादारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरवित रे रोचै अति आंखया जरी ॥ पन्तौ सुत रे  
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ ( उल्लाखो )  
 वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण  
 कितो, जो कोइ ग्यानी गुरु पवारै पूठियै सांसो इतो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 चंदणने तिसै ॥ सुग देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ ( उल्लाखो ) बालकतणो जव जूप पूठै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो बली  
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठवै जव रोहणी तप आदरथो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तरथो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि ज्ञाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै  
 ॥ तव मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंघे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाखो ) राजाजणी विधि एह जंघे चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( ढाल-वीर सुणो मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, बलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥  
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥



विधसुं पुराक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥  
 सेवा कीजै साधूनी, बलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजै  
 साहमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोषी पूं-  
 ठना, भित लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा,  
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण  
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै,  
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (हाल-धरम करो जिनवर  
 सणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे  
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पाले रे ॥ ५० ११ ॥  
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने  
 रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,  
 दिखया बारम जिन आगे रे ॥ बलि नानाविध तप तपै, धरमतणी  
 भति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल  
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित  
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-  
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे  
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे ( १७२० )  
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु  
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने अया सुप्रज्ञान चित्तनी चिंता  
 हली, श्रीस्तार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्था फली ॥  
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-  
 हात्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन  
 करै, अगै अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

दिक करकै धर्मोपदेश सुनै ( श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः )  
इसका दो दङ्कार गुणना करै, एसैं सात वरस तप करणेंसैं सुख  
शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा, विशेष अधि-  
कार स्तवनसैं जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय  
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ बलिश्  
बांडु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ ज्ञावठ जंजण सेव्यां सुख करै,  
गातां नव निधि आय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै  
सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोमी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनंशासन  
राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशाण डुरित पुलाय ॥  
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो बम्माश ॥  
पांचे कृपा ठ बलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुतर  
माशखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो  
दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइ शि  
वगति जाणियै, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि  
कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रति  
मा वारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोषसैं बेला जिनजीरा जा  
णियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन  
जीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पा  
मिया, पाभ्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जि  
नवर सयल सुखकर अतहि डकर तप करी, संयमसु पाली कर्म  
टाली स्वामी शिव रमणी बरी ॥ सेवक पजणें वीर जिनवर चरण  
वंदित तुमतणा, संसार कूप पनंत राखो आपो स्वामी सुख धणा  
॥ ७ ॥ इति छम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसैं उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस बखतमें संघयण बल पराक्रम के हीनपणोंसैं इससार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोजी छम्मासीके १८० उपवास करणोंसैं जघन्य छम्मासी तपकै फलकों जीव प्राप्त होता हे. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका मुणै, इस स्तवनमें वीरप्रज्ञूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. ( श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः ) इसका २००० गुणनां करै, वीर प्रज्ञूके नामका तीर्थ होय नहां यात्रा करणोंकों जावै, शुद्ध जावना जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी बीजीयै ॥ ए देशो ॥ त्रिचुवन नाथ क तूं धणी, आदि जिनेतर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज पदपंकज सेव रे ॥ त्रिचु० १ ॥ प्रथम जूपाळ प्रभु तूं थयो, इस अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल रे ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आत्मतणा, काल अनादि धिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें दाय्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणयो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरूं, तप विना किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसैं साठ उपवास ते, ते इस पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै कम विना, ते पिण जवि सुविताल रे ॥

त्रि० ४ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रियो अनुसार रे ॥ पम्किं  
मलादिक ज्ञावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ५ ॥ चित्त तं  
माधि शुभ ज्ञावथी, धरे तादरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,  
कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ६ ॥ काल अनादि संसारमें, ज  
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किन  
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरजव पुन्यथी, बलि ल  
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्त्वनी रुचि अइ हे मुजै, हिव मिठ्यो म  
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो  
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार  
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे  
॥ जव२ जे मुऊ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥  
श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर  
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना  
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में युएयो धन दिन  
आजनो मुऊ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि  
नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाथ विजय वि-  
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ वारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थकर श्रीरूपजदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तप  
स्या करी. इस वास्तै जव्यजीव बारै माशी तपस्याका ज्ञाव लायकै  
( ३६० ) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन  
देववंदनादि क्रिया करै, बारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ ( श्री  
रूपजदेवस्वामीनाथायनमः ॥ ) इसका १००० गुणना करै.  
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणोकों जावै. शक्ति माफक  
उद्यापन उन्नव करै. इस तपस्याके प्रसाद जव्यजीवके कज्जी डुख

दौजाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहै ॥ इति बारैमा  
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ डहा ॥ प्रथमुं प्रथम जिनेसरू, श्रुद मने सुखकार ॥  
लबधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रभेयाक  
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मजार ॥ पन्नवणा आवस्थके, वारू लबधि  
विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लबधियां अठावीस ॥ ए  
दिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमें देव अधिकार गाथातणे, लबधिना नाम  
परिणाम सरिषा जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,  
प्रथम ते लबधि बै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मज मूत्र डणव  
समाजाणियै, बीय वप्पोसही लबधि वखाणियै ॥ श्लेष्म डणव  
सारिखो जेहनो, तीजी खेछोसही नाम बै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना  
मैलथी कोठ दूरे हुवै, चोथो जछोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश  
नाख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सब्बोसही ते कही  
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका नाम  
संजिप्पना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लबधि  
ते अबधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए  
चाल ॥ ) दिव आंगुल अठियै ऊणो मानुषहेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतिता जाणे थूल प्रकार, ते रुजू  
मति नामे अठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषहेत्रे संज्ञा  
वंत, पंचेडिय जे बै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥ ९ ॥  
जिण लबधि प्रज्ञावें ऊनी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण  
लबधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खियमें खेह आय, ए लबधि

इग्यारमी आसीविसं कहिवाय ॥ १० ॥ सहू खूखम बादर देखै  
लोका लोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणवर पद ल  
हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण  
॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र  
वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा  
वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत करै मेढ्या जेह सवाद, एहवी  
लहै वाणी नगणीशम परसाद ॥ जणियो नवि जूँ सूर अरथ सुविचा  
र, ते कुछ कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एक पद जणियां आ  
वै पद लख कोरु, इकवीसमी लबधी पयागुसारणी जोरु ॥ एकै  
अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
लहै देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-  
मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
आगमने अधिकार, च० ॥ वारु लबधि विचार ॥ च० ॥ एआं कणी  
॥ १५ ॥ चवद पूरबवर मुनिवरु रे, उपजंना संदेह ॥ रूप नवो रचि  
मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगननी  
रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले  
श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेष सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
रूप ॥ सदगुरु कहै ढावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८  
॥ एकष पात्रे आदमी रे, जीजामै केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम  
हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रासनी  
रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अछवीशमी  
नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या विहुं रे, तेम पुलाक विचार  
॥ जगवतीसूत्रमें जाणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
पन्नवणा आहारनी रे, कल्पसूत्र गणधार ॥ तीनश इकरु मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० १२ ॥ प्रभव्याकरणे सही रे, बाकी ल  
बधां-वीश ॥ साजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥  
च० १३ ॥ ( कलश ) संवत सत्तरैसे ढवीसे मेरुतेरस दिन जलै,  
श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाजलै ॥ वाचना  
चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन  
जणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ १४ ॥ इति १८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठारिस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन  
क्रमसें २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ  
पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसें शक्ति  
मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा  
आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोरु ताभ ॥ ए देशो ॥ जिनवर श्री  
वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री  
गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूर  
ब नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जाषिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा  
य, वरणविस्नुं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व  
उत्पाद १, दूजो अघायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति  
नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥  
॥ ३ ॥ छठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अष्टम गिणो  
ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो  
कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कब्धायण ११, प्राणायु बारमो  
१२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडसार १४ इण नाम,  
चवदे ए कह्या, साख अकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥ ) उत्पाद पूर्व सोहामणो;  
 कोटी पद परिमाण ॥ षट ज्ञाव प्रगट ठै ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव  
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो  
 पूर्व अमायणी, विहुं लाख पद जाण ॥ २ ॥ पद लाख सत्तर जेहनी;  
 संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञाणी तीजै तेह ॥ ३ ॥  
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-  
 नी, सप्तजंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो  
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्य-  
 प्रवाद ठवो कहूं, ज्ञाणुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोमनी,  
 ज्ञाणी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य  
 सुज्ञाव ॥ बढीस पद कोरु जेहना, सूत्रे आण्यो ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म  
 प्रवादतणो द्विवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना,  
 कोनी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं द्विवै, नामे प्रत्याख्या-  
 न ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-  
 शय गुण संयुत ज्ञाणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम  
 सातसै, कोनी वरस लाख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इग्यारमो,  
 बढीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव क-  
 ढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, अप्पन्न लख इग कोमि, प्राण  
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक  
 जे क्रिया, उंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोमनी, तेरमी  
 क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंडु चवदमो, नामे अरथ नि-  
 दाल ॥ पद संख्या इग कोमनी, लाख पचवीस संज्ञाल ॥ १४ ॥  
 लोकप्रत्यय देखण ज्ञाणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सदस अरु  
 तीनसै, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुण-  
 मालाणी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥



( ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल ) सूत्रे गुंथे गणधरा,  
 अरथै अरिदंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम  
 नासै रे ॥ १ ॥ घाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व  
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी, ग्यान जगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै,  
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी,  
 श्री श्रुतज्ञान निधानी रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग  
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेइ ऊजला, गुंहुली सुंदर कीजै रे ॥  
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद  
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,  
 चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अयां, ऊज-  
 मखो दिव कीजै रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरजव लाहो लीजै  
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगला, पूरब नाम प्रमाणो रे ॥ नव-  
 करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव  
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचबी, तत्व  
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति का-  
 षण भेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अकपगति वेदे रे ॥  
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि जणी, आगम वचने जोइ रे ॥  
 ज्ञवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवघ्नमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥  
 ( कलश ) इम सयल सुखकर गन्ध खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए,  
 सौजाग्यसूरि मुखिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै  
 बरस बिहूँ नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुणतां स-  
 यल मनवंबित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदैं पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे. जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे ( २००० ) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरुमें समझके करै, यह तपस्याके करणोंसे ज्ञानावरणादि कर्मका कयोपशम होय, शुद्ध ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेद ॥ बालक दित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेख ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुद्ध परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ( दाल ॥ वीर जिणेश्वर उपदिसै ॥ ए देशी ) कमला जिम कुंरुणपुरै, जुजबल नरपति ज़ीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतरुय फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माशै रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचकणा, रूप गुणे करी रंज्ता रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंज्ता रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदमुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवजायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघामै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा अत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूरियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सः बला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ उहा ॥ मणि तेजै मुनि तरुण्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा-  
 वन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परज्जव तिलक है, कहि  
 बै श्रीमुनिराय ॥ १० ( दाव-ज्जरत नृप जावसुं ए ॥ ए देशो ) ॥  
 मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना  
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परज्जवै ए, इह जव फल निपजाय, करम  
 गति वंकरी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर  
 मल जाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा  
 एयो हे तत्त्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोथ प्रमुख  
 नृप चूंपसुं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै वित जावसुं ए ॥  
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रयण कंण ज  
 ण्या ए ॥ १३ ॥ तिलकसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम  
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि जाविंयै ए, नत्र कहै बोध  
 वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,  
 षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना  
 ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध  
 त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥  
 उद्यापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, मूधै मन साधिंयै  
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त  
 ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए, आयै चरम शरीर, मूज  
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ ( कलश ) श्रीशांति दाता त्रि जगन्नाता जविक  
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो  
 शिवयशं ॥ आग्रमे आखै सूरिय साखै सुगुरु जावै सुण थया, शुद्ध  
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीरुद्रदेवस्वामीके ४ उपवास करै, जब  
( श्री रुद्रदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना  
करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब ( श्रीमहावी-  
रस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै, और श्री  
अजितनाथस्वामीको आद लेकै ( २२ ) बाईस जगवंतोंका बाईस  
उपवास करे, जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना  
करे, तब सर्व विधि स्तवन सुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर प्राणियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि  
प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, श्याथी पातिकं जा-  
य ॥ ज० वी० १ ॥ कोरु वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै  
फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें  
न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो  
पायो मद्धिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आ-  
षाढनूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कषाय ठे मूलगा  
रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे  
लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे  
रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे  
लाल, ए धारो जिनवर दाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंघ्रिलनो फल बहु  
कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां जा  
वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले  
तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै  
रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण ज्ञो-  
गवे रे लाल, निश्चै सुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार जेद करणोंसे १६ होते हैं, इनोंकों दूर करणोंको प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसे १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणोंसे यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शीलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास वा एकासणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढ़नेवालोंकों साहाय करै, अपनी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करै ( प्रणमुं श्रीगुरु पाय ) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, ऐसे तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणोंसे पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगण चढ़ावै, इस तपस्याके करणोंसे मुखपया दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ति होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- |                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| १ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः   | २ श्रीसुयगमांगजीसूत्रायनमः   |
| ३ श्रीगणांगजीसूत्रायनमः     | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०     |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः     | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा० |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०     | ८ श्रीअंतगदशाजीसूत्रा०       |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्नप्रकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥   |                              |

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

- |                         |                             |
|-------------------------|-----------------------------|
| १ श्रीउववाइजीसूत्रायनमः | २ श्रीराघपत्तैलीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|-----------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय० ४ श्रीपद्मवर्णाजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीजंबूद्वीपपद्मन्तरीसूत्राय० ६ श्रीचंदपद्मन्तरीसूत्रायनमः  
 ७ श्रीसूरपद्मन्तरीसूत्राय० ८ श्रीकृष्णयात्रीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीरूप्यवर्णिसियाजीसूत्राय० १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः  
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्दिदत्ताजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारहेदसूत्रायनमः २ श्रीवृद्धकल्पजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीदत्ताश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पर्यन्ता नाम गुणनो ॥

- १ चोत्तरणपर्यन्ताजीसूत्रायन० २ संथारपर्यन्ताजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीतदुलपर्यन्ताजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदविज्जियासूत्रायनमः  
 ५ श्रीगणविज्जियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्जियासूत्रायनमः  
 ७ श्रीवीरश्रुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगोत्राचारजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय० १० श्रीमहापञ्चकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०  
 ३ श्रीनुधनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०  
 ५ श्रीअनुयोगहारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थयति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ  
 प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी वहि गणपति  
 रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥  
 ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-  
 स्तरै, नय निहोष विचार ॥ ३ ॥ दुषम काले दुर्जितसै, जूले बा-  
 रम अंग ॥ कंठ पावसै लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम  
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषमें अथ मिलै, आगम  
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥  
 ( दाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी ) ॥ आचारांग पहि-  
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअठै जी,  
 पापंभी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा  
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस बत्तीस जल प्रश्नो  
 जी, जगवई अंग विद्वात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,  
 दस आचरं व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर-  
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगुरु केवली जे थया जी, वरणन अष्टम  
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥  
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल  
 ज्ञाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-  
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ष संख्याते पद हुवे जी,  
 ठाण डगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोशिक  
 अंबरु रूप ॥ वर्षान नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूप ॥  
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इय  
 ज्ञाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो  
 अजिगम सही जो, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो  
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणमें जाणज्यो  
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम अकी गुण  
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नची बिहुं जाण ॥ कप्पिया  
 कप्पवर्धिसियाजी, पुष्पिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुष्पचूलिया  
 जाणीये जी, वन्दिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो  
 जी, सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ ( दाल २ ॥ खयाली जाल

અણવટ રંગ લાગો ॥ એ દેશી) ॥ બેદતણા પ્રાયશ્ચિતનાં જી, બેદ ઠાં એ  
 જાણ ॥ વૃદ્ધકલ્પ વિવહારમેં જી, જ્ઞાણ્યો જગવંત જ્ઞાન ॥ સુજ્ઞા  
 ની લાલ્લ ઇણસું નિત રાચો ॥ રાચો૨ રે જીવિક દિલદાર, ઇણસું  
 નિત રાચો ॥ સુજ્ઞા૦ ૧ ॥ મહાનિશીથે જ્ઞાણિયો જી, જિનપૂજા  
 બિહું જ્ઞેદ ॥ શ્રાવક ઇચ્છે જ્ઞાવસૂં જી, મુનિવર જ્ઞાવ ઝમેદ ॥ સુ  
 જ્ઞા૦ ૨ ॥ જીતકલ્પ વલિ નિસીત બે જી, ઠર દશાશ્રુતસ્કંધ ॥  
 દશ પયજ્ઞા જાણિયે જી, ચૌસરણ સંચાર પ્રબંધ ॥ સુ૦ ૩ ॥ તંડ  
 લવથાલી ચંદાવિજ્ઞયા, ગણવિજ્ઞા અજિધાન ॥ દેવવિજ્ઞયા વીરધુવો  
 જી, ગઢાચાર નિધાન ॥ સુ૦ ૪ ॥ જ્યોતિકરંન, મહા પચ્ચસ્કાણ  
 જી, ચ્યાર સૂત્રઢે મૂલ ॥ શ્રાવકદશમીકાલિક જી, ઉત્તરધ્યયન  
 અમૂલ ॥ સુ૦ ૫ ॥ ચ્યારે અનુયોગે કરી જી, રચના સૂત્રે જાણ ॥  
 તેદ ન્યાય નિકેપથી જી, અનુયોગદ્વાર પ્રધાન ॥ સૂ૦ ૬ ॥ દ્રવ્યાનુ  
 જોગ ઠાં દ્રવ્યની જી, ચર્ચા વિધિ વિસ્તાર ॥ ચરણ કરણ અનુયો  
 ગમેં જી, મુનિ શ્રાવક આચાર ॥ સૂ૦ ૭ ॥ ગણતાનુયોગ ગણના  
 કરી જી, પૃથ્વી નિરી વિમાણ ॥ વર્ગમૂલ ઘનમૂલથી જી, જાણો  
 ચતુરસુજાણ ॥ સુ૦ ૮ ॥ ધર્મકથા અનુયોગમેં જી, ધર્મકથા દૃષ્ટાંત  
 ॥ એ ચ્યારોં વિસ્તારીયા જી, પેંતાલીત સિદ્ધાંત ॥ સુ૦ ૯ ॥ (દાલ  
 તીસરી ॥ સાંગાનેર વિરાજે ॥ એ દેશી ) ॥ સુણ૨ ગોતમવાણી,  
 હમ વીર વદે ગુણઘાણી રે, જીવિયાં આગમસું મન લાવો ॥ મન  
 કલ્પિત વાત મ ગાવો રે ॥ જ૦ આ૦ ૧ ॥ નંદીસૂત્ર ચિરનંદો, યામેં  
 પંચજ્ઞાનને વંદો રે ॥ જ૦ આ૦ ॥ જ્ઞાનના જ્ઞેદ વચ્ચાણ્યા, મતિ  
 અઘાવીસે આણ્યા રે ॥ જ૦ આ૦ ૨ ॥ શ્રુત ચવદે વીસાં જ્ઞેદે, એ મિ  
 ણ્યામતને બેદે રે ॥ જ૦ આ૦ ॥ અવધિજ્ઞ અસંખ્ય પ્રકારે, મનપર્ય  
 વ હુય જ્ઞેદ ઘારે રે ॥ જ૦ આ૦ ૩ ॥ કેવલ એક પ્રકારે, એ સ્વ  
 વિધિ નંદી જાસે રે ॥ જ૦ આ૦ ॥ એતો સદુ આગમની નૂંદ, સ્વા-



ह्लाद गंगनी बूंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने  
 नमूं निरुत्तीकार रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअज्ञय  
 देव बलिहारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि  
 कने सिर नामी रे ॥ ज० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि  
 वदार ठै साखी रे ॥ ज० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन वे केइ, अपवाद  
 वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंजित स  
 गला साधो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ ( ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए  
 ॥ ए देशी ) ॥ पैतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो  
 दित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपशी कर्म  
 ज्ञाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति उते उपवास ए, आंबिल निविशी उ  
 लास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए  
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक  
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ नितंक ए ॥ ३ ॥ उजमणो  
 दित चित करै ए, गुरु ज्ञाति चितसुं आदरे ए ॥ ज्ञाति करै सादमीतणी  
 ए, जै पढय पढावै ते जणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,  
 तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथा  
 लदै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ ( कलश ) शुद्ध नंद सर । नधि चंद्र  
 वरषै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकोर सुंदर वृद्धखरतर  
 गण घणे ॥ गणधार कीर्ति रुदि पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ  
 म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयशकर ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै, ११  
 दिन उपवास वा एकासणा करै, जिस दिन जो गणधर सादारा  
 लका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीब्रह्मज्जुतिगणधराय नमः २ श्रीअग्निज्जुतिगणधराय नमः

- ३ श्रीवायुजूतिगणधरायनमः      ४ श्रीव्यक्तजूतिगणधरायनमः  
 ५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय०      ६ श्रीमंजितस्वामीगणधराय०  
 ७ श्रीमोक्षपूत्रजीगणधरायनमः      ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०  
 ९ श्रीअचलजीगणधरायनमः      १० श्रीमेतार्थजीगणधरायनमः  
 ११ श्रीप्रज्ञवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य, जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान दांडसांगीके रचना करणेवाले ज्ञेय, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै, गणधरपद्धती आराधना करै, गोतमरास सुणो, पूर्ण होणोसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी जक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी बढल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साधिया करै (नभंतसामंत) यह गाथा पढ़के शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावदो पन्तिकमे, एक लोगस्तका काउसग करै, पार कै प्रगट लोगस्त कहै, नीचा वैठके मुंहपत्ती पहिले है, दो बांदणा देवै, स्थापनाजी हो खमासमण देई (जगवान अमुक तप गइलत्थं चेश्यं वंदावेदं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमो-नुषां इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्ननु० कह ४ शुई कहै, चोथी गाथा कहकै नीचा वैठके एमोनुषां कहै, फेर खमा होके (श्रीज्ञांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमि काउसगं अन्ननु०) कहकै १ लोगस्तका काउसग करै, पार कै नमोर्हतसिद्ध० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ स्त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाञ्जय-र्चितां ह्ये ॥ १ ॥ यह शुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थं करेमिकाउसगं अन्नत्सु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग करै, शुई पढ़ै, (शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिदिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषा,

येषां शांतिर्गृहे २ ॥ १ ॥ पीठे श्रुतदेवता की क्षेत्रदेवता की जुवनदेवता-  
 की स्तुति काउसग एक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीठे  
 शासनदेवताका काउसग एक नवकारका करे (यापातिशासनं जेने,  
 सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साजिप्रेतसमृद्धर्थ, जूयाञ्चासनदेवता ॥ १ ॥ )  
 पीठे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थ करेमि काउसगं अन्नहु०  
 एक नवकारका काउसग करै, पार कै (श्रीशक्रप्रमुखाय क्ता, जिन-  
 शासनसंस्थिताः ॥ देवान् देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षत्वपायतः) यह  
 भुई कहकै नीचा बैठके नमोत्पुणं कहे, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन  
 करै. फेर खमासमण देके (जगवन् अमुक तप गहणठं करेमि  
 काउसगं) एक लोगस्सका काउसग करै, पार के प्रगट लोगस्स  
 कहे, खमासमण देके १ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके  
 (इच्छकार जगवन् अमुक तप ग्रहण दंरुक उच्चरावो जी). गुरु कहे  
 (उच्चरावेमो) पीठे (अहसंजंते तु ह्याणं समीवे अमुकतवं वपसं पञ्जा-  
 नाणं विहरामि ॥ तंजहा दवुं कालउं जावउं दवुंणं अमुकतवं  
 खिचउंणं इच्छावा अन्नदवा कालउंणं जावपरिमाणं जावउंणं जाव-  
 गहेणं नगहिज्जामि जावउलेणं नगहिज्जामि सन्निवाएणं नज्जविज्जामि  
 जावअस्सेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-  
 रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नदवायाजियोगेणं गणाजियोगेणं बलाजि  
 योगेणं देवाजियोगेणं गुरुनिग्गहेणं विच्छेकंतारेणं अन्नत्थणाजोगेणं  
 सदस्सागारेणं महत्तरागारेणं सधसमादिवत्तियागारेणं वोत्तरामि ॥)  
 जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ बेर यह  
 पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समकै तीन वार यह  
 पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहे ( इत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुज्जयेणं सम्मं-  
 धारणीयं गुरुगुणेहिं बुद्धाहि नित्थारगपारगाहोहि ) एसो गुरु कहे.  
 पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नहि होय.

तो आप मुखे करै, इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करै इरियावही पन्निक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पन्निक्कै २ वांदणा देवै ( इच्छाकारेण संदिस्तद् जगवन् तुष्टेअम्हं अमुक तप पारावेह ) गुरु कहे ( पारावेमो ) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्तद् जगवन् अमुक तप निस्कमणहं कोरमि काउसगं अन्नबू० कहके १ नवकारका काउसग करै, स्तु-तिकी गाथा कहै, पीठै एमोन्नूणं कहै, वेठकै जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायार्यै कर मिच्छामिडुक्कनं. और ज्ञानज्जक्ति इव्यसैं जावसैं किया होय सो प्रमाण फल दायक होला. गुरु कहे ( नि-न्नारगपारगाहोह ) पीठे पञ्चस्काण करै, अमुक तप आलोयण नि-मिचं कोरमि काउसगं अन्नबू० कहके ४ लोगस्तका काउसग करै, अगट लोगस्त कहै, पीठै उपगरण पात्र जक्त पानादिकसैं साधुज्ज-क्ति करै, अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढेवाले तथा पढा-येवाले विद्यागुरुकी जक्ति करै, सादमी वञ्चल करै, पहरावणी करै, पीठे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, वैठी परखद वारजो ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणोरे श्रावक उपधान वहा विन, किम सुजै नवकार जी ॥ उच-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह ज्ञायो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिय, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीते, सुविहित गह आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वहा विन किरिया, तुष्ट अलप फल जाण जी, जे

उपधानं वहाँ नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 तप उपधान कह्यो सिद्धते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-  
 नी आण विराधै, जमस्यै जवर तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्घ्य्या  
 घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता  
 आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक धेवरने  
 खामे जरियो, अतिघणो मीठो आय जी ॥ एक श्रावक उपधान वेह  
 तो, धन १ ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ ( टाल २ ) ॥ नवकारतणो  
 तप पहिलो बीसम जाण, इरियावहीनो तप बीजो बीस  
 म आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, बारे उपवासै  
 गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रोसम त्रीजो एमोबुणं उपधान,  
 त्रिण वायण उगणोस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो  
 थो चोकम एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो  
 लोगस्त तप अठावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि  
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप ढो उक्कम सार, साढात्रण उपवासै  
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म  
 ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाण करै बलि  
 गुरुमुख सरस रसाल, गङ्गनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥  
 माल पहरण अवसर आणी मन उबरंग, घरं सारु वारु खरुचै धन  
 बहु जंग ॥ अति उन्नव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा  
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ ( टाल ३ ॥ ) ए साते उपधान,  
 विधिसों जे वदै, ते सूधी किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,  
 जीव जतन करइ, पूंजि २ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै  
 क्रोध कषाय, इरु १ इसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥  
 नाणे घरनो मोह, उरुछी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥  
 पंदुर सीम सिझाय, करि पोरसि जणी, उंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन माँहि जाँवै एम, धनर ए दिन, नरजव माँहि सकल सँही ए  
॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती बहै, पहिरै माख सोहामणी  
ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल वायक, करम निर्जरा अति-  
घशो ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध  
नाटक पमै ए ॥ लाजै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती  
पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलश ) इम वीर जिनवर जुवन  
दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-  
य जैन आनंदणो ॥ जिनचंद जुगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी  
सरो, तसु सोस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥  
इति सात उपधान गंभीर स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्याह्न समें सु-  
हागणस्त्री चांदी आदिके धालके अंदर कुंकुमका साग्रिया करके  
ऊपर चावलौका करै, पांच सुपारी १ नालेर घरके माला पथराके  
सुहागस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीठै सब संघ समेत गीत  
गाते वाजित्र वाजते गुरु पाल आवै, सबवस्त्री गुंढली करै, छर  
स्त्रियां गुंढली गावै, पीठै गुरु उर्ध्व सासलें वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर  
वासकेपलें माला प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ उँहँणमोअरिहंताणं ।  
उँहँणमोसिद्धाणं । उँहँणमोआयरियाणं । उँहँणमोउवज्ञायाणं ।  
उँहँणमोएसबसाहूणं । उँहँणमोअरहन्तं जगवन्तं वद्धमाणसा-  
मिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबहसिद्धिए उँहँ षः षः षः  
स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठै वाजित्र वाजते स्वस्थानके  
आवै, वाजेठ पर आल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,  
श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठै मालाग्राहक प्रज्ञात समें प्रति-  
क्रमण करके पमिलेदश देववंदनादि करके जिनपूजा करै, पीठै

मुहुर्त्तकी बखत वाजित्रादि उच्च संघ समेत गुरु पास आवै, पात्र श्रीफल सेक इव्य हाथमें लेके पहिले जो नांदकी थापना करी दे-नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो बनी ठवली पर मोक्षीसे खपेटके आवे सो उस नांदके ज्यारों खूणो पर ज्यार साधिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेख उर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साथियों पर अन्ने विदामादि फल चढ़ावै, पीबै मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पनिकमे. पीबै श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पनिलेहै, फेर खमासमण देके इच्छाकारजगवन् तुझे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदमणि वासनिकेप करो. तब गुरु वासकेप करै. पीबै फेर खमासमण देई तुझे अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेद, श्रावक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथमखमासण देके इच्छा० जगवन् चैत्यवंदनकरुं. गुरु कहे कोहः. पीबै गुरु चैत्यवंदन बोलै. श्रावक एमोहुणं कहै अरिहंत चैइयाणं० कहके एक नवकारका काउसग करै, नमोर्दत्तुस्तिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अरिहंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्पेईसकला जेहि । रइंसासइसोच्यते ॥ १ ॥ पीबै लोगस्सउज्झो० सबलोए० वंदणव० अन्नहु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायइंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । ज्वतोऽजिनापातु ॥ २ ॥ पीबै पुक्करवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतस्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुत्तिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी चिंविद्या । नद्यास्याज्जेतगीज्जीयात् ॥ ३ ॥ पीबै सिद्धाणंबुद्धाणं० त तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसगं वंदणव० अन्नहु० कहके एक लोगस्सका काउसग करै, नमोर्दत्तु० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ।  
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० व०  
 एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजों  
 पांगासदास्फुरडुपांगा । ज्वतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥  
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काञ्चसगं अन्नबु० कहके  
 १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वंदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु  
 तंगमेबु । रंगतरंगमितिवर । तरशीस्तुज्ज्वनमश्तिहः ॥ ६ ॥ ततः  
 शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥  
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हृतमिहसमिद्धी-  
 तत्कृते । स्युशासनेदेवताज्वतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावञ्चकरा-  
 णं शंतिकराणं सम्मदिष्टिमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-  
 ञ्सग्य स्तुति० । संघत्रयेगुरुगुणोपनिधोसुवैया । ब्रत्यादिकृत्यकरणैक  
 निवद्धकृता । तैशांत्येसद्वज्रवंतुसुरासुरीभिः । सष्टृष्टयोनिखिलविघ्नं  
 विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोर्हत्सं जावन्तिचे०  
 नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहै ॥ उमितिनमो जगवत्त । अरिदंत  
 सिद्धाचारियज्वजाए । वरसबसाहूमुखिसंघ । धम्मतिज्जयपवयणं  
 स्त ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतद्वज्रगवइ । सुयदेवयाइस्तुहयाए । सिव  
 संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इदागणीयमनेरइया ।  
 वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मविधसुदिसाणपाळा  
 णं ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासंवाणंतहयपंचण्हं । तद्वलोगपा-  
 लयाणं । सुराई गहाणयनवन्दं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं । मझमिणंचेव-  
 धम्मणुणणं । सिद्धिमिधंगञ्जं । जिणोणंनवकारज्जणियं ॥ ५ ॥ इति  
 स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीठै जगवान आगे पंरुदा करके माळायाह  
 कं गुरुकूं द्वादशार्चन वंदनार्थे वांटे, पीठै खमा होके कहै इञ्जकार  
 ज० तुझे अहं संघपति माळाआरोदावणी उदैसावणी नंदीसुत्र



संज्ञावाणी कान्तसंग करावो, गुरु कहे करेह, इष्टं, संघपतिमाला  
 आरो० उद्दे० करेमि कान्तसंगं अन्नहु० कहके ? लोगस्तका का०  
 प्रगट लोगस्त कहे, गुरुजी कान्तसंग करै, पीवै मालायादक खमा  
 समण देह इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञावावो, तब गुरु खमा  
 होकर हाथमें वासकैप लेके तीन नवकार गुणवै, नित्यारगपार  
 गाहोह कहके मस्तक पर वासकैप करै, पीवै श्रावक खमासमण  
 देके इच्छा० संघपति माला उद्देसन्, गुरु कहे उद्देसन्, फेर श्रावक  
 इच्छामि० इच्छाका० किंजयामी, गुरु कहे वंदिसापवेह, खमासमण देके  
 इष्टं तुहो अहं संघपति मालानिष्ठ इच्छामो अणुसर्दि तदिष्टि२ ख  
 मासमणायं इत्येषं सुत्तेषं अत्येषं तदुत्तयेषं जोगकरीजाहि गुरु  
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोह, फेर खमासमण देई तुह्माणं  
 पवेइए संदिसइ साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह, पीवै खमासमण  
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासकैप  
 चढावै, गुरु ? प्रदक्षिणा देवे, पीवै मालायादक मूहपत्ती पनिलेहै,  
 खमासमण देके इच्छाका० तुह्माणंपवेइयं संदिसइजगवन् कान्तसंगं  
 करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुहो अहं संघपति माला उद्दे  
 सामणी आरोहावणी करेमिकान्तसंगं अन्नहु० कहके ? लोगस्तको  
 कान्तसंग प्रगट लोगस्त कहै पीवै खमासमण देकै वेसणो संदिसाउं,  
 हूजै खमासणो वेसणो ठाउं, पीवै खमासमण देके जो विधि करतां  
 अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायायें करी मि०  
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीवै मालायादक जगवानके नव अंग नव रु-  
 पिया मोहर वगेरे चढ़ाके नमस्कार करै, मुहुर्त्तकी वखत मंदरजीके  
 बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आयके,  
 खमा रहे, पीवै मालायादक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव  
 रुपिया मोहर आदि ज्ञान तिमिते जेट धरै, पीवै गुरु उर्ध्वभासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसकों माला पहिरायेवाला यथाशक्ति पहरामणा करै. माला पहिरायेवाला उर्ध्व-श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सञ्चित कुशीलादिकका गुरु पासे पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढ़ाये-की धजा सो संघपति आलमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-दक्षणा देकर गुरु पास वासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढ़ावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधमीं वात्स-क्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुठ तो शास्त्रोके लिखतसें कुठएक दे-देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसें एक घीहीज लेता हे उर विकृती नहीं लेता १, उप-धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोमेंसें एकही नीवीता लेणा का-रणयोगसें खान वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इव्यादिक नहीं लेणा ३, घी तेलका वयास्था साग ज्री नहीं लेणा धूंगारथा हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापम सीरा वने वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नहीं ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, जोजन करणेकी जगा जागू वगेरे देखेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंनित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं वो सब जोगाजोगकीदोनों वखत पन्निखेदणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो आली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब जोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पन्निखेदणाकी वखतही पन्निखेदणा दुसरी वखत अन्यदा नहीं ११, कदाचित् द्वार कुंठलदिक गद्दणा अपणे

शरीरसे उतारके अंपणें घरादिकमें रखा होय तब बिना उपधान-  
 वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसे  
 रातको दिनेका नही वह उपधानवाहीकूं देवै उर वोही स्त्री प्रजात  
 समें उनके कहें मुजब ठिकाणें धरदेवै १९, उपधानमें सर्व वस्त्र  
 आप अथवा मालकणके हाथसे पमिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब  
 क्रिया अनुष्ठानादिक आदेश निदेशादिक मालकणके आदेशसे शुद्ध  
 होय १४, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मालकण जी दोनुं वस्त्रों  
 पमिकमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात बेर देव वादे तब शुद्ध  
 होय अन्यथा नही १५, रजस्वलीके तीन दिन तपमें नही गिणे  
 जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी  
 सातमं अठमं नवमं दिन तीन तपस्यामें नही गिणे जाय १७,  
 प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पञ्चस्काण करै पीछे  
 क्रिया करती वस्त्रें गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल  
 २ नीवी ३ अथवा एकसिलेका ४ करै १८, पञ्चस्काण पारती  
 वस्त्रें पहली नवकारसी पारै पीछे उपवासादिक पारै १९, पहले  
 ही उपधान तप ग्रहण करणेके दोनो दिन नदीके आनवरसे बरी  
 हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इत  
 वास्ते तीसरे पहरकी पमिलेहण किये बाद सर्वांगरणोंकूं पमि-  
 लेहके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरु-  
 के पास आथके इरियांवही पमिलेहके पोषध वपुन सामायक लेके  
 वस्त्र पमिलेहणा उर अंग पमिलेहणा करै, पीछे मुहपत्ती पमिले-  
 हके (उहीपमिलेहणसंदिस्तान्ज उहीपमिलेहणकरं) ऐसे खमासण  
 दोय देवै पीछे उव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसको  
 क्रम ऐसे हैं बहुवेळसंदिस्तान्ज १ बहुवेळकरं वैसणोसंदि० वैसणो-  
 गाउं० सिज्ञायसं० सिज्ञायक० पांगरणोसं० पांगरणोपमिगहु

कढासणोसं० कढासणोपनिगडूं) एवं १० ॥ ११, पीठै बंदन दिना  
बाद सुख तप पृष्ठा २२, सांजकूं जी गद्दी किया करणी लेकिन  
इतना विशेष हे पट पनिलेहणा उर अंग पनिलेहणा तो करै अंतु  
उपधि पनिलेहणा नही करै, पीठै गुरुवंदन ठव दिये वाद खमासमस  
दस देवे (उद्दीपनिलेहणासंदिस्सा० उद्दीपनिलेहणाकरूं सिन्हायसं०  
सिन्हायक० वसैणोसंदिस्सा० वसैणोवाठं) ब्राह्मी पहलीकी तरे १२,  
न्यास पनिलेहणा होणेतें पाकीबंदना सुखतपपूजना मयैत किया  
सब करदेना १३, माला पदरणेमें सांजकूं माला मंत्रायके अपने  
पूर रात्रीजागरण करै प्रजातसमें आचार्य पास माला पदरणी  
तिसके बाद दिन दश तक इशाहिका करणी उद्दीपना नही  
लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निर-  
रंजी होकर रहै २४, तजी उपधान उत्कृष्ट विधितें बहना, उसके  
अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास आमल  
निवी एकासणा करै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन  
दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्तव्यता समयसुंदरी-  
प्राध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत ज्ञापा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान बहोवाला बारे  
उपवास अथवा चौबीस आंग्रिल ३५ नीवी अमतालीस एकासणा  
करके ११ उपवासी पैठ पूर कर पीठै पांच अध्ययनकी वाचना  
नमो अरिहंताणसैं लेके नमो लोएसवसादूण तककी १ वाचना  
एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो-  
कारो १, सबपावप्पणासणो२, मंगलाणंचसवेसिं पढमहवमंगल ॥ एवं  
३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ  
अध्ययनोंही एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ठवतो आंग्रिल करै,

फेर तैला करे, तैलेके पारणो आंबिल करै, फेर तैला करै, फेर आंबिल करे, फेर तैला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तैला भिलाणोसे उपवास १२ जयें, यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पोसा २० बीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला बीसमतप २०॥ अब दूसरा श्रियावहिका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें जी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीठै इच्छाकरेणसंदिस्तहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें लेकर ठामिकाउसगं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तैला करके लेवै ॥ श्रियावहिया श्रुतस्कंधका तप बीसत नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा जावारिहंतका तीसरा उपधान जगणीस उपवासीकी पैठूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तैला करै पीठै नमोबुणसे लेकर गंधद्वीण तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणसें लेकर धम्मवारचानरतचक्रवटीण तक दूसरी वाचना लेवै २, पीठै सोले आंबिल करके अप्पनिहयवरणाणसें लेकर सवेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३, यह तीसरा उपधान नमोबुणका पैत्रीसरु नामका जिसमें उपवास १८ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अय चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै, अरिहंतचेइयाण इहांसें लेकर वंदणवत्तिथाए अन्नउत्तसी-एणं अप्पाणंकोत्तिरामि तक १ वाचना लेणी, यह आपनारिहंतको

सौथा उपधान चन्द्रकर्म नामका जिसमें पोसा ४ उपवास हैं ॥  
 अर्थात् ॥ ॥ नामारिहत चन्द्रवीसत्येका पदले तैला करै, पीठै  
 लोगस्तज्जोयगरे इहांसे लेके चन्द्रवीसपिकेवली तक पदली वाचनां  
 लेवै, फेर बारे आंबिल करके उत्तमजजियंचवंदे इहांसे लेकर पांस-  
 तद्वैद्यमाणच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तरे आंबिल करके एवम-  
 एअजित्युआसे लेकर सिद्धासिद्धिमनदिसंतु तक तीसरी वाचनां  
 लेवै, ए नामारिहत चन्द्रवीसत्येका अर्धावीसमनाम तप विधिसु व-  
 हंतां दिन २० पोसा २० उपवास सादापनरे एकांतर करै, अवि-  
 धि करतां दिन अर्धाईस पोसा २० उपवास सादासतरे ॥ ५ ॥

सुत्रार्थश्रुतस्कंध पदली १ उपवास पीठै ५ आंबिल पीठै पुस्कर-  
 धरदीवहेसे लेकर सुयस्तज्जगवतकरेमिकावसगं तक एक वाचनां  
 देणी, यह उठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम उक्कन पोसा ६ उपवास  
 सादातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान  
 पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीठै सिद्धार्थबुद्धार्थसे ले-  
 के तारेइनरिवनारिवा तक एक वाचना देणी, यह सातमा उपधान  
 मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अथ उपधानं तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वदेत आवक अथवा वदेत आवकएया उपधान  
 वदे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंजरासी  
 हे, अगर एक आवक अथवा एकही आवकशी उपधान वदे तो  
 अपणे नामसे चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांजकूं वाचनाचार्य  
 के पास आयके इरियावही पनिकमके खमासमण देके कहे (अमुके  
 उपधान तपे पवेतह) गुरु कहे (पवेतामो, नवकारसी करणा अंग  
 पनिलेइण संदिस्ताणा) तब उपधानवाही कहे (तदति) इहां इमां  
 अमण दिथे वाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा जोजन

करो व्यवस्था नहीं है, अथ किसी ज़ी कारण करके सांजकूं खमासण नहीं दिया होय तो तब पन्तिकमणोके वखतसे पहली पिठली रातकूं ज़ी खमासण देखा काल वखत पन्तिकमणा करणा नवकारसीका पञ्चस्काण मालकण पास करणा पीणै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप ज़ी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नहीं हे. तिसके बाद प्रजातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीणै दो वांदणा देके पञ्चस्काण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृष्ठा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिदेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवंउस्किवह) गुरु कहै (उस्किवामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं काउसगं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उस्केवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकाउसगं अन्नउससिएणं इत्यादि काउसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चितवै, पार के प्रगटलोगस्त कहे, पीणै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उस्के वावणियं चेइयाइवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, गुरु कहै करेमो. पीणै वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. ऐसे सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नहीं आपे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जो उपधान वेहे उसका नाम मोक्षारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चस्काण कर इरियावही. पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिवेदके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि का. उत्सर्गं अन्नतू० कहके काउसर्ग सागरवरगंजीरा तक लोगस्स विचारे, पारके प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह प हिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेद, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेद, करावेमो. पीठै गुरु वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ठांककर अर्द्धवनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिडुक्कं एत्ते सब जगे वाचनान्जलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांजकूं चोविहार करके अथवा प्रज्ञातसमें इरियावही पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिवेदके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कदै-इच्छाकारेण तुझे अम्हं अमुक तवंनिस्किवद, गुरु कहे निस्किवामो. फेर खमासण देके कहे-इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्किवणञ्जं का. उत्सर्गं करावेद, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निस्किवणञ्जं करेमि काउसर्गं अन्नतू० कहके एक नवकारका काउसर्ग करके खमासण देवै, अमुक तप निस्किवणञ्जं चेइयाइ वंदावेद. वंदावेमो गुरु कदै. पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ पडिपुष्पा विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रज्ञातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इत्त



घास्ते मुद्गपत्नी पन्निखेदके वंदन अब देवे ( दो वादणा देवे इसी कूं अब वंदन कहतै दे ) गुरुके साथ पन्निक्मणा किया होय तो वा-  
दिणा दोयही देवे, पीबै गुरु कहे पवेयणं पवेद एसा कहके कहे प  
रुपुसो विगंय पारणयं करेदत्ति, पीबै अपनी इहानुसार पञ्चकाण-  
करे पीबै गुरुके सामने कहे उपधानमें अज्जति आसातना करी  
होय तस्त मिहामिडुकसं ॥ इति ॥

॥ अथ समाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरुकी  
आज्ञासैं श्रियावही पन्निक्मके आगमन आलोचकर पोसा साम्रायक  
लेके दोय खमासणपूर्वक पन्निखेदणा तर अंगपन्निखेदणा करै, पीबै  
मुद्गपत्नी पन्निखेदके पहिले खमासणसैं उही पन्निखेदणसैं दिस्ता एमि,  
दूसरी खमासण देके उही पन्निखेदण करूं, पीबै मुद्गपत्नी पन्निखेदके गु-  
कूं अब वंदन देवे पीबै गुरु कहे—पवेयणं पवेयद, उपधानवाही कहे,  
इहाम् अमुक उपधान निमित्तं तिरुंदवातवंकरावेद. गुरु कहे उप-  
घास्ते आंवले तिरुवेति एकाशणे, एसा कहे. पीबै दश खमासणसैं  
अनुक्रमसैं कहे—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं  
संदिस्तावेमि ३, वइसणं गाएमि ४, सज्जायंतं देस्तावेमि ५, सज्जा-  
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्तानुं ७, पांगरणोपनिग्गहूं ८, कडासणो-  
संदिस्तानुं ९, कडासणोपनिग्गहूं १०. पीबै मुद्गपत्नी पन्निखेदके दो  
वादिणा देवे. गुरु कहे सुखतप, उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥  
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्निखेदणा जये वाद  
आपनाके आगे मालकणीके हुकमसैं श्रियावही पन्निक्मके पहिले  
खमासणसैं पन्निखेदण करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसदहाला  
प्रमाज्जु २, एसा कहके मुद्गपत्नी पन्निखेदे, एसैं दो खमासण देखे-  
पूर्वक अंग पन्निखेदणा तर मुद्गपत्नी पन्निखेदे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट ( अर्थात् कण्ठदोरा जाणना ) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहले वस्त्र पहिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पहिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकत्री वस्त्र नहीं पहिलेहे, पीठे गुरु पास आयके इरियावही पम्निक्रमके पहिलेहणा १, अंगपम्निलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीठे सिद्धायसंदिस्ताएमि सिद्धायंकरेमि आठ नवकार गुणो. पीठे मुहपत्ती पहिलेहके ठव वांदशां देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चक्राण कर दस खमा सण अनुक्रमसँ इस मुजब देवे—उहीपम्निलेहणासंदिस्तां १, उही पम्निलेहणाकरं २, सिद्धायसंदिस्तां ३, सिद्धायकरं ४, बइसणों संदिस्तां ५, वैसणोठां ६, कठासणोसंदिस्तां ७, कठासणोप म्निगहुं ८, पांगरणोसंदिस्तां ९, पांगरणोपम्निगहुं १०. पीठे मुह पत्ती पहिलेहके दो वांदशा देकर सुखतप पूवै, पीठे सर्वोपंगरण पहिलेहे, मातृका ( पावसिया ) प्रमुख पहिलेहै, तथा जिस दिन भोजन करै उस दिन पूरा पहरकी पहिलेहणाकी वखत आली क टोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पहिलेहै, उपवासके दिन नहीं पहिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपम्निक्रम णामें असिझाईका काउसग नही करे तो आवती पक्की तैक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ ज्ञी गुण्या नही सूजै. इस वास्ते असिझाईमें ज्ञी असिझाईका काउसग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूठा तब एसाही जबाब दिया 'योगारंजकी यह विधी हे ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्रिपेः । वारेज्जोमं शनिंविना ॥ आद्याट्ठनंतपोनंद्या । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुद्दपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपम्निहेहा ॥ दंने  
पत्तेसोलस । कप्पेणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु  
कंबलतइयचेवसंधारे ॥ कढासणेअठारस । जपेदंनेअपंनेव ॥ २ ॥ इति ॥  
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणउववासायाम । अठयंकुणहअठमंअते ॥  
नवकारउवहाणं । इत्तियमितंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कउयंमितइएणं ।  
अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरेहंतचेइयउए । चउत्थमायामतिअर्ग  
व ॥ २ ॥ चउवीसउएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नार  
उयंमिचउउं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसउववासा । ए  
गासीअंबिलाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥  
४ ॥ बारसवारसएगो, पणवीसअठइपाणपन्नरस ॥ अठयउववासा  
। सवंगंसक्कचउसठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठअवठएणउ  
जंतेहिं ॥ इगहाणयनिविगई । विलेहिंअउंबिलेणंच ॥ ६ ॥ पणया  
लाचउवीसं । सोलसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइउहियएणेणय ।  
आयरणाहोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिहियां लिखके बीच में-  
रुलमें २४ कोठोंमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः हैं। नमः १ क्रों-  
नमः बबबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबबब २, बबबब-  
बबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ४, उँ हैं। अर्द्धज्योनमः  
उँ हैं। तिद्धेज्योनमः उँ हैं। आचार्येज्योनमः उँ हैं। उपाध्यायेज्योनमः  
उँ हैं। सर्वसाधुज्योनमः उँ हैं। ज्ञानेज्योनमः उँ हैं। दर्शनेज्योनमः उँ हैं।  
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-  
पालोंके नामकी दस चिहनी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोंके नामकी नव कोठेमें नव चिह्नियां ॥ इति  
तृतीय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोखे स्वर उकारादिक  
तेतीस वर्ण इंद्रजुति आदि इन्दारे गणधरोके नाम नैह्री युक्त लि-  
खे. पीठे अमृतालीश लब्धिपद नैह्रीअर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखे  
॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंरुलपूजामें लिखे हे उस  
मुजब लिखे. पीठे चोवीस तीर्थकरोके पिता नैनाजयेनमः १ इ-  
त्यादि लिखे. पीठे नैनरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थकरोके  
माताका नाम लिखे ॥ पीठे नैह्रियैनमः १, नैश्रियैनमः २, नैष्टुत्यै  
नमः ३, नैलह्न्यैनमः ४, नैगोर्त्यैनमः ५, नैचंरुत्यैनमः ६, नैसरस्व  
त्यैनमः ७, नैजयायैनमः ८, नैअंबायैनमः ९, नैविजयायैनमः  
१०, नैक्लिन्नयैनमः ११, नैअजेतायैनमः १२, नैनित्यायैनमः १३,  
नैमदद्रवायैनमः १४, नैकामांगायनमः १५, नैकामबाणायैनमः  
१६, नैसानंदायनमः १७, नैनंदमालियेनमः १८, नैमायात्यैनमः  
१९, नैमायावित्यैनमः २०, नैरौत्र्यैनमः २१, नैकालायैनमः २२,  
नैकाढ्यैनमः २३, नैकालप्रियायैनमः २४. एतें श्रीदेव्यादि चोवी  
सोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष ऊर २४ यक्ष-  
णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठे  
नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोंके नाम लिखे. पदली  
वीशस्थानक मंरुलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके  
अष्ट सिद्धिका नाम लिखे नैग्रिमसिद्धयेनमः १, नैगरिमसिद्धये  
नमः २, नैअधिमसिद्धियेनमः ३, नैआकःम्वसिद्धयेनमः ४, नैमहि-  
मसिद्धियेनमः ५, नैईसित्वसिद्धयेनमः ६, नैविसित्वसिद्धयेनमः  
७, नैप्राप्तसिद्धयेनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ नैश्रीधरणें  
डोरकतुः १, श्रीपद्मावतीरकतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवै  
रोव्यारकतु ४. इति श्रीरुषिमंरुल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

ब्रह्म नवपदमंजरी वीस स्थानक मंगलपूजा भुजव चढ़ावे ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपदेव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट उर बांधे पासे नव ग्रह को पट्ट स्थापन करै, पीछे एक वस्त्र एक गेटा मट्टीआदिको हंसा ऊपर खनी सपेदमट्टी पोतके चारों केसर कुंकूमा साधिया करै, पीछे उंची नीची दोय टिवन्नी काठकी धरावै, नीची टिवन्नी पर मोटा हंसा धरै, उंची पर गेटा हंसा धरै, गेटे हंसेके तले एक बिड़ करै, दोनुं मटकाके अंदर साधिया करै, वस्त्र मटकेकी टिवन्नी नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाको धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक खूणें २१ इक्कीसर पोंकर चारों कोणोंमें ८४ खजली पोंके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको वस्त्र नीचला मोटा हंसामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली गेटा हंसाके बिद्रमें पोंकर ऊपर जो चौ खूणी तणी बांधीदे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै उर एक जखोकी तरफसे होय तो शांति कराणैवालेके घरसे-ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों भावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अन्ना वस्त्र आज्ञावण पहिरावके कलशके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक वस्त्र धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके चारों तरफ चार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजिन्नादि अनेक उद्भव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

न्मुख चावलोंका साधिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठै  
 पाच दश जणा इयै ऋर जावे अपना अंग शुद्ध करै, गुरुके पास  
 से केशर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहासे आगे नव  
 ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अगरे स्तुतिसे देववन्दन वगेरे करे सो  
 सब विधि पूर्वे लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीठै  
 सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक  
 आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन१ नवकार गुणो, जिसमें दो  
 स्नात्रिया दो नाडीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनों तरफ  
 खरुता रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन  
 वासकैप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोठोंमें जल जरके दोनों तरफ  
 धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनों तरफ चमर दु  
 जता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणो, स्ना-  
 त्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसे सात धारा दे  
 चुके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसे नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके  
 अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीठै जक्रामर वस्तीशांति  
 गोटोशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशां-  
 ती आती होय तब तो गुरुके संग अपने मनमें गुणता रहै, ऋर  
 नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते  
 स्मरण शांति गुणो तहां तक अखरु ऊपरले गेटे कलशों  
 धारा देता रहै, ठीक कोई नही करै, आपसमें दूसरी संसारी  
 विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणो पीठै तीन नवकार  
 गुणके कलस धरे, पीठै नीचेके हंमेमेसे जितप्रतिमाकूं निकालके  
 अग्नी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसे पूजा करै, जगवान-  
 की अग्नी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके  
 आरती कतारै, मंगलदीपक करै, पीठै शांतिजल सर्व संघ लगावै,

अपने घरोंमें गटे, शांतिपूजाकी मोली गुरुके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीठे आधा बलबाकुल परातमें रक्का था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्त्रात्रियोंसे दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उस मंत्रोंसे विसर्जन करै ॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंरुण रुषज्ञ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवी-नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-जुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रजुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चौथी आरती नित्य नई पूजा, देव रुषज्ञदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रजुजीने जावे, प्रजुजीना गुण सेवक इम गावै ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रजु शांतिजिनंदकी, मृग खंढनकी में जांनं बलिहारी ॥ जय१ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचि-राजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रजु नेमजिनंदकी, शंख खंढनकी में जांनं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीको नंदा, नेमजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रजु पाशजिणंदकी, फणिंद खंढनकी में जांनं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह खंढनकी में जांनं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाको नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चौबीस जिनंदकी, चौबीस जिणंदकीमें जांनं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चौबीस जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करजोनी सेवक हम बोलें, नहि कोई माहरा प्रभुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय१ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी  
॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-  
ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविदित गङ्गानी शासनेदेवी, सकल संघने  
सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलनी रत्न विराजै, काने कुंरु  
ल दोय रवि शशि गजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध वोरखा सोहे,  
नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी  
खलके, पाये घूघरना घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या  
बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूननी जन्मामां  
देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित१  
मानी आरती ऊतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु  
घर पूत्र पुत्रादिक गजै, मन बंढित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥  
देवचंड मुनि आरति गावे, जय१ मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति ॥

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपरु इण  
विष खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग  
रे, वनीय विनायत बैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे ॥  
अरे० १ ॥ दान शील तप जावना च०, चोपरु एह पसार रे ॥  
आठ दाव इक बोलमें च०, आतुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥  
देव गुरु धर्म तीनूं जला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर  
दाये लिया च०, उज्जल लेइया आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान  
चारित्र जला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात हिरदे  
घरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ परुया अगारे रहण  
दे च०, पोवारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, हित



कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकनी पनी च०, हिर-  
दे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजनी पनी च०, पंच महावन धार  
रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुं विसन निवार  
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०  
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डुख सह्या ज़रपूर रे ॥  
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेतुंज खेल खिलारी, सब समऊ देख सेतुंजकी घात,  
खख दोवें दल अपणो परायैकी जात ॥ काउ विध कर मोह बाद-  
स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥  
आहुं कर्म पियादे आगे जुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत अंज  
त नही अंजै ॥ छोज जंठ चारुं खूटकी मरोरु चल ध्यावै, मान  
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो बजीर वीर  
वाके ढंग ठामो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥  
तेरे ग्यान सो बजीर वीर तेरे ढंग ठामो, आगे अंग समकित  
के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको  
मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ कृमा शील दोष  
फील राखो दलकै अगामी, पर दल कर मारो बिनमें संहार ॥  
हे से० ३ ॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाकै चल-  
नेकी काइ रहै नही गोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो  
खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोर, गमे इंद्र धरषोद  
तेरे दोखेंगे चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥  
इति सेतुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टुक निजर महरदी करणा हो, दु० ॥ में

हूं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस्त न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-  
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ टु० ॥ २ ॥  
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥  
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-  
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिख्रा, फिटक  
 रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल ज्योत विराजै साहिब,  
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणाकी धजा  
 फरुके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन  
 नाम तुमारो, ज़रनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोख-इंख-  
 मे वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-  
 जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 सखि सष बनवन, सखी० ठाढ़े नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥  
 रिषजकुमारको जनम जबो हे, मंगल मुख उचारै री ॥ स० १ ॥  
 ताल मृदंग खाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा  
 व जाव करी राजत, तान खेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरबनिता  
 मिल गई बघाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-  
 खत, आनंद हर्ष अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः  
 हो जिन तेंमे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम बिन जवरेमें  
 जटकंदा, अब मेंनी ज़र निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंमे  
 लार लगे है, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु  
 साढ़े, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 म्हा० रिषज जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गु  
 लाव लाव रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०  
 १ ॥ अगर चंदन अकृत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु  
 एय पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥

रुषजदास पूरो आस गुण गां रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ मन लीमो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि ज्वतर  
 णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन  
 हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता, नंद रुषज सु  
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन  
 द्रव टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग  
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनदंस सूरेश्वर जंपै, जिन  
 समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग किंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या  
 न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत  
 ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अधको रे, वारुं तन धन  
 ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल  
 निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनदंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृ  
 त्ति पुरंदर ग्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह  
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारखो गहवहिया ॥ य० ॥ में नाहि  
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण तरण सुणयो ठै, में यार्ते शरणो ग  
 हियां, इनते ठवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इत करमनके वश  
 हुयकै, में जटक्थो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकै  
 दाज निहारै, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमीराय अरज सु  
 णीने, म्हारे मु० ॥ किरपा काज करी सेवगनें, दिलजर दरशण  
 दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवनी दरसण दीजै, सकल करम  
 दल ठीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पत्तणे, प्रहजगी प्रण  
 मीजै ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंना प्रभु इण दिल

वसणावे, तेंना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर  
गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त  
त्वज्ञानके दाता, ज्ञविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि  
नचंद एते प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त द्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ ना-  
जिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी नर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि  
जिनेसर अंतरजामी, खामी कबुन विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन  
जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजा  
ग्य सूरिंदके साहिब, जवजल पार कृतारोगे ॥ हम० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ पंथीना पंथ चलेगो, प्रभु जजले दिन चार ॥ पं० ॥ फूठी  
काया फूठी माया, फूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपखेमें खेल गमायो,  
जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीठै  
करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पु  
ण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंती, अब तेरोही  
आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज,  
जोमे थारे कोण जुमेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता,  
तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विमारण नागकुं तारण, सं  
जलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवै,  
जव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंजायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, कैसें०  
॥ ब्रमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुखत फिरै ॥ म०  
कैसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी नटकावत, जाहीसें मेरो प्राण सरै  
॥ म० कैसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांग चाहै, प्रभु सेव्यासें  
काज सरै ॥ म० कैसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राजरी बधाई  
वाजै ठै, महा० ॥ सरणाई सरै नोवत वाजै, धन ज्युं अंबर गाजै

है ॥ महा० १ ॥ इंझणी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै  
है ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै है, चरणारी सेवा  
प्यारी लागे है ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अरुणो १ ॥ मोतनकी माखा जिन गल सोहे,  
मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंरुल लागत वाला ॥  
॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो  
काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥  
जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय, रहेप  
॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारो हा हा खाय ॥ २० १ ॥  
अविरत घूंघट पट जपारी, अनुजव मुख निरखाय ॥ २० २ ॥  
॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ २०  
३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ २०  
४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकरी करमगति जाय ना  
कही, चिंतत और वनत कहु औरे, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय  
वां० १ ॥ सकल साज सजियौ व्याहनकूं, राजुलकों तब चाह  
जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरजाय रही ॥  
हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिजगता, जानत सकल  
मही ॥ जूठो दोस दियो जब रुषपति, पावक कुंरुमें धीज दही ॥  
हे माय वां० ३ ॥ हायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक  
बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात  
लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा  
किम जाण कही ॥ नलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें  
व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो  
लागे है जी आरौ उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण नुगुण

मैटल, संशयन रहै न लैस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर डुब  
दूर करणकुं, जगत बढावत हेत ॥ चंद फतै नित एही चाहै,  
समकित सुखको खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
मेरो पिया पर संग रमेत हे, मै कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सौतन  
संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत  
सखी पढ़्या परत हूँ, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानख अति  
डुसह पिया विन, कोन बुजावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ-  
नुजव आषो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोउं दिख-  
मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन जरी, हो सुगुह  
मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैऊमटी, ग्यानघटागहरी ॥ हो सुगु०  
१ ॥ स्थाद्यादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति ररी ॥ हो सुगु०  
॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक धरी ॥ हो सु-  
गु० ॥ २ ॥ अद्धा नदी चढ़ी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सु-  
जरजरयो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥  
प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप-  
इया जविजन, बोलत जकिजरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान ब्रत  
संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,  
सहज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या  
धरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारअकी चरचा पाई, सा  
धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध जेटे, हरख  
जयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध जवइ मांहे मिलियो,  
धर्मप्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अब वरर धरर  
घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रनु गिरनार सिंघाए, देखणकुं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण अवणें, नयन ज्ञेय धन  
 ज़रसै ॥ चि० २ ॥ हुंढत हुंढ सकल वनशमें, कबहुं पिया ना दर  
 सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगे सजनी, दिवस घरी जिन  
 फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले  
 पीत २ धनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी  
 कारी विजुरी मरावै, दूजी विरह व्याकुल जई तनमें ॥ मो० १ ॥  
 जिरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥  
 मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल जई विरागण छि  
 नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग विहाग ॥ समज नर जीवन घोरो, घोरो घोरो घोरो  
 ॥ स० ॥ पल २ आयु घटत बिन रही, गलत जात जैसैं उरो ॥ स० १ ॥  
 या तनको कहो कोन ज़रोसो, बिन मासो बिन तोरो ॥ जो कहु  
 करै सो अबही करलै, पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धन  
 आदि सकल सामग्री, गरज २ धन घोरो ॥ रूपचंद ब्रसनाको बांधो,  
 जातवूज ज़यो ज़ोरो ॥ स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मत कर मा  
 न गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी ज़ीत उसको मोती,  
 कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुरा  
 णी, तारणद्वारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल  
 घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं आरी वाटकी, घर आवोनी  
 होला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख है, मेरे तूही अमोला  
 ॥ नि० १ ॥ जौहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥  
 जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे  
 किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठै टलै, मेरे मनका  
 फोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न वो

ला ॥ आनंदधन प्रभु आवसी, सेजनी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे जाग, वीरप्रभु आए  
हैं ॥ आ० ॥ चंदना खनी डुवार, चित्तें करै विचार ॥ देखत दी  
दार हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,  
अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥  
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुरुत बहु  
तेरो, जगवान दिख जाए हे ॥ आ० ३ ॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत  
सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥  
आप रंगीला बाकी रंगीली, उर रंगीलो बाको सांवरो रे ॥ आ०  
१ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे ॥  
आ० २ ॥ आनंदधन पिया निज घर आवै, मिट गयो मोहसंतावरो  
रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषज विहारी, थारी तो बवि न्यारी हो  
॥ रू० ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम जिनेतर, प्रथम यतो व्रतवारी हो ॥  
रू० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर, काया कंवन बानी हो  
॥ रू० २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी  
हो ॥ रू० ३ ॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु ठो पर ऊपगारी  
हो ॥ रू० ४ ॥ केवल पाय प्रभु सुगति सिधाए, आवागमन निवारी  
हो ॥ रू० ५ ॥ आनंदधन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाजं बलि  
हारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार  
न टैरे रे, सु० ॥ चित कहु उर विचारत है नर, उरही उर बने  
रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिमिया केसैं बचे रे ॥  
सु० २ ॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे ॥ सु०  
३ ॥ होत पदारथ जावी जइया, क्युं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४



॥ छदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युंन जज्ञै रे ॥ सु० १॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ ॥ अणक जूप चैलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निजश्रद्धा विषे पुर के जन, उमंगर गुन साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, दितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतैं, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सदगुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लप लाय रे ॥ म० २ ॥ जब श्रमें तोकुं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखैके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस कृपाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखुं रे हो ॥ जाके प्रज्ञाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, ज्ञागा जया वजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्याविज्ञाव त्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपजे सज्जु तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनदर्श सूरि ज्ञाखै, दिल मांज याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग तुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी स्वामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकुं लार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजकुल,  
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थारे  
 सुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ था० ॥  
 शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ था०  
 १ ॥ मोहनगारी सूरत थारी, देखया म्हारो मनमो लोनाय ॥ था०  
 २ ॥ उरऊत नेण जए दोड़ निरखत, थांसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥  
 था० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें  
 चाव ॥ था० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय  
 ॥ था० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी काननो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कबु कर-  
 नी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरजव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-  
 खदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर  
 तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥  
 तप जप श्रंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, जवजल  
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगनो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी  
 मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग  
 द्वेष अरु मोह महा मद, बाधो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥  
 ए रिपु कर्म पन्थो मुऊ केमे, किस बिध बूटै पानो ॥ कुमति क-  
 दाग्रह मांहि अलून्थो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं  
 जववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो  
 साम संजारो, तो हिब किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ जक्ति  
 सदाई शिवसुख दाता, संजवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौजाग्र  
 सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रवानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागजैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी  
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशनायक एही अरज दे,  
बाँजै दरस वरुन वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण  
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विजास ॥ जोर जयो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोउ  
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन  
वनिता सुत तात आतकों, मोद मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०  
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥  
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजाव रे  
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूत्रै अब पाय नाव  
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जागरे सब रैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयाच-  
ल रबिमंरुल, पुन्यकाल क्यूं सोबे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंरु  
वन २ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेत-  
न धर्म अनादि तुमारो, जग संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥  
तुम कुल दोष अवस्था पश्यै, नीद सुपन ए जग नीसाणी ॥ जा० ४  
आतम रूप संजार आपणो, कब तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा०  
५ ॥ सुध बुध झूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी  
॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जघा  
नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग बेलाजल ॥ सांवरो सखूणो सखी मेरे मन जावनो,  
रूप देखाय मैरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर च-  
ले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह  
निजाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डरावणो ॥ आनंद राजुल  
याक्री प्रीत कपटकी, जयो पीया मुगदसखीको पावनो ॥ सां० २ इति

राग ललित ॥ आज रुषज घर आवै, देखी माई आ० ॥  
रूपमनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता  
फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय  
रथ पायक केई कन्या, ले प्रनु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-  
कुमर दानेसर, इकुरस बहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,  
साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फळयो री, हमीर माई  
अं० ॥ रुदि वृदि सिदि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिळ्यो  
री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरीस  
मिळ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-  
ह्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख रुपा कर साहिब, ज्युं पारे  
वो पळ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी रुपासै, हुंरहिसुं सुहलो री  
॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊठोने मोरा आतमराम,  
जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण बै अति  
दोहलो, थे किम सोहीजो जाणो रे ॥ वार२ मानवजव एहवो,  
जुरुवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको म-  
टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघ-  
ट बै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें जरियो हे जिनवर, पूरब  
पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो  
रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोख पायो, मूढपणै मत गमजो  
रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥  
ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥  
खाजऊदै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ जज मन नाजिनंदन देव, ज० ॥ ध्यान  
मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ ज० १ ॥ चक्री जू-

पति बने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमते ब्रह्मा रुद्र नाराद, शेष  
मणिधर सेव ॥ ज० १ ॥ असंरण शरण हे विरुद जाको, जक्ति  
बछल जेव ॥ राजसिंह प्रजु रुषज सिर पर, नाथ हे नितमेव  
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमको न सं  
तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहने आये सजके सजन, पशुवनको सुन देख  
रुदन ॥ गिरनारी चले निज भानी वतन, तकसीर वतावो रे ॥  
आ० १ ॥ पूनम जेते चंदवदन, भनमोहन मूरत स्यामवरण ॥  
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत गेह दिखावो रे ॥ आ०  
२ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रजुकुं सिखाये नीके ब्रमन ॥ सब  
ऊठे पमेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर  
कहै प्रजुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेछे दोन नेम  
जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥  
की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन  
॥ दरसनसे नयनानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-  
ब कंदब मालती निरमल, चंपक बेल सघन तरु परिमल ॥ बीच  
जुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली  
सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा गाजै ॥ प्रजु अतिशय  
तन मकरंद जरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुजग  
दरसकूं आवै, निरखै प्रजु सहेज स्वजावै ॥ जीव जमी मन प्रे-  
म धरै, जगपति रुदसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम जये अगीवान,  
हे ना निकला मुखसें कजी जगवान ॥ धार नहीदेखा समोतरणा,  
किया जवदधिमें ऊदर जरणा ॥ दोन जो लेते प्रजु सरणा, दूर

डुख होते जनम मरणा ॥ बैठ जववरमें लंगाया नही ध्यान, राज  
शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना नि० १  
॥ नाम जो जिनके दान देते, आहुं मद तुमसें दूर रेतें ॥ यार जो  
तिनके चरण सेते, शषी सुमताकों तुमें देते ॥ रहै तप जपमें सदा जो  
सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां  
जिन नूर हुवै डुखदूर, करौ जवपार सुणो महरवान ॥ ना० १ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लागे जली, नेशांहमारी  
प्रभु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खु  
ल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम  
प्रभु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम  
अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥  
मुज्जूं आश दीनपति तेरी, नर न चाहूं देव उली ॥ ने० प्र० ४ ॥  
लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर  
सुनिजर प्रतिपाद सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र०  
५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी रुझतार फली  
ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जानं कहाँ, शरणागतकों  
शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिढ्यो नही कोई, हूँह  
फिरयो धरती सब हैरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रभुजी अ  
व, आन जरै तुमसें जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कढयाण करै  
वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घसी१ पल१ विन१ निशदिन, प्रभु  
कों समरण करलै रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है, अ  
शुभ करम सब हरलै रे ॥ घ० १ ॥ मनवच काय लगी चरणन नित  
ज्ञान हियेमें धरलै रे ॥ घ० २ ॥ दौलतराम प्रभु गुण गावै, मन

वंडित फल वरलै रे ॥ ष० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरभ ॥ सुमतानें क्या कर मारा रे, जिन मोह्या  
स्याम हमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना  
नेम ऐसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण जई हे हमारी, बस किया प्राण  
पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, गोन  
चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर  
मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो ने-  
म तजे हो हमकूं, में न तजू पद आंरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लग-  
न हमारी तोरी नही तूटै, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५ ॥  
सब जग जो तुमसे हो जइयै, तो क्यूं चलत संसारा रे ॥ जि०  
सु० ६ ॥ रुद्रस्तार राजुल प्रभुजीसैं, पोहची मुगति मजारा रे ॥  
जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जले विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर,  
पर जले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, आवक जाण न  
पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकन ले जावै ॥ तु०  
१ ॥ उंचा नीचा परवत सोहे, तलै जीजनका वासा ॥ पैरु पर  
सींह दमूकै, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक पर धजा  
विराजै, जालररे ऊणकारै ॥ जालररे ऊणकारे सेती, वाजा अविच  
ल वाजै ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण रचावै ॥  
अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंडित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर  
मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको  
सेवक, हरखर गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातक दूर नि-  
वारो रे ॥ जवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा सहु

जग जोई रे ॥ ज० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख  
पाया रे ॥ ज० ॥ कोनाकोनी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद  
लीया रे ॥ ज० २ ॥ वीश चरण जिन सोई, जिविजन चात्रक मन  
मोदे रे ॥ ज० ॥ भुवमठ मंदिर बाजै, जिहां पाशप्रभु महाराजै  
रे ॥ ज० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो  
रे ॥ ज० ॥ तीर्थ आसातन टाखो, जिविजन ढहरी व्रत पाखो रे ॥  
ज० ४ ॥ नरजव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ ज०  
सय उगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी बीसे रे ॥ ज० ५ ॥  
दूगम गोत्र सुहावै, जवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ ज० ॥ जात्रा  
करी मन रंगे, चंद शिखर जणै अति चंगे रे ॥ ज० ६ इति पदं ॥  
पुनः ॥ ( सांवरियां जेसैं वणो जेसे तारो, सां० ॥ इत चालमें ) सां  
वरियामें बीठो दरस तिहारो, मेरी जव जय वाधा टारो ॥ सां० ॥  
अश्वशेननंदन जगवंदन, जगवंधव जग प्यारो ॥ नीलवरण युति श्री  
जिनवरकी, वामा उदर अवतारो ॥ सां० १ ॥ कमठ विमारण शिव  
सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी,  
निर्यामक सत्यवारो ॥ सां० २ ॥ शिखर गिरी मंरुण जिनवरजी,  
अदभुत महिमावारो ॥ कर जोम्नी दोउं वीनती करतदे, बुधसिंह  
अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

( श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल ) ॥ त्रिभुवन नायक  
वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रभुजी ॥ आरी मोहनी मू  
रती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख बवि चंदनै निरखवा, लगन  
चकोर अजंग ॥ वथा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज ऊलामल  
जाय ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व०  
था० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीभुवन नाथ, म-



हिर लहिर कर बगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० था० ३  
 ॥ धन२ वेला जी आजनी, सैमुख मिलिया ओ आप ॥ व० ॥ हूं  
 सै घणी कहिवा तणी, वीतक उरक संताप ॥ व० था० ४ ॥ जो  
 नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ जगतव-  
 छल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० था० ५ ॥ किरिया  
 जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो बलिहारी श्री  
 नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६ ॥ गुनही तारथा जी ब  
 हू विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो,  
 क्रिम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७ ॥ अतिशयज्ञानी जी इण  
 अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुडासुं मन रमें,  
 के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुऊ तन मन मंजूसमें, ज  
 सन करूं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुशरतननी मूंधमी, प्रेम जसो निज  
 हाथ ॥ व० था० ९ ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवा  
 स ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, जुवन रमण केलास ॥ व०  
 था० १० ॥ पावापुर उगलीशमें, अरुतालीश उदार ॥ व० ॥ का  
 र्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रुदितार ॥ व० था० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

( नैया सफल जयें, प्रभु दरसण पायो आज ॥ ए चालमें )  
 निरख हिया हरख जरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अग्नि  
 क्षाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै  
 रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, सम  
 रथ को नलि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक सुधारण का  
 ज ॥ नि० २ ॥ दुखजंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत ॥  
 अंतर् राख्यां नवि बनेरे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥ कष्टपट्टक  
 पुन्ये लख्यो रे, वंजित पूरण नाथ ॥ ज्ञाग्योदय अब मादगे रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु  
जव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज  
॥ नि० ५ ॥ उगणिते अमृतालमें रे, कार्तिक सुदि निधि सार ॥  
चंपापुर अधिपति मिढ्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥  
कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन ॥ रुक्मसार जिन  
ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गौमी पारसको, मेरो ज  
नम सफल ज्यो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तो  
य न सरथोजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १ ॥ जवश् जटकत शरणो  
हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे मैं० २ ॥ कमठ हरा  
वण नागकूं तारण, संजलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूप  
चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम  
स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ उंचे २ गढ़ पर पाश विराजै, चारो तरफ  
झानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, बदनोकी जाठ  
बलिहारो ॥ कि० २ ॥ बांहे बाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी ठवि  
हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ ढूढत ३ मैं प्रभु पायो, पूरण पदवो अब पाई ॥  
कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥  
मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥  
मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट  
वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द  
वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत  
हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै घननननन, इंड्रजोक हरखजयो ॥ जतमे वर्द्धमानकुंवर,  
 वीतराग तननननन ॥ धं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, जलरी  
 नाद ऊननननन ॥ धं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान  
 मगनननन ॥ धं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांझां रे, सांझ  
 मेरा टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा  
 बोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥  
 तुम अंबरदा मेहला प्रजु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमजुमर मेहला  
 वरसे, ठमर नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी,  
 प्रजुगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांझ, करवा लागी सोर  
 ॥ नि० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण ऊंझा जोर ॥  
 रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न उर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ एते सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पा-  
 नीके कोट पवनके कांभरे, दस दरवाजै मंझान है ॥ एते० १ ॥  
 पांचइंडीके तेवीस तस्कर, नगरकूंकरत हेरान हे ॥ एते० २ ॥ प्रजा  
 पुकार सुणी जब जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एते० ३ ॥ ज्ञान  
 को धाण वचनरस जेदे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एते० ४ ॥  
 रूपचंद कहे तेने वारो, डुस्मन मान गुमान हे ॥ एते० ५ ॥  
 इति पदं ॥ आय रहो दिल बागमें, सुणप्यारे जिनजी, आ० ॥ चुनर  
 कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥  
 मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सु०  
 २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥  
 सु० ३ ॥ इति पदं ॥ रहो रे यादव दोष घमियां, दोष घमियां  
 रे अब ज्यार घमियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला बहोत मसाला,  
 पीवत मधुरी सेलभियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो  
 सांझ, फुलरा विठाउं सेजभियां ॥ र० २ ॥ राजुल गोहि चले

( ५९१ )

गिरनारी, दीपत मोहन वेलनियां ॥ २० ३ ॥ रूपचंद कहै नाथ नि-  
रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलनियां ॥ २० ४ ॥ इति पदं ॥ विराजो  
बंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रजु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥  
चुवा १ चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाब ॥ वी० १ ॥ शिर  
सोनेको ठत्र विराजै, मोतियमे तपे रे निलाम ॥ वी० २ ॥ जव  
सागरमें आण पराहुं, बांह पकन मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद  
कहै नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥  
आठ जवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥  
सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥  
आप चलै गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३ ॥  
कहे नयू प्रजु नेमनगीनो, कहुं बू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आतावरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, नस पदका  
करे रे निवेना ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन ठाया, विन फूलै  
फस लागा ॥ शाखा पत्र नही कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥  
अ० १ ॥ तरुवर एक पंढी दोउं बैठै, एक गुरु एक चेला ॥ चेलने  
जुग चुणर खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंजलमें  
अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो जरर  
पीयै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंजलमें गजआ वि  
आणी, धरती दूय जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, ठाठ  
जगत जरमाया ॥ अ० ४ ॥ अरु विन पत्र पत्र विन तूबा, विन जी  
ज्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही बताया  
॥ अ० ५ ॥ आतम अनुजव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगा  
वै ॥ घट अंतर परखै सोही मूरत, आनंघन पद पावै ॥ अ० ६ ॥  
इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोणः

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके  
 घर चेली ॥ कलमा पढ़े जई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥  
 अ० १ ॥ मुसरो हमारो बालोजोखो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी  
 हमारो पोढ़े पाखणे, मेंहुं जुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहिं हुं पर  
 णी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारी ॥ कालीदाढीकों में कोई  
 नही ओम्हो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीदीपमें खाट  
 खुटली, गगन उत्तीकूं तलाई ॥ घरतीको ठेको आज्ञकी पिठोनी,  
 तोय न सोम जराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंमलमे गाय विद्याणी,  
 वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो ज्ञाई विलोवणा विलोवै, कोई  
 यक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाई जातं सासरीये नहि जातं  
 पीहरियै, पीयुजीकी सेज विगई ॥ आनंदधन कहै सुणो ज्ञाई सा-  
 धो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हं-  
 सा तूं मानसरोवर वासी, वामे झूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥  
 नीर अगाध जरयो थो करदम, पसरि वेख जरासी ॥ आंकी बांकी  
 कबहू न सीधो, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चं-  
 माल जूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पठतावै पर आंग-  
 णमें, जटके गया उर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी ऊठों फैल म-  
 चावै, जगो माहावत जासी, डनियां चढ़ नीचै गिरती, पढ़ते  
 ही मालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै  
 इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी रे ॥ हं० ॥  
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ बेर बेर नहीं आवै, अवसर बेर नहीं  
 आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले जलाई, जनम सुख पावै ॥ अ० १  
 ॥ तन धन जोवन सबही ऊठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ०  
 २ ॥ तन बूटे धन कोण कामकों, काहेकूं रूपण कहावै ॥ अ० ३ ॥  
 जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं ऊठ न जावै ॥ अ० ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो  
 ॥ ये० ॥ आठोंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे ॥  
 तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम बिन कोई नहीं प्रीतम, प्रभुजीनी  
 पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ जवका फेरा वारी करो जि-  
 नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे  
 चित्तमें धरो ॥ थोमासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं उल परपंच  
 करौ ॥ एती० १ ॥ कून कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परजव-  
 धी न रुरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम  
 मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अबधू निर-  
 पक विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ० ॥ समरस ज्ञाव ज्ञा  
 चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वा-  
 तां, जाणोगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें जेद न जाणे, कन  
 क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहीं परिचय, तो शिवमंदिर  
 देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे  
 ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढ़ते गुणगणे ॥ अ० ३ ॥ चंड  
 समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंजरीरा ॥ अप्रमत्त ज्ञारंन परे  
 नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४ ॥ पंकज नाम धराय पं-  
 कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो  
 साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रज्ञाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥  
 च० ॥ जया जब प्रातकाल, माता धरावे बाल ॥ जगजन करत,  
 सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरजीके बंध ठुटै, धूधर जये  
 अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तू जी तेरे काज लोग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा  
नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समज परी, मोहे समज परी, जगमाया अब जुठी  
॥ मोहे समज० ॥ कालर तू क्या करे मूरख, नही जरोसा पल  
एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल बिनजर नांदी रहो तुम, शिर पर धूमें  
तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो  
तुम चित मोहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसे मेरो ने० ॥ रा  
जुल ऊज्जी अरज करे बै, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥  
इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलांजी वांते पशुवनकी  
सुणी बै पुकार ॥ इ० २ ॥ संहसावनकी कूजगलनमें, जलांजी  
वांते महांव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल बिनवै, ज  
लांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
रसना सफल जई, मैतो गुण गये महाराज ॥ रसना० ॥ परम  
आनंद प्रगट ज्यो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति न  
ज्वल जस सुण जिनजीकी, संख्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ ना  
क नमन करतां प्रभुजीकूं, सास्या आत्मकाज ॥ र० ३ ॥ पदपं  
कज प्रभुके फरसतही, दूर गई दुख दाज ॥ कहत कृमाकल्याण  
सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी  
॥ मुजें ठोरके चले हो चूक, हमसे क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई  
आशकी निराश, उदाशीनता घनी ॥ प्यारा बश नही हमारा, प्री  
तम पीरमें पनी ॥ रा० २ ॥ हमसे रह्यो न जाय, प्रीतम तुम  
बिना घनी, संयम लीजिये दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ नि  
शदिन तुमारा नाम, देने ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको भित्त, जगतमें कोन कि  
सीको भित्त ॥ ज० ॥ मात तात उर जात सजनसे, कांइ रहत  
निश्चित ॥ ज० १ ॥ सबही अपने स्वारथके है, परमारथ नहि  
प्रीत ॥ स्वारथ बिषसे सगो न होसी, भित्ता मनमें चित्त ॥ ज०  
२ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ ज० ॥ को नहीं  
तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एकज  
गवान जजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह  
धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदी-  
सर जिनराज, त्रिजुवनके महाराज, आज हो आयो रे, में शरणें  
प्रभुजी तुम तसे जो ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकुर, प्रगट्यो पुण्य  
पूर ॥ आज हो जागो रे, मुज मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥  
लगन लगी जरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो गोहूँ रे, नहीं  
तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नाजिराय कुलचंद, मरुदेवीके  
नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रभु मुजकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४  
अमृत धर्म तुजाख ॥ शीश कमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे,  
प्रभु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोपीगाइयै मन रंग, गो० ॥ एक ध्याने  
एक ताने, कर केारो संग ॥ गो० १ जात्र कीजै अमृत पीजै,  
नीर बहरी मंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो०  
२ ॥ पोटतां प्रभु नाम लीजै, आणी मन उबरंग ॥ अन्नय तेहने  
उंघ माँहै, कदिय न होवे चित्त जंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे बाल, जिन मुखराने मटकै ॥ न  
यण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तुं लीधुं चटकै ॥ प्रभुजी केरी  
जकि करंता, करमतषो कस तटकै ॥ हां० हूं० १ ॥ मुज मन



( ५६ )

जोनी जमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि में  
की रात्रि, कदो कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० १ ॥ ए जिनगुण  
तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी दटके ॥ केवलनाणी बहु सुख  
दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे  
दिलमां न आणे, ते तो जूला जटके ॥ जाव जक्तिसुं जलज करतां  
बंधित सुखने सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी,  
जोतां दियसुं दटकै, नित्यलाज कैह प्रजु ए मोटो, गुण गांठ हूं  
लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रजुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसें  
कर बूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें वाको जीयो, अपणा प्रजुजीसे  
रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रजुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सु-  
ख लहस्ये री ॥ प्र० २ ॥ सेवाराम प्रजु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत  
नदी तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा डर  
करना, ड० ॥ एकध्यान प्रजुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब  
लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥  
१ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥  
खत० २ ॥ संवर जाव सदा मन धरना, आतम डरगति हरना ॥  
ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मर-  
णा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानज्योत प्रजु पाये परना, शिवसुंदरी सुख  
बरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्र-  
कार ॥ दान दीयल तप जावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥  
बरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इकुरस दान बहरावि-  
यो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघामिया, चखणी  
कादयो नीर ॥ शतीय सुजडा जस अयो, शीखे सुरगिर धीर ॥

( ५९७ )

रे० ३ ॥ तप कर काया सोषवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजि-  
नंद वखाणियो, धन धनो अणगर ॥ रे० ४ ॥ अनित्य ज्ञावना  
ज्ञावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ जरत आरीसा जुवनमें, पाम्भो  
केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेहनी शीतल  
गंह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतिता फल त्यांह ॥ रे० ॥  
६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन  
निद्रा तूं कहांसैं आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मेंतो बाली रे ज़ोली,  
वने२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मेंतो ज  
नमकी दासी, एक हाथमें मूंकी दुसरे हाथमें फाली ॥ सो० २ ॥  
समयसुंदर कहे सुनो ज्ञाइ वनिया, आप मूवै सारी रूब गई दुनि  
या ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रजुजीसैं ध्यान रे,  
मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागी लगनवा गोरी नहि वूटै,  
जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना  
ज्ञावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोरुके अरज कर-  
त है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
ते शिवपुर गये रहै रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि०  
॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमात्म शिवधाम रे ॥ समा-  
धान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध  
अविरुद्ध है, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम, अमृ-  
त पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरबाकी चाल ॥ म्हारे जले रे जगो बैद्यानो आजनो रे, मेंतो  
मुखमो दीगो जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ  
महाराजनो रे ॥ जिन लंठन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥  
म्हाने पागी मिढ्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिढ्यो शुज  
काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फढ्यो काजनो रे, म्हारो

महीयल वाधो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाज. सूरिंद  
 महाराजनो रे, फल्यो वंजित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेतो बवि  
 निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी  
 रे, माहे बूटी दीसे ज्ञातनी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-  
 मा जम्या बहु रे, काने कुंमलनी शोजा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥  
 मुने किरपा करी ते कहुं कसी रे, मारे वाहवे मुज सामो जोयुं  
 हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रजु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, अई मूर  
 शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो कणो तो-  
 दामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रजुने चरणे नम्यो रे, जिनराज  
 ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा अया म्हारे आ  
 जयी रे, वली दशा ते श्री जिनराजयी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां  
 ते डख सरवे गयु रे, वालातुं ध्यान सदा चित्तमां रहु रे ॥ ध० ३ ॥  
 आपी सेवा ते शुद्ध मनयी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी  
 रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम  
 णा रे, हुंतो लेउं रे वाहवाजीना जामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुने दास  
 पोतानो जाणियो रे, आश्रुता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे ० १ ॥  
 आप्युं दरशन ते डळज देवने रे ॥ मुने कीधुं तुं रहजे मारी सेव  
 मे रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रजु  
 विना जगत मिळ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म  
 नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक धनी, स० ॥  
 ए संसार जेसा तांजेला, धरुपण आया धोमे चढी ॥ मांगी तूंगीनें  
 उत्र थरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साथो जाई

( ५९९ )

जिनने संजारी, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लीबो जने  
तू जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ आवोशनी प्यारा नेम अम धर आवो रे, तुम जगत  
वञ्जल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रजु केहवी अइ तकसीर कही  
ने सुणावो रे, इम विन गुनेहे दीनानाथ मूकी न जावो रे ॥ आ०  
१ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारौ रुठो ठबी  
छो कंत कौइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस  
के लंघन राखे रे, सखी आंबातणी जे रुहान, आंबलिये न माखे रे,  
आ० ३ ॥ हूं तो मोदी तुज दीदार नहीं तुज जोमे रे, इण जग  
में जोतां कंत कहूं हूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मि  
त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥  
आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो माहरो  
साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६ ॥ इम करतां बांधीप्रीत  
राजुल साची रे, जे नेहनो नावै ठेह इक चित राची रे ॥ आ० ७  
॥ इम रुद्धसारनी वाण चितमें धरजो रे, प्रजु नेम राजुल सी प्री  
त मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ कजो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो  
हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें  
रे, नैश अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल विन धमी रे,  
मत मन प्रजुकुं झूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोजता  
रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धरणी रे, लागी लगन  
अजंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुष्पोत्तम  
जयदेव ॥ वेपरवाही बालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥  
श्रीफलवधीपुर तिलक ज्युं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दा  
स पर साहिवा रे ॥ हित कर दीजै दास रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंड शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंड शित तप्तमी रे,  
 रुद्धितार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन जाव  
 नकी, बवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहूं,  
 लागी लगन गुण गावणकी ॥ ठ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक  
 पर, वरसे घटा जेसैं सावणकी ॥ ठ० २ ॥ बालपणे प्रजु हम संग  
 खेले, अब तो जइ विसरावणकी ॥ ठ० ३ ॥ याद करो जिन पू  
 रब प्रीती, बखत बनी हे दिख लावणकी ॥ ठ० ४ ॥ मोहे जरो  
 सो हे बहुतेरो, आप कदो लखचावनकी ॥ ठ० ५ ॥ सहजानंदी  
 एक लहरमें, दीजै सुख डुख जावनकी ॥ ठ० ६ ॥ पारस जेट रहे  
 जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ ठ० ७ ॥ राम निवास आश  
 प्रजुजीसैं, रुद्धितार पद पावनकी ॥ ठ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसैं आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण  
 सुपारससैं, मेरी अजब अनोपम प्रीत जइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख  
 चंड चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ ॥ डुर न  
 कीजै निज चरणनसैं, सुरतरुकी गंह गही रे ॥ सा० ॥ दिखजर  
 प्रजुसैं अरस परस अब, बतिया डुखकी आप कही रे ॥ सा० २ ॥  
 विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूख क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३  
 ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, रुद्धितार लख लाग रही रे ॥  
 सा० ४ ॥ इति पदं ॥

रूपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सावरिया पास  
 जी सुख दीजै, प्रजु अरजो दिखजर लीजै ॥ सा० ॥ मनमोहन  
 मूरति थारी, आतम अनुभव उपगारी, सुख लीज्यो नाथ हमारी ॥  
 सा० १ ॥ करुणारस असृत कूंपी, लखलोन सुखानंद रूपी ॥ तन मन  
 पद पंकज सूंपी ॥ सा० २ ॥ जब पारस नाम उचार्यो, रघुपति  
 को कारज सार्यो, प्रजु धरणीधर निसतार्यो ॥ सा० ३ ॥ शिव-

हौकरं रमणविहारी, प्रभु मंदिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता  
 वारी ॥ सां० ४ ॥ कुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिथे  
 ताजा, जिनप्रवचन करावण काजा ॥ सां० ५ ॥ शिववामी सुंदर बं  
 जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६  
 ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसैं प्रे  
 म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अजिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन  
 वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगलीसैं उग  
 णपचासैं, सुदि पांचम यतन विलासैं, प्रभु माधव माश हुलासैं  
 ॥ सां० ९ ॥ हितवद्वज्र प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत  
 रंगी, कंदसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुम  
 तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ रुषजदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे गेरु चला विणजरा ॥ ए बाल ॥ तुम जो कब  
 ज प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं कहे पलकजंर  
 न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंद  
 रपदर्य विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुरअसुर नमत नरनारी,  
 प्रभु जए जगतसैं न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी  
 धूष संहज सुखजीने ॥ माया गायी तज दीने, आगम गम अंतर  
 चीने, जया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विजुवा  
 ल्यायी, अध्यातम रटना जांगी ॥ प्रभु उपादान शिवपांगी, वर  
 ध्यान धरै अनुरांगी ॥ शेलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम  
 धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतठ कंदा ॥ तुम जगत उजागर  
 चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४  
 ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ कंदसार  
 करत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अवजिगमिग ज्यौतिस  
 तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

बीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अग्रमुंडं२ वाजै चौधमा, सवाई मंका साहेबका ॥ बननं२  
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ ना  
मंका, नित२ वाजै चौधमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्व  
नाथ अवतार वना ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोजे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥  
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोरु देवता  
मिलकर, ओठव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ  
नाम लेता देवा ॥ चौसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा  
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको  
पार न पावै, जिनका गुण हे सबसें वना ॥ ३ ॥ दूर देससें आया  
जोगी, वने जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वने२  
जोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रभुकी, ओटेपनमें वहीत कला  
॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख  
के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, न जोगी तेरे वने लक  
नेमें, बना नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,  
तोबी जोगी नहिं सुणता, लकने दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा  
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया बे जोगी तुमने, बना नागकूं जला  
दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीघर पदवी पाया ॥ बनी  
उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी  
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज बोरुके चले जं  
गलमें, जुगतीसें कानुसंग किया ॥ वने धीर गंज्जीर प्रभूने, तीन  
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी बनी धूपमें, नीरंजन निराका  
र खमा, कमठासुरने किया कमाका, नन्नमंरुल बादल बना ॥ ७

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी  
 सेना लेकर, जलकूँ जलदीबुलवाया ॥ वना किया घनघोर जोरसें,  
 पवन चलाया मतवाला ॥ करुकर कर हुआ कमाका, चमक बी  
 जका नजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता  
 चौताला ॥ सात खूटकी वनी ऊनीमें, प्रजु खमा है मतवाला ॥  
 नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वना, पराजय नहिं  
 होय जिनूँका, एसा प्रजुका ध्यान चढा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासण  
 मोला, हुवा घंटका आबाजा, अबधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धातु  
 धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया,  
 पदमावतीने लिये शील पर ॥ शेषनागने ठत्र किया ॥ १० ॥  
 क्रोम ऊपाय तो किया कमठनें, कुबबी इलाज नही चलता ॥ तर  
 पोवाला साहिब उनकूं, बलपोवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज  
 हारके, कमठहाथ दो जोम खमा ॥ धरणीधर साहिबके आगे, अरजी क  
 रता खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचै, पार्श्वनाथ शुज  
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपो तेजका अजुवाला  
 ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वने देवलमें  
 इंदर सोहै, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वनी जुगतसें सिंहा  
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया,  
 दरवाजा शुज केवलका ॥ ज्ञामंमलके आगे शोजता, मूल गुंजा-  
 रा आरसका ॥ पीठै पञ्चीस देरिया सोजित, सिरे काम सिंघा-  
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहस्रफणा प्रजु पार  
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥  
 अठारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास जला ॥ सुदी तीजकूं  
 तखते वैठै, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु  
 मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वनी



तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोरता सवाईने, वर साहमी वां  
 स्सख्य किया ॥ सकल संघकी आझा लेकर, वर शिखर निशान  
 दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥  
 पारसनाथकूं सखत बैठाकर, जगो२ पर नाम किया ॥ कीर्त्तिवि-  
 जय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वर ॥ गुलाबचंद साहेब  
 के आगे, जिनसासनका काम वर ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग  
 में, ग्यान ध्याससैं खरुा५, हाथ जोरुकै अरजी करता, पारसनाथ  
 जी तूंदी वर ॥ वर काम तेरे है साहिब, मुखसैं नहि कहणे  
 आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, जिविजनकुं सुखके  
 दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

रूपज तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥  
 वंश इक्काकू नन्नचंदा, जूमिपति नाज्जीके नंदा ॥ मात मरुदेवा  
 सुखकंदा, प्रगट जये जगजन आनंदा ॥ (डहा-साखी) रेणु पूंज पर  
 आपकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप जये सचिपतिको,  
 आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ जये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥  
 मौखि पर कतक मुगद राजै, मालगल मोतियतकी ठाजै ॥ अवण  
 युग कुंरुल अति साजै, निरख बबि कोटि ज्ञान लाजै ॥ (डहा-साखी)  
 हीर वीर सोजावणी, आप ताप जलकंत ॥ युगल अलंकृत देख  
 प्रज्जूकूं, चरण नीर वस्संत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥  
 सुनंदा सुमंगला राणी, जोगसैं योग प्रीत ठानी ॥ जये शत पूत्र  
 सुगुण खाणी, प्रज्जूने दियाराजधानी ॥ (डहा-साखी) चौसठ विद्या  
 भारकी, पुरुष बहोत्र रयान ॥ जग विवहार चलाया प्रज्जूने, प्रजा-  
 पती अजिधान ॥ सुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाज  
 अंतसाय जुदै आया ॥ बरसदिन जोजन नहि पाया, जेट मणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ ( उद्वा-साखी ) हस्तिना-  
गपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभु कुं वहिराया, देव कर-  
त जयकार ॥ अक्षयतृतिया जई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम इन  
केवल चिदरासी, नाथ जये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश  
आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु जाली ॥ ( उद्वा-साखी ) ॥  
कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जनी  
धनी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही  
मीना जजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृश घनस्याम मूरति नीकी, सजल  
घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिर्विंद जमरकीकी, जक्तिरस कुं-  
ल पुर सीखी ॥ ( उद्वा-साखी ) ॥ जगणीशय अरुतालमें, ज्ञानपंच-  
मीरंग ॥ कूरु कपटतज जेट जई जिन, सुंदर कमलासंग ॥ कुशल  
रुद्रसार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर  
निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये,  
प्रभु चउद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय  
निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये  
॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण उवि ढाये, ज्ञानमल धजवर  
डुंडुजि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका बीच सिंहासन जारी  
॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु  
शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके जाव प्रगट ग  
त रागे ॥ जायै सिद्धारथनंद सुणात ब्रमजागे ॥ तिहां नरपति सु  
रपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागै  
॥ गौतमकुं जेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभुपा० २ ॥ अस्मावश पिबली  
रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोन्नवकीने ॥ गौ

तमने सुणकर बीतरागपद चीने, तब जगत प्रकाशन ग्यान सुधा  
रस पीने ॥ मेरी धन्य धनी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि  
यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ जई दीवाली जग वीचतजीसे  
जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटीरज ऊ  
ठा लिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन  
ने किया झुवन विस्तारी ॥ प्रभु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रभु  
दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल बवि जविकू लागत  
प्यारी ॥ प्रभु० ४ ॥ प्रभु धरमचंड हो आप आप जत राजा ॥  
क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसे जनाव  
अंगिया साजा, प्रभु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन  
जगणीसे अमृताल रुष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण  
जेठ माहाराजा ॥ प्रभु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुह्तारी ॥  
प्रभु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजै, प्रभु रहम नजर  
कर दिखनर दरसण दीजै ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी  
लागी, मेरे जिगर ज्वाणमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करूं नाथ  
तुम दूर वसे वरुजागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी  
॥ नहि इस दुनिया दरम्यान पंथका आगी ॥ मेरे रात दिवस इक  
ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पाठ संग अमृतारस पीजै ॥  
प्रभु रह० १ ॥ मैं जरखणीके बीच सुपन पभु पाया, पभु अर  
स परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख जर  
आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख  
देखूं नाथ चरणकी गाया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दित  
चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजै ॥ पभु रह० २॥

धन२ वो सँहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नार सुखें-  
 त धुन साजै ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आउं  
 जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि  
 लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन  
 मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु २० १ ॥ क्या समवसरण  
 सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥  
 प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर  
 मीन सुसियाला ॥ अथ दोजै कुशल निधान सदा सुविशाला, में  
 खाहुं संग अजंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जमी रुद्धसार  
 नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामबाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद दरख धन वरसण, श्रीसांवरिया मं-  
 हाराज तीहारे दर्शन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस भाजै, जहां  
 अश्वशेन वरशौल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,  
 प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप  
 देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा  
 रसके संगत लोह कनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-  
 णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि  
 प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरि गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल  
 सें गये अरुज सत्र नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी,  
 श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग  
 रही अंखियां तरतन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुधिर  
 सुविलासी, नित आनंद उज्जव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामबाग  
 विच भुवन वण्यो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंडकिरण  
 परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु डरजन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंड सूरेश्वर विजयराजके सर  
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवृत्त चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री  
संघ सदा कल्याण जक्ति बुध दीनी ॥ तन् उगणी सय अमृताल  
माध सुद लीनी, सुज वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल  
क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्रसार कहै सुखकार जक्तिरस  
पीनी ॥ जइ कंचन काया प्रभु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४ इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण  
आये फेर मत जाउं, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान  
लेश तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उष्पन्न कोम जादव  
मिल आए, ए अवसर नही फिरणोकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-  
वरकुं सिधाए, हमकुं ठंमी नव जवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सखू  
षे, में इहां नही अब रहणोकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-  
कुं कहतहुं, देखूं शौजा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठंमी ॥  
जामुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल,  
बात सुणो पियु मुज घरकी, हमकुं ठोम चले निरधारी,  
अब हे पीतम सरणोकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-  
ण हो राजुल, विषयारम हे विष सरणी ॥ यह संसार असार निरं-  
तर, कर करणी यह तरणोकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम  
लीयो, जिनसें कारज सरणोकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह  
जव पार उत्तरणोकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी यहलां राजुल नारी, पो-  
दता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शौजा  
हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें  
काया उद्धरणोकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहै, फिर फेरा नहिं  
फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पदं ॥

## ( ६८९ )

॥ अथ जिनदासजी कृत १० धन तयां लावणीया ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकौर, जीनोसें उतरोगे जव पार-  
 ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अव-  
 सार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण डख की एहे संसार-  
 ॥ करो प्रभु निहाल अजी जिनदास, रखो प्रभु मुंज चरणोंके पा-  
 स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई वाली ॥ सोबत  
 समताकी में ठाली, आतमा तपमें नहिं धाली ॥ अनंत जव वीतगया  
 खाली, वेदना निगौदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मंगे, सवा पद प्र-  
 भुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढ़ै  
 केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन  
 ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनद-  
 गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमवै ॥ ३ ॥ बोलत हे हिं-  
 या मेरा हसकर, चढ़ावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्मोंमें ध-  
 सकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खरा कमर कसकर,  
 हटाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास  
 लिया बासा ॥ ४ ॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कोई हठ  
 कषवाला ॥ वस्या तेरे दिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिहुं ता-  
 ला ॥ फेर तो ममताकी माला, बाल तो जगवंत पर जाला ॥ द-  
 पासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया मैं  
 गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे सरसती ॥ करी निनल निधि  
 थमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती ॥ मुजे बलवंत जई शोल सती,  
 मिठी मेरी डुर्गनिकी सब गती, एसा धन जिन दास गावै, अचल  
 पद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ विकट बट डुरगति का ज़ारी, नीर  
 ज्यां जरती कुमति नारी ॥ वरठी जन नेणोंकी मारी, मुव्या केइ  
 कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहिये खुआरी, जीता कोई सदय

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ  
या ॥ ७ ॥ चेत नर निगोदका वांसी, कराई जगमें तें हांसी ॥  
कुमतिकी पत्नी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी  
वंसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकुं मासी ॥ हियो  
खोल अरिदंतकुं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया  
नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन  
रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी गानी ॥ सेवक तोरा जिनदास  
वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ९ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,  
शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें  
लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी  
सुरगेंतिकी गानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही  
काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी ॥ चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये ॥  
कीसीकी जूनी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी  
का जेटो रे च०, जव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो  
॥ सुकत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण नज कीजै, सम  
कित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजक्तीका लहिये रे—लाज० ॥  
चल० १ ॥ करो मत मुखसे बर्नाई, करो०, तज तामस तन मनका  
सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोखो—मेरी जान री० ॥  
आतम समतामें तोखो, मत जरम पारका खोखो ॥ मौनकर तन  
मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० १ ॥ जोवन दिन ब्यारतणा संगी रे,  
जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाढ्यो, काया पत्नी नंगी ॥ प्रीत सब  
तूटी—मेरी ब्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया  
रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे—सुख दुः० ॥ च० ॥ १ ॥

जगतमें रहता जदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर  
गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा-मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख  
पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहियै  
रे-मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे-मु० ॥  
अब अचल अखंमि ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रूख्यो चोरासी  
मांदि जूख्यो में जरम, जूख्यो० ॥ महारे उदय अनंता डुख बांध्या  
जब कर्म ॥ में कदियक हुं रंक फिरयो तज शरम, फि० ॥ अरु  
कदियक राजा जयो गरमको गरम ॥ जब गरब आणकर बोख्यो  
पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु  
व्य जनममें चेत धनी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर  
का सुख वार अनंती पाया, अन० ॥ मारे शिव समताका सुख  
हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला०  
॥ में जलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ में पम्या  
खोजके फंद जोरतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय  
कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०  
अ० २ ॥ अब डुल्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥  
अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी मावा काट  
पाप परिहर रे, पा० ॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसे तर रे ॥ तुं  
निर्मल नयणे देख जगतसे मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान  
अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥  
वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन जायो सदा गुण गांज,  
सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जांज ॥ अब जवर  
मांही देव जिनेसर पांज ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण  
चित ल्यांज ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चांज ॥ स० ॥ ए



घोरासी के माहि फेर नहीं आउं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत  
एगाई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी छावणी ॥ दारे तूं कुमति कलेसण  
मार, लगी क्यूं केमे, ल० ॥ चल सरक खमी रह दूर तुजें कुण  
छेमे ॥ दारे तूं सुमतीको जरमोयो, मुजे क्यूं बोमी, मुजें ॥ मेरी सदा  
शाश्वती प्रीत बिन कमें तोमी ॥ तुज बिन सूनी मेरी सेज, कहूँ करजोमी,  
क० ॥ जब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ बुं जुरइ कुमति  
आंसु आंखसे रेमे, आ० च० ॥ दारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति  
में रुवो, सेति० ॥ पकम्यो साचो जिनराज, संग तेरो बूटो ॥ तेरो  
सूरख माने बात, दियाको फूटो, दिया० ॥ में सहज हुवो बुं दूर  
तार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे बात आव मत नेमे, आ० च०  
२ ॥ मेरी अमंतकालकी प्रीत पलक नहीं पाली, पल० ॥ सुमती  
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे  
गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं दे नार गोरो जर काली ॥ तूं हम  
कूं बेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लख  
चायो, रती नहीं जगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी झील, साच हो  
जगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज  
बचनको ग्यान, दिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं बात खोद  
मन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका खयाल, इसका गाना, इस०  
तेरी अलप जंमर खूट जाय, नरक भूट जाणा ॥ तैं दिता चार  
जुग बीच लिया है वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बैठा काल, करे  
है दासा ॥ में बोलूं साची बात, ऊठ नहीं मासा, ऊ० ॥ तूं सूता  
है कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक  
में खासा, खल० ॥ तेरे जीवन पतंगका रंग, ऊठ सब

आंसां ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवांना, स० तु० ॥  
 १ ॥ अब बुरी जाली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी  
 ठां संसार जेद नही दीजै ॥ कर वोतराग विसवास, हिये धर ली  
 जै, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांदे मत जीजै ॥ अब सात  
 विसनको संग, प्रीति मत कीजै, प्री० ॥ तोदे डुरगति दे पोहचाय  
 तेरो तन बीजै ॥ तुं सुख डुखका सिरदार, रंक नंद राना, रं० तुं० २  
 ॥ तुं विसरंगयां जुग बीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पंच रक्षा कु  
 टंबके काज, किया फंद घरका ॥ ते दिया धरम विन खोया, जनम  
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पंखे बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि  
 या नही तें लाज, बखत पर करका, व० ॥ तेरी वीती बात सब जा  
 थ जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुखट रे  
 रंधाना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ़्या, आनंद  
 दिल आधा, आ० ॥ मेरी जगी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥  
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर रावा, जि० ॥ में चाहुं चर  
 णकी खेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोखत दरसनकी, मेरे ए  
 हि माया, मे० ॥ युं अंरज करै जिनदास अखंख गुण गाया ॥ अब  
 बुरा कुरुरु उपदेश सुणो मत कांन, सु० तुम० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,  
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रंही नेम दरसनकी, सरस  
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गाजै ॥  
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एतो नेम  
 नवल ईक वीद, अनोखो बाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन  
 में गाजै ॥ अब दोऊ सव डुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे०  
 १ ॥ अब चढा नेम तोरणकुं, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज  
 आयै सुरंगा ताज, किलोवां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरखे

हिया जरकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥  
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब  
 इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी  
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकुं त्या-  
 गी, शिवरमणीके शिर वींद, वणयो वैरागी ॥ अब मढ़ल चढ़ी रा-  
 जुलकुं, खनी छिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके  
 नदी पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥  
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो  
 जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी  
 गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या रुंका, मुगति गढ  
 जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकुं हय कोया रे,  
 क० ॥ मुगतिमदलमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता  
 जीया, माहाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-  
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रभु  
 पारसजजले ज़ाई रे, प्रभु पा०॥ ज़ाव जमरका मेट जोत तेरी जगमें  
 सवाई ॥ टेककुं टालो, महाराज टे०॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान  
 गरबकुं गालो, गरबसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे  
 शुभ्र ज्ञाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांदि प्रभु  
 मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ ज़वि जीव ध्यान  
 दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डख मिट्या मेरे  
 अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे,  
 म० ॥ नहि ऊघनी मेरी आंख विलोया परब विना पाणी ॥ मैं  
 जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसे राच्या, म-

गंतीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संकारे ॥ क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही  
रे, पुदगलमें मान्यो सुख कल्पना कही रे ॥ सु० ॥ जग माहे  
जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,  
विषय गुण गावै ॥ अमृतकुं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥  
मुगतीको मारग मेट, नवटमें जावै ॥ थारी तुझ जिंदगानी मांहि, विक-  
ल बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जरयाहे मोती, ज-  
र्या० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल  
फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख नव आवै, अबलातेरो मुख  
जोती ॥ एसी संपत बिन मांहि सरब हय जई रे, स० ॥ पुद० ॥  
१ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-  
खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें  
मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-  
गोदकी वाट, पकर कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो  
आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ,  
मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥  
चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आ  
यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाम वना  
इ चंगी, व० ॥ पलजर परवार्यो पुन्यतणो तिहां जंगी ॥ पकरी  
परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंत गयो आकाश  
काया पनी नंगी ॥ जिनदास कहे कर्मोंसें जोर तेरा नही रे, जो०  
॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥  
में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पिथाकी कर कर  
पल्ले लागी, तुम त्याग चलै वनखंरु जये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सत्त्ववन्ती जावसैं त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्यौत कानकी  
जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण जर रे, ने० ॥ में० १ ॥ में अरज  
करुं करजोरु, करो मन परसन, करी० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,  
देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,  
ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित दरसन ॥ मेरे नेम मिल-  
नकी आस, मिलूं क्युं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीती त  
कसीर, चले क्युं रूठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस  
चूटे ॥ में रहूं जो घरके मांदि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ में बलुं  
पियाके संग, प्रीत क्युं लूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें कर  
रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥  
पीठै नेम गेथे निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परजात,  
नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहीं उर जगतमें बेली ॥ यूं  
अरज करे जिनदास सुषो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पद ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहीं पाया, दूजेकुं क्या  
समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥  
दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका  
परवसमें पणियो, ग्यानकला कदो कैसे जगे ॥ तृष्णाने जग लूठ  
लियो हे, कपट करी परधनकुं गगे ॥ स्वायं लोही मांस वधायो,  
प्राणी किस विध चले गगे ॥ विषय विपतकी करै चूषणी, जराचोसैं  
चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नही देखै,  
दूजाका अवगुण ज्ञाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजुरी, दया दूर दिससैं  
नाखै ॥ गुणवंतका गुण जौप मेरो मन, अवगुणकै रसकुं चाखै ॥  
तीनूही प्रणमें राग धरामें, सरणै जिनवर किम राखै ॥ ठग फा-  
सीगर चोर अन्याई, धनकै मिस इनकुं ध्यावै ॥ वं० ही० आ० ॥  
१२ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममै रीख अंबको, एरम अंब सरिखो सुजै ॥ पारख नही  
 हे हीवे ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कहै मुज  
 धरमै, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा, अव-  
 गुण किम गाथा जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामै  
 भातो, लोभ मांहे लपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानि गमको गरजी,  
 पीरु पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन  
 वचन मुखसैं कहंतो, अंतर आंठ न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं  
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको उंग खावै ॥  
 वं० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्गंधकूं, वै जिन  
 मुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे  
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रथकी न्यारी हे ॥  
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ  
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काढकर के-  
 वल पावै, ज्ञानगरय गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासैं सुम-  
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास बीनवै,  
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ कहुं२ में ऐसे सदगुरु, शिवर कल्प जिन धारी हे ॥  
 सखा शुद्ध सदा उपदेशी, जिवजनके उपगारी हे ॥ कहुं२  
 में० १ ॥ ग्यार निहोपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥  
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ कहुं२ में० २ ॥  
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु  
 पाखरु खंरते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ कहुं२ में० ३ ॥ संवेगी  
 अरु संवेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसैं शिवपद  
 साथै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ कहुं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुं२ में उन कुगुरूकुं, कनक का-  
मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाणे, अष्ट करमसें ज्ञारी  
हे ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वज्रूत लपेटी, शिर पर जटा बधा-  
री हे ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजुं०  
२ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासै, वे मद मांस आहारी हे ॥  
कूमा पंथ जगतकुं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजुं० ३ ॥  
कहूं उगुण कुगुरूकां कब लग, साथ नही संसारी हे ॥ आप मुँधै  
उरनकुं सुँवावै, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजुं० ४ ॥ समकित  
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकुं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीन-  
वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूगे रे जूगे, येने  
लेइ लाकनी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं जरतो, ग्यान  
दियाको खूटो ॥ सुधारयो मुधरे नही धरतां, जैसो लकनको ठुंगो  
॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नहिं आया, कोरोही पक-  
रयो पूगो ॥ गपोना सुणकर लोक पूजता, ए अलग नालको ठुंगो  
॥ यो० २ ॥ पंमित गुरूकी सोबत पाई, चेत्यो ना दीयाको फूटो,  
साचा नरको संग न करतो, कूरु कपट नहीं बूटो ॥ यो० ३ ॥  
जूगोही बोले जूगोही चालै, कपट करे एक मूगो ॥ साचो एद अ-  
सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-  
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आज घटे  
तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-  
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंरुल रवी चंडमा,  
सज्जी चलाचलकी ॥ दिवस ज्यारका चमत्कारहे, बीजलियां  
जलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जल ली ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय  
खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगल-  
की ॥ हंसा ठांन चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥  
मनमावत तन चंचलहस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सद्गुरु अंकुश  
दीया आनके, वातां जई बलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-  
धव जाई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए  
तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ जूठ कपट कर माया जोमी, कर वातां  
बलकी ॥ बोझकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय दलकी ॥ ख०  
७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊ  
पजै नही भिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन ज्ञांत तिरणा ॥  
हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति  
को० ६० १ ॥ घोराघोर तरकके जीतर, नानाडुख जरना ॥ मा-  
रन तामन वेदन जेदन, नर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक  
तिरयंच जोनि पाबकै, गलै फास परना ॥ कृपा तृषा अरु शीत  
उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर,  
देखै फूरना ॥ जब माला बुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥  
दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके जक्यो, कहुं नांही धिरना ॥  
साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून  
प्ररुप्पा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप  
जावना, असल खुलासा सार, जिण पुरुषां धारण किया, पोदच्या  
मुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु हुआ, आर्या वत्तीस ह-  
जार, लाख आवाक आविका, पाया जवजल पार ॥ ३ ॥ (चाल-हीर



(उँके ख्यालकी) मेरी अदाखत प्रजुजी कीजीये ॥ जिनशासन ना-  
 यक, मुगती जाणेकी मिंगरी दीलियै ॥ जि० ॥ खुद चेतन मुद-  
 ई घनादे, आठुं करम मुदाजा ॥ दावा रसता मुगति मारगका,  
 धोखा दे जाय दाजा जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-  
 लवाशा हमरा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजवून वणाकर, अरजा  
 ध्यान गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ में जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने  
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह जुलाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०  
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ डक अ-  
 मंता पाया मेने, अंत पार कबु नांही जो ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले  
 वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब  
 में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ-  
 ठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वमा चौधरी, उसकूं पूब भंगावो  
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, दूआ सफीना जारी ॥  
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥  
 जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार  
 बुलाये ॥ च्यार कषायरु आवे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये  
 जी ॥ जि० ८ ॥ (देर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन ना-  
 यक, ऊठा दावा दे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बढ़काया  
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब  
 मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयजोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा  
 न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥  
 जि० १० ॥ हाजर खमे गवाह हमारे, पूबियै हाल जु सारा ॥  
 बिना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥  
 (देर मुदीकी) ॥ चेतन कहै सताबी मांही, सुण शास-  
 न सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारै, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १३ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रजूजी, करम फरेबी जारी ॥  
जीव अनंते राह चलतकुं, लूट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे०  
१३ ॥ वने२ पंक्ति इन लूटे, ऐसा दम वतलाया ॥ घरम कहा  
उर पाप कराया, ऐसा करज चढ़ाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ अ-  
सल एन सरकारो सूत्रमें, मन मत अर्थ धलाया ॥ धर्म एनमें  
हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ जेद  
अर्थसे वेद पढ़ाया, हिंसक यज्ञ बताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दि-  
खाकर, ऐसा मुझे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म  
बताया, तपस्या सेती निगाया, इंडिय सुखमें मगन करीनै, जूठा  
जाल केलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रजूजी,  
अपील होण न पावे ॥ दहकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट  
जावै जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनो-  
कों समझाया ॥ चेतनकी निगरी कर दीनी, करसूका करज बता-  
या जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन  
सेती दिखाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन निगरी  
पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सत् जगणीस अठाई जी,  
जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम च-  
लाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी  
वारण सत्त श्रावण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको ल-  
ग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए  
है ॥ रोसकी रसम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इ-  
सत्यार लटकाये है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुवानबं-  
धी, तबके कुछ स्वाल जबाब सतगुरुने बताए हैं ॥ ठोमकार सा-

जी पायो पकड़्यो अरिहंतजीको, अनुजव पद पायवैकी निगरी  
 कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेनें करी दे तुमारे पास, साहिब  
 जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयै ॥ अष्ट करम आतुं जाम करत  
 हे कार साजी, साहिब बुलाय इसैं पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥  
 मैतो हूं गरीब मेरी करेगा उकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मि-  
 सल आज कीजीयै ॥ हाई तो हाजर हजुरीमें रह्या करूं, जीतूं  
 तो लगाय जुगल चरणनमें लीजीयै ॥ अब तो फरियाद नाथ  
 करी दे तुमारे पास, मेरी दाव दीजीयै तो रावरी चलाई दे ॥ मु-  
 नसबकी बात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अपील मान अ-  
 रजी लगाई दे ॥ जूठमूठकार साजी करत दे पांच तीन, साचो  
 मत जैन जाकी अैन अधिकाइदे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों जू-  
 ठावत दे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठेकरा सा-  
 जी पायो पकड़्यो अरिहंतजीको, अनुजव पद पायवैकी निगरी  
 कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति निगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी ज़ारी, देखनकूं आवै नर नारी ॥ अनं-  
 ता घोना उर हाथी, मिनखकी गिलती नही आती ॥ उठ पर  
 धजा जो फरराती, धमकसैं धरती अरराती (डुहा-साखी) समुझवि-  
 जयजीका लाम्हा, नेम उनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा,  
 जयसैन धर ठाम ॥ प्रसन जई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥  
 कसुंबख बागा अति ज़ारी, काने कुंमल बवि है न्यारी ॥ किलंगी  
 तुररा सुखकारी, माल गल मोतियनकी मारी ॥ (डुहा-साखी) काने  
 कुंमल जगमगे, शीश मुगट जलकार ॥ कोमि जानुकी करूं उप-  
 मा, शोजा अधिक अपार ॥ बाज रह्या बाजा टंकसारी ॥ नेम०  
 २ ॥ बूट रही उनकी ठरराई, व्याहमें आये बने जाई ॥ ज़रोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (उहा-साखी) नयसेनजी देखेके, मनमें करे विचार ॥ बढ़ोत जीव करि एकठा, वामो ज-रयो अपार ॥ करी सब जोजनकी तयारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकुं लाये ॥ (उहा-साखी) याको जोजक होवसी, जान वातते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ जावसैं चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४ ॥ पीठेसैं राजुलदे आई, हाथ जव पकनयो गिन मांही ॥ कहां तूं जावै मेरी जाई, उर वर देहूं सुकताई ॥ (उहा-साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और जुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने थारी ॥ नेम ० ५ ॥ सदेख्यां सबही समझावै, हियै राजुलके न-हि आवै ॥ जगत सब जूगो दरसावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥ (उहा-साखी) तोरुया कांकण दोरना, तोरुया नवलर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सदेख्यां सबही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोखे सिणगारा, आनूषण रत्न-जन्तित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, गोरुकर चाली निर-धारा ॥ (उहा-साखी) मात पिता परवारकुं, तजतां न लागी बार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढ़ि गिरनार ॥ फूरति गोरु मा-प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिख पशुवनकि आई, त्याग जब किनो गिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन ठुगवाई (उहा-साखी) नेम राजुल गिरनारपैं, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध-सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

बाई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह डल जाति

॥ ग० ॥ चौमांसा लग्या रस जिना, अलि अपाद रंग  
 महिना ॥ ध्यारु तरफसैं वादल पिना, बिजलिने चमकणा  
 किना ॥ दिख होत धरुकता सिना, में अबला सखी  
 पति हीना ॥ ( उम्माना ) सरसरर चखत समीर, घरसरर  
 करत सरीर ॥ मरसरर मरत समीर ॥ अलि कैसी करुं तदबीर,  
 बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें  
 श्याम धनघोर, ज़रजोर बोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते दोर,  
 पिउर पपइया सोर ॥ ऊरु लग्यो बूंद जमजोर, बिच चमके दा  
 मनी कोर ॥ ( उम्मावनी ) खरुखरुख रवधनमाला, तरुखरुख  
 जल परनाला, अरुखरुख नाला खाला, में डुखी हुई बेहाल, हीयेमें  
 साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ ज़ाद्वयमें पवन प्राचीना, बाद  
 लमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर जीणा, जयुं बाजै मनोहर  
 बीणा ॥ अब एसैं कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुजें डुख दीना ॥  
 ( उम्माना ) थुं विलपत मुख मुरजाई, सखियन मिल दौरु जगाई,  
 थुं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्री  
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद  
 जये वे पीर ॥ ऊठचली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर ॥ प्रीतमसैं  
 लीयो अकसीर, ब्रत संजम समकित हीर ॥ ( उम्माना ) शिव राजुल  
 नेम सिधाए, इंडादिक जसु गुण गाये, जिविजन मिल शीश नमाए ॥  
 मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे ठंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमंतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज दे, प्रीतम दोनु प्यारीका ॥ ऊगद  
 दिख धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोनु नारीका ॥ चि० ॥  
 कहंति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रीतम प्यारा, अकित उ  
 र कषाय इस्कमें झूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण दे जनमरुकी

तेरा संग लगे खोरा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होंती  
 न्यारा ॥ कहूं खराबी कब दूग तेरी तेरा चरत उदंगरीका ॥  
 जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग  
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर हे, इंद्री पांच सदादीका  
 ॥ कर सिंगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मेंहुं मोह-  
 रायको ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा  
 बालम वो हे फूल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरने बात ह-  
 भारी तेरे संग डुख पावेगा, तेरा मइले पाताललोकमें जहां वो  
 वास बसावेगा ॥ संगतके फल उसकुं लगेगा फिर पीठे पठतावेगा,  
 आखिर डेह देवेगी वैरण कैसे प्रीत निजावेगा ॥ मैं समझाउंगी  
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली बात  
 सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां बस्ती सूना मंदिर सुख  
 डुख दोउं खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही  
 सोणा हे, नही ऊजावा नही अंधेरा शिखा सहज बिठोना हे ॥  
 एसा मेरा जोग बोरुके सहे न डुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥  
 कहती सुमता सुण भैरे प्रीतम इस्की संगत नही करणा, दुक  
 इंक सौच करो दिल भीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद  
 इस्की बात कठिन हे समझके बूझके नहिं पसना, पहली सुखसें  
 फिर डुख डपजै वो सुखसें चातुर करणा ॥ रतन तीनका तूं हे  
 जोगी मुगति मेहल सिंगारीका ॥ ज० ५ ॥ एसे बोल सुणे  
 सुमताके चिदानंद उठके चला, नेणोमें आंतु जर रोती प्रीतमका  
 पकरुथा पला ॥ मत ना डेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके  
 सला, मैं अबलारें दगा करोगे कैसे होय तुमरा जला ॥ मेंहुं  
 दासी जनमरकी मानो वचन करारीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग  
 कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिंगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीनसे सदा भगन हुय सुगतिमं-  
 हल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो ज़विजन अपणां दिल सम  
 जाया है ॥ कहे रामरुक्सार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥  
 ऊ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले  
 सिणगार हुई हुसीयार, सहेब्ब्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥  
 कर केसरिया वेस बिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो  
 जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतिघनको हार, वणी तो दिलदार  
 हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ ( उमावणी ) नेण-  
 नमे कजरा हृद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा  
 हुसन परीका, लगी पियासें लगन, भगन दिल सघन घटा जेसें  
 कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण  
 वालम दिल वाते, गुने विन क्युं बिटकाते रे ॥ में चरणनकी  
 दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोरु कर शीश नमाते रे ॥  
 ( उमावणी ) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम  
 प्यारी ॥ साजन प्रीत निज्जा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद  
 नहीं रैन, सज्जी तो लगे खारी ॥ च० १ ॥ सजके खुब बरात साथ  
 लियै राम कृष्णसे जाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब  
 क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरजाई, कहो मुऊकूं सम  
 जाई रे ॥ ( उमावणी ) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्थाणा, दिलमें  
 अरज हमरी लाणा, सुखसें रंगजर चैन उमाणा ॥ नेणा वरसे  
 मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रभु दे-  
 झान एक धर ध्यान सदा निज्जा जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥  
 विजली जेसी चमक-दमक जेसें उस बूंदका पाणी, अंत मोती  
 खिर जावे रे ॥ ( उमावणी ) ज्योतिरूपका अज ले सरणा, नित  
 प्रेम उसीसे करणा, उर किसीके फंद नहीं परणा, मेरा वचन ले

मान, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संग रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली जाय सब खलक पलकका नहीं ज़रोसा जाणी, करो सुकृतकी निसाणारे ॥ ( उन्नावणी ) इतना कहा जब दिल समझाया, अविचल राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास बसाया, कहै राम रुद्धसार, करो तो ऐसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, राजुल कज़ी अरज करत हे प्रीतम कब धर आवोगे ॥ डूष ज़र गती मनमें चिंता नेशामें आसुं ऊरते, हाथ जोरकै राजुल कज़ी वार वार विनती करते ॥ ज्यान बणाई व्याहन आए घरमें आनंद बरते, किस विष ठांन चले गिरनारी मेरी दया नहीं दिल धरते ॥ मैं चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नहीं सरते, ज्यूं सागरमें जल विन मठली प्राण घनी पलमें हरते ॥ ( उन्नावणी ) हे तूं महिर निजर कर आव फेर रखला रे, तूं चंदवदन दीवार मुजें दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी धूनी खोल चूक बतला रे, हे तूं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निजावोगे ॥ रा० १ ॥ डखसुं ज़री वातां मत बोलो राजुल मन धीरज धारो, एकर आसुं मिलणे कारण मुगतीमदलमें मन मारो ॥ नर नार नहीं दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सिधावो मुगतिमदलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन आसुंमें कीनो राखो मनमें पतियारो, मुगतिमदलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं विसारो ॥ ( उन्नावणी ) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली, हे तूं मिरगनेली मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी उग्रशेनकी वाली, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न जुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी गुंठी



नहि खोले, या डुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहि  
 बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत खगणी फिर निजणी मुसकल होलै,  
 धन मानव जो प्रीत निजावै तरस अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनतो  
 करै राजुल बचन रसीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी  
 मुगतिमदलमें रमजोलै ॥ ( उमावणी ) देवा चंदकपूर अपूरब  
 ख्याल वणावै, देवा नरनारी मन रंग रागसु गावै ॥ देवा जांज  
 ताल रुफ होल मृदंग बजावै, देवा आनंद दर्ष बधावै हे जी मन  
 धंखितफल पाउगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ  
 देख्या रे हो सांवलिया साद्विष प्यारा लागे रे० ॥ अश्वमेध घस  
 जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद  
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारे० सु० कोइ० १ ॥ बालपणे  
 प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो डुखदाई  
 रे, मंत्र दियो बितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर  
 मुगट अवण कुंजल हृद ज्ञारी रे, कर श्रीफल जुजबंद जलक बिब  
 न्यारी रे, गल मोतियनको हार वणयो गुलजारी रे ॥ हारे गु०  
 को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वरदाई रे, पारस नाम  
 जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम बधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियाताथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ़ जाणा धूलेवा ॥  
 गढ़पति जनका वरु अरुंगा, मत बेसो तुम जन देवा ॥ सु० १ ॥  
 लकतावत चंनावत बोले, हमही नोकर जनहीका ॥ हींडपति वाकूं  
 हाथ जोमै, तीन झुवन शिर दे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु  
 पाताल सबेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन  
 आवै, मजकी भोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज जनहीसै  
 आवै, निर्धनियाकुं भक्त देवै ॥ बांज खिलवै सुंदर लरुका, सदा

( ६७ए )

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग  
निवारे जवश्का ॥ जूप जूर्जंग महरि करि नदियां, चोरन बंधन  
अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धौंसा वाजै, दशो दिशामें  
हे मंका ॥ जान तातिया नहीं जलाइ मत बतलाओ गढ वंका ॥  
॥ सु० ६ ॥ सणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं दे ये वातां ॥  
आंरा कीया ओहीज पावो, न्हे नहिं आवां आं साथां ॥ सु० ७ ॥  
मूंख मरोरु चढा अजिमाने, जहर जरा दें निजरूमें ॥ रुषजदेव  
हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूमें ॥ सु० ८ ॥ मथाराम सुत  
जणो मूलचंद, वने सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर २ घोरा,  
लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जितंद जिन-  
राज ॥ ध्रुवेवनाथ जाचो धणी, वरषुं श्रीमद्वाराज ॥ १ ॥ ( चाल  
लावणी ) काश्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥  
नाजि नरेसर वंश उजावन, आदि धर्म जल प्रगटायो ॥ २ ॥  
चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्द्वरायो ॥ इसो  
रुषज निधि प्रगट कटपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ ३ ॥  
खरुगदेशमें नगर ध्रुवेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा  
अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ४ ॥ आदौ मुरत काज  
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद  
शुग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,  
वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण  
गुणरासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरु लवमन, ए मुरत पूजन  
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेशी ठहराए  
॥ ७ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

पकरम अरु आपकरमकी, जई लमाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-  
 रमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपे परणार्ई ॥ मयणा चिंते काई नवाई,  
 करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,  
 आई श्रीजिनमंदिरपे ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै  
 मनकंदरपे ॥ ९ ॥ ( मोतीदाम बंद ) तूंहि अरिहंत तूंहि  
 जगवंत, तूंहि जिनराज तूंहि जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि  
 प्रतिपाल, तूंहि मनमोहन तूंहि दयाल ॥ १ ॥ तूंहि जगजंजन  
 जाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन नूप, तूंहि अविनासी  
 तूंहि बीतराग, तूंहि माहाराज तूंहि वरुजाग ॥ २ ॥ तूंहि गुण-  
 धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरुनाम ॥ तूंहि अध-  
 नाश तूंहि अविनाश, तूंहि मतिवंत तूंहि मतिवास्त ॥ ३ ॥ तूंहि  
 गुण केवलरूप अनंत, तूंहि जगतारन तारण संत ॥ तूंहि जग ध्वेय  
 तूंहि जग ध्वान, तूंहि चिदरूप तूंहि जगवान ॥ ४ ॥ तूंहि मम  
 तात तूंहि मम मात, तूंहि मम आत तूंहि मम बात ॥ तूंहि  
 सरणागत राखणहार, तूंहि दुख दोहग टाखणहार ॥ ५ ॥ ( बाख  
 लावणी ) ॥ करुं अरज एक तोपे जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते  
 ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥  
 पण तुऊ शासन जगत देखना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म  
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें  
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग  
 निवारण, गुण कीजे जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यह प्रसन्न हुंय फल  
 बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास जई  
 मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु  
 फरसें, कुष्टरोग सब नास्त हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु,  
 नृप श्रीपाल सोदावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी नूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशमें  
 प्रजु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रजु क-  
 रुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल  
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तब, पातस्याह ल-  
 रुवा आयो ॥ बूत जूत पत्थरकी मूरत, जन्मुल्लासैं उखरायो ॥  
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव  
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो बात  
 काजी मुल्लां तुम, एक बातसैं त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-  
 दाई, गो वधसैं ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज  
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,  
 शस्त्र जमोजम विकराला ॥ ११ ॥ ( दूहा ) महा युद्ध करणे लगे,  
 घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गाम्भी, आये धुलेव सुरंग ॥ १२ ॥  
 ( चाल लावणी ॥ ) गांव धूलेवा वंशजातमें, गुप्त रहे हैं प्रजु  
 भरती ॥ गाय एक कोमी बनियनकी, आइ बाहां चरती २ ॥ त्रवे  
 तिहां पयधारा शिर पर, सांज समें फिर नदी दूजै ॥ रीत करी  
 सब गोपालन पर, गौपाल अरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,  
 लह्यो जेद कह्यो बनियनपैं ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित  
 जयो हे तन मनपैं ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषजनाथकी  
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ ४ ॥  
 ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो  
 सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहुठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी  
 केइ व्रतधारी, केइ अलुआयो पांव चलै ॥ केइ लोककूं ड-  
 कर बाधा, कब प्रजुको दर्शन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस-  
 तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ २ महाराजकी मूरत,  
 संघ सवे लीनो आनो ॥ ७ ॥ जवरदस्तसैं दिवस सातमें, लापसी

धाँहिर तब कीने, अंस२ जर ब्रण रहाएँ, संव लोक दर्शन दीने ॥  
 ॥ ७ ॥ फिर सुपनेमें डूब्य दिखायो, संघे मिले देवल कीनो ॥  
 मध्य विराजै रूपन तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ८ ॥  
 ( दुहा ) संवत अदारे तेसठे, जाग्र सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो  
 डुष्टने, जाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ ( मोतीदाम उंद ॥ ) सदा-  
 शिव राय चिते मन एह, लूँटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जिल्लों  
 पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग डूब्य जंमर सुणाय ॥ २ ॥  
 जावां अब लूँटण गाम धूलेव, ग्रहं सब माल जई ततखेव ॥ आयो  
 निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २॥  
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, जंग जर साथ लिया कौकवाण ॥  
 तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥  
 ॥ ३ ॥ एतो बह जाजल देव कहाय, रहै महीं लाज ति  
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव चूप, ग्रहां सब माल  
 अबां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कर, कीयो नज  
 राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, जयो मन  
 चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चित जंमारी बुलाय, मीठे  
 वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो  
 तब कूच लई सबे लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार२, जंमारी सबे  
 इ पुकार १ ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज  
 गरीब निबाज ॥ चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ( दुहा )  
 उण समें कोन सेठको, बाहर तारण काज ॥ गये अधिष्टायक  
 नाथजी, जेई गये बहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी  
 सहेर धूलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार  
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोरे  
 दोनुं चढे, जेई अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिल्ल कौप आपे कियो, द-

शी दिशि फौज हजारें ॥ मार२ चो तरफतें, जई लेंमाई तयार ॥  
 ४ ॥ ( जुजंग प्रयात बंद ) कूंकू कुंकू कुंकू बहे कोकवाणं, सण-  
 सण सण तीर तरकस्त वाण ॥ धुवाकें धमाकें वेहे मांल गौला,  
 जिस्ता कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्रा  
 घाव लागे, किते मारतें कपते दूर जागे ॥ किते दंतपें तिरण लेवे  
 घराका, कितें थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुद्धाई-  
 लल्ला पुकारे, किते दीन होके खुदापें संजारे ॥ कितें नाथपें केस-  
 रा खून माणै, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशि-  
 वनें घाव लागो अटारो, पुनी ज्ञान जसवंत दोनुं संहारो ॥ वनो  
 कोष जाणी सबे फौज जाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥  
 सदाशिवने आखनी अटक लोनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो ॥  
 इसो नाथ धुलेवरो मईगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥  
 ( दूहा ) या विध कलियुग जग जणा, ताच्या केई जिनराज ॥  
 दीपविजय कविराजकूं, मदेर करो महाराज ॥ १ ॥ ( मोतीदाम  
 बंद ) तूंही नवनिद्ध तूंही अमलिद्ध, तूंही मनवंडित वंडित रुद्ध ॥  
 तूंही तिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥  
 तूंही कामकुंज तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥  
 तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विलराम तूंही वन सेव  
 ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इंडित दायक  
 नूर ॥ तूंही मम झूप तूंही पतसाह, तूंही मम रुद्ध जंमार अगाह  
 ॥ ४ ॥ तूंही मम मंत्र तूंही मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम  
 तंत्र ॥ तूंही गडनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्यतूंही जग-  
 पूज्य ॥ ५ ॥ ( लावणी चाल ) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश  
 नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे  
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे उद्दाई नाथनकी ॥ दिंड

मूसल वरु राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित ध्याने जे  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गमगम दौ गमगमदौ गम-  
 गम, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊरेपुर, ज़ीम-  
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अटार पञ्चोत्तर वरषै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (क-  
 लश-उत्पय ठंड) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म  
 नीती हरन, सब करम उध धनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद तार-  
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड जेजन ॥ ऋषजनाथ  
 महाराज, सबे जूप मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरयो  
 बाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, ध-  
 ननं धननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासुर कोष कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु  
 आ गाज जल मूसलधारा, धरु धरु काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 अरर आशान कंपे सुरको, तब धरणीधर चित चमका ॥ फल  
 विस्तार हजार किया तब, ऊमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ भ्रमकष्ट  
धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी  
कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुजि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररतंत  
ताल सब, रुफ मौं मौं करते रुंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
जागन्दी जालरके ऊंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,  
जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर जयों  
सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥  
घमा एकसो आठ शेलमी, रस जरिया है नीका ॥ उलटजाव  
श्रेयांश वहिरावै, मांन दिवीआठूकरे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुजी  
वाज रही है, सोनझ्यारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,  
गई जूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-  
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये  
धाम ॥ श्रीसिंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी  
नानु कहता, रुषनेदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर  
जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा  
वांक, रजखियो रांक, अनंता जवमें ॥ अ० ॥ आख्यो तुं तारा  
शरण, बली दुख दवमें ॥ कोषाधिक धुकता चार, खरेखर खार,  
लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ बली पापी म्हारो नाथ, ठेक ठेके



॥ आ मुजरो मुज जगवान, करुं गुणगान, ध्यानमी धरजी ॥ धा०  
 ॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्या बै पाप, सुणजो आप, कहं  
 करजोमी ॥ क० ॥ मुज जूंमामां जगवान, जूख नही थोमी ॥ जो  
 बहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ जूठू बहु  
 बोली, सावने सुं हरवुं ॥ तुज खोलामां मुज शीश, जाण जगदा  
 श, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म,  
 धरी नहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो थइ थारी आण में  
 ज उत्थापी ॥ में मुख विंदा घणो, मुनि पर तणी, करी हरखायो  
 ॥ क० ॥ परदारा देखी लबान, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केशव  
 खाल, आणीनिं ब्हाख, दुःख तुं हरजी ॥ ड० सेवक० ३ इति पदं ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणो ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे  
 ॥ समुद्रविजै सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक ती-  
 नों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ वदोत हगंसुं  
 व्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ षट्पंचाश कुल कोटि प्र-  
 माणे, जादव उनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब वरात वसायके रे,  
 झमशेन दरबार ॥ आए प्रभुजी हरखसूं रे, चढगये गिरनार ॥ मो०  
 ३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ विन अब  
 गुण बोमो मती रे, कोइ नही बै दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद  
 षष्ठी दिने रे, इंड चंड परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने रे, करम  
 दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदू रे, चैत्र शुक्ल  
 शुभ वार ॥ श्रीजिनईस सूरिसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो०  
 ६ ॥ राजकुल पहली नेमसुं रे, सुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निजई  
 सुगतसुं रे, रुद्रसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥  
 दूहा ॥ इक मोथी अरु पदमनी, नहि दीजै पर इत्य, वा

विगमै पंन्त विना, वा विगमे पर सन्न ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजा प्रज्ञाते चाली रे ॥  
 आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुने,  
 मोतोने आल पूरावो ॥ चार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल  
 चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ धन धूत धनतेरस दिवसे, कालै चव  
 दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजै, कर्म मेलो सब टाली रे ॥  
 आ० २ ॥ अमावसकी परब दिवाली, फरती जाकजमाली, घर२  
 तो दीवलिया ऊलके, रात दीसै अजुवाली रे ॥ आ० ३ ॥ अम्मा  
 वशकी पिठली राते, अ<sup>वि</sup> करम सब टाली, श्रीमहावीर निरबाणो  
 पोहता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ४ ॥ पन्निवाने दिन जुहा  
 रपटोला, ए रत रूमी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीऊ  
 पामी रदियाली रे ॥ आ० ५ ॥ बीजे तो वली ज्ञावरुबीजरु, बे  
 नरुली अति बाहाली ॥ ए पांचे दिन होया रे पनोता, एवे२ ह  
 रखे गाई रे ॥ आ० ६ ॥ हरख विजय पंन्त इम बोलै, -करो स  
 हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंन्त गुण गावै, जय२ बाजै ताली  
 रे ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे अई  
 आज, प्रज्जुमुख जोवाने, सरचा२ रे सेवकना काज, जवडुःख खो  
 वाने ॥ महावांस्वामी मुगते पुहता, गौतम केवलज्ञान रे ॥  
 धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रज्जु निरवाण ॥ जिन मु०  
 २ ॥ चारित्र पाढ्या निर्मलाने, टाढ्या ते विषय कपाय रे ॥ एह  
 वा प्रज्जुने वांदिथेतो, उतारे जव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ बाकुला  
 वडोरया वीरजीने, तारी चंदनवाल रे ॥ केवल लइ प्रज्जु मुके पो  
 हता, पाम्या जवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांदिथे  
 जे, पंन्म ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रज्जु ता

स्था नरने नार ॥ जि० ए ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणां  
दातार रे ॥ करजोमी कंवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाळ  
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥  
पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाई, पूवै मरुदेवा माई ॥ पो० १ ॥  
प्रभु नंदा सुमंगला राणी, जन रुचर सेज बिछाणी ॥ पो० २ ॥ प्र  
भु नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥  
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंछित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ  
जर अमर पद पावै, करजोमी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥  
पहिले मंगल प्रभुजीकुं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥  
बीजुं मंगल अगर नखेबुं, कंठै गडुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे  
मंगल आरती कतारूं, घंट बजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मं  
गल प्रभुगुण गाउं, नाचू थै धैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहे ना  
थ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥  
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जारया विविध प्रकारा ॥ इण गिरि  
साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु  
षज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल  
पगला प्रभु जेव्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥  
चोमुख बिंब मनोहर अदभुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलना  
थक श्रीआदिजिनेश्वर, पूजत डाल सहु वारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥

भात चक्रेसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ डुष्ट  
निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥  
४ ॥ खरतर गङ्ग नायक सुख दायक, कीरत जग विस्तारा ॥ गु  
ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५  
॥ संवत जगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन  
मनं हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ धर्मशील प  
दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना  
गुण, पञ्जणे मुनि रुढसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले ज़ारी ॥ प्रथम  
पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज  
गजै, जगत प्रभु गुण बारै साजै ॥ ( दोहा-साखी ) अष्ट करम-  
दल जीतके, सकल सिद्ध ते आय ॥ सिद्ध अनंता जजो बीजे पद,  
एक समय शिव जाय ॥ प्रगट ज्यो निज स्वरूप ज़ारी ॥ ज०  
१ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद्र सूरज जेशी ॥ उमारयो  
राजा परदेशी, एक जव माहे शिव लेशी ॥ ( दोहा-साखी )  
चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे,  
धन धनो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद ज़ारी ॥ ज० २ ॥ द्र  
व्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान  
नही किरिया, जैनदरशनसैं सब तिरिया ॥ ( डुहा-साखी ) ज्ञा  
न पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,  
निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो  
गकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर बोनी सब राणी ॥ यती दश ध  
रम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ ( डुहा-साखी )  
करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ कृपा युत नव-

सुरेश धन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत  
 बाग गगन जितमंदिर, सजल घटा सुविदास रे ॥ श्याम मनोहर  
 तन बवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु  
 ज्ञानन अमृतरश धारा, ऊमी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत  
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभुकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण  
 इंड्यनुषनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत  
 सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ धिर चित  
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत  
 जरी प्रिचकारी, बेहूँ प्रभूसँ कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-  
 लाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान भरो  
 उतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषज गया क्युं व-  
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी  
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें जई उदासा, प्रभु रुषज गये वनवासा  
 ॥ ( दूहा-साखी ) रुषज प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥  
 जरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी  
 मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर  
 मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-  
 नके रुसँ, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा-साखी ) नगर  
 अयोध्या गुं जुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलेंजा जरतकूं, मेरा  
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी  
 जिनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो  
 गया इकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये  
 विना कमथे पाया ॥ ( दूहा-साखी ) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रुषजकी, गेरु गया वन-  
 वास ॥ हेजी जगतारण जी डुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आ  
 सू महीने जी मूरतकी ठिब लागी, वो होयगया बैरागी ॥ धनके  
 सब लोनी जी पूत्र जये नीरागी, कनी खबर न लो वरुजागी ॥  
 ( दूहा-साखी ) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप  
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद पद सेवे जी  
 नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महीना जी कब वो रु-  
 षज घर आवै, मोहे नेणा आण बतावै ॥ नही कागद जी मुजकूं  
 पूत्र पठावै, मेरा जीव वहोत डुख पावै ॥ ( दूहा-साखी ) फुरती  
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उमकर मिलती रुषजसें,  
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥  
 मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे  
 लड़ाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-  
 कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) बारा वरस लमते जये, इंद्र दिये सम  
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रयंश राय ॥ हे जी तो तप  
 कारण जी खने बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी  
 पने ठंमका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा  
 जी रुषज जगत प्रतिपाला, में रटुं रुषजकी माला ॥ ( दूहा-साखी )  
 कोइ परवतकी उदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंम तापकी विपतमें, सहै  
 वहोत डुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥  
 मे० ७ ॥ माहका महीना जी किसें कहूं डुख मेरा, सब पूत्र विना  
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुषजका  
 बेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥  
 राज रमणकी संपदा, वो गया बिनकमें गेरु ॥ एसा निरमोही जी  
 पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

ज़रत), सूने मन घरमें फिरती ॥ ज़रत यूँ केता जी सोच फिकर  
 क्यूँ करती, रहे निशदिन मुऊसँ खरती ॥ (दूहा-साखी) ज़रत विविध  
 तर ज्ञांतसों, कहता बात बनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ  
 आय ॥ प्रभू पनवारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका  
 महीना जी हय गय रथ सब तयारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥  
 ज़रत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चख देख पूत्र सुखकारी ॥  
 (दोहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, ज्ञामंरुख हे लार ॥ चोसव  
 चमर सुरपति करै, डुंडुजी गगत मऊार ॥ एसो सुत तेरो जी  
 विखसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा  
 मन हरखै, जब कृषजप्रभू मुख निरखै ॥ नैषपट उधम्या जी बीत  
 राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर  
 मुगली गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पदलो शिव जननी दई, एसें कृ-  
 षज सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभू मगनमें ॥ मे०  
 ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में कृषज चरण  
 छई छई, दरस नित तेरो जी मुऊकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम  
 सदा मन जाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसँ, कुशल  
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसँ, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे  
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूबरी वोमधुरावाली एचाल) ॥ सावण  
 महीने नैम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर बटत वधाई  
 शत्रु मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण जाई, तोरणसँ रथ फेर सि-  
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी-मोह लियो  
 शिवरमणी शौकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ जादू महीने गगन  
 बीज पीया इंदर चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपें जोवन

गरणायो ॥ सखी मोकुं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी,  
 मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि० २॥  
 आसू महीने आश पीयाकी मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकुं वि-  
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने  
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—  
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,  
 उचम प्रीत रीत नहीं साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयापे  
 चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग जीनी ॥ स्याम  
 तोकुं मति ये क्या जासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन  
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत  
 तयारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-  
 ल, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश  
 पीया नलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं बोलूंगी संग नाथ अब चाहे  
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो  
 फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह  
 महीने रुत सरदीकी ठंरु बहोत बाजै, सेज लगे नागण सी मु-  
 ञ्को नेम नहीं लाजै ॥ मदनको कटक कोण जाजै, नहीं वदन  
 कुं गैरत किसकी, तुमकुं यह बाजै ॥ पिया विन करूं में गति  
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घोघर खेले दंपति सुख माणै,  
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग में  
 खेळूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं बाला जोरी ॥  
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मात फूली वनराई  
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद पदै ॥  
 प्रीत जिन नव नवकी तोरी, राजुल तज सिसगार हार कुं मदन  
 मान मोही ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश



वैशाख आँख यूँ उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुल-  
री गई सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंड चंड शेक्ति  
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी-मो०  
१० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजै कंत बुरी, नदी रैण मुख  
चैन शखीरी चल रही प्रेमबुरी ॥ पाप कोइ पूरब नदै आया,  
गोरे चलै धनस्याम आज में दरशाण मुख पाया ॥ तजी में सब  
घरकी फासी-मो० ११ ॥ माश असाढ़ सखी संग राजुल नेम  
चरण जेठ्या, धर करणी जव तिरणी होकर धंद सजी मेठ्या ॥  
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुद्धसार आधार तुमारों प्रेम शिवा  
शखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी-मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजिन  
तौचम जकि सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज  
सुंदर सकुणमंदिरं, विमल केवल बोध विश्वरं ॥ अति सुवर्ण  
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय  
जकिर्जविनां जवेजवे, जवेदज्जीष्टार्थ निदानमजुतं ॥ सएव नंदा-  
त्म समुन्नवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा  
जितमान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥  
सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥  
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मां  
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश मद्धित मूर्तिः स्फुर्तिमत् पुण्यकीर्तिः,  
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित डरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय  
 तु जिनर्पतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली  
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य जृंगीव पद्मा ॥ अवि  
 कृतमति कायोत्सर्ग मुशान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु  
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फलानां सहस्रं,  
 बहुल विमल ज्ञास्वद्रूपणोज्जासि गात्रः ॥ गुरुतर वर जन्मया सक्त  
 चित्ताङ्गजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्रसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥  
 कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका  
 पदार्त्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु नृजग  
 लक्ष्मी भ्राजमानो जितेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या  
 श्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,  
 रघाधस्यानघा गुणः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन बर्हि  
 षां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ लेख्यता  
 सक्तयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,  
 येन कल्पद्रुमा अपि ॥ जवेदज्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृतायच  
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कल्याण  
 कारको जूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥  
 यकेश पार्श्व शित पाद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्व जवजेद पार्श्व ॥ १ ॥  
 स्मेरातसी सून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-  
 ज्ञाति वामां प्रजव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥  
 तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष जूषर्षित  
दान वारि, र्यन्मानतेत्वं धियसे सदैव ॥ स एव गव्युत्तम दानवारी,  
प्रोञ्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,  
सुज्ञान सुज्ञानजिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूयः, कढ्याण  
कढ्याण कृदं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजि-  
मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्माजिधै रुझित जूषनास्ते, विसारि लोकेश  
विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोद्दाम धामा  
न्वितं, पादाब्जं परज्जाग जृत् त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दहं  
कर्म विपक्व पक्व दलने जव्या जवंतु कमाः, कढ्याणाश्रय मुक्ति  
माप्नु मखिलंतीर्त्वा जवान्नोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी ङदः ॥ गौरीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-  
ढ्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-  
श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामं  
देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥  
२ ॥ जित्वा ज्ञेयं कर्म जालं विशालं, प्राप्यामन्तं ज्ञान रत्नं  
चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वधी-  
शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कजत्रं ॥ अंजोजाकं  
सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्ज्ञांग चंद्र, संख्ये  
मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०  
५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, धनयना धननाद विज्जाजि-  
तं ॥ जजत जंक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं  
॥ १ ॥ विविधवर्ण विज्जुषित विग्रहाः, विहित उर्दम दुर्पक निग्रहाः ॥

वसु युगोक्तं मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रज्वंतु शिवंकरा ॥ २ ॥  
रुचिरवर्णं निबद्धं मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रज्जिवंदितं ॥ निखिल  
साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चित्तशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल  
ज्वल्य सरोजं विकाशिका, कुमति संतप्तसोच्चय नाशिका ॥ जिन-  
चराननं पद्मं गतोन्मुदा, ज्वतु वाग्जिनलाजं शुज्जार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्वं नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्वं जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजोनिधेः, संज्ञा-  
ध्वनं परस्वरूपं विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सद्भुतं प्रतिबिंबं तस्तु-  
स्तुतरां गोमयीपुरोद्भासिनः, सोऽस्त्रासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैव नित्यं  
स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुजं दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजंतो ध्वनि,  
स्पृश्यंतेन हि हृद्यं जंतुनिबद्धे र्वन्यैर्न वा तस्कैः ॥ नैवोज्ज्वालदवानलै-  
र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सः श्रीपार्श्वविज्जुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-  
नकेषां जवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणजुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-  
वितां, धृत्वानिर्मलजावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लज्यन्ते  
नरराजं निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैव शुद्धमनसा  
संसेव्यतां विश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुषजस्ततो जितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थकृत् ॥  
सुश्रीमानजिनंदनश्च सुमतिः, श्रीसद्गुणप्रज्ञः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा-  
र्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रज्ञः ॥ सर्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः, श्री  
शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रज्ञुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,  
शांतिः कुंथुररस्ततो जितरिपुर्महर्जिनः सुव्रतः ॥ अर्द्धतो नमिने मिशुद्ध  
मुनिपौ विश्वत्रेये विश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान  
प्रज्ञुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमश्चिद्रूपाश्चतुर्विंशति, निःशेषो-  
त्तमज्वलजंतुहृदयांजौ जप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्ते सुरवृंदवंद्यविशदं

कव्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्रक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नमसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदेव-  
प्रवचनांजोधोव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वैर्जिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-  
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-  
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-  
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्चैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं  
प्रोक्ततत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना  
धिपा खिन्नुवनेख्याताश्वतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोत्तरेश्वरप्रज्ञतयोयेच  
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती,  
त्रैलोक्येजयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषजस्य  
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसंज्ञिनपतेः सम्मेदशे  
लेहतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्दतो, निर्वाणा  
बिनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम  
रगृहे मॅरौकुलाडौस्थिता, जंबूशाल्मलिचैत्यशालिषुतथावक्काररूपा  
दिषु ॥ इह्वाकारगिरौचकुंरुलनगेद्दीपेचनंदीश्वरे, जैलेयेमनुजोत्तरे  
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्दतांजन्माज्ञि-  
बेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकै-  
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिज्ञिः, कल्पाणानिचतानिपंच  
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिंतापंचये,  
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि  
बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणज्ञताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥  
देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थकरमातृका-  
श्चजनकायक्ताश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशच्चिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका  
श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याणकालेर्दत्तां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपि स-  
त्ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्ति पठन्ति तैश्चमनुजैर्द्वैमार्थिकामा-  
न्विता, लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वन्तु मे मङ्गलं ॥ ए ॥ इति  
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धुं नैकर्म नकर्ता ॥  
न ग्रंथं नसंगं नशब्दा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥  
नबन्धो नमोहो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नैजोकं ॥  
नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ  
नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिष्ठा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं  
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिन्ता, नदुष्टं  
नज्जोतं नरुष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नजृत्वं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥  
त्रिदंशे त्रिखंभे हरे विश्वव्यापं, रुषीकेश विद्वंस कर्म्मरिजालं  
॥ नपण्यं नपापं नअज्ञानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नत्राद्यं नवृद्धं  
नविद्धि नमूढा, नवेद्यं नजेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नरुष्यं नशुक्लं नमोदं  
नतंज्ञा, चि० ॥ ६ ॥ नत्राद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्वयं नक्षेत्रं  
नदृष्टो नज्जव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नत्राद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥  
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो  
जिज्ञिषं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनि-  
धिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वज्ञूतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥  
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वराः, वेदेतं हरिवं-  
शं दर्प हृदयं श्रीमान्मनूदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग लोपानं,  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ॥

( ६५५ )

नतिष्ठति चिरं पापं, विड् हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य  
 ह्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश  
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्गुणसमृत्त वर्धनं ॥ जन्मदाय वि-  
 नाशाय, वृंहणं सुखवास्थिः ॥ ४ ॥ जिनेन्द्रकिं, जिनेन्द्रकिं दिने २  
 ॥ सदा मेस्तु २, सदा मेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नहित्राता ३, नहित्रा  
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नज्जतो नज्जविष्यति ॥ ६ ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन,  
 रक्ष २ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्जं ॥  
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ ग्रहीतो मंगलं नि-  
 त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुहं, धर्मः सर्वत्र  
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहाहीतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो-  
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मो लोकोत्तमोहीतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदाही-  
 तः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्मं शरणं मर्द-  
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगञ्ज समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचन वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स  
 कुरु सामिनी सरस्वती, प्रेमे प्रणमं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रि-  
 सखातणो, नंदन गुण गंज्जीर ॥ शासननायक जगज्जयो, वर्द्धमान  
 धर्मवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जितंदनें, चरणें करी परिणाम ॥  
 ज्ञाविक जीवना हित ज्ञानी, पूवै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा-  
 रग आराधियै, कद्दो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तब वचन  
 रस, ज्ञाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोच्यै, व्रत धरीये गु-  
 ण साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥  
 विधिमुं बलि वोसराविये, पाप स्थानक अघार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ्र करणी अनुमोदियै, ज्ञा  
 व जलो मन आशि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु  
 जाण ॥ ७ ॥ शुभ्रगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि  
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ ( ढाल ॥ १ ॥  
 ए ठिमी किहां राखी ॥ इस चालमें ) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप  
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोइये  
 अतीचार रे ॥ प्रा० ज्ञा० १ ॥ गुरु जुलविये नही गुरु विनयें, काखै धरी बहु  
 मान ॥ सूत्र अर्थ तजुनय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥  
 प्रा० ज्ञा० २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह  
 तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥  
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प  
 र जव वलिय जवोजव, मिझाडुकर तेहरे ॥ प्रा० समकित  
 द्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत  
 अजिलाष ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥  
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं ठंनो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा  
 हमीने धर्म करि थिरता, जगति प्रज्ञावना करिये रे ॥ प्रा० स०  
 ६ ॥ संग चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे  
 वको जे विणसाज्यो, विणसंतां जुवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-  
 त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ जव प०,  
 मि० ॥ प्रा० चारित्र द्यो चित्त आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण  
 गुप्ति निराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध  
 वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ९ ॥ आवकने धर्म सामायक, पो  
 सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली  
 रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र महोदयुं



जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे जेदे तप नवि  
 कीधो, गते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि  
 फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,  
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥  
 वलिय विशेषे चरित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व  
 चन सुणीने, पाप मैल सवि घोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)  
 पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे आवर कहा ए ॥ करी  
 करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥  
 धर आरंज अनेक, टांका जोयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥  
 लीपण गुंण कज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥  
 २ ॥ धोयण नाइण पाणी, जीलण अण्णकाय, ओती धोती कर दू  
 हव्या ए ॥ जालीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, जारुजूंजा लिहालागरा  
 ए ॥ ३ ॥ तापल सेकण काजे, वख निखारण, रंगण रंधणरसवती ए ॥ ४  
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधिया ए ॥ ५ ॥ वानी  
 वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौंदक  
 पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या ठुंद्या आधिया ए ॥ ५ ॥ अल  
 शीने एरंरु, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू  
 मांदि, पीली सेलमी, कंद मूल फल बेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-  
 डी जीव, हएया हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आज्ञव  
 परजव जेह, वलिय जवोजव, ते मुऊ मित्रामिउकर्म ए ॥ ७ ॥  
 क्रमी सरमिया कीना, गारु गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥  
 वाला जलो चूमेख, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥  
 ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उदेही जूं  
 लीख, मांकरु मंकोमा, चांचरु कीनी कंशुआ ए ॥ ९ ॥ गदहिया  
 धीवेल, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिठा० ॥ १० ॥ माखी मञ्जर मास, मसा  
 पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण विबु तीरु, जमरा  
 जमरीय, कौता बग खरुमांकनी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,  
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या,  
 वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पामो पा-  
 समां, पोपट बाढ्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते  
 मुऊ० ॥ १३ ॥ ( दास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए  
 चाल ) क्रोध लोभ जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥  
 कूरु करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी  
 मिठामि डुक्कर आज, तुह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥  
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १॥ देव मनुज तिर्यचना जी,  
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह  
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव२ मेळी आधि ॥  
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवै साप्र रे ॥ जि० ३  
 ॥ रयणी नोजन जे कर्मा जी, कीधा जक अजक ॥ रसना र  
 सनी दाखचें जी, पाप कर्मा परतक रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई  
 वीसारीया जी, वलि जांग्या पञ्चक्राण ॥ कपट हेणु किरिया करी  
 जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,  
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-  
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलनीनी देशी ॥ ) पंच  
 महाव्रत आदरो, साहेलनी रे ॥ अथवा ढयो व्रत बार तो ॥ यथा  
 शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पाखो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया  
 संजारीयै, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-  
 तणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमावियै  
 सा० ॥ येनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धि करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चितवौ, सा० ॥  
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै  
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमावियै, सा० ॥ जे उप  
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा  
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ स्वमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म  
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि  
 कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ घन मुर्बा मैशुत्र  
 तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥  
 निर्दा कलह न कीजीयै, सा० ॥ क्रूरा न दीजै आल तो ॥ रती  
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाळ तो ॥ ८ ॥ त्रि-  
 विधर वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अछार तो ॥ शिवगति आ  
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तौ ॥ ९ ॥ ( दाख ५ मी  
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-  
 णो करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्या कर्म सहु अनुजवे ए,  
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण  
 सिद्धजगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत  
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित धार  
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तौ ॥ ३ ॥  
 आज्ञव परज्ञव जे कर्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म  
 साखे निंदिये ए, पक्कमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ निरुधामत  
 वर्त्ताविआ ए, जे ज्ञाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुसति कदायहने वते ए,  
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घमाव्या जे घणा ए, धरटी  
 हल हथियार तो ॥ जवर मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार  
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनमर परिवार तो ॥ जन-  
 मांतर पोइतां पढी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आज्ञव

परजव जै करंया ए, इम अधिकरण अनैक तो ॥ त्रिविध वैसि  
 राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःखंत निंदा इम  
 करी ए, पाप करंया परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए  
 ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( हाळ ठी ॥ आदि तुं जोइने आपणी  
 ॥ ए चाल ॥ ) धन ते दिन मांहरौ, जिहां कीधो धर्म ॥ दान  
 शीयल तप आदरी, टाढ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शैवजादिक तीर्थ  
 नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥  
 ध० २ ॥ पुस्तकें ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु  
 विध सांचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पत्तिकमणा सुपैर करंया,  
 अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायने, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥  
 धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जांव जेळो मन आणिये, चित्त अ  
 णी गम ॥ समता जावे जाविये, ए आत्मराम ॥ ध० ६ ॥ सुख  
 दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचरंया,  
 जोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य  
 काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जीव  
 जली परे जाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ ( हाळ ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपर  
 ॥ ए चाल ) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसख  
 आदरिये पच्चस्की च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी गंभी ममता  
 अंग, ए आत्म खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आ  
 हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लोखंचीर्त्तरक ॥ दुसरो  
 ए वली २ अणशणनो परिणाम, एइथी पामीजै शिवपद सुरपद गम  
 ॥ ३ ॥ धन धन्ना शालिजई खंयो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या  
 जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यै करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारै महा मंत्र नवकार,  
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जायै दुर्ग  
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरबनो सार ॥ ४ ॥ ज-  
 न्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अव-  
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख  
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुउ जील जीलणी राजा राणी थाय, नवपद म  
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या बै सुर  
 जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व  
 ली मंत्र फढ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥  
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना  
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि  
 जिणो चित्तमां राख्यो ॥ तिणो पाप पखाली जवजय दूरे नांख्यो,  
 जिन विनय करंता सुमंति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ ( ढाल ७  
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल ) सिद्धारथराय कुल तिलो  
 ए, त्रिशला मात मद्धार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतरथा ए,  
 करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में  
 अपराध करथा घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ  
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो  
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने जवेखस्यो ए, तो किम  
 रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूण आकरा ए, जनम मरण  
 जंजाल तो ॥ हुं हुं एहथी उजग्यो ए, गेरुव देवदयाल ॥ ज०  
 ४ ॥ आज मनोरथ मुज फढ्या ए, नाग दुःख दंदोल तो, तूगे  
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कळोल ॥ ज० ५ ॥ जव  
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि  
 दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ ( कलश ) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयौ ॥ श्रीवीरं  
जिणवर चरण युगतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव  
सूरिंद पटवर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगण्डपति श्रीविजयप्र  
ज्ञसूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा  
चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-  
जयें, युण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे,  
रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण  
अज्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि  
लास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥  
इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिद्धाय लिख्यते ॥

नरहेसर बाहुबली, अजयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिन्  
अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जधूलिज्जदो, वरय  
रिसि नंदिसेण सीद्दगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंरुअओ केसि  
करकंदू ॥ २ ॥ इल्ल विइल्ल तुदंसण, सालि महासालि सालिन्न  
दोअ ॥ ज्जदोअ दसन्नज्जदो, पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबूपहू  
वंकचूलो, गयसुकमालो अवन्तीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि-  
लाइपुत्तोअ बाहुमुखी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरुक्खि, अज्जसुहत्थी  
उदाय गोमण्णो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥  
पज्जवो विन्हुकुमारो, अहकुमारो इट्ठपहारोअ ॥ सिज्जंत कूरगड्डअ,  
सिज्जंतव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुदं गुण-  
गणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥  
सुलसा चंदणवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयांसुंदरि  
सीया, नंदा ज्जदा सुज्जदाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पज्जमावई  
अंजणा सिरीदेवी ॥ जिह सुजिह मिगावई, पज्जावई चिच्छणादेवी

॥ ए ॥ बंजी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई  
 दीवई धारणी, कलावई पुष्पबूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी,  
 गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सञ्जनामा, रुपिणी कन्द  
 महिनी ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कदिना, नूआतह चैव नूअ दि-  
 नाय ॥ सेणा बेणा रेणा, नअणीओ धूलजहस्त ॥ १२ ॥ इच्छाई मदा-  
 सईओ, जयंती अकलंक शील कलिआत ॥ अऊ विवऊई जासिं,  
 जस पददो तिहुअणो सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिज्ञाय  
 ॥ अथ मन्हजिणाणं सिज्ञाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिहंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ उव्विहआव-  
 हसथेमि, मुज्जुत्तोदोइपथदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसदवयं, बाणंशेलं  
 तवोअजावोअ ॥ सज्ञायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥  
 २ ॥ जिणपूआजिणधुणिणं, गुरुधुअसाहम्मिआणवव्वजं ॥  
 वव्वहारसयसुद्धी, रहयत्तातिथयत्ताय ॥ ३ ॥ मुव्वशमविवेकसंवर,  
 ज्ञासासंमिईवज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियज्जणसंसग्गो, करणदमोच  
 रणंपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवस्विह्नुमाणो, पुत्थयलिहणंपजावणा  
 तित्थे ॥ सट्ठाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोम, जिनवर नामे मंगल कोम ॥ पदेले  
 स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजै लाख  
 अष्टावीश कदा, त्रीजै बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु लाख  
 धार, पांचमें वांदू लाखज च्यार ॥ २ ॥ ठेठे स्वर्गे सहस्र पचास,  
 सार्तमें चाळीस सहस्र प्राशद ॥ आठमे स्वर्गे ठेठ हजार, नव द-  
 शमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अरयार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवे  
 धके त्रणसे अदार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधि-  
 का बली ॥ ४ ॥ सहस्र सत्ताणु त्रेवीन सार, जिनवरनुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास उंवा वडोत्तर धार ॥ ५ ॥  
 एकसो असी बिंब परिमाण, सज्जा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोरु  
 बावन कोरु संज्जाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर  
 साठ विसाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोरुने वडो-  
 त्तर लाख, जुवन्नपतीमां देवळ ज्ञारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब  
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोरु निव्याशी कोरु,  
 साठ लाख वंदू करजोरु ॥ ८ ॥ बत्तीशे ने ओगणसाठ, तिर्वा-  
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशै वीश ते  
 बिंब जुहार ॥ ९ ॥ अंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर  
 वंदू तेह ॥ रुषज्जा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-  
 शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥  
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥  
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-  
 काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम -नगर पुर  
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन  
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-  
 गार, अठार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,  
 पाळे पलावै पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अर्च्यंतर तप उजमाल, ते  
 मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नितर ऊठी कीर्ति करूं, जीव कहे जव-  
 सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हतप्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥ जृर्जुवः स्वस्वयी-  
 शान, मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यज्ञावैः, पुनतः खिज-  
 गज्जनं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्, नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-  
 मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषज्जस्वा-



मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्द्धतमजितं विश्व, कमलाकरं चास्करं ॥ अम्लान-  
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्जव्यजनाराम, कुड्या-  
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंजवजगत्पतेः ॥ ५ ॥  
 अनेकांतमतांजोधि, समुद्धाशनचंडमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान्  
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणामो, चेजितांजिनखावलिः ॥  
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रजोर्देह,  
 ज्ञासः पुष्पांतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥  
 श्रीसुपार्धजिनेंशय, महेंद्रमहितां ह्ये ॥ नमश्चतुर्वर्षसंघ, गगना-  
 जोगज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रजप्रजोश्चंद्र, मरीचिनिचयो ज्वला ॥ मुर्ति-  
 मुर्तिं सितध्यान, निर्मितेव श्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकश्चिद्विश्वं, कल-  
 यनकेवलश्रियां ॥ अर्चित्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिवोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥  
 सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्पंदी, शीतलः  
 पातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ नि-  
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी जूत,  
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥  
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतकहोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चेतो,  
 जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंजूरमणस्पर्धि, करुणारसवारिणा ॥  
 अनंतजिदनंताव, प्रयत्नतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पज्जुमसधर्माण,  
 मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेशारं, धर्मनाथं मुपास्महे ॥ १७ ॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्म्यातमः शांत्यै,  
 शान्तिनाथजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथोजगवान्, सनाथोतिशयर्धि-  
 ज्ञिः ॥ सुरासुरनृणां, मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुज  
 गवां, शत्रुघ्नारनजोरविः ॥ शत्रुघ्नपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमजि  
 धुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिश, प्रत्यूषममयोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥ २२ ॥ युतंतोनमतामूष्णि, निर्मलीकारकारिणं ॥  
 वारिष्ठवाश्वनमेः, पातुंपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यडुवंशसमुद्भूः,  
 कर्मककहुताशनः ॥ अरिष्टनेभिर्जगवान्, जूयाद्दोऽरिष्टनाशनः ॥  
 ॥ २४ ॥ कमठेधरणेद्रेच, स्वोचितं कर्मकुर्वति ॥ प्रजुस्तुल्यमनो  
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा  
 चाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायादतेनमः ॥ २६ ॥ कृता  
 पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने  
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री  
 मान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, खिन्नुवनचूनामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेण्महितो, वीरंबुधाः संश्रिता ॥ वीरेणाजिहतः स्वक  
 र्मेनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीराक्षीर्षमिदं प्रवृत्तमतुलं, वी  
 रस्यधोरंतपो ॥ वीरे श्रीधृति कीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरज्जडं दिशः ॥  
 ॥ २९ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरजुवनगतानां दिव्य  
 वैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरजुवनानां  
 ज्ञावतोद्दैनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीशदायारं ॥ समरामिजत्त-  
 पालग, निवाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ नैसनमो विष्णोसहिपत्ताणं,  
 संतिसामि पायाणं ॥ जौस्वाहा मंतेणं, सत्ताशिवडुरिअहरणाणं  
 ॥ २ ॥ नैसंतिनमुक्कारो, खेळोसहि माइल्लद्विपत्ताणं ॥ सौंहेनमो  
 सत्तोसहि, पत्ताणं चंदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-  
 देवीजस्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिसिपालसुरिदां, सयाविरक्कंतुजि-  
 णज्जत्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतुममरोहिणी, पन्नचीवज्जासिंखलासया ॥ व-  
 ज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली मदाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-  
 धारी, महज्जाया माणवीअ वड्कट्टा ॥ अचुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआन देवीन ॥ ६ ॥ जस्कागोमुहमहाजस्का, तिमुहजस्का  
 सुतुंबरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउ, वंजोमाणुनसुरकुमारो ॥ ७ ॥  
 बम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतहयजस्किंदो ॥ कुंभवरुणोजिउमी  
 गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउंचकेसरी, अजिआडुरिआरि  
 कालीमहाकाली ॥ अचुअसंताजावा, सुतारयासोअसिखिवा ॥ ९ ॥  
 चंदाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निबाणिअचुआधरणी ॥ वंइरुद्धु-  
 जगंधारी, अंबपन्नमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयत्तिथरस्केणया,  
 अत्तेविसुरासुरीचक्रहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुंहा, कुणंतुरस्केसअ  
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिडिसुरगण, सदिओसंधस्ससंतिजिणचंदो ॥  
 मझविकेरुरस्के, मुणिमुंदरसूरिणुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना  
 दसम्मदिठी, रस्केसरइत्तिकालंजो ॥ सवोवदवरदिओ, सलइंसुह  
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगह्मगयणदिणयर, जुगवरसिस्सोममुंदरगुरू  
 णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥  
 ॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुष्कलवई विज  
 ये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंरुरीगणी, नवरी  
 ये सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जवियणना मन मोहे ॥ २ ॥  
 स्रजद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंधु अर जिन  
 अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रजु जनमिया, वली  
 शोवन पावै ॥ मात पित्त हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥  
 जोगवी सुख संसारना, संजम मन लावै, मुनिसुव्रत नमी अंतरे;  
 दीक्षा प्रजु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो कथ करी, पाप्मा केवल  
 नाण ॥ वृषज लंढने शोचता, सर्व ज्ञावना जाणा ॥ ६ ॥ चौराशी जस  
 गणधरा, मुनिवर एकसो कोनी ॥ त्रण जुवनमां जोअतां, नहि  
 कोई एहनी जोनी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्य केवली, प्रजुजीने

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाँसै सर्व विचार ॥ ८ ॥  
 हृदय पेढाल जिनांतरे ए, आशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु  
 प्रणमतां, शुभ्र वंछित फज लोव ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः  
 ॥ श्र.सामंधर जगधरि, आ जरते आवो ॥ करुणावंत करुणा  
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धर्यो ए, जो हवे  
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं तूं ताहरो, नहीं मेजूं हवे सांघ ॥ २ ॥  
 सयल संग ठंकी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,  
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुज्जे धर्यो ए, पूरो सोमं-  
 धरदेव ॥ इहांअको हूं वीनवूं, अवधारो मुज्जे सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥  
 सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल  
 गिरिवर शृंग मंरुण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर  
 कोमि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जि-  
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नभे अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुन-  
 रोक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल  
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद  
 मुनिवर, कोमिअंत ए गिरिंदरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो० ॥  
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक भांडी, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि  
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर  
 शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याईयै ॥ निज शुद्ध सत्ता साध-  
 नार्थे, परम ज्योतिर्नेराइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विगोह निज,  
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मवि-  
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय  
 सिद्धक्षेत्र, दीवै उर्गति वारै ॥ जाव धरीनें जे चढै, तेने जव पाँ

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरअनो राय ॥  
 पूर्व नवाणूं रूपजदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंम  
 सोहामणो, कवक्यक अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंणो, जिन-  
 वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेस्तर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि-  
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा  
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण  
 अनंत प्रभु तोहरा ए, किमही कळ्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन-  
 ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंडाजी, सीमंधर परमात्म पासे जावजो ॥ मुज  
 वीनतन, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्रएय जुवन  
 ना नायक वै, जस चोसठ इंदर पायक वै, नाण दरशण जेहना  
 कायक वै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया वै, जश धोरी  
 लंठन पाया वै, पुंनरीगणी नगरीनो राया वै ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
 बार पर्वदा मांदि विराजै वै, जश चोत्रीश अतिशय गजै वै,  
 गुण पेंत्रीस बाणीयें गाजै वै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पमिबोहे  
 वै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे वै, रूप देखी जविजन मोहे वै ॥  
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो वूं, पण जरतमां दूरै वसि  
 ओ वूं, महा मोहराय कर फसियो वूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
 साहिब चित्तमां धरियो वै, तुम आणा खरग कर ग्रहियो वै, तब  
 कांइक मुजथी ररियो वै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ इवे  
 पुरो, कहै पद्मविजय थाऊं शूरो, तो बाधे मुज मन अति नूरो ॥  
 सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आखनिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, तवालाख टकानो  
दिहामो रे, लागे मुंने मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा  
हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यच गति दूर  
निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुं १ ॥ मानवजवनो  
लाहो लीथो, वाला० देहनी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फू-  
लमे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं २ ॥ दूधमे पखाळीने  
केशर घोळी, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे  
जोतां, पापमेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुं ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-  
रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ  
मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं ४ ॥ इइ सरीखा ए  
तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल  
टालै, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शेत्रुं ५ ॥ कांकरेश श्रीसिद्धक्षेत्रे,  
वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उक्षार अ-  
नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं ६ ॥ नात्रिराया सुत नयणे जोतां, वा०  
मेह अमीरश वूम्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री  
आदीश्वर तूम्या रे ॥ शेत्रुं ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कोजै एहनी सेवा ॥ मानू  
हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्ज्वल जिन गृहमंरुली,  
तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विज्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०  
२ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि  
आगलै, श्रीसीमंथर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,  
जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥  
वि० ४ ॥ जनन सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश  
विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाजिराजंगजं,  
 वंदैरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगे अजितं जिने जृष्ट  
 पुरे श्रीसुव्रतस्थं जने, श्रीपार्श्वप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धनानं त्रिधा  
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकदम्बतटप नुवने ग्रैवैयके व्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा  
 त्रिसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे  
 कुंभले, ये चान्येपि जिनामामिसततं तान् कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
 श्रीमद्दीर्गजिनास्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रवि-  
 ष्णवे मिथ्यात्ववैतादयकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिषधगा ज्ञानां-  
 षु ग्राह्यदिगा, सामेकर्ममलंहरत्वं वरुणं श्रीद्वादशांगोनदी ॥ ३ ॥ शक  
 ध्वं द्रविणदाश्वधरण ब्रह्मोदशात्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुख  
 गण श्रेष्ठेश्वरी जारती ॥ येन्ये ज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा  
 दिषु, श्रीसंघस्य तुराचतुर्विधसुरा स्ते संतुज्ज्वंकराः ॥ इति श्रीपंच  
 तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिन्हाय ॥

( नदी यमुनाके तीर उठे दोय पंखाया ॥ ए देशी ) पित्रजी  
 पित्रजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पित्रजी चढया परदेश तपे मो  
 री रातियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कब मिले, नीर विगो  
 ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण  
 नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन जमें ॥ जो होव  
 सज्जन दूर तोही पासे बसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन उ  
 छलसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै  
 देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें,  
 साखे रे साख समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यग्रानी पीर  
 जोवनवय अति बहै, जेहनो पित्र परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

जुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मि  
ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाढ्यो ते नवि टलै,  
चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केशो स्वाद निंबू  
ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते ढीवर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या  
माखतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥  
जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजौवन तजी नेम वैरागी  
धै फरै ॥ ६ ॥ सजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां  
द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती  
मनरली, रूपविजय प्रभु नेम जेठे आशा फलो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंहाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो  
जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा डोकाने  
दया पाव रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबोला नारी कारणे रे, मूरख  
संख्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंकी जूरसे रे, सहीसे इह  
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ गुंवा चिशाव्या मंदिर माले  
था रे, दे दे धरतीमें कुंफो नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊठी  
चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जाव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र  
वर्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो वलो इंद्र सुरानो नाथ रे ॥  
ऊगीरने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवालो वात रे ॥  
आ० ॥ ४ ॥ अशिर संसार तजी मुनि नीसरथा रे, करता मुनि  
नवला तेह विहार रे ॥ जारंगपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-  
ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रूमी रीतसुं रे, देवे  
मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोकने रे, जइ  
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता  
धरो रे, म करो मुनि जणायुं अजिमान रे, रुषी चोथमल सूत्र



देखीने रे, जोन करी जाबोर मजार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतर्था चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति  
मा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ गेरुंजय श्रीआदिदेव,  
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू रुषन जूहार  
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय  
मूर्ति मानसुं, जरेते जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ  
वरूं, ज्यां बीजे जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने  
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांदवगढनो राजियो, नामे देव सुगश ॥ रुषन  
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आशं ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

डु विंथ धर्म जिन उपदिस्थो, चोथा अजितदंन ॥ बीजै  
जन्म्या ते प्रजु, जवडुःख निकंदन ॥ १ ॥ डु विंथ ध्यान तुम्हे  
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रह्लादयुं सुमतिजिन, ते चविथा  
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने जवि तजिये ॥  
मुऊ परे शोतख जिन कहै, बीज दिन शिव जजिये ॥ ३ ॥ जो  
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण मुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परे,  
खहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न  
अहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥  
॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जितकढ्याण ॥ बीज दिनें केइ  
पामिया, प्रजु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, दुआ  
बहुत कढ्याण ॥ जिन उत्तम पद पयने, नमतां होय सुख  
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिमै वैग बीरजिन, जाखै जविजन आगै ॥ जिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसें, पांचमे  
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी  
 लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही,  
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्मधान  
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा  
 लगै, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व  
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो मदिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥  
 पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच  
 माशनी, पंचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,  
 काजसंग लोगस्त केरो, ऊजमणूं करो जावशुं ए, टाळे जव फेरो  
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणो जाव अपार ॥ वरदत्त  
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-  
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जागो, तेम फागुण  
 वदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,  
 जनम्या रुषज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम  
 मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ॥  
 अजिनंदन चोथा प्रज्ज, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम  
 ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-  
 रावै सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिमुव्रतस्वामी ॥  
 नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ आवण  
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगजाण ॥ तिम आवण सुदि आठमें,  
 पातजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाइवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववांसी ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवन्दन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संव चतुर्विधथापवा,  
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज  
यज्ञ ॥ इंद्रुति अदे मिळया, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशें  
चतु गुणों, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अखो करै, मन अजिमान  
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें  
थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर  
मल्लि पास, वर चरण बिलाजी ॥ रुबज अजित सुमतो नमी, मल्लि  
घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ शिव वाश पास, प्रवर्जवना  
तोनी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सगळी जोनी ॥ ६ ॥ दश  
क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देहसें कळयाण ॥ वरंग अग्यार एकादशी, आराधों  
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंगं लखाविये, एकादश पाठ ॥ पूंजणी  
ववणी विटंली ॥ मसी कागळ काठ ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत गंनवा ए,  
वहो पन्निमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अव-  
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिव देव, अरिहतं सकलंनी  
ज्ञाव धरो करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर ज्ञापित वाणी,  
जंयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ( यह धुई च्यार  
वखते पण कहवाय ठें )

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंभु  
अंरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि  
अंतर वर दीक्षा, शिक्का जगतनि रासैं जी ॥ नदय पेढाल जिनांत-  
रमां प्रभु, जासे शिवबहुं पासे जी ॥ १ ॥ वत्रेस वनसदि

चतुस्रि मलिया, इगसय सठि उक्किण जी ॥ चउ अरु अरु मिली  
 मध्यम काले, वीश जिनेसर दिवा जी ॥ दो चउ च्यार जधन्य  
 दश जंबू, धायई पुक्कर मऊरे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे,  
 प्रवचनसार उद्वारेजी ॥ ५ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद  
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत  
 विनीते जी ॥ द्वादश अंग पूरव युत रचिया, गणधर लब्धि विक-  
 सिया जी ॥ अपङ्कवसिय जिनागम वंदो, अकर पदना रसिया  
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध जंग व्रतधारी जी  
 ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपड्व हरनारीजी ॥ पंचां-  
 गुली सुरी शासनदेवी, देती तल जश रुद्धो जी ॥ श्रोशुन वीर  
 कहै शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-  
 णमै चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमानें शाश्वत जिनवर  
 जेह, जे बीजतयो दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन  
 चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव  
 साध ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें  
 दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजै द्विविध धर्म जग-  
 वंत, जेअ विमला कमला विजल नयण विकसंत ॥ आगम अति  
 अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कोजै पातिकनो परि-  
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कपल सुकोमल चीर, चक्के-  
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय,  
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

आवण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्यानेमजिनंद तो ॥ स्यामव-

रक्ष तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस्र वरस प्रभु  
 आउखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,  
 पोहता मुक्ति मजार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या  
 मुक्ति मजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार  
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां बली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-  
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥  
 नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, ज्ञाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण  
 बेलनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोलेो मानवी ए,  
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै  
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यह जलो ए, देवी श्रीअंबिका  
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै बलि धर्मना काम तो ॥  
 तपगङ्ग नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-  
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, ज्ञाव धरी सुरराजाजी ॥  
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने  
 श्वर जन्म महोत्सव, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप  
 करतां अम घर, मंगलकमला बाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम दयरी  
 गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी,  
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंचता जिनवर,  
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य  
 बाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण  
 जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम ज्ञाखी, जवि मन संशय  
 ज्ञांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पावै निरतीचारो जी ॥  
 आठमने दिन अष्ट प्रकारै, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा कराने, मानवजन्म फल लीजे जी ॥ सिद्धाई देवी  
जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे,  
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपश्री,  
कोरु कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूखनी, गोविंद पूज नेम ॥ कोण कारण  
ए पर्व मोटुं, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-  
घणा, एकशो ने पच्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोटोहोतुं, करो मौन  
उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर  
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौबीश  
जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मज  
नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखाविये,  
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवलो विंटशा, ठवशो पूंजशी  
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी  
इम ऊजमो, जेम पामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी  
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजरुं चंरु अखंरु  
जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि  
दर्ष पंक्ति शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतणा निश  
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शय्याविज्जोः शैशवै ॥ रूपा-  
लोकनविस्मया, हृतरसज्जांत्या भ्रमञ्चकुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रज्ञा  
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्ध-  
मानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांज्जोतैः ॥  
कुंजैरप्सरसांपयोधरज्जर, प्रस्पर्धिज्जिःकांचनैः ॥ येषांभंदरत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निषकेऋतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोहं  
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥  
 चित्रंभवद्दर्थयुक्तंमुनिगणवृषजै, धारितंबुद्धिमज्जिः ॥ मोक्षायद्वारज-  
 तंव्रतचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ज्ञक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं,  
 सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-  
 दान्नदंष्ट्रं ॥ मत्तर्घटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-  
 दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुज्जतिर्दिश-  
 तुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्ल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्ल्याणकंदं पदमं जिणंदं, संतितत न मेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं  
 पयासं सुगणिक्कदाणं, जत्तीइवंदे सिरिवड्ढमाणं ॥ १ ॥ अपार  
 संसार समुदपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्केसारं ॥ सब्बे जिणंदा सुर-  
 विंद विंदा, कल्ल्याणवल्लीण विसाखकंदा ॥ २ ॥ निब्बाणमग्गे वरजा  
 ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुद्धानं  
 ॥ नमाप्ति निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींउ गोखीर तुसारवन्ना,  
 सरोज दड्ढा कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुढ्ढयवग दड्ढा ॥ सुद्धा  
 यसा अम्ह सयापसन्ना ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु नद्वार,  
 ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम  
 चंड वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम  
 दंडश, कुलमांहे जिम रुषज्जनो वंश, नाजितणो जे अंश ॥ क्रमा  
 वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गु  
 णवंता ॥ १ ॥ रुषज्ज अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ सुख  
 पूनमचंदा, पद्मप्रज सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज सुविधी, श्रीतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत  
जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध  
पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,  
सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ १ ॥ ज़रतराय जिन साथै बोलै, स्वामी  
शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषज कहै सुणो ज़र  
तराय, बहरी पालंता जे नर जाय, पातिक जूको आय ॥ पशु पं  
खी जे इण गिरि आवै, ज़वबीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर  
पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रंजो बखाण्यो, ते में आगम दिखमहिं  
आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति ज़रत नरेसर  
आवे, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूर्ति ठावै, नाज़िरा-  
य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरो बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं  
आता ॥ गोमुख नें चक्रेसरीदेवी, शत्रुंजय सार करै नित्यमेवी,  
तपगढ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयलेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव  
सूरी प्रणमी पाया, रुषजदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासन जी,  
रूपाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी  
गहंली विराजै मोतीना अकृत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी  
बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ कैसरचंदन ज़री रे कचोली क  
स्तूरी वराज जी, पहलो रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परजात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तह नव विह वंजचेर गुत्तिधरो ॥ च  
उविह कसाय मुक्को, इय अछारस गुणेहि संजुतो ॥ १ ॥ पंच म  
हवय जुतो, पंच विहावारपाखण समत्थो ॥ पंच समईतिगुतो,  
ठत्तीस गुणेहिं गुरुमज्ञ ॥ २ ॥



॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जावमशेहोश्नियमसंजुत्तो ॥ विन्नइअ  
सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्रंमिन्नकए, समणो  
इवसावउहवइजह्मा ॥ एएणकारणेशं, बहुसोसामाश्यंकुक्का ॥ २ ॥  
सामायक विधे लीधु विधे पारिउं विधि करतां जे अविधि दुओ  
होइ ते सबे हुं मन वचन कायार्ये करी मिहामि डुक्कं ॥ दश म  
नना दश वचनना बारै कायाना एवं वत्तीस दूषणामाहे जे कोइ  
दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायार्ये करी मिहामि डुक्कं ॥

॥ अथ पोसह पारवानो गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवर्निसेसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह  
पनिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासखाहणिक्का, सुलसा  
आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइजयवं, दइधयंतंमहावीरो ॥ २ ॥  
पोसह विधे लीधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ  
होय ते सबि हुं मन वचन कायार्ये करी मिहामि डुक्कं ॥

॥ अथ जगर्चितामणि चैत्यवदन ॥

॥ इह्माकारेण संदिस्सह जगवन् चैत्यवदन कलं, इहं ॥ जग  
र्चितामणि जगनाह जगगुरु जगरस्कय ॥ जगबंधव जगतत्यवाह,  
जगज्जाव वियस्कय ॥ अठावय संगविअरुव, कम्मठ विणासण ॥  
चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पनिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-  
मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सचरितउ, जिणवराण विहरं  
त लअई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव  
साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरनाण  
॥ समणइकोमी सहस दोअ, शुणि जअ निअ विहाणि ॥ २ ॥  
जयउसामी२ रिसइसंजुंजि उज्झित पडू नेमजिण ॥ जयउ  
वीर सअ उरमंरुण, जरुअअहि मुणिसुवय ॥ मट्टुरिपता

डह डुरिय खंरुण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि  
जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ  
सहस्सा, लक्का उपन्न अठ कोलीन, वत्तीसय बासीआइ, तिय  
लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोरि सदाइं, कोरी बायाल लक्क  
अरुवन्ना ॥ वत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमा-  
मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥  
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिन ॥ १ ॥ काले विणए  
बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्दवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय,  
अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निबि ति  
गिन्हा असूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ  
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस  
चरित्ता थारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, अ  
अंतिर बाहिरे कुणल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त  
वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसञ्चानं  
काय किलेसो संली ए थाय, वज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायञ्चित्तं वि  
एणं, वेयावञ्चं तहेव सञ्जानं ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अंतिर न न  
वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिकमइ जो जहुत्त मा  
ऊत्तो ॥ जुंजइअ जहायामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य,  
मुखपद्मपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामन्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्  
सुखं सुरेजः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते  
जिनदोः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्करादुग्रसनं सदोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रजापितं, दिनागमे नोमिबुवैर्मसकृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसगं० सुअ देवया जगवई, ना  
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती ?

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साहं  
ति मुक्कमगं, सा देवी हरउ डुरियांइ ॥ ? ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी आपना मूकीने आ  
वक आविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज  
ग्या पूंजी कटासण ऊपर बैशी मुहपत्ती नावा हाथमां मुख पासे  
राखी, जमणो हाथ आपनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी  
( पंचिदिअ ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी  
अन्नउत्तससिएणं कहै, ? लोगस्सको अथवा व्धार नवकारनो काउ  
सग करै ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाका  
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निहेहुं इच्छं । इम कही  
मुहपत्ती तथा अंगनी पन्निहेहणना पचास बोल कही मुहपत्ती प  
न्निहेहीए पढी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामा  
यक संदिस्साजं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकगठं  
इच्छं । एम कही बे हाथ जोफी एक नवकार गणी इच्छाकार जग  
वन् पसाय करी सामायकदंरुक उच्चरावोजी, पढी गुरु प्रमुख व  
मेल करेमिजंते कहै, पढी खमासमण देई इच्छा० वैसणो. संदिसा  
जं । खमा० इच्छा० वैसणोठाजं, खमा० इच्छा० सिज्जाय, संदिस्साजं  
खमा० इच्छा० सिज्जाय करुं इच्छं, एम कही त्रणनवकार गणावा । पढी  
बे धनी सज्जाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानो विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पन्तिक्याथी ( यावत् ) लो  
जस्त सूची कहो खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पन्तिकेहुं एम कही मुंह  
पत्ती पन्तिकेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,  
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कही पढी ज  
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव  
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पढी जमणो हाथ थापना  
सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार  
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजै, पढी पाणी वावरुं होय तो मुहपत्ती  
पन्तिकेही अने आहार वावरुं होय तो वांदणा बे देवा, तिहं  
बीजा वांदणामां आवस्तियाए ए पाठ नही कहिवो. पढी यथाशक्ति  
पञ्चस्काण करुं, पढी खमासमण देई इच्छा० कही वमेरायें अथवा  
पोते चैत्यवंदन कहवुं, पढी जंकिंचि० नमोत्तुणं० कही ऊना थईने  
अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसगग करी नमोर्हत्तु क  
हीनें प्रथम थुई कहवी, पढी लोगस्तु सवलोए अरिहंतचेइयाणं  
कही एक नवकारनो काउसगग पारोनें बीजी थुई कहवी, पढी  
पुस्करवरदी० कही सुअस्तजगवत्तं करेमिकाउसगगं वंदण० कही  
एक नवकारनो काउसगग पारी त्रीजो थुई कहवी पढी सिद्धाणं बुद्धाणं०  
कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसगगं अनतू० कही एक नवका  
रनो काउसगग पारी नमोर्हत्तु कही चोथी थुई कहवी पढी वैसोनें  
नमोत्तुणं कही, पढी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य  
उपाध्याय सर्वसाधुऋषः प्रते थोजवंदन करीयै. पढी इच्छाकरेण०  
दैवसिक प्रतिक्रमणगणं एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटा

सणा ऊपर आपीने इहं सबस्सवि देवसिय० कहेवुं, पढी ऊजा थई  
 करेमिजंते इहामिठामिकाउसगं जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कहीने  
 अतीचारनी आठ गाथानो काउसग करवो, आठ गाथा न आवने  
 तो आठ नवकारनो काउसग करवो, ते काउसग पारीने लोगस्स  
 कहेवुं, पढी बैसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पम्पिहेहीने वांदणा  
 बे देवा, पछी ऊजा थईने इह्माकारेण० देवसियं आलोउं इहं आलो  
 एमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा. पढी अटार पाप  
 स्थानकआलोइये, सबस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीने एक नव  
 कार गणी करेमिजंते इहामिठामिपम्पिकमिउं कहीने वांदित्तु कहेवुं  
 पढी वांदणा बे देवा, पढी अणुठित्तुमिअप्रितर देवसिअं खामीने  
 वांदणा बे देवा, पढी ऊजा थई आयरियउवव्याए कहीने करेमि-  
 जंते० इहामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे  
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग करवो, ते पारीने लोगस्स  
 कही सबलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणावत्ति० कही एक लोगस्स  
 अथवा च्यार नवकारनो काउसग पारीने पुक्करवरदी० सुअस्सज्ज  
 गवउ करेमिकाउसगं० वंदणा० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार  
 नवकारनो काउसग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं० कही सुय-  
 देवथाए करेमिकाउसगं अनउ० कही एक नवकारनो काउसग  
 करवो, ते पारी नमोऽईत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पढेली थुई कहवी  
 अने स्त्रिये कमलदलनी पढेली थुई कहवी. पढी खेत्रदेवतानी  
 बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पढी १ नवकार  
 प्रगट गुणी बैसीने उछा आवश्यकनी मुंहपत्ती पम्पिहेहीने बे  
 वांदणा दीजै, पढी सामायक चउवीसठो वंदनक पम्पिकमणुं काउ-  
 सग अने पञ्चस्काण कहुंउंजी एम ए उए आवश्यक संजारावा. पढी  
 इहामो अणुसदि नमोखमासमणाणं० कही नमोईत् कही पुरुष

नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण शुई कहे पढो नमोऽस्तुषुं कही स्तवन कहवुं, पढी वरकनक कही जगवान आदे वांदावा, पढै जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अढाइजेसु कहेवुं, पढी देवसिअपायञ्चित्तनो कान्तसग च्यार लोगस्त अथवा शोलनवकारनो करवो, कान्तसग पारी प्रगट लोगस्त कही बेसोने खमासमण देई इन्ना० सिद्धायसंदिस्साजं, बीजुं खमासमण देई इन्ना० सिद्धायजणूं एम सिद्धायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिद्धाय कहवी, पढी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक-  
 उत्कम्भकउतो कान्तसग च्यार लोगस्तनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वदेरे अथवा पोत पारीने नमोऽर्हकही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्त कहै, पढी इरियावही० तस्तउ-  
 त्तरी० कही एक लोगस्त अथवा च्यार नवकारनो कान्तसग करी प्रगट लोगस्त कहेवो, पढी चनकसाय० नमोऽस्तुषुं० कही जावंति बे कहीने जवतगहरं० जयवीरराय कही मुंहपती पमिजेहवो पढी इन्नामि० इन्नाका० सामायकगरुं यथाशक्ति इन्नामि० इन्नाका० सामायकगरुं तद्वत्ति कही पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाज्यवयजुत्तो० कहेवुं, पढी आपेझी था-  
 पना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथो समजवो ॥ इति देवेशी प्रति-  
 क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वकी रीते सामायक लेवुं पढी इन्नामि० इन्नाका० कही कुलमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्तनो अथवा शोल नवकारनो कान्तसग करी पारी प्रगट लोगस्त कहवो, पढी खमास-  
 मण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीरराय सूधी कहेवुं, पढी

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य नपाध्याय अने सर्वसाधू प्र-  
 त्येके वांदवा, पढी खमासमण बे देई सझायनो आदेश मांगी एक  
 नवकार जणीने जरदेसरनी सझाय कहीने फरी ? नवकार गण-  
 वो, पढी इन्कारसुहराईनो पाठ कहवो, पढी इन्काका० राईपमि-  
 क्कमणोठाजं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपोने पढी इन्  
 सबस्सविराईय डुच्चितिय० कही नमोत्पुणं तथा करेमिजंते कही  
 इन्नामिधामिकानुसगं० तस्सज्जरी० कही एक लोगस्स अथवा  
 च्यार नवकारनो कानुसग पारोने प्रगट लोगस्स कही सबलोअ-  
 रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो कानुसग करवो,  
 पढी पुरकारवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गा-  
 थानो अथवा न आवमे तो आठ नवकारनो कानुसग पारी सि-  
 द्धानुबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेही वांदणा  
 बे देवा तिहांशी लेने अप्पुद्धिमिस्वामी बांदणा बे दीजै तिहां सूधी  
 देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसिय आवै ते ठिकाणे  
 राईयं कहेवुं, पढी आयसियनवच्चाए० करेमिजंते० इन्नामिधामि०  
 तस्सज्जरी कही तपचित्तमणी करतां न आवमे तो च्यार लोगस्स  
 अथवा शोल नवकारनो कानुसग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स  
 कही ठावा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेही बांदणा बे देवा, पढी स-  
 कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्ति पञ्चक्राण करवुं, पढी इन्का-  
 कारेण संदिस्सह जगवन् सामायकचज्जीसत्थो वंदनक पम्किमण  
 कानुसग पञ्चक्राण करयुं ठेजी, एम ठ आवश्यक संजारवा, पढी  
 पञ्चक्राण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवुं होयतो धारवुं ठेजी,  
 एम कहवुं, पढी इन्नामोअणुसदिं० नमोखमासमण्णं० नमोईत्त०  
 कहीने विशाललोचन० नमोबुलं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक  
 नवकारनो कानुसग पारी नमोईत्तकही कट्टयाणकंदनी प्रथम श्रव

कहवी, पढी लोगस्स० पुस्करवरदी० सिद्धाणबुद्धाणं कही अनु क्रमे च्यार थोयो कहवी, पढी नमोत्तुणं कही जगवान् आदि चारने च्यार खमासणे बांदवा, पढी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अ-  
ह्माइकेसु कहेवुं पढी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-  
राय० काजसग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पढी खमा-  
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काज-  
सग० अने थोय कहवी, पढी सामायक पारवानी विधियें सामा-  
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ पस्की प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहियै तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-  
स्थानी कहेवी, पढी खमासमण देईने इन्हाकारेण संदिस्सह जग-  
वान् देवसियं आलोश्यंपस्किंता इन्हा० पस्कियमुंहपत्ती पस्किहुं  
एम कही मुंहपत्ती पस्किहेहीये, पढी बांदणा बे दीजै, पढी इन्हा-  
कारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्पुछिन्हं अप्पितर पस्कियंखामेजं इहं  
खामेमिपस्कियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०  
कही इन्हाकारेणसं० पस्किअंआलोएमि इहं आलोएमि जोमेपस्कि-  
अइयारोकेअ कही इन्हा० पस्की अतीचार आलोऊं. एम कही  
वृद्ध अतीचार कहीये, पढी एवंकारे आवकतणें धर्मे श्रीसमकितमू-  
खबारवत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्कदि-  
वसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुअ होय ते सबे हुं  
मनकर वचनकर कायार्थेकरी मिन्नामिडुक्कनं ॥ सबस्सविपस्किअ  
डुच्चिंतिअ डुप्पासिय डुच्चिडिय इन्हाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स  
मिन्नामिडुक्कनं ॥ इन्हाकारिजगवन् पसाअ करी पस्की तपप्रशाद  
कराअ जी, एम उच्चार करीने आवी. रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-



पवाश बेआंविळ त्रणनीवि च्यारएकाशणा आवबेआसणा बेदळार  
सज्ञाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पड्ढी कहीए,  
करवो होयतो तद्वत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोळया रहीये  
पढी वांदणा बे दीजै, पढी इच्छाकरे० पत्तेयखामणेणं अणुठिन्हं  
अग्निंतर पस्किअं खामेणं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदिवसाणं  
पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पढी वांदणा बे दीजै पढी देव-  
सियआलोइयपमिकंता इच्छाका० जगवन् पस्किअं पमिकमुं समपमि-  
कमामि इहं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपमिक  
मिणं जोमेपस्किअं० कदवो पढी खमासमण देई इच्छाका० प  
स्कीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण  
नवकार गणीने आवक वंदितु कहै, पढी सुयदेवयानी थोय कदवी  
पढी हेठा बैसी जमणोढींचण ऊनो राखो एक नवकार गणी क  
रेमिजंते० इच्छामिपमि० कदो वंदितु कदेवुं०, पढी करेमिजंते इ  
च्छामिछामिकानसग जोमेपस्किअं० तस्सजत्तरी० अन्नवू० कदोने  
(१२) अर लोगस्सनो कानसग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल  
यरा सूधी कदवा अथवा अमतालोस नवकारनो कानसग करी  
पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंदपत्ती पमिलेहीने वांदणा  
बे दीजै, पढी इच्छाका० समासिखामणेणं अणुठिन्हं अग्निंतर०  
पस्किअंखामेणं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदि० कदो पढी खमा-  
सण देई इच्छाका० कही पस्कीखामणाखामूं एम कही खामणा  
च्यार खामवा पढी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कदो पढी बे वां-  
दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व दैवसीनी  
पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कदवी  
स्तवन अजितशांतिनुं कदवुं, सज्ञायने ठिकाणे जवसगहरं तथा  
संसारदावानी थुई च्यार कदेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोदटी

शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कहेया प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना कानुसगने ठिकाणे वीस लोगस्सनो कानुसग करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहेवा, यथातपने ठेकाणे ठेकेणं बे उपवास च्यार आंबिल ठनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहजारसजाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण परकीना बार लोगस्सने ठिकाणे चाळीश लोगस्सनो कानुसग अथवा एक शो शाठ नवकारनो कानुसग करवो, अने तपने ठिकाणे अढमज्ज एटले त्रणउपवाश ठआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआसणा अने ठहजार सिजाय ए रीते कहेवुं अने परकीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पम्किमवी. आपना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं, पढी उस्तउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो कानुसग करी प्रगट लोगस्स कही उज्जे पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पम्क्लेहण करवुं, पढी काजो काढी जीव कलेवर सच्चित्त आदि जोवुं, पढी काजो काढनार आपनाजी सन्मुख उज्जो रही इरियावही पम्किमे पढी काजो परठववा जग्था सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पढी त्रण बार वोत्तिरे. कहे ॥ इति पम्क्लेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पञ्चस्काण पाखानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पम्किमिये, पढी जगर्चितामशीनुं चैत्य  
वन्दन जयवीयरथ सूधी करवुं पढी मन्हजिशाणनी सिझाय कह  
वी, मुहपत्ती पम्किहेही इञ्जामि० इञ्जाका० पञ्चस्काणपारुं यथाश  
क्ति० इञ्जामि० इञ्जाका० पञ्चस्काणपारयुं तहत्ति एम कही जमणो  
हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी प  
ञ्चस्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखियेठिये ॥ उगए सूरै नमोका  
रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पञ्चस्काणकरयुं  
चञ्चविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पञ्च  
स्काण फासियं पावियं सोहियं तोरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन  
आराहियं तस्समिञ्जामिडुकरुं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

एकलवह विजयें जयो रे, नयर पुंररीगणी सार ॥ श्री  
सीमंधर साहिवा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिशंदराय धरज्यो धर्म  
सनेह ॥ (आंकणी) मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥  
शशि दरिद्राण सायर वधै रे, कैरव वन विकलंत ॥ जि० २ ॥ ठाम  
कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ ऊर दोय कुसुमें वा  
सियो रे, गाय सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा  
गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे  
सबि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे ठे  
माहाराज ॥ मुऊसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि०  
॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो  
माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषजलवन  
माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे  
रे, जयजंजण जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनं स्तवन ॥

( ॥ फलमल पाणीमाने जाय ए देगी ॥ ) ॥ प्रणमी

शारदमाय, शासन वीर सुदकरूं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ  
दरो जवियण सुंदरूं जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने  
कहूं ते सुखो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अजिनंदनतणो  
जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी  
जी ॥ तारण जवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥  
समेतशिखर शुभ्र ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व-  
दिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख धणुं जी ॥ ४ ॥ फाळगुन  
मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस ज्यवन,  
कर्मकर्ये तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजे  
वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवळनाण, शरण करो जिनराज  
नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहा  
जो ॥ खातर किरिया हो जाण, खेन समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥  
उपशम तद्रूप नोर, समकित ठेरु प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी  
अहो वान, पञ्चस्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु  
चोर, समकित वृक्ष फळयो तिहां जी ॥ मांजर अनुभवरूप, उतरे  
चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी  
सुख लोजीये जी ॥ तंबोल सम द्यो स्वाद, जीवने संतोष रस  
किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस  
मासनी जो ॥ चोविहार उपवास, पाखियें शील वसुधासती जो  
॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पक्वलेहण दोय लीजीये जी ॥ दे  
ववंदन त्रिण काल, मन वच कायार्ये कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज  
मणुं शुभ्र चित्त, करी धरीये संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम,  
पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एशि निध करिये हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट  
 धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुजकि, विनय करी सेवो सदा जी  
 ॥ पद्मविजयनो शिष्य, जकि पामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥ इति  
 बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

( ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥ ) सुत सिद्धारथ  
 जूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, जाले  
 श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जवियण चित्त धरो ॥ मन बच काय  
 अमायो रे, ज्ञान जकि करो ॥ एआंकणी ॥ गुण अनंत आतमत-  
 णारे, मुख्यणो तिहां दोष ॥ तेमां पण ज्ञानज वसुं रे, जिएसी  
 वंसण होय रे ॥ ज० १ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने  
 उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने धिवरणं लहे रे, आचारज उवझाय रे  
 ॥ ज० २ ॥ ज्ञानी आसोवांसमां रे, कठिण करम करे नाश ॥  
 वह्नि जेम इंधन दहे रे, कृणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ३ ॥  
 प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणगणांग  
 पगधालीये रे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ज० ४ ॥ मइ सुअ  
 उहि मणपऊवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा अत एक  
 ठे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ५ ॥ तेइना साधन जे  
 कहा रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी  
 अप्रमादो रे, ॥ ज० ६ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां  
 करे अंतराय ॥ अंधा बदेरा बोबरा रे, मुंगा पांगुल प्राय रे  
 ॥ ज० ७ ॥ जणतां गुणतां न आवहे रे, न मले वल्लज चीज ॥  
 गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ८ ॥ प्रेमें  
 पूवै परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,  
 करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० ९ ॥ इति ॥

( ६९ )

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ )

जंबुद्वेपना ज़रतमां रे, नयन पदमपुर खास ॥ अजित-  
सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-  
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए  
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें  
जणावा भूंकित रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति  
यत्न करे धनो रे, मात्र जणावण हेत ॥ अकर एक न आवमे रे,  
अग्रतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोठें व्यापी देहनी रे, राजा  
राणी सचित ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयनमां रे, सिंदूरस धनवंत रे  
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका मेहनी रे, शीखे शोजित अंग ॥ गुण  
मंजरी तस बेटनी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल  
वरसनी सा अई रे, पामो यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,  
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणो अवसरे ज्ञानमां रे,  
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-  
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक जूपाखने रे, दीध वधाइ जाम ॥  
चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-  
देशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन  
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,  
मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीळ्या टखवले रे, दीसै दुःखीया दीन  
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥  
ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥  
श्रेष्ठी पूठे मुणिंदने रे, ज्ञाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंग-  
जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

( ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां )

धातकीखंनना ज़रतमां, खेटक नयन सुगम ॥ व्यवहारी

जिनदेव ठै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा,  
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥ २ ॥  
 बालस्वजावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे जाहेरे,  
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, जणवानुं  
 नही काम ॥ पांरुचो आवे तेरुवा, तो तस दणजो ताम ॥ ४ ॥  
 पाटी खनिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि  
 रुचै, जेम करवाने डाख ॥ ५ ॥ पासा परे मोहोटा थया, कन्या  
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥  
 ब्रटकी ज्ञाखें ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,  
 जाणे ठै सहू कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म  
 बोल ॥ रीसाली कहे तादरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेवें  
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान  
 विराधन देव ॥ ९ ॥ मुर्झांगत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥  
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे  
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो  
 वंजित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥  
 नमो नाणस्त गणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव  
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल दोश्ये, धान्य  
 फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटणो, साधियो मंगल गेह ॥  
 पोसदमान करी सके, तेषा विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा  
 सौजाग्यपंचमी, उज्वल कार्तिक मास ॥ जावळीव लगे सेविये,  
 कृजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

( ॥ ढाल चोथी ॥ एकवोसानी देशीमां ॥ )

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे,  
 पाटी पाटला वर तशा ॥ मसी कागल रे, कांबी खनिया लेखणी ॥

कवली माबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ ( त्रूटक ) प्रा-  
 साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन माबली ॥ वासकूंपी वाला  
 कूंची, अंगलूहणा ठावनी ॥ कलश आली मंगलदीवो, आरती नें  
 धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वस्त्रल, नोकरवाली आपना ॥  
 ॥ २ ॥ ( ढाल ) ज्ञान दरिस्तण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप  
 संयुत रे, गुणमंजरीयें सदह्या ॥ नृप पूछै रे, वरदत्त कुंवरनें अंग  
 रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ ( त्रूटक ) मु-  
 निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु  
 तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ बन माहिर मतां दोय  
 बंधव, पुण्य थोगें गुरु मढ्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म  
 धामी संवरया ॥ ४ ॥ ( ढाल ) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी  
 लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिशे ॥ कर्म योगे रे,  
 अशुज नदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी जणी पोढ्यो यदा  
 ॥ ५ ॥ ( त्रूटक ) सर्वधाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥  
 ऊंधमां अंतराय थातां, सूरि हूआ हूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-  
 ग्यो, लाग्यो मिथ्या जूतनो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरथो  
 पापतणो घनो ॥ ६ ( ढाल ) मन चिंतवे रे, कां मुऊ लागुं पाप रे ॥  
 श्रुत अन्यासो रे, तो एक्को संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, ज्ञोयण  
 खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उज्जरे ॥ ७ ॥  
 ( त्रूटक ) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज  
 ध्याने आयु पूरी, जूप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जरु  
 पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो  
 सही ॥ ८ ( ढाल ) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीगो रे,  
 गुरु प्रणामी कहे शुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी  
 वनो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जग परवनो ॥ ९ ॥ ( त्रूटक )



ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहे किम आवने ॥ गुरु कहे  
तपशी पाप नासै, टाढ जेम घन तावने ॥ जूप पत्रेणें पूत्रने प्रजु,  
तपनी शक्ति न एवनी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधा, संपदा  
दियो बेवनी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मैदी रंग लागो ॥ ऐ देशी ॥ )

सक्रुं वयण सुधारसे रे, जेदीसाते धात ॥ तपसुं रंग लागो,  
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिछ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप  
महिमा घणो रे, पसंखो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या संहत  
सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पांढ  
वी रे, आप अयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जौम कांत गुणें करी रे, वर  
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जौमवै  
जोग अखं ॥ त० ॥ वरसें ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचं ॥ त०  
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी अयो संजमी रे, पाले व्रत खंटाये ॥ त० ॥  
गुणमंजरीं जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख  
विलसीं अई सांधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे  
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्ष लक्षित रायने रे, पुणें  
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा अयो रे, सो कन्या ज  
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित जूपाल ॥  
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य ऊंदार ॥ त० ॥ ए ॥  
चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि  
मुक्ते गयो रे, सांदिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु  
जापुरी रे, जंबुविदेह मंजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,  
अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत अकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सु  
 शीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥  
 त० ॥ लाख पूरब समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥  
 पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे  
 जेह्मी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

( ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंरुक वारवा, हुं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,  
 हुं वारी लास ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गशी, हुं० ॥ त्रिसला नर  
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-  
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,  
 हुं० ॥ माहनिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,  
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण अधर्यो, हुं० ॥ चंरुकोसियो साप रे,  
 हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषजदत्त वली विप्ररे, हुं० ॥  
 व्यासी दिवश संबंधशी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०  
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने ढालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे,  
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा घरा, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आशि रे,  
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयतिंद सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास  
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास  
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय  
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी  
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इय वीर लायक  
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर  
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे ससर त्राणुं संवत्सरे,  
 श्रीपार्थ जन्मकळ्याण दिवसें सकल जिव मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

( ६६ )

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारे मारे ठाम धरमना साढापचवीश देश जो, दोपे रे  
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारे मारे नगरी तेदमां राज-  
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥ १ ॥  
 हारे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां  
 आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सदस मुनिवरना साथे साथ  
 जो, सूधा रे तप संयम शिखले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूड्या  
 रसज्जर फूड्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीखवन हसि  
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो,  
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-  
 र्विध आवै कोनाकोन जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे  
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होनाहोन जो, आगे रे रस लागे  
 ईंझणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण वेग  
 आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां०  
 सुणतां डुंडुजि नाद टले सवि तांप जो, वरसे रे सुर फूल सरस  
 जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे धन जेम लूंब  
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मेने रे लो ॥ हां० निरखी  
 हरखी आवै जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पदे धोषे जर्ममां  
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,  
 आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-  
 क्षिणा वंदी वैगो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगे रे  
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिजुवननायक लायक तब जगवंत जो, आणी  
 रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सदज विरोध विसारी  
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥  
 इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसै, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥  
 झौहनी नींदमां कां पनो, जलखो धर्मनां गाण रे ॥ १ ॥ विरति  
 ए सुमति धरी आदरो, ( ए आंकणी ) परिहरो विषय कषाय रे ॥  
 बापमा पंच परमादशी, कां पनो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥  
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले  
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ  
 पर्व खडना कहा, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ  
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु  
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराध  
 तां, प्राणिज सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल  
 तिहां, पूवै गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे  
 वीरभ्रजु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं  
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजै, एहथी आठ गुण  
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पमिहारनो, अठ पवयण  
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे  
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म क  
 ढ्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥  
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन  
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धता, सातमा जिन च्यवन माण  
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिज, दंरुवीरज लह्यो  
 मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि०  
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केह केह कढ्याण  
 रे ॥ एह तिथे वलि घणा संजमी, पामते पद निर्वाण रे ॥ वि०  
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथे करे ऊपवास रे ॥  
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहने धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

प्रांखियों वरि आठमंतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन  
मुखें उच्चरी प्रांखियां, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥  
एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोरु रे ॥ सेवजो शिष्य बुध  
प्रेमनो, कहे कांति कर जोरु रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ( कलश ) एम  
त्रिजग ज्ञासन अचल ज्ञासन वर्द्धमान जिनेश्वरु, बुध प्रेम गुरु सु-  
पसाय पामी संश्रुण्यो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञायो रंगे  
स्तवन ए आठमंतणो, जे जविक ज्ञावे सुणो गावै कांति सुख पावे  
घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरथा ॥  
जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोनिसुं परिवरथा ॥ १ ॥ जग  
पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माछा रंची ॥ जगपति पूजी  
पूजै कृष्ण, हाथिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र  
धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार,  
कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ  
नाथ, माथे गोजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वंताप,  
जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जाल मागशिर मास,  
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिथि  
उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म  
खी ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥  
॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥  
नरपति वर्तमान चौवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप  
ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वंच  
काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रतंतणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण था-  
तकीखंरु, पश्चिम दिशि इहुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

( ६९९ )

जिधान, साचो नृप प्रजापालधी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंडावती  
 तास, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शोयल  
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार जूषण  
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा  
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥  
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल बेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति  
 ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि  
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन  
 एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वरुबीज, शुज अनुबंधी  
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि ज्ञाषै महाज्ञाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए  
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी  
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु  
 वगे री ॥ ४ ॥ सांजलि सज्जु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर  
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजल केशवराय, आगलि जेह थसे  
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया  
 तास, पुण्यें जोग जळ्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित  
 शुज स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुक्रने री ॥ ८ ॥  
 नाल निक्षेप निधान, झूमिणी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु  
 ज्ञाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ९ ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र  
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥  
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चस्काण धरे री ॥ अगियार  
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार,  
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे  
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जकें तप उच्चरे री ॥ एक

वशी दिन आठ, पहरो पोसो घरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ ( ढाल त्री  
 जी ) पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर  
 जाणी तस्कर आख्या, घरमां धन लूटै तदा जी ॥ १ ॥ शासनज  
 के देवीशक्तें, संज्ञाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल मुणि कोटवाल  
 आख्यो, झूप आगल धर्या रांकमा जी ॥ २ ॥ पोसहपारी देव जुहारी,  
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठे की  
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरमा  
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां  
 करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट बखारो शेठनी, उगरी सहू प्रज्ञंसा  
 करै जी ॥ हरखे सेठजी तप कुजमणुं, प्रेमदा साधे आदरे जी ॥  
 ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो ज्ञार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ च-  
 त्र नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक  
 खटमासी ग्यार चोमाशी, दोसय ठठ सो अढम करै जी ॥ बीजा तप  
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७ ॥ एक अध-  
 म सुर मिथ्यादृष्टि, देवतासुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जितकर्म उदेरी,  
 अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८ ॥ कर्मै नमियो पापे जमियो, सुर क-  
 है जानु औषधजणी जी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें  
 हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल  
 दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे  
 ह्यामनें जी ॥ १० ॥ ( ढाल चोथी ) कान पयंपै नेमने ए, धन्य  
 यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुकु मन मानस हंस, ज  
 यो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावनी ए, समुद्रविज  
 य धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥  
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥  
 तिणे मन नबि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गढ्यो ए, जाणुं नपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण  
हुं न करी सकुं ए, छु कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो  
बलिथातणो ए, कीजै सीजै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांज  
ली ए, बांढ ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,  
समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थार्ईस जिनवर बारमो ए, ज्ञावी  
चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य  
पुरंदर रेवताचल मंरुणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा  
जनगरे संश्रुएयो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय  
गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि कृमाविजय गणि, जिनविजय ज  
यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल  
रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नं जमियुं पालणुं, रसम दोरी  
घूघरी वागे बुमबुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने  
॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुथी वरस अदीशें अंतरे, होसे चोवीशमो  
तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांजली,  
साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने  
होवै चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥  
जिनजी पास प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचने जाण्या चो-  
वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,  
मारी कूखें आव्या त्रण जुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या  
संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥  
॥ ३ ॥ मुजनें मोहलो नपन्यो जे बेसुं गजअंबाकीयें, सिंहासण पर  
बेसुं चामर बत्र धराय ॥ ए सह लक्षण मुजने नंदन ताहरा ते-  
जनां, ते दिन संजारूनें आनंद अंग न माव ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-



तब पगतल लक्षण एक हजार नें आठ ठै, तेहथी निश्चय जाण्या  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगे खंडन सिंह विराजतो,  
 में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर गो सुकमाल, ह  
 ससें जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नें वली  
 चूंटो खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज गो, नंदन नवला पां-  
 चसें मामीना ज्ञाणेज गो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 हशशे हाथे उहाली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आंखुं आंजीनें  
 वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आंगलां, रतने जमिया जालर मोती कशबीकोर ॥ नीला  
 पीला नें वलि सता सरवे जातिना, पहिरावशे मामी मास नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमली सहू लावशे  
 नंदन गजुबे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखना जोईने लेशे  
 मामी ज्ञामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी सति सती, मारी जंत्रीजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूवरो, वली शूना मेंना पोपट नें गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ गणपन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांदि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंफले, बहु चिरंजीवो आशीष  
 दीधी तुमने त्यांदि ॥ हा० १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुकत लाज कमाय ॥ मुखना ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर  
 अंबामी बेसारी मोहोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सूखरुली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमो  
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर बहु  
 पोखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-  
 रा बेउं पक ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वूठा अमृत डुबे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गाथुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पाळणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूततणा साम्राज ॥ बिलीमोरा  
 नगरे वरणाव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोद्ध्या महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणो  
 मायबाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगमां रे, कहो केम  
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोमे घणो अवगुणो सहु जरया रे, के-  
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख  
 पाशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पन्निक्कमवाथी मांन्नीने यावत् लोगस्त-  
कही पढी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी  
राय आज्ञवमखंमा सूधी हाथ जोम्नी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने  
नमोत्पुणं कही यावत् चार थोयो कहीथे ठीये तिहां सूधी बधू क  
हेवुं, पढी नमोत्पुणं कही वली च्यार थोयो कहीथे त्यांसूधी बधू  
कहेवुं, पढी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरुधुं ज  
यवीअराय आज्ञवमखंमा सूधी कही पढी चैत्यवंदन कही नमोत्पुणं  
कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह  
जिणाणंनी सज्ञाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजें देववांदवामां  
सज्ञाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजो कृत चउमाशो देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पन्निक्कमी काउसगग करी लोगस्त० क  
ही एक खमासमण देइ इन्नाका० श्रीरुषज्जजिन आराधनार्थं चैत्य  
वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करै ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन  
लिख्यते ) ॥ प्रथम जिनेसर रुषज्जदेव, सव्वअरी चविया ॥ वदि  
चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अढ्मी चैत्रह वदितणी, दि  
वसे प्रन्नु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया  
॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि ते  
रजो शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत  
चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसगग पारी शुइ  
क्रमथी कहिये ते लिखिये ठीये ॥ ( ॥ अथ थोय जोम्नो प्रारंज ॥ )  
रुषज्जजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला  
जास जाया ॥ वृषज्ज लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय  
धणु ठाया ते प्रन्नु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रैवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि  
कण्ठें आयां पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार  
॥ १ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगम सूत्र मऊार, सिद्धाचले सीधा  
बोढया बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार  
जिन जेठे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा  
सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ  
जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामें  
लील बिलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्पुणं जावंती बे कही  
नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशो ॥

आदिकरन अरिहंत जी, जलगमी अवधार ललना ॥ प्रथम  
जिनेसर प्रणामीयें, वंडित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०  
॥ १ ॥ जपगारी अवनीतले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-  
नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥  
गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें  
जहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इकाग ठै जे  
इनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ जरतादिक अया केवळी, अ-  
नुजव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलमंमणो,  
मरुदेवी सर हंत ललना ॥ रुषजदेव नित वंदिथे, ज्ञानविमल  
अवतंत ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥  
पण जयवीअराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री  
अजितनाथजी आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुद्धि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आ-  
ठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुद्धि नवमें मुनि अया,  
८९

पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, अथा अक्षय कृपारस ॥  
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल  
 कविरायनो, नय प्रणामें धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पढी नमोत्पुष्पं  
 अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्य करके धुईनी गाथा  
 कहै, इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्य-  
 ते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ जविक जन  
 नगीनो, जेहरी मोह लीनो ॥ हुं तुज षड लीनो, जेम जल मां-  
 दे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति  
 अजित श्रोत्र ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥  
 सत्तम त्रैवेयक अकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम  
 दिनें, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया,  
 तणी पूनम-संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरू-  
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥  
 ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-  
 वंदन ॥ ॥ अथश्रोत्रप्रारज्यते ॥ जिन शंजव वारू, लं-  
 बने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर  
 तरुपरी वारू, दुसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना  
 ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति श्रोत्र समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-  
 नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानअकी चव्या, अजिनंदनराया  
 ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे  
 अहिय दिख, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें  
 शिवसुख रश ॥ चउथा जिनघरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार  
 ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥  
 ॥ अथ स्तुति प्रारज्यते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद  
 कंदो ॥ नृप संबरनंदो, धर्षितशेषकंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंगने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति  
 श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण  
 सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं,  
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संज  
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या-  
 रश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,  
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ  
 श्लोक प्रारब्धते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोनि कापै  
 ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधितुं बीज व्यापै ॥ अविचलपद आपे,  
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रज्जुध्यान व्यापे ॥  
 १ ॥ इति श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रज्जु चैत्यवंदन ॥  
 नवम भवेयकथी चव्या, माहा वदि ठगदिवसें ॥ काती  
 वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संज-  
 म ग्रहे, पद्मप्रज्ञस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, बलि शिवगति पामी  
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन  
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारब्ध  
 ते ॥ पद्मप्रज्जु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ मुगति बधू म  
 नावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य  
 पावे ॥ प्रज्जु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥ १ ॥ अथ श्री  
 सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ ठा भवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥  
 ज्ञादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जण्या,  
 तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि ठे केवली, शिव लहे तस स  
 तिम ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविम  
 ल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक  
 प्रारब्धते ॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम मदि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप  
दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ज जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ज शम देह ॥ अवतरीया विजयंतसी, वदि पंचमी चै  
त्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साथ ॥ फागुण व  
दिनी सातमें, केवल निराबाध ॥ ज्ञाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी  
पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअज्जिधान ॥ १

॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥ ॥ शुभ तरगति पामी, उद्यमें  
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ज नाम स्वामी ॥ सुज  
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति वरगामी, ऐश्वर्य  
पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधानाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिशंद नाम, बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न  
वमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगाशिर वदि पंचमे जण्या, तस  
ठठे दिहा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिखे बहु परें शिहा ॥ शु  
दि नवमी ज्ञाडवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल  
सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौ

थ प्रारब्धते ॥ सुविधि जिन जहंत, नाम वलि पुष्प-  
दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म  
धुरंत, लब्धि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे  
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्र. शीतलकटपथकी चव्या, शीतल जिन इशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ  
है, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या,  
तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ व  
दि बीजै वैशाखनी ए, मोह गया जितराज ॥ ज्ञानविमल जिन  
राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौय

प्रारञ्च्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुंझ सेवा ॥ जेम  
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य  
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डःस्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी  
चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस गढे, करत बहु आ  
नंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह  
अमावसि, देशन चंदनरस ॥ वदि आवण त्रीजै लह्या ए, शिवसु  
ख अक्षयअनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रेय प्रारञ्च्यते ॥ सवि जिन अवतंस,

जास इक्षागवंश ॥ विजितमदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतज्ञय  
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ लृषज ककुद अंश, ते नसुं पुन्य वंश  
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया,  
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥  
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि-शिव पाम्या क  
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे  
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख आय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रेय प्रारञ्च्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज  
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस  
गुण अवदात, गीत जाणो निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव  
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं  
दन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माघव सुदि बारस ॥ शु  
दि महा त्रीजें जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष गढें लह्या;  
वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल  
॥ विमल जिणोसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो  
जिन नितु दिये, पुण्य परिषल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ



थोय प्रारज्यते ॥ विमलश जावे, बंदतां उख जावै ॥ नव  
 निधि घर आवै, विश्वमां मान पावै ॥ सुपर लंठन कावै, ज्ञोमि  
 जरस्वेद थावै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १५ ॥  
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां,  
 श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसैं व्रत ॥  
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी  
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमाए, कीथा ड  
 प्पमन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामश्री, तेज प्रताप अनंत ॥ १६ ॥  
 ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥  
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दाजै,  
 एटलुं काज कीजै ॥ मुऊ मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीज ॥  
 ॥ १७ ॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि  
 सातमैं, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजें  
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमजार ॥ पोषिपूनमें के  
 वली, गुणना जंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या  
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १८ ॥  
 ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांइ  
 ज्ञीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिजुवन सुख  
 कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥  
 ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ज्ञाद्रवा  
 वदि सातम दिने, सबछथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जएया, उः  
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥  
 केवल उज्जलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवना ए  
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरसैं शिव लह्या, नय कहे सारो  
 काज ॥ २० ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पैचमौ चक्रधारी ॥ त्रिभुवन मुखकारी, सप्त जय ईति  
 वारी ॥ सहस्र चलसठि नारी, चन्द्र रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति  
 जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे क-  
 र्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ जरी पुष्प  
 पटोली, टाळीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें ज्ञाव  
 लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम नपांग बार ॥ बलि मूल  
 सूत्र चार, नंदी अनुयोगदार ॥ दश पयन्न उदार, ठेद खट वृत्ति  
 सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय  
 जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टाळता दुःख धंदा ॥  
 ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या  
 नधी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥  
 मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुंकंदा, शांतिकरण  
 श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज  
 हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र  
 न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,  
 ठंरुयो पण तुम्हें नवि ठंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न  
 लावो, वीतरग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर  
 कही एम समजे, पण ठौरु दीघाथी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना  
 हठथी नवि चालै, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ जक्ति  
 खांची मनमांहे आण्यो, सहज स्वजावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥  
 माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥  
 ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो बूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥  
 सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-  
 शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अकथज्जाव निधी तुम पाश, आपी दासनें  
 पुरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुतार्ह, दीधी साहब एह व

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंभुनाथ चैत्य-  
 वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सव्वथी चविया ॥ वदि  
 चवदश वैशाखनी, जिन कुंभु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,  
 लीये संजमजार ॥ शुदि त्रोजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प  
 मिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल गण ॥ ठंठा चक्री जय  
 करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥  
 जिन कुंभु दयाला, गग लंठन सुहाला ॥ जश गुण शुजमाला,  
 कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला  
 ॥ त्रिजुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १८ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया,  
 फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी  
 जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल  
 बारसें, केवलगुण बरिल ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद  
 लहे जिननाथ ॥ सातमचकार्ने नमूं, नय कहे जोदी हाथ ॥ १९  
 ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क  
 र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संज्ञारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ रुत ज  
 यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप  
 तारूं ॥ २० ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥  
 चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्या  
 रसें, जनम्या निग्रंथें ॥ ज्ञान लह्या एरण दिनें, कढ्याणक तीन ॥  
 फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर  
 नीलमा ए, उगलीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणनूपपद, नव  
 जल तरण जिहाज ॥ २१ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥  
 जिन मल्ली महिला, वान ठै जेह नीला, ए अचरज लोला, स्त्री  
 पणें नाम पीला ॥ डुस्मन सवि पीड्या, स्वामि जो ठै वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुख रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि  
स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा  
जितथी आविया, आवण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,  
अयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसैं व्रत, वदि बारसैं ज्ञान ॥  
फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णै निर्वाण ॥ वर्षा श्याम गुण उ-  
जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरना-  
थक दात ॥ २ ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ मुनिसुव्र  
तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुज अंतरजामी कामदाता अका-  
मी ॥ डुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भ्या सर्वदारामी  
राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै  
त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ  
वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ  
नी, अया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसैं, वर केवल  
धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्कय अनंता सुख ॥ नथ कहे  
श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग डुःख ॥ १ ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रा  
रज्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्वगानो ॥ सुत वप्रा मानो,  
पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज ठे जे कृपानो ॥ स  
वि ज्ञुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्रीदे  
मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि  
बारस ॥ आवण शुदि पंचमी जणया, यादव अवतंत ॥ आवण  
सुदि ठे संजमी, आसोज अभावत नाण ॥ शुदि आषाढनी  
ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमो अणपरणीया ए,  
मतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २२ ॥ १  
॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शं  
निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंथो तिवारे ॥ २३

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचा  
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंने,  
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इषि परें वीश जिनेश ॥ सं  
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, न  
वजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मञ्जतणा नय बारे ॥ जिहां  
जीवदयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ नवि न्नाव धरीनें चित्त करीनें  
चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विनारे ॥ समकित  
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो न  
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ  
म्नीयां, दो घम्नीयां दो चार घम्नीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिरा  
ण शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अरुवनियां ॥ रहो० १ ॥ ना  
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चनियां ॥ रहो०  
२ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गोरुदीए पशुपंखी चनियां  
॥ रहो० ३ ॥ गोद विठाजें में बली जाजें, कहुं वीनती चरणे प  
नियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे  
स्वपनमें सेजनियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन,  
वामी वन घर सेरनियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट जवांतर नेह निजाव  
त, नवमें जव ते वीठनियां ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी  
सुणीने, राजुल रेवतगिर चनियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयुं करे निज  
शिरे हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलनियां ॥ रहो० ९ ॥ जादव  
वंश विष्णुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलनियां ॥ रहो० १० ॥ ज्ञान  
विमल गुणो दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखनियां ॥ रहो०  
११ इति पद ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैतस्वन्दन ॥

॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतली, प्राणतथी आया ॥ पोष वदिदशमी ज-

नम, त्रिजुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारलें, लहै मुनिवर पंथ ॥  
 कमठासुर उपसर्गनो, टाढ्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिनें  
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ आवण शुदि आवमें लह्या, अविचल  
 सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौय प्रारंभते ॥ जलधर  
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विना  
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोनि वारे ॥ मुळ प्राणाधारे, मांत  
 वामा मद्धारे ॥ १ ॥ अर जनम मुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ  
 नुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कढ्याण, संप्रति जे  
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि  
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चस्का  
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे ज्ञया जिहा उदार ॥ ते  
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,  
 जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाळा, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि  
 मल विशाला, ज्ञान लछी मयाळा ॥ जय मंगलमाळा, पास नामे  
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे मा  
 थ्रे पंचरंगी पाग सोनानो भोगलो मारुजी ॥ प्रभु पास जिनेसर  
 जुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर  
 भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तूं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,  
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुबवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥  
 तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी  
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी  
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥  
 सा० २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासन, सा० ॥ स्याद्-  
 वाद विशाले सहज समाजे ज्ञावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने  
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमाणम वेदी जेद अजेद नही त-

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखियें, सा० ॥ आत  
 स ततकामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा  
 मी ठो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा  
 नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा०  
 ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या  
 सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका  
 शी कवि ज्ञे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक  
 नाथ ठै, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ ठै ॥  
 सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ  
 नेकांती एकांती तूं वेदांती अमंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें  
 पुदगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न  
 वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सह  
 कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कृपा लहे ॥ सा०  
 ७ ॥ इम तुम गुण युषियें कर्मने दणिये पलकमां, सा० ॥  
 पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे  
 नंदा त्रिजुवन इंदा संशुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय  
 वंदा गुण ज्ञे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान  
 जिनचैत्यवंदन ॥ शुद्धि आषाढ षष्ठ दिवसें, प्राणतथी चवि  
 था ॥ तेरस चैत्रह शुद्धि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि  
 दशमी दिने, आपे संजम आराधै ॥ शुद्धि दशमी वैशाखनी, वर  
 केवल साधै ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै उद्योत ॥  
 ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ लह्यो जवजल तीर, धर्म कोटीर  
 हीर ॥ डुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ डुरित दहन नीर,  
 प्राण ॥ कर्पें सगग कर पणसय धणु माणुं. सासय असासय

मेरुश्री अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कटपट्ट कीर ॥  
 ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दर्याला,  
 धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥  
 सुरनर महिपाला, वंदता ठै त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी,  
 द्वादशांगी रचाली ॥ सुगुण रयणखाली, पुण्य पीयूष पाली ॥ न-  
 वम रस रंगाली, सिद्धि सुखनी नीसाली ॥ उह पीलण घाली,  
 सांजलो ज्ञाव जाली ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपा-  
 ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,  
 टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥  
 ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ श्री हुं समव-  
 सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता  
 जाया जी ॥ हरि लंठन कंचन सम काया, मुज मनमंदिर आया  
 जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समर्थे शासन जेहना, शीतल चं-  
 दन गाय जी ॥ जे सेवता जविजन मधुकर, दिनर होत सवाया  
 जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाली, जस मनमां-  
 जिन आया जो ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया  
 जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर विरुद जिन  
 पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, इसमन डुर गमाया  
 जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहा-  
 या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान बजाया जी ॥  
 वंदो० ५ ॥ गुण अतंत जगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी  
 ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी  
 ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीरराय कहेवो ॥

॥अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल  
 मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय दाय ॥ स्याद्वाद साधन पद एही



अध्यात्म गुणवाण ॥ १ ॥ ( सही ए नमो जिशाणं ) २ ( ए  
 आकणी ) विहुंतेर लख सगकोमि जवणवई, सासय जिश  
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोनी, सगस ६ बिंबह परिमाणं ॥  
 सही० ॥ ३ ॥ मेरु वैताळ्य वस्कारा कंचन, यमक कुंरु इह जाणुं ॥  
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥  
 त्रिलख शक्याशी सहस्र चारसो, ज्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच  
 क कुंदल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु  
 शत सय सहस्र चालोसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससैं  
 गुणसही, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख  
 सहस्र एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा, रुचक कुंरु नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोके नव  
 ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस्र सत्ताणुं, त्रे  
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,  
 सहस्र चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोके, जिन प-  
 निमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिजुवनमांहे, सासय जिनहर,  
 सगवन्न लख वसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु  
 णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोनी बैतालीश  
 कोनी, तेम अठावन्न लखा ॥ उत्रीश सहस्र अशी वलि साधिक,  
 सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति  
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सज्जा तिहां साठ वधारो, एकश  
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषज चंडानन नें वर्धमान, वा  
 रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पनि  
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ज्ञावना जावै, समकि  
 तगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन  
 जावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणुं परि

जाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष बली शासय विष्णु, सेत्रुंजादि  
 क बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥  
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रज्जु नाम जपंता, लहिये कोमि कट्या  
 ण ॥ मनह मनोरथ सगला सीजै, जनम सफल सुविहाण ॥ सं०  
 ॥ १७ ॥ जयहर जगवंताणं जयचुर, नमो जिणाणं सही ए ॥  
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥  
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग  
 स्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउस  
 ग्ग पारी पढी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥  
 ॥ अथ थोय प्रारब्धते ॥ रुषजदवे नमुं गुण निर्मला, डुध-  
 मांहे जिम जेदी सीतोपला ॥ दिमल शीलतणा सिणगार ठै,  
 जव२ मुज्जे चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,  
 जेह हसे विचरंता जे बली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,  
 जिन पन्निमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कोर  
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ जदिक देह सदा पावन  
 करे, डुरित तापर जोमल अपहेरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन  
 फारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्जुताये  
 दीपता, डुरित डुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-  
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण  
 मोटी शांति कहे ( अने ) बीजा सर्व काउसग्गमां सांजलै ॥  
 पढी सर्वे जणा काउसग्ग पारोने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहै ॥  
 पढी बैसीने एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणो, पढी सर्वे  
 जण मुखयकी आवी रीते कहे- श्रीसेत्रुंजायनमः १ श्री पुंरुरीका  
 यनमः २ श्रीसिद्धकोत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री  
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेश्वरायनमः ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री  
शाश्वतायनमः ११ श्रीदशकृतयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३  
श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय  
नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री  
पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा  
यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने  
पठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ङिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥

नीलनी रायणतरुतले, साहेलमियां ॥ पीलना प्रभुजीना  
पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने घ्याइये, सा० ॥ एहीज मुग  
ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतनी गवाये बैसीये, सा० ॥ रातनो  
करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहेरी व  
स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलने, सा० ॥ नेह  
धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे शिव लहे, सा० ॥ आये निर्म  
ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे  
सार ॥ गु० ॥ अजंग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जवश् तुम आ  
धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा अरु  
ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअडे, सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥  
॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने, सा० ॥ सेवो एहने उछाह  
॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम  
मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाण कामें ॥ ए  
चाह्य ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करु, हो लाल के ॥ सेव ॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख  
 लंठन गुणखाण के अंजन वान वै हो लाल के अं० ॥ राजिम-  
 तीना कंत के परया विणुअ वै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-  
 प्राण के आतमराम वै हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं  
 नाम वै हो० ता० ॥ समुझविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०  
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥  
 जोत्या मनमथ राज रही गढ़ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील  
 सन्नाह उदास एसी धरै हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि  
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धोर महाव्रत  
 बचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह नवेखीनें  
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥  
 पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमजार  
 पदोचामी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते  
 जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरि नेह के ते विरला सुण्या  
 हो० ते वि० ॥ राज, मतीने कंत वखाणे कविजना हो० व० ॥  
 तुझे तो दीया ठेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-  
 वनाअ सनाअ करो मुऊनें सदा हो० क० ॥ दिठ मुऊ शिर हाथ  
 होवे जेम् संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नदी  
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोसो दोने सही हो० घो० ॥ ६ ॥  
 सबला साथै प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी  
 जे थोमी किहां जाअे वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते जरी  
 न जंजीये हो० ज्री० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मन  
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि  
 गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दर्शन दीजीजे हो०  
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मखीनें कीजाये होला० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥  
 ॥ आवो आवोने राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी  
 जक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना  
 प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख  
 कुसुमवर, कंठे टोरु र ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग  
 वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो  
 हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धचल श्रीरूपज जिनेसर, रैवत  
 नेम समरिये ॥ अरे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्तधरिये ॥  
 आ० ३ ॥ मंरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखी हियमै ठरिये ॥  
 श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरजव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥  
 अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुजकरम सब हरिये ॥ पाश शां  
 ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो रुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे  
 चढतां उजम बाधै, जेम घोने पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के  
 शर, पापपमल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानै प्रजुने ध्या  
 तां, मनमांहे नवि रुरिये, ज्ञानविमल कहै प्रजु सुपशायें, सकल  
 संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आश ॥ पु  
 ष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाय ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें  
 लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरजव  
 सफलो कीजै ॥ हीयमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ ( आं  
 कणी ) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बैग ॥ च  
 न्निदिशि सिंहासन समे नाशा, पूरख दिशि दोय जिग ॥ श्री० २

॥ संजव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि ज  
 त्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिंहतणे  
 आकारै, जिनहर ज़रते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत आपीनें, जग ज  
 शवाद् प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणो नाटक, रावण  
 तांत वजावै ॥ मादल बीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥  
 श्री० ५ ॥ ज़क्तिजावै एम नाटक करतां, तूटो तंत विचालै ॥  
 सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥  
 द्रव्य जावशुं ज़क्ति न खंकी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर-  
 तरु फल पामोनें, तैर्धैकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें ज़  
 विजन जे जिन आगे, बहुपरे जावनाजावै ॥ ज्ञानविमल गुण ते  
 हना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि ज़ेटीये रे, मेटवा ज़वना पास ॥ आत  
 मसुख वरवा ज़णी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ ज़विषां  
 सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ ज़वि० से० १ ॥ (आंक  
 णी ) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंरु अधिकार ॥ वीश ती  
 र्थैकर शिव वर्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज़० से० २ ॥ सि  
 ङ्गेत्र मांहे वर्या रे, ज़ाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-  
 मारे रे, दोय नय प्रजुजीना साररे ॥ ज़० से० ३ ॥ आगमवचन वि  
 चारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिखे जाणिये रे, ते  
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज़० से० ४ ॥ ज़यरथरायनणी परे, ज़ात्रा  
 करो मनरंग ॥ ज़वडुःखने देइ अंजली रे, आर्ये सिद्धवधूनो संग रे  
 ॥ ज़० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु आय  
 ॥ ज़वहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज़० से०  
 ६ ॥ जेह सभें समकित अयो रे, तेह समये होय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज० से०  
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववन्दन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोन्नव कीजै जी  
॥ होल दमामा जेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन  
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवजव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण  
पूरब पुन्ये, आया इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वडा द-  
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क  
रीनें, जिन चौबीश पूजीजै जी ॥ वरुक्रुडगनो ठठ करीनें, वीर-  
वखाण सुणीजै जी ॥ परवाने दिन जन्म महोन्नव, धवल मंगल  
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं  
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहियै, जो शुभ ज्ञावै  
रहिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कट्याणक, गणधरवाद वदीजै  
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुषज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥  
बारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पक्कमिये जी ॥ चैत्यप्र-  
वामी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें स्वामीजै जी ॥ पारणाने दिन  
सामीवहल, कीजै अधिक वरुई जी ॥ मानविजय कहे सकल  
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाखे खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-  
णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-  
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी  
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो  
पीठ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥  
होण २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख दैण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥  
 माहमहाने ली पमे हो लाल, प्रीठ संग पोढै नारी ॥ प्रीतम वि  
 णा हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले  
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हूं किणसुं खेलूं हिवे हो  
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चांदणी रे ला  
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणनैं वालम विना रे लाल, रोवत  
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही  
 महकाय ॥ अरज सुणी अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो  
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाजै कोम  
 लगत ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछै मुज  
 चात ॥ हो० ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो  
 मेह ॥ कंत मिट्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥  
 हो० ९ ॥ आवण चमके दामनी हो लाल, धन बरसे ऊरुला-  
 इ ॥ इण रुत सूतां एकली हो लाल, कथूं कर रैण विहाई ॥ हो०  
 १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, जाइवै वर खंत ॥  
 अरज सुणीनैं साहिब हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ११ ॥  
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न  
 पूछो साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० १२ ॥  
 काती दृढ जाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख  
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणो अवतार ॥ हो० १३ ॥  
 संयम ले पिड सेंहणे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पावे  
 प्रीतनी हो लाल, धन ९ ते नर नारि ॥ हो० १४ ॥ जे कीधी  
 पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणो द्यो करि  
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सेव ॥ हो० १५ ॥ इति श्रीनेम  
 राजुल बरमासो संपूर्ण ॥



॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करती आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन  
आगै, हारे ए तो अविचल सुखमा मगै, हारे नाज्जीनंदन पाश ॥  
॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-  
रणे जांजर जमकै ॥ हारे सोवनना घूघरी घमकै, हारे लेती फूद-  
नी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशल। रुफ वीणा, हारे  
रूमा गावंती स्वर जोणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-  
ती मुखसुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रजु जा-  
या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरब पून्ये पाया,  
हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रजु  
प्यारो, हारे प्रजु सेवक हूं तुं तारो, हारे जवोजवना दुखमा  
वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो  
चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि मा-  
णक सुखित करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिन्हाय ॥ देशो उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां  
रे पाय ॥ प्रजुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुजमत  
आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरोपुरहुंतो हो नेमीसर साहिब थे  
चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसतो तो सिणगास्या हो नेम.सर  
साहिब थे जला, धोमलांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अ-  
धिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिब  
चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥  
आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे बै जतरा-  
र ॥ वानो तो जरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी  
पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

थो, ए पशु बांध्या है किस काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर  
 साहिब तुमतणो, सारथी कहे है महाराज ॥ ५ ॥ थोना तो  
 सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥  
 जीव बांध्याने हो नेमीसर साहिब गोमिया, जीव सवे तिण वार  
 ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब गोमने, जाय  
 चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा,  
 लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिब  
 एकली, जल विन मठली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहि-  
 ब गोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो  
 राजुल दुःख मत करो, एतो कालो है जरतार ॥ पागे तो राजुल  
 जावै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ९ ॥ रा-  
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब बांढवा, साथे तो घणुं रे परि-  
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पावै नीकढ्या, एकली रही  
 है राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-  
 तिथणा, जोज्या है सबि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल  
 नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो  
 बाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना ऊणकार ॥ ऊणका तो  
 सुणिया हो रहनेमी बैठे ध्यानमें, खोली है पलक तिणवार ॥ १२ ॥  
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी बैठे ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं  
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानै गोमो है  
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांम गो,  
 जलटी करै नांवे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पागे नंदी  
 जखै, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम  
 थारे सारखी, हुं वना जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम  
 माहरे ऊपरां, तो परस्यो थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहवा तो वं

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा  
तो पहस्या हो राजुलनारो आपणा, पुहती है प्रजु दरबार ॥ १६ ॥  
राजुल तो हरखे हो नेमोसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो सं-  
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती  
है मुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-  
लै, मिलिया है मुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब  
गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंज्ञाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूढा करे, विनय करी शील नमाय प्रजुजी ॥  
अविचल धानक में सुणयो, कृपा करी मोय बताय प्रजुजी ॥ शिव-  
पुरनगर सोढामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करो, सारथा  
आतम काज प्रजुजी ॥ बूढा संसारना डुख अकी, रहवानो  
किहां ठाम प्रजुजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द लोकमां,  
सिद्धशिखातणो धाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,  
तेहना बोरे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस  
जोजना, लांघी पोहलो जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जानी  
विचै, बेने माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार  
मोतीतणा, गोडुगध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते अकी ऊजली  
अनिघणी, उलटो बत्र संगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-  
स्वर्ण शम दापती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन  
अकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥  
सिद्धशिखा उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धगज हो गोतम ॥  
अलोकसुं जाई अरुया, सारथा आतकाज हो गोतम ॥ शि०  
॥ ७ ॥ जनम नही मरणो नही, नही जरा नही रोग हो गोतम ॥  
बैरी नहीं मित्रो नही, नही संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ७ ॥ जूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सौक हो गो-  
तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥  
शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, फरस नहीं नहीं वेद हो  
गोतम ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥  
॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही ऊजाम हो गोतम ॥  
काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम ॥ शि०  
११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गोतम  
॥ मुक्तिमें गुरु चेखो नहीं, नहीं लघु वरुई वास हो गोतम ॥  
शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो  
गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो  
गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय  
हो गोतम ॥ अवर जग्या रूधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो-  
तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित है, केवलदर्शन खास हो  
गोतम, द्वायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥  
शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे ठुलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥  
शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०  
१६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल  
वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वनेरो ॥ १ ॥  
नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धै सभृद्धै अलकानें जीपे ॥ राजा ससुइ  
विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी बखाणी ॥ २ ॥  
तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले ठैवाथो ॥ आणंइ  
घरें वसंत आयो, कुली ठत्तीसैं फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाज्ज  
सारू चलिया गोपालो ॥ नफ चंग वाजै रेमे गुलावो ॥ रुखमल

राणी राधा सतजामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-  
 नाथजीरो व्याह मंभायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥  
 राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,  
 जादेवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, जंगलने  
 नेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाळ कुहके करनाळा, गोरी  
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदऊरता  
 मंगल जाकऊमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला  
 नी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस  
 फूलारी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाळे जालै टीकोजी सोहै, अ  
 णियाळी आंण्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-  
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत बत्तोसे, बदनी  
 बोलै सार बत्तीसै ॥ डुलनीतिलनी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर  
 कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू  
 पैकर गोरी जीपे इंझाणी ॥ जांऊरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपै  
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हांघेजी पगे पोथीजी बीधी, सुधामेदेही गर  
 काब बीधी ॥ फावेंते कपडै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न  
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति  
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें  
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गद्गाटो, कोमेजी  
 ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मढराळा महा अजिमांनी ॥ केसरियेवागै  
 मिलिया ठै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही  
 जानी जूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें  
 जाल पळामै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता  
 सुरपतिसुं नर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोने जु चंदो, तिण विध  
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ ठुमाया, अण-

परण्या नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग्घ संसार मायाजंजालो,  
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी  
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल  
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम  
नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिखवते ॥  
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित  
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-  
ध्याय मन आणियै ॥ ( उल्लाखो ) आणियै निज मन जाव सुद्धे,  
उपाध्याय नमूं बली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणमूं ते  
बली ॥ जिम कृष्णपक्ष नैं शुक्ल पक्ष बलि शील पाढ्यो ते  
सुणो, जरतारने स्त्री विन्हे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥  
( ढाल ) जरतकेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कब्बदेसै रे विजय-  
सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बाला गणै रे ए-  
हवो निश्चै मन कियो ॥ ( उल्लाखो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै  
परक अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा ढाल-  
स्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते बली, पिए शुक्ल  
पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म-  
जोगे रे मांढोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे दुठ विवाह सुहाम-  
णो ॥ तव विजया रे सोले गुंगारजला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन  
उल्लट धरी ॥ ( उल्लाखो ) मन धरी उल्लट अधिक पहुतो पिया  
पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संजरी ॥ मुज  
शील निश्चो परकअंधारे तेहना दिन तीन ठै, ते नेम पाखो शुक्ल  
पक्षे हुं जोग जोगविस्युं पठै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इ- सांजल रे वि-

जया मन विलखी अई, पिउ पूछे रे किम चिंता तुजने जई ॥  
तब विजया रे कहै शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोषे रे बालापण  
निश्चो कियो ॥ ( उल्लाखो ) बालपणमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत  
पालस्युं, तो उज्जय पक्ष द्वि शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥  
तुझे अवर नारी परणने द्वि शुक्लपक्ष सुख जोगवो, कृष्णपक्ष  
नज निमय पाली अज्जिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तब  
बलतो रे तसु ज़रतार कहै इसो, विषचारस रे कालकुटविष  
है तिसो ॥ ते ठंरी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता  
पिता न जणावस्यां ॥ ( उल्लाखो ) मातपिता जब जाणस्ये तब  
दिख्य लेस्यां धर दया, इम अज्जिग्रह लेईनें ते जावचारत्रिया  
अया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां खरुगधारा व्रत धरे, मन वचन  
काया करी सूधो शील बेनं आचरै ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) विमल  
केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥  
आणी अधिक विवेक, आवक जिणदास, कहै विनयगुण परि-  
वरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु, मुज घर पारणो, करै मनो-  
रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै आवक सुणो, एह  
वात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि  
सूऊतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो द्वि तेह विचार, करो  
तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अगै द्वि कळ-  
देश, सेठ विजय वली, विजया जार्था तसु धरै ए ॥ जावयती  
ग्रहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण  
दास कहै जगवंत, ते माहि एतला, कुण गुण कुण व्रत बै घणा  
ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत  
ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वमो ए ॥ देशी ॥  
केवलीनें मुख सांजली, आवक ते जिनदास रे ॥ कळदेसें द्वि

आबियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहाग्रणो,  
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीले देव सानिध करै, शीलप्रो शिव  
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाज्ञण, भगतसुं ज्ञो-  
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारखानो फल लेई रे ॥  
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूठे तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥  
 केवलीने सुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥  
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ ज्ञाय रे ॥  
 कृष्ण शुक्लपद्म दंपती, ज्ञोजननो फल आय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
 मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूठ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-  
 या लियो, चारित्र अतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥  
 केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-  
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते सु  
 गते पहुंचता, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,  
 ज्ञावै जे नर नार ॥ ते बंठित सुख लहै, पहुंचै जवनें पार ॥ १९ ॥  
 ॥ कलश ॥ इस कृष्णपद्म नें शुक्लपर्कें शील पाछ्यो निरमलो,  
 ते दंपतीना ज्ञाव शुद्धै सदा शुभगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-  
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, वलि सकल मंगल मनह बंठत  
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुगोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, जीणी तो उमै मारग  
 खेद ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौत्तिक उपनो मनमें एह ॥  
 सांजल रे दासी आज नगरमें वद्धो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो  
 परधान सखी मंमिया, कां केइ लूंछ्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-  
 म्यो धन नीसख्यो, गामा रह्या वै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी मंमिया, ना कोइ राजा लूंछ्या



गांव ॥ जगूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥  
 ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोही पितामात ॥  
 ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, जगू जसा तिणें मोह ललचात ॥  
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इम सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां  
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म  
 मता नहीं गाय ॥ सां० दासी राजानें ए वाता जुगती नहीं ॥ ५  
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई बै राजारे हजूर ॥ वचन कहै  
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा  
 ब्राह्मण बोली रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां  
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म  
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अपने कांइ धणो हुसी,  
 राजारा मोटा बै जाग ॥ वमियें आहाररी बांढा कुण करै, कै कुतरा  
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीढो नर जलै,  
 नहीं परसंसवा जोग ॥ जगूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, थे  
 जाणयो बै असी म्दरे जोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संक-  
 लपियोमो पाढो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-  
 यो थे पहिलां हाथसुं, ते पूढो लेतां नावै थाने लाज ॥ सांजल  
 रा० १० ॥ निहच्चे तो मरणो राजाइक दिने, बोलीनें काम विशेष  
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥  
 सांजलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरा घन जैलो करी, थे घालो  
 जंमरारे मांदि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो  
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,  
 तूं जाबैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोलो बाजियो, का  
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें, करना वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोखो वाजीयो, ना कोइ  
 कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण  
 आई हो झूपाळ ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने  
 इम कहै, इसमी वैरागण आय ॥ अजुं तो निजरां आवै नही, तूं  
 बैठा बै घर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे  
 नही, इसमी आई बै मतवाल ॥ हुंतो घर गोमीने नीसरी, थे  
 पिण गोमो हो झूपाळ ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम  
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जगतरा राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पणियो  
 फंद ॥ इण रीतै हूं थारे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांजल  
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोरुनें, आरंज  
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपर्णे रह्या, थे पिण होयज्यो  
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मजै,  
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरघपंखी ज्युं आलिष देखनें, मनमां-  
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राग देवरा ज्ञांगा लग रह्या १९ ॥  
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ डुस्मन  
 तो मनमें हरख पाभ्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥  
 सां० राजा राग दे० २० ॥ इण दृष्टांते लोजी मूरख थका, मुरज  
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने डुखियो देखी चेतै नही, लागी राग  
 देवरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी  
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पणियो आय ॥ आलिष सम  
 जोग गोरुनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय  
 मथी सुख पाभियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अशिर ठै, ते पाभ्याडे  
 आपणे हाथ ॥ कामजोगमें रकत होय रह्या, ते तजहोय सांनाथ ॥  
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंंद्रीयारा जोग गोरुने, इय ज्ञावै  
 हलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम  
 बधरै संसार ॥ साप ज्युं मोर अकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संक-  
 स्यां इण वार ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां  
 संयमज्जार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार ॥ सांजल  
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिण २  
 खूटै आनखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥  
 हस्ती ज्युं बंधण तोरनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंद तूटै संयम  
 लियां, सुणो कहुं बुं मढाराय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ठोम्हीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सास्यां काज ॥ सांजल हो राणी  
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोम्हकै, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पावै सदा, सुमति गुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०  
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज भै, जव्यजीवनें उत्तरै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समजनें, निरमल जावना जाव ॥  
 उएजणा ओम्हा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, नृगुपुरोहित जसा नार ॥  
 नृगुपुरोहितना दौध दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा नृगुपुरोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥  
 ॥ उहा ॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान  
 शील तप जावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया  
 राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवै रव्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी बारै परखदा, सुणवा जिनवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वमो,  
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण बै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीघारी देवल चढै,  
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढोबारै कोरि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी बै वात ॥ कुण २ दानथकी तिरया,  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 धनसारथवाह साधुनें, दीधुं धृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिरौं मुऊनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं  
 वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,  
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पन्निजाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लहै, ते तो मुऊ  
 उषगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मातखमणनें पारणे, पन्निजाज्यो  
 ऋषिराय ललना ॥ शालिजइ सुख जोगवै, दानतणें सुपसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसैं मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण  
 ललना ॥ जगत अयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकुला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा अयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेवमी-  
 रस वहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-  
 नबाला बाकुला, पन्निजाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 अया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरखें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशवो

राखीयो, करुणा कीधी सार लखना ॥ श्रेष्ठिकने घर अ  
 वतरयो, अंगज मेघकुमार लखना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में  
 ऊधरया, कहतां नावे पार लखना ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी, मुऊ  
 पहिलो अधिकार लखना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दा-  
 न तुं, कियो करै अहंकार ॥ आरंभर आठै पदुर, याचकसुं विव-  
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर  
 कर नीचो करै, तुऊने पमो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान  
 तुं, मुऊ पूठै सऊ कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा  
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी  
 दानदिये, शील सभो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलै संकट सऊ टले,  
 शीलै जश शोजाग ॥ शीलै सुर सानिध करै, शील वमो बेराग ॥ ५ ॥  
 शीलै सर्प न आज्ञमै, शीलै शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,  
 जय जावै सब जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय थकी, में ठोक  
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥  
 ॥ १ ॥ दाख २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै  
 जग हूं वमो, मुऊ वात सुणो अंत मीठी रे ॥ लालच लावै लो  
 कनें, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग  
 जाणीयै, बलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में लीजव्या,  
 मुऊ जुच ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिरया वैरखा. शं  
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव  
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंडै घर आणो  
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०  
 ४ ॥ चंपाबार बुधामिया, बली चलणिये काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय  
 सुजद्रा जस थयो, में तसु कीधी जीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मां-  
 रण मांमीयो, राणी अजयार्थे दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासन

में कियो, में शैठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह  
 मंत्रीसरें, अवतां अरिदल थंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिय में करी,  
 वल धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट  
 किया, में अजेतरसो वारो रे ॥ पांनवनारी झैपदी, में राखी मा-  
 म नारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती  
 दयदंती रे ॥ चेम्पानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी०  
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊधरथा, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्र-  
 भु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥  
 तप बोढ्यो ब्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगत तूं  
 कितुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन ते तज्या, जगमें  
 मीठा नाद ॥ देहतणी शोजा तजी, तुज्मां किस्वो सवाद ॥ २ ॥  
 नारी यकी मरतो रहे, कायर किस्वुं वखाण, कूरु कपट बहु के  
 लवी, जिम तिम राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरै, उंनो  
 सहु संतार ॥ आप एक तूं जांजतो, बोजा जांजै चार ॥ ४ ॥ कं-  
 रम निकाचित तोमचा, जांजु जवजय जीम ॥ अरिहंत मुऊने  
 आदरै, वरस बम्हासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदोसर ऊपरै, मुऊ  
 लबधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुइरै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥  
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पर-  
 यकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसै उपशमें, कुं-  
 षादिकना रोग ॥ लब्धि अठवीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥  
 जे में तारथा ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पाम-  
 सो, देशो मुऊ साबास ॥ ९ ॥ ॥ दाल ३ ॥ नखदलरी दे  
 शी ॥ दहप्रहार अति पापीयो, हत्या काथी चार हो सुंदर ॥ ते  
 पिण तिण जव ऊधर्यो, मूक्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥  
 तप सरखो जग को नही, तप करै कर्पनूं सूरु हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूम हो सुंदर ॥ त० २ ॥  
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अधोर हो सुंदर ॥ अर्जुन  
 माली में ऊधरयो, बेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषे  
 एनें में कियो, स्त्रीवल्लभनवसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस्र अतेउरी,  
 सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ  
 णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सरनर कोमी सेवा करै, ते में  
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला  
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति  
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, बांधा जिन  
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, निण मुज अधिक  
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस्र अणगारमां, श्रीधनो अ  
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार  
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, उक्करकारक एह हो सुं  
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुज महिम। सवि तेह हो सुंदर ॥ त०  
 ९ ॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती दास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव  
 ननणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलजद्रप्रमुख  
 बहू, तारथा तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रचु वीरजी,  
 पहिलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै  
 तप तूं किंसुं, बेरुथुं करै कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कणमां  
 खैरूं थाय ॥ १ ॥ खंयक आचारज प्रतें, तें बाछ्यो सवि देश ॥  
 अशुज नियाणो तूं करै, कमा नही लवखेश ॥ २ ॥ दीपायन  
 रुषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करो तिहां, कियो  
 द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शीख तप सांजलो, म करो जूठ गुमाव ॥  
 लोक सहूको साख दे, धर्म ज्ञाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक वो  
 त्रिणदे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सैरै नहि कोइतुं, जाव जणे में

पाख ॥५॥ रस दिन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रस-  
 वति रस नही लक्षण विण, तिन सुज विषा नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र  
 मणि औपधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ ज्ञाव विना ते सवि वृथा, ज्ञाव फलै  
 नितमेव ॥७॥ दान शिल नप जे तुमैं, विधरकह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो  
 ज्ञाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ ज्ञाव कहे में एकले,  
 तात्था बहु नर नार ॥ लावधान घट संजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥  
 ( ढाल चौथी ॥ कपूर दुवै अति उजलो रे, एदेशी ) ॥ काननमें का  
 उत्तम रह्यो रे, प्रश्नचंद रुषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-  
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, ज्ञाव बगो संसार ॥  
 एतो बीजो सुऊ परिवार, सौ० ॥ दानादिक विषा एकलो रे,  
 पोहचाइं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-  
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ३ ॥ नूख तृया खसैं अतिघसी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल  
 महिमा सुर दौरै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजथी लेज  
 बाधे धसो रे, आयो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,  
 ते मुऊनैं सोजान ॥ सो० ५ ॥ अणिकासुत गहनो धसी रे,  
 खीणजंघा वलि जाश, कीधो अंतगम केवली रे, गंगाजल गुण  
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेलैं तापसजणी रे, दीधी गौतम दिख ॥  
 ततखिण कीधा केवली रे, जो सुऊ मांन सीख ॥ सो० ७ ॥  
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणशी  
 ठोरुआ रे, आपे सुऊ आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंरुइने चालतारे,  
 दीधो दंरु प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी  
 वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनैं रे, पमिलाच्यो जलास ॥  
 मृगलो ज्ञावना ज्ञावतो रे, पोहतो स्वर्ग आकास ॥ सो० १० ॥  
 निज अपराध खमावती रे, सृंक्ष्यो मनशी मान ॥ मृगावतीनैं



में दिखुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे  
 रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुऊने मनमांहे धर्योरे, ततखिण पामी  
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांप्यो चपल  
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 प्रभु पाय पूजन नीसरि रे, डुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां  
 करो रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोजा  
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ जरत आरोसाजुवनमां रे ॥  
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति कलानिलो रे, प्र  
 गथ्यो जरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप  
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग रह्यो रे, गजसुकमाल म-  
 साण ॥ सोमल शील प्रजावीयो रे, सिद्धि गयो शुभ्रजाण ॥ सो०  
 ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते  
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक  
 में ऊधर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,  
 मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर  
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप जाव ॥ निंदा बै अति पापणी,  
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां अकां, पापे पिंम जरा-  
 य ॥ वेढ राम वाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक ल-  
 रिखो पापीयो, जूंनो कोइय न दिछ ॥ बलि चंमाल समो कह्यो,  
 निंदक वदन अदिछ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद  
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को  
 केदनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रह्यो,  
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको जाव बै, एकाकी  
 समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकथछ  
 ॥ ६ ॥ अंजन आंखै आंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण  
 जणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाळ ए मी ॥ वीर जिणेसर  
 इम जणे रे, बैठी परखदा बार, धर्म करो तुमैं प्राणिया रे, जिम  
 पामो जव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे,  
 जविषण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी  
 घन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परुतां प्राणिया रे, राखै  
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटव सहुको कारमो रे, मति जूलो जवि जर्म रे ॥  
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे ठै जेह ॥  
 ते जिनवरना धर्मथी रे, अत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
 सोखेसे ठासठ लसे रे, सांगानेर मऊार, प्रद्वप्रजु सुपसाजले रे,  
 एह जणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,  
 खरतर गढ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-  
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-  
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-  
 मयसुंदर वचक जणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥  
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां  
 ज्ञावसुं रे, शब्द समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील  
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो दीरने चित्तमा नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्त्रथी दूर  
 वारो ॥ संतोपवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थान उछाही ॥  
 ॥ १ ॥ पढ्या मोहना पासना जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेथो न

जाणी ॥ मनुजन्म पासी वृथा कां गमो गो, जैनमार्ग वंसी जुलां  
 कां जमो गो ॥ २ ॥ अलोजी अमानो निरागी तजो गो, सलोजी  
 समानी तरागी जजो गो ॥ हरि हरादि अन्यथी लुं रमो गो, नदोंग  
 मुकी गलीमां पमो गो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ  
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव उत्तंगे राखेवे वामा, केइ  
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जणे लेइ जपमाला, केइ  
 मांस जह्नी माहा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मागे,  
 केइ रुद्रणी बागनो जोग माने ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा  
 खै, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोचना ओकनो थार  
 नाव्यो, तदा मयनो विंडुळ मन ज्ञाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी  
 आस राखे, तेह पिंनने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन दीननी जीन  
 ते केम ज्ञाजे, फूटो दोळ होवे कहो केम वाजै ॥ ७ ॥ अरे मूढ  
 भ्राता जजो मोहदाता, अलोजी प्रजुवे जजो दिश्वखाता ॥ ८ ॥  
 तनचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंक्री काचना पिंनसुं मत  
 राचो ॥ ९ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेवै, सवि धर्म एकत्व जूजो  
 ज्ञामेवै ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू-  
 रवीरं ॥ १० ॥ किहां स्वर्षालं किहां कुंजखंनं ॥ किहां कोडगान  
 किहां क्षीरमंनं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कानधेतु  
 किहां बागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां दूगवाणी, किहां  
 रंकनारी किहां रावराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां  
 इंददेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म  
 धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जित्ती सेजमां स्वप्न-  
 थ्री राव पाप्मो, राचे मंदबुद्धी घरो जेह रगामी ॥ १२ ॥ अग्रि  
 सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढनां श्रेष्ठसुं श्रेष्ठ वाजै ॥ तजो  
 मोह माया हरो वंज रोसो, सजो पुण्य पोली जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रजु  
पाय स्वामी ॥ तून्ही२तुन्ही प्रजु पर्मेरागी, जवफेरनी शृंखला मोह  
जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी ठै एक अर्ज मोरी, दीजै दासकूं  
सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य नदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें  
लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंघित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥  
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजकार ॥ १ ॥ अरुसठ अक्षर  
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वोतराग सैमुख वदे, पंच  
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्यां संपत्ति  
प्राय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल  
मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु ज्ञापित सार, सोजविषां मन शुद्धसैं,  
नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( छंद हाटकी ) नवकार थकी  
श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु  
मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे न  
वनो पार ॥ सो ज्ञविषां जप्ते चोखे चिते नित जपियै नवकार ॥ ५  
॥ बांधी वरुसाखा ठीके बैसी हेठल कुंरुहुताडा, तस्करने बलि मं  
त्र समर्प्यो आवक उच्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष  
धर विष टाळे ढाळे अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महा  
बल व्यंतर डुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्र  
तिबोध ॥ नवलाख जपंता आयै जिनवर एहवो ठै अधिकार ॥  
सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पालें महामंत्र मन शुद्ध,  
परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परवल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी  
अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी  
तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगे श्रीपासकुमारे पन्नग अधवलतो

तै टाखे ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंचुवन अवतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण  
 ध्याने कुष्ट टट्युं उंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-  
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णजुजंगम  
 घाट्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-  
 मांहि विज्ञात ॥ कमलावतिथें पिंख कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार,  
 पद पंच सुखंता पांरुपतधर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मंदिर जवडुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल  
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रणकी संपत्ति वसुधामां लही विलसै  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चौधीसी हुइ अनंती होसे वार  
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥  
 घूरबदिसि चारै आदि प्रपंचे समरथां संपत्ति सार ॥ सो० १४ ॥  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंरगिरि ऊपर  
 प्रत्यक्ष पेखथे मणिधर नैं इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधियें  
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारथो सुरें करी मनुहार  
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच  
 सिंहाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो  
 पंचह पाजो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ गण्य ) नित्य  
 जपियै नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो  
 एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुख आचार्य ज्ञाजै,  
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाज वाचक कहै, एक चितै आराधता रुदिसिद्धिबंशित  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥  
जाकी ठवि कांति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-  
ज्योति जिगामिग जिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप  
वखाणाहि चूपत, तूही त्रिजुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर  
लोक सबे मिल, जाका जस्त धुणंदा है ॥ तेरी खिजमच करे  
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आगनिकाड्या नाग,  
किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला  
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन महा रन वन पंचागनि,  
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी डुद्धाधारी, अढ्य अहार  
लियंदा हे ॥ सब जेप सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा  
हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥  
महिमा बढ़ारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण  
वत्तां धरिय उक्ततां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अस्कै कुण तो  
परके, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो  
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापति  
सजंदा हे ॥ गल घूघरमाला जाण हेमाला, दंताला उपंदा हे ॥  
वर वीर घंटाळा मद मतवाला, जोलाली जलकंदा हे ॥ ५ ॥  
पंचरंगी परकर सजी सस्कर, ढालांसुढलकंदा हे ॥ धतकोरे धत्ता मत्ता  
अंकुस, मावत शीस दिवंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रजु  
ज्ञानी आस्कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अजिमांनी तप अज्ञानी, पावक  
जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाम डुफाम दिखावे लकन, वर फलधर  
नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥  
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन  
 सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुघी  
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रज्जु अप्रतिबंध वि-  
 हार कियो तब, रनबन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे  
 कानसग्ग मज्जारे, कमठासुर दाव जहंदा हे ॥ वमा असुराणा बली  
 हेराणा, पिणाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार  
 विरोध, महा अजिमान धरंदा हे ॥ वाजल मतवाली नीली काली,  
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ९ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,  
 दिवाकर तेज बिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू  
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥  
 हुआ अकाला धुर वरसाळा, बीजलिया बीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी  
 धारासुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चह्ले जल खाला नदियां  
 नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्ठां केतो फुट्ठां, पाणी नहि  
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहहत्तां धरिय उत्थत्तां, खोणीपति खिसंदा  
 हे ॥ ११ ॥ वमे पाहामां जंगी जामां, सजामां दाहंदा हे ॥ सम  
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूछा जाण  
 किरुछा, जूठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान  
 सग्ग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसग्गाहंदी केल करंदी, पाग  
 नांहि मुसंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान  
 धरंदा हे ॥ प्रज्जु नासा तांइ नही आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥  
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीरु सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण  
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण बेग चलंदा हे ॥ तिण अबधि  
 प्रयुंजी दीठे प्रज्जुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-  
 वत्ती देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना बैठ वि

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग हजारां कर विस  
 तारा, उत्तर ज्युं ठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरव  
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंझणीनारी सब सिणगारी, जोवन अंग जिल  
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो  
 हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल जलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा  
 हे ॥ नकवेसर नल्यां लाल सुकल्यां, विच मोती जलकंदा हे ॥ उदण  
 पाटंबर जीणी अंबर, आनूषण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क  
 सिया तन जलसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा  
 हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कमियां सोने जनि  
 यां, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घुघरियां पाए धरियां,  
 पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले जांजर ताला ताल कंसाळा, परकावज  
 वाजंदा हे ॥ कुदके करनाला बीच रसाळा, जंगी दोल घुरंदा हे ॥  
 वाजे सरणार्ई सखरी घार्ई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पन्मा वै  
 रुद्धा आण जलष्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त  
 रंमा, रस जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न बीता, पा  
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,  
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आख्या रत्तो, किन्ती रीस  
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्युं नांही समजंदा हे ॥  
 साहिब बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए  
 कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई  
 रीस जराई, हिकाइ वजरंदा हे ॥ किन्ती बहु गल्लां पमै दहल्लां,  
 धरुदरु देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तब ते आया, पावां आय  
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोनि खमाया सीस नमांया, जगनायक  
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिब सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा  
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्षिणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥



कमठासुर किन्ती बहु विनती, निज अपराध स्वमंदा हे ॥ ११ ॥  
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं  
 जम पावे दोष निहावे, तब केवल उपजंदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर  
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरती जग ऊपती, पार  
 न को पावंदा हे ॥ १३ ॥ तूं सच्चा रखे जेद परखे, गुमानी मो  
 रुंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं  
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्ला पीर फकीर  
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुल्लां मरद आ  
 ठल्लां, तूंही शेष फरीदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मग्यामें मु  
 लकंदा हे ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का बाजंदा हे ॥ तूं  
 कच्चा कवला सबत सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-  
 साई जेद न पाई, ज़ीरु पक्क्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-  
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा  
 देवंदा हे ॥ तूं एकां थप्पे एक नथप्पे, थिति निज सुध आपंदा हे  
 ॥ २६ ॥ तो देवल मज्जां लोकति संझा, सीरशिया वाटंदा  
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञासे, जीणे सुर गावंदा हे  
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेना धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी  
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला  
 हंदा, टोरु कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां जरीया ठावां, परमल  
 तिहां वासंदा हे ॥ कसावोई चंगी रचियै अंगी, फूलां बीच फाव  
 दा हे ॥ आजूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंरुल कान ऊगंदा हे ॥  
 २८ ॥ सूरत सोहंदा मूरत हंदा, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि  
 जाजं मोजां पाजं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कथूं ग  
 ल्लां हुकम अदल्लां, समकित मनउलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा  
 रहासा, तुज सेवक विलसंदा हे ॥ बग्नर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीधग्घर नीलाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ्र योगै पुण्यदशा सफल  
॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंगित आपै दादो रंग  
रली ॥ १ ॥ मंगल लील समैं विपुला, नवनवा महोन्नव राजेला ॥ सुप-  
सायैं गुरु चढ़ती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही  
दिन आयैं सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ  
पायक बहुला, किछोअल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि  
स्ताण घुरै, नर बै दरबार खना पुहरै ॥ जय२ करजोमी उचरै, सा  
निद्ध गुरु सब काज सारै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डख  
रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम  
दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद धुमें, बत्तीसे नाटक  
रङ्गरमै ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं, सबला अरियण ते आय नमैं  
॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणैं, पहिरैं वेलाउल होयरनैं ॥ ध्या  
वो कुशल गुरु एक मनैं, जूँजक सुर मंदिर जरै धनैं ॥ ७ ॥ तत  
खण घण खंच्यो आवै, करि स्यामवटा मेह वरसावै ॥ तिसीयां  
तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरियां  
जल कछोअ करै, प्रवहण जवसायर मझ रुरै ॥ वून्ता बाहण जे  
समरै, ते आपद निश्वेसुं नवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,  
सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खे-  
मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुंन सकल परचा पूरै, श्रीनाग  
पुरै संकट चुरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥  
वीरमपुर वातै दुधरै, खंजायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पा  
टे पवरै, जमु कीरति महीमंजल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम द  
कण आगै, उत्तर गुरु दीपै शोजागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरंगच्छनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जेनपदे गामे, गा  
ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पद  
वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजनने सुखिया  
साखै ॥ समस्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक जाखै  
॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सगुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश  
फलै ॥ दोषी डुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संप्रति आश फलै ॥ १ ॥  
॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-  
सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमाहे अती ॥ २ ॥  
शुभ्र मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकास न होय कदा ॥  
आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥  
जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥  
जसु नामे न पमे बीजलियां, जूत प्रेत न कर सके बलवलियां  
॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण  
पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसांत लीयां गुरु  
सिद्ध बांधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लाग  
नर भार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबांधी श्रावक  
कीध सहू ॥ ६ ॥ बमनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण  
चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय  
परी ॥ ७ ॥ वज्रमय शंजो दोय खंरु कियो, पोथी परगट परजा  
व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जोषी सुजश  
लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवरु वंसे जीवदया, मंत्री वाठग परसिद्ध  
थया ॥ बाहरुदे कूखै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण धणूं  
॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगताखै दिह शुणूं ॥

शुगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे वारेसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ  
सूरी पटोधारणं, परजाव उदेसर जयहारणं ॥ नवनिधि लठमी  
संपति करणं, बलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ शुभ  
सकल श्रीअजमेरे, गढमंसो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल  
मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा  
सागै, ज्ञावठ दाखिइ दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागै  
गुरु पुरमें कीरति जागै ॥ १३ ॥ धन२ जे सहुरु ध्यान धरे,  
तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरतरनी महिमा पसरै, कवि  
सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सहुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव  
वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंद  
कुलावर पुनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुनिंद ॥ नाथ मंत्र जसु  
महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंरुल सवि-  
याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां वसै जि-  
ह्वागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे  
तीसे जम्भ, सेतालै सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहचरे जसु पाट,  
निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ नूअंरुल सरगें पायाल, अचि-  
राचिर शुग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि मानै सोय, में नवि  
नयणें दीगो जोय ॥ ५ ॥ निरघन लहे धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीण  
पामें बहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु  
ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि ठलै, सयल संति सुख संप-  
ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते ठंनि नवि मंमै व्याप ॥  
॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥  
सेवता सुरतरुनी गंह, निश्रै दाखिइ मेटे बाहि ॥ ८ ॥ विसहर

विसनरै विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न  
 करै पीन, जाजै जावठ जवजय जीन ॥ ए ॥ रोग सोग सवि  
 नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंथित थाय,  
 प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन उ-  
 द्योत, जिहांअगै जवसाथर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,  
 रक्षियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-  
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-  
 मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्ने गिलियो, जुगपवरागम जो  
 में शुणियो, चंद्रगढ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी  
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥  
 वार१ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज  
 आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक बाहण  
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर जुवणै ॥ १६ ॥ कीयो क  
 वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत  
 संसो धरो मनै ॥ १७ ॥ जिम१ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल  
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय शुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु  
 शुण अजिनंदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुऊ दुवो  
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ  
 आश घरे, गुरु मोन ग्रहां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद  
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी  
 चिरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलग  
 जो तो वेगा आवो, हिव ढील घनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद  
 गुरु खरतर गढ साचो, कोइय न जाणो तुऊने काचो ॥ इण संक  
 टमें आलश म करो, दादा डुसमननै दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक  
 पदी सदगुरु हमसुं, तो ज्युं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा द

थे मन ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ३-॥ आया सव  
 श्रीसंघ अठा लगै, पाठा किम जावा इखे पगे ॥ इण पर करिये  
 गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश  
 ल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले  
 उजवालो, परघल निज ठेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाये  
 ए गावो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजो हुय सगला रंगरली,  
 जिनचंदनी आस्था सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 सदगुरुजी थे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध  
 करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोखति दो हो दादाजी संप  
 ति हो ॥ आंकणी ॥ दोखत दो गुरु माहरा, आंदरा विरुद अने  
 क हो ॥ आं समरथां संकट टलै, एहीज दादाजो ताहरी टेक हो  
 ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥  
 सिंधमांहे तें साथीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥  
 पन्निकमणामांहे बीजली, बलीर ऊबकाय हो ॥ थे मंत्री  
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क  
 रतां उच्चमै, मूंउ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवानियो, संश  
 मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देहरे  
 धरी मृनगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पा  
 य हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोयातें सहू डुःख  
 हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहूनें दियो दादे सुख हो ॥ दो०  
 ७ ॥ अंबरु हाथे अकरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग  
 तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ आंजो वज्र विदारनें,  
 पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उज्जेशीमांहि लीध  
 हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा बै ताहारा, कइतां नावै पार  
 हो ॥ जागसंजोगे-दादो जेटियो, अरुवनियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं वूं सेवक ताहरो, थे आपो धन रुद्ध हो ॥ कनककीरत  
 सुपसाजलै, लाजउदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशासदा देवो ॥  
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशांता, दादो  
 जगबंधव जगगुरु ब्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,  
 दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥  
 दादो अलगांधी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा  
 दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे  
 राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो गोगाखां सेहर गजै,  
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकन धोली, हाथे लेइ सोवन क  
 घोली, पूजो दादाजीनें मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-  
 थां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन  
 सासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत  
 माहाराजा, दादो राजै खरतर गठ राजा, दादो समरथां सफल  
 करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,  
 दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥  
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग  
 दगाटै, जसु ध्यान सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा मंदिर  
 निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति पीना डुख हरियै, दादा जिम  
 जग जयकमला वरिये ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर  
 ज्यो, दादा डुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनबंधित फलज्यो ॥  
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,  
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै,  
 सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उतरीनितरी ठवि गजै,  
 विचमें थिर थुंन विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ जूलरे यात्री मिल

आवै, दादोजी दीगं सुख पावै हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस  
 जरिय कचोली, मांहे वदि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ पूजो  
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ९ ॥  
 दादोजी डुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०  
 ॥ १० ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥  
 ॥ गा० ॥ ११ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी  
 हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ अलगाथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंछित पावै  
 हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण  
 वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ ग्रह गोचर चोर  
 जंजालै, पीना हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १५ ॥ बाजै  
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गढ राजा हो ॥ गा० ॥ १६ ॥  
 जसु जैतसिरी वर माता, जिह्वा गरमंत्र विख्याता हो ॥  
 गा० ॥ १७ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥  
 गा० ॥ १८ ॥ सहु संघ सहित सुबिलासै, अधिके हर हेत उल्लासे  
 हो ॥ गा० ॥ १९ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनप्रति जतीसर  
 वंदे हो ॥ गा० ॥ २० ॥ इति पदं ॥ पुनः, सहाइ मेरे श्रीजि-  
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गढ वरू  
 ॥ स० ॥ वावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम जरू ॥ स० ॥ १ ॥  
 चिंता चूरण विघ्न विनारण, दाखिइ दूरहरू ॥ स० ॥ २ ॥ दिन  
 साहिब चढते वाने, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ बाजै जेहना  
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अटारसमें  
 अरुतदै, सिंगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु जेदे,  
 श्रीजिनदर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमावै चरण नमंता, तूठो  
 कळपतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥  
 स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः, आयो आयो जी, समरंता दादोजी



आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देवानरतें ध्यायोजी ॥ स०  
 ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥  
 पंचनदी हम बैठे बेसी, दरीयै चित्त मरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥  
 दादा उच्चजणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥  
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०  
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ जाया जकिसूं पूर रहो रे,  
 छरिजन सब छर रहो रे ॥ जा० ॥ मेरे मनमें जक्ति वैरागी, चित्त  
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी ज्ञान्यदशा अब जागी, जीया हो  
 जा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आयो, गुरुवरणो चोक पूरावो ॥  
 बलि अकत थाल बधावो, जीहा हो जा० ॥ २ ॥ गुरु मदिमावत  
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया  
 हो जा० ॥ ३ ॥ घस केसर जरके कबोली, मांहे मृगमद कुंकुम  
 घोली ॥ गुरु पूज रहो जर जोली, जीया हो जा० ॥ ४ ॥ श्री  
 जिनहर्ष सूरिस्तरराजा, वाजै जग जशना बाजा ॥ सत्यरत्न करै  
 सुज काजा, जीया हो जा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥  
 कशर चंदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०  
 ॥ १ ॥ मोगरा लाख गुलाब मालती, मन सुध माल करै जवि रुच-  
 सुं ॥ कु० ॥ २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो  
 आतम रुचिसुं ॥ कु० ॥ ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा  
 पूरै गुरु धणुं दत्तसुं ॥ कु० ॥ ४ ॥ ध्यान सुधरै ज्ञान बधारै, रूप रंग  
 देवै बित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका  
 री, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा  
 सुबिलाशी, सत्यरत्न सुख एही ठतमुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग देवअचलत ॥ आज करो रे उवाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आभी वेला नें उ आगो दाव, इण  
 आभी वेला क्युं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो  
 अनंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै  
 वय सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अकत  
 श्रीफल होवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 सुर नर नारी कृपा करजोर, कोण करै म्हारा दादाजोनी होम  
 आ० ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गङ्गपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार  
 ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु  
 गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनदर्ष करै उबरंग, सत्यरत्न मन  
 ग्यान उमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोयाटो ॥ में  
 निरख्या गुरु माहाराज, उतियां दर्षजरी ॥ में० ॥ अमल अनंत  
 गुण आगरु रे, समतारखनो धाम ॥ परम परम परमात्मा रे, वं  
 ङित दायक स्वाम ॥ ब० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन  
 प्रतिपाल ॥ जविजन जके ज्ञावसुं रे, ब्यावै जरश आल ॥ ब० २ ॥  
 केशरचंदन कुमकुमारे, जरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती  
 रे, पूजै सहियर साथ ॥ ब० ३ ॥ कुशल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन  
 चंद सूरी पाठ ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥  
 ब० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन  
 दर्ष सूरीसर रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ ब० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग प्रजाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाडं गुरुरा  
 य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल घमी  
 सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा, अशुभ  
 करम सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दाखिइजंजन अरि सब गंजण ॥ प-  
 ग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सर  
 ण मही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनदर्ष तुम चरणको दा

ज्ञा, आशा पूरे सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी ज्ञात क  
 रो मेरे सदगुरु, ज्युं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥  
 जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलजर पीजै ॥ सुरतरु  
 शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु०  
 ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥  
 परमजगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो जरपूर, सेवकजन मन  
 बंछित पूरण, समस्यां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रे  
 मरस पूरण, अशुज हरण जये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा,  
 बीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल  
 लुंवरकी ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण  
 गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल जेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी  
 पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता, नगरवी  
 काणे राजे हे माय ॥ गाम गमालै दीपता, ज्यांरी महियल महि  
 सा ठाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता, कुशल करण  
 अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गढ अधिकारी  
 हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे  
 माय ॥ लुलश शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥  
 स० ४ ॥ सज्ज सिणगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥  
 तन मन प्राण लोनावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥  
 विठड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनो  
 रथ पूरवै, परधल लखमी द्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी के  
 ला वाटमें, समस्यां सानिध आवे हे माय ॥ जूखां जोजन मेलवै,  
 तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवां,

आन आगल धिर पाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामगो, गावै  
 गुण गहगाट हे माय ॥ सं० ॥ ७ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै,  
 जिवि मिले ज्ञावना ज्ञावे हे माय ॥ चंद फते सुनि नित नमें, पर  
 मानंद सुख पावे हे माय ॥ सं० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 श्रीसद्गुरुजीसैं वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ  
 रज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु-  
 धकर ध्यान लगायो ॥ महरि निजर अब कीजीये जी, चरणक  
 मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट डुख मेढो,  
 सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, बधती  
 संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपठर मिल आवै, अतर  
 गुलाब केवलो छ्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर  
 क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलियुगमें परचा तूं पुरै, चिंता दोखी ड  
 स्मन चूरै ॥ धनश्रीसद्गुरु जगज्यो रे, सहस किरण अवतारी ॥  
 दा० ॥ ४ ॥ जगणीसे अठावन वरसै, कांतीपूनम दिन जलसै ॥  
 गच्छपति कीर्ति सूरिसरू रे, वदै वार हजारि ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस  
 परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुजै समजीजै ॥ जगमें सु  
 रतरु सारखो रे, कीरति गारही आरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व  
 रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल  
 सूरिंद धणी रे, कहै रामरुदिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ ॥ चाल जरतरकी ॥ सद्गुरु दीनदयाल, गच्छपति  
 दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजंन प्रतिपाल, डुखतमहारण दिनम  
 णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणो जी देश, गजरो कुल उदयाचले ॥  
 जिह्वासाह पितेश, जैततिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गच्छपति चंदमु  
 णिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र  
 काशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, जिंगमिग ज्योती जी

जिगमिगै, पुनमनै सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचै  
 अतर फूलेख, परिमल फूली जी माखती ॥ महके चंपक वेख, सुं  
 दर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ्र थिर थुंन वीकाण, बालूचर म  
 हिमा घणी ॥ कीरतबाग प्रधान, डुखजंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥  
 पुरो वंछित आश, ठांया तुम सुनिऊरतणी ॥ दाता सुख कैलाश,  
 चरण शरण किंकर जणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंडशिखर  
 जयशशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥  
 ॥ ८ ॥ जगणीसे अरुताख, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण  
 अतहि विशाख, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ९ ॥ गुरुगुण शरिता  
 नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जल  
 वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी  
 गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी बेनिया पार उतारो, तूं वण  
 अब मांजी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता ज्ञाड्व नीर जलधि ज्युं, थो  
 संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥  
 सु० ॥ १ ॥ राग रंग ईक जीरण नौका, तिररही जर मज धारो ॥  
 में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनै उठारो ॥ सु० ॥ २ ॥  
 जक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल ग  
 णपति करुणानिध, याविपतितसे वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उडकापात  
 भगन ज्युं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह अथादिक  
 निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु  
 शै कोइ ईसा, अह्मा उमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव  
 कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरजी  
 आये गढ तमहर, तुरतही विघन विहारो ॥ रामबाग पुर गंज  
 अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ केश्यक गुरुसे लखमी  
 पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मां

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत जगणीसे अमृतालोश, मेरुत्रयो-  
 दशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार ति-  
 हारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग धाटो ॥ मेरो मन बस  
 कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दरश तिहारा, दे० ॥ श्रीसद  
 गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु  
 आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख  
 साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुज मन निरमल काज ॥ दे०  
 २ ॥ गुण रुद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब  
 सिद्धि लीला प्रगटी, डुख दोहग गये जाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु  
 तुल्य परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज  
 थान पुर२ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ बर गठ खरतर  
 राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामरुद्ध  
 सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ताल तुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु  
 रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधे  
 सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज  
 परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधा  
 रण, नितप्रति हरख उवाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहू,  
 गुरु समरण सुरसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप जय पनियां,  
 सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमी विरियां संकट पनियां,  
 समरया आवै धायजी ॥ स० ॥ जूझां जोजन तिसियां पाणी;  
 निरपनियां धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसाता,  
 जिस कीरत जग आय जी ॥ स० ॥ थानक थिरना पगल जोजन,  
 पग२ कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदगुरु,  
 नवनिधि वंठित आयजी ॥ स० ॥ सुमनि सवाई निन घर सपदं,

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुश  
 लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति सिद्धि सिद्धि सब  
 होजरे, देश देशांतर कांई जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु  
 विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि  
 नाम मंत्र जर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥  
 इक मन ध्यावो बंझित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो  
 ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुथिर थानक शित  
 जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ उग्रपती थारे पाय  
 नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जो, डुनि  
 थामे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्यारा राज दादरे  
 दरवार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय  
 चंपेली, जक्ति करुं जरपूर ॥ हुं० १ ॥ पांगूलियानें पांव समावै,  
 आंधलियानें आंख ॥ रूपहीणानें रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख  
 ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिवा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥  
 आठ पहर थाने छलगे जी, रंग वणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम क्रिये  
 बहुतेरे, अपणा त्रिसद विचारी ॥ पलर चूक परी सदगुरुजी, में  
 मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो,  
 पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक बंझित पूरथा, आही थारी  
 मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत डख  
 बेनी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥  
 स० ३ ॥ और देवकुं में नही ध्यावं, शरण अही में तेरी, दूरथको  
 में जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका  
 में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ हमारलकी वीनती  
 मुणकै, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित  
 लाय २, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ वा-  
 वन वीर अने बलि चौसठ, जोगण बस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या  
 पुस्तक सोवनअकर, थांजो वज्र विभार पाय ॥ सद० १ ॥  
 मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साथी चित लाय ॥  
 इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समस्या सब डुख जाय ॥ सद० २ ॥  
 गुरुके नामसें अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥  
 श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय  
 ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ होरी खेलो जविक सदगुरुके  
 संग, नित आनंद नञ्जव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण  
 आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत  
 स्वर जीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत  
 आनंद पिथा संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज  
 समाज जक्तिले, गुण गुलाब लिये गुरुके अजंग ॥ हो० ॥ २ ॥  
 निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥  
 ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, गिरको महकत सुरजिंग  
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरलणसे नैण, रामरुद्धीसार के चित  
 उमंग ॥ हो० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥ नेमस्यामसें कहियो मोरी ॥  
 इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुझानी, जली हिये जक्ति जराणी  
 ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरिसर साहिब, खरतरगठरा जानी ॥  
 देशदेशमें आनक गुरुका, सोजा जग पहिचानी, सदा रवि तेज  
 समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद जेखी, चरणारी पूज  
 रचानी ॥ धूप दीप बलि आगल ढोवी, बहु विघ्न पुष्प चढ़ानी,  
 जला फल जेट घरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ बाट घाटमें परचा पूरक,  
 हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरिके साहिब, वंजत



कांज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये  
 श्रीसंध सब हिलमिलके, संग लिखे वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद  
 थालकेसनमुख ठामै, पठत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर  
 घोली जरी रे कचोली, पूजत हे वारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल  
 मच्यो सदगुरुके, अबीर उकावत जरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश  
 ज्ञाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकनी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं  
 जण डुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि  
 तदाता जगके प्राता, अरजी हय सुनखे मोरी ॥ स० ॥ कहत  
 रामरुदिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥  
 इति पदं ॥ राग प्रजाती ॥ केसे२ अवतरमें गुरु रखी लाज  
 हमारी ॥ के० ॥ मोकुं सबल जरोसा तेरा, चंद सूर  
 पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या  
 जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी  
 ॥ के० २ ॥ आगे तो केई बेर हमारो, चिंता दूर निवारो ॥  
 अबकी विरिया जूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥  
 अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल  
 सूरिंद गुरु तेरा, वन्दा जरोसा ज्ञारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥  
 खरतर गढ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री०  
 १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, जीमर्जंजण अति ज्ञारी ॥  
 नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २ ॥  
 जगवञ्चल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन  
 चंद मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति  
 पदं ॥ पुनः ॥ श्रीगणेश्वर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अकृत कुंकुम, जलज्जर कंचनजारी ॥  
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरुं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी  
 जाति करुं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे  
 परमगुरुकी, बेर वलिहारी ॥ श्री० २ ॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥  
 कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥  
 जगतमें या क्षमो कोई, न देख्या नयण जर जोई  
 ॥ १ ॥ विरुद जूमंखे गाजै, फरशतां पाप सब जाजै ॥  
 पूजतां संपदा पावै, अर्चिती लख घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख  
 गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज  
 सुण जाजै, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर  
 गणपति कुशल सुरिद गुरु, मुऊ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥  
 पतित उधारण विरुद तुल्यारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥  
 आधि व्याधी अरु दोखी डसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥  
 खेमरतन सेवगकुं निशदिन, सबगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ पूजो जजो रे जाई, गुरु महिमा  
 ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर  
 पुष्प चढ़ाई ॥ पू० ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके  
 सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, नि  
 शदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो  
 अरज करुं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुराय ॥ सदगुरु ॥  
 विरुद घणा ठै राजरा जी काई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥  
 सुनिजर जोयजो साहिवा ॥ १ ॥ थारे रावल रणा राजवी जी,  
 थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नैं कुमकुमा जी,  
 काई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थारै धुमलां रे आगल

धूमरां जी, कांइ हूलत चमर गजदाव ॥ स० ॥ कारण सेवे काम  
नी. जी, कांइ निरख करै जी निहाव ॥ स० सु० ३ ॥ थारी ठावी  
ठांने आपना जी, कांइ नुदयापूर आवेर ॥ स० महिमा जलौ  
गुरु मेरुते जी, कांइ सालूमेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४ ॥ थारी  
ज्योति घणी गुरु जिंगमिगे जी, कांइ वधती गढ़ बीकाण ॥ स० ॥  
आसा पूरण आवजो जी, अेलो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥  
म्हारी बीनतनी जलै मानज्यो जी, कांइ दादाजी दीनदयाव ॥  
स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाव ॥ स०  
सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख  
तिहां राजै रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो  
म्हारा, म्हेतो चरण पखाळां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन नरिय  
कचोलो, मांहे बलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु  
पाया, पूज्यां सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,  
थारे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुध मन पूजा कीजै, डख  
दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इस कलयुगमां  
हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अ  
वर न कोई, दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा  
ली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल  
तिहां आवै, जिहां लूखियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान  
सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंद-  
न गुण गावै, करजोमी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गठपति साहिबा ॥  
॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछिते दाता, देवो बुद्धि बिरुमाता ॥ सद  
गुरु महर करीज्यो मुऊपर, ज्युं मिन्ननछूं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटवारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं-  
 कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा  
 अधिकारि, जाणो सब संसार ॥ जरदरियांमे व्याज उगारी, जिन गुरु  
 रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पा-  
 पतिमर हट जाय ॥ गुरु परमानम सुगुण शोजागी, गुरुगुण केम  
 कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेजर ठणकाती, लिये अली  
 बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अब विचक्षण, मृड समीर ऊणकार  
 हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसद्गुरु दरबा-  
 र ॥ इंद नरिंद नमे प्रदणंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥  
 ६ ॥ रुद्र सिद्धके आगर सद्गुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री  
 आवै जात्र करणकुं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन  
 अर्चन सद्गुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ-  
 स्सर, करै सुविष सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवन  
 सुखकर, नंद चंड शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन जेव्या,  
 शुक्ल पक्ष शुभ वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै,  
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उ-  
 द्वार हो ॥ स० ॥ १० ॥ सद्गुरु धर्मशील परजावै, कुशल होत नित  
 साय ॥ रुद्रिसारपें महर करीनै, अविचल लील बताय हो ॥ स०  
 ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेलियां आज  
 चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजि-  
 नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे  
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगठना राजवीसरें, सेवकजन प्रतिपाल ॥  
 डष्ट कष्ट जय दूर करीनै, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥  
 पूनमश् जक्ति धरीनै, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद  
 धोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सद्गुरु आगले

सरे, संज शोखे सिंगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर  
 ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित  
 उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥  
 मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कइवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥  
 बलिहारी गुरुनामनीसरे, बारीजाजं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥  
 संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम  
 गमालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगढ  
 सुखकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत शशि  
 अजिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज  
 सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुद्रसार गुरु गुणगण ऊपर, नित  
 प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह  
 अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर  
 मंजल सम सूरि, दीपत बदन ठवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंजल  
 मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा  
 शिष्य सूरि पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे  
 खतही हरखित ज्यो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरिसरू,  
 गुरु गठपति हो, खरतर गढ सुखकार ॥ साहिबजी ॥ कोवारी  
 कुल दीपता, गुरु गठपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥  
 करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत  
 अठारे बासठै, गु० जन्म समय वर बार ॥ सा० ॥ २ ॥ अगरेसे  
 सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अगरे बाणमें,  
 गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता,  
 गु० करता जंग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनदर्श पटोषरू, गु० दीपत  
गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ जगणीसे सतरे सर्म, गु० पायो देववि  
मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद बन्दि निधि अनुपती, गु० माघमाश  
सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पद्म तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणें हरखाय  
॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरिसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥  
कुशल कला नित नेहसे, गु० प्रणमै इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥  
इति सौज्ञाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये ठे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ पर  
खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु  
मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ ज्ञव्य मधु-  
र तो ज्ञावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज  
रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पान  
थी रे, अजर अमर पद आय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी  
रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांजले ज्ञव्य लहे सही रे, जिन पर  
ज्ञाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निकेप  
अजंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥  
शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर  
वरसतारे, ज्ञवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा  
यथो रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश  
जणें कट्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि  
श्रीजिनचंद मुण्डिदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर  
वृंदा, सुगुरु भूहारा देशना दिव दीजै ॥ थारी देशना सुण मन  
रीजै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, ज्ञमंजल ज्ञपर  
जायो ॥ कमलादि सकल मन ज्ञायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाजल देव-

गंधारि, वलि नैरव राग मेजार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥ ३॥  
 पंच सबद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर जालर बाजै ॥ सह  
 सज्ज यथा धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ द्वि वदिला पाट पधारो,  
 श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरै स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥  
 सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपे धर्म उपदेश ॥ टालो जनि  
 कोम कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनो मीठी वाणी, उपदेश सुणो  
 जनिप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत  
 पो ज्युं शशि सूर, दिनप्रति वेधते नूर ॥ हरो संघ सकल डस  
 दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, जर मोतिथां आल वधावै ॥  
 लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापुत्र गोले रतन जमाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद  
 सूरिसरु, सुगुण म्दारा श्रीखरतर गङ्गाय हो ॥ श्रीजिनलाज पा  
 टोधरु, सुगुरु म्दारा दिन २ सोजे सवाय हो ॥ म्दारा सदिज सो  
 जागी, म्दारा शुज गुण रागी, म्दारा हितधरु ॥ १ ॥ सुगुरु म्दारा  
 देशना यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उच्चक अयो, सु० सुणवा अमृ-  
 तवाणी हो ॥ वदिला वंजित पूर हो ॥ सु० ये गो अवसर जाण  
 हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरवा, सु० विकस्था कमल  
 कलाप हो ॥ राग विज्ञास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप  
 हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद जालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार  
 हो ॥ इम बहु विध जूमरुलै, सु० वरत्या जयस्कार हो ॥ म्हा०  
 ४ ॥ संघ सकल जगते करी, सु० जोवै थारी वाट हो ॥ नचि  
 पधारो गठपती, सु० यो दरिशा गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण  
 अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै जलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गह्वै  
 स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिखांत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु जविषण प्रति-

बूझै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु०  
 टालै जवडुख जोग हो ॥ म्हा० ४ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी,  
 सु० गुण बत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतरणी, सु० निर  
 ख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ५ ॥ थे चिरजीवो गढपती, सु०  
 राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी  
 कृमाकढ्याण हो ॥ म्हा० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा  
 निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदिह्यै, जविकजन  
 ॥ एहवा ॥ आप तरै उरनकूं तरै, शरण तिहारी गहियै ॥  
 ज० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशें बहियै ॥  
 ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशे, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज०  
 २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारै, राखै गोजन महियै ॥ ज० ॥  
 बलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥  
 एक असंजम दीय विधि वंधन, त्रिविध दंरु परिहरियै ॥ ज० ॥  
 चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ षट्  
 काय रक्षक महाजय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ॥  
 एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥  
 गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥  
 रिदयकमल नितप्रति राखोजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज०  
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवे तुह्य वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥  
 ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थकरू रे, वरधमान जिनरा  
 ज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोजत तेज समाज ॥  
 जविकजन वंदो रे ज्ञावै गढपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुध-  
 रम गणधरू रे, इ ॥ द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहा  
 मणो रे, चवद पूर धर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें  
 परगमा रे, श्रीयशोन्नत मुनिंद ॥ श्रीसंजुतविजय जइव दुजी रे,



श्रीभूलजइ दिशंद ॥ ज० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरकधरू रे, हुवा  
 वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो जूनले रे, सुरनर नामत शित ॥  
 ज० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले जका रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री  
 उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मऊर ॥ ज० ५ ॥ करधमान  
 परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गढ चोराशी प्रगट्या  
 तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ ज० ६ ॥ तास शीस जिने  
 श्वर सूरिजी रे, डुर्लजराय समक ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रुवमो  
 रे, गढपति जीत प्रत्यक्ष ॥ ज० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता  
 रे, श्रीअन्नयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गढपती रे,  
 श्रीजिनकुशल अमाय ॥ ज० ८ ॥ परम प्रज्ञावक इण गढमें थ  
 या रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि  
 हरखंत होय संत ॥ ज० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री  
 जिनवाज सूरिश ॥ तास पटोथर जगमां परगना रे, श्रीजिनचंद  
 मुणीश ॥ ज० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे  
 द्विजपति ॥ गंजरीगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रति ॥  
 ज० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥  
 जंग पदारथ अति बिस्तारसें रे, जाखे जवि हितकार ॥ ज० १२  
 ॥ ग्यान पूरव क्रिया साथे जली रे, जिनवाणो अनुसार ॥ एहने  
 सेवो रे क्युं जूला जमो रे, थाय सफल अवतार ॥ ज० १३ ॥  
 सुरतरु बंदी वांवल आदरे रे, कांइ नर मूढ गिमार ॥ ए छळाणो  
 साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ ज० १४ ॥ नाम धार-  
 क आचारज ठै धणा रे, पंचम काल मऊर ॥ पिण इण सरिखो  
 जगमां को नही रे, स्व पर तारगहार ॥ ज० १५ ॥ वाचक लाव  
 एयकमल पसायशी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी तें सुख  
 पामसः रे, पातिकनी करि हाण ॥ ज० १६ ॥ इति... वधावा ॥

पुनः ॥ आर्वण पावस छलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियेमे मेह  
 वरसीयो, सखि आज हुठ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें  
 सौजग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सद्गुरु सुरतरुनो  
 कंद रे ॥ मुख सोंहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्रांतिगुणे  
 करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर उचीत गुणे सदा,  
 विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना  
 जंमार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता,  
 सखि मीठी जेहनी बाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी  
 खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम जलहल ज्ञाण  
 रे ॥ जेहनो अतिशय विज्जाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरुं  
 सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोभता, मुनिवर  
 जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोई बाल रे, वंदीजै तेह त्रि  
 काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गड  
 सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स  
 हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतिताणा जरतार रे ॥ जेहनें प्र  
 णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ बिसतारता, सखि दे  
 ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप जावना, बारे जावन सुविशेष  
 रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रवेश रे ॥ सखि०  
 ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अभूतवचन विलाश ॥ कृण  
 में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ आय निज ज्ञान प्र  
 काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुजाय  
 रे ॥ सखि० ७ ॥ इति द्वावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी,  
 जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहिधां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, जगति तैलै उठरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराय ।  
 राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेडी विषय निवारी,  
 नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टालै,  
 पंच महाव्रत सूधा पाखे रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच  
 सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती बलि भाजै, इम उत्रीश  
 गुणै गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम  
 अनुजव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम जंग  
 प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोहमारग उपदेशी, धरै धरमध्यान शुज  
 खेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अज्यासी, जविजन चितकमल विकासी  
 रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुज जावे रे ॥  
 सही० ॥ खेवणास्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर जंरमने चूरै रे ॥ सही०  
 ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥  
 स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स०  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः देशना ॥ नणदलबाई चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए  
 चाव ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥  
 सदगुरु न्हारा, द्यो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिन उप  
 दिस्था ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम सुखवाणी नि  
 रमली ए सहियां, ज्योसे घट्ट चूं ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो  
 साजता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिशंद ॥ स० ॥ तेज जलामल सुर  
 तरु ए सहियां, मुखबि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरु सींच  
 वा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा  
 ए सहियां, जाखो नव तत्व सांर ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ जगति  
 नित साचवै ए सहियां, पूरब पुन्यसुअन ॥ सद० ॥ तारण तरण  
 जिहाज ज्युं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरंगम महिमा निलो ए लहियाँ, सदगुरु कुंशनिधान ॥ स० ॥  
 रुद्रसारनी ज्ञावनी, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदे  
 शना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो, गुरु म-  
 नमो ये मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु ज्याजनी० ॥ अमृत न  
 पम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारण खाणी, अति नय निक्षेप प्रमा  
 णी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि  
 सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदये राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु  
 ज्ञानी गुणवंता, जिवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण ज  
 लकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ जिविजीव अवण गुण रसिया, चात्रक  
 ज्युं जलधर हसिया, उपदेशे डुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 गुरु धर्म शील सोजागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, रुद्रसार व  
 चन धुन जागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



## ॥ अथ श्रीखरतर बृहद्गर्भकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि ? कम होय तो प्रतिपदाका पंचस्काण व्रत पिबली अक्षावास्था ३० तिथिकी करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकी करे, उर जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमकी करे, इसका कारण यह है की यह दोनों तिथि वराबर पर्व है, चौदश पर्वदिन है तैसई अमावस पूनम जी चिरंतन पक्षीका दिन है, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करणिके हैं, पारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनो पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां निगनेमें आती है, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिके पर्वोका कथ वृद्धि नहि होता, जबूद्धीपपन्नतीमें पांच संवत्सर कहे हैं, उसमें स अजि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्विबोने प्रचलित कर रक्का है, लेकिन सूर्यसंवत्सर तीनसे सवापेंसठ दिनका होता है, इस वास्ते जे नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसे, इस वास्ते जो चौदश कम हो तो उपवास तथा परकी प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन तेरस तथा चौदस कथ तिथिके वितत्येको न करे, उर जो बेला करे तोहरीगोमेतो दोनों दिन स्वागपहमें ग्राह्य है ॥ अब कोइ वखत संवत्सरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन तीजके दिन कदापि काले जी नहि करे, उर जो चोथ दो होय तो पहली चोथकी संवत्सरी करे, ओर कोइ जी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय है, दूसरी लौमतिथि है, दुसरा यह प्रमाण है, कृष्ण धरणीकी तिथि ठोरके दुसरी धरणी अधधरणीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोंका काम नहीं, इस पर कोई ऐसा कहे की अपरसे तो उदयतिथि मान्य है, सूर्य उदय होय जहां तक कोई श्री तिथि होयतो उस दिन वोहा तिथि मानते है, इस वास्ते जो दुसरी तिथि अथधनी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष है? इस प्रश्नका उत्तर—हे ज्ञव्य, जो पहले दिन तिज मानी है, उर ती जके दिन चोथ बहुत धनी जुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही मानीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत धनी अथधनी चोथ होखेलें चोथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो होगी उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तवतो एसी संपूर्ण तिथिकों ठोमके दुसरी ओमीसी तिथिकूं व्रत करणा लाजम नही, कार्तिक मास बढे तो पहले कार्तिक चोमासा करे, फाळगुण तो बढताही नहीं, अगर बढेतो इसरे फाळगुणमें चोमा सा करे, असाढ दो होयतो इसरे असाढमें चोमासा करे, असाढ चोमासेकी चौदसलें पच्चास गुणपच्चासमे दिन चोथकूं संवत्सरी करे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण जादवा आसोज बढेतो पंचमासी चोमासा करे, श्रावणमास दो होयतो इसरे सावण सुद ४ कूं संवत्सरी करे, चोमासेकी चौदसले पच्चास दिन लांघके संवत्सरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक ढासूत्रजीके पहिलो समाचारीमें पाठ है, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष इसरे वदे महीनाका शुक्ल पक्ष ऐसे कळयाणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष इसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूं जानना, इन ३० दिनोंमें कळयाणकतिथिका व्रत पच्चाकाण नहि करे, यह तिथियो का प्रमाण श्रीहरिज्ञप्सूरजी कृत तत्त्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है, सो निश्चितप्रमाण गाथा जिये हे ॥ निहिपक्षगेपुवति ती, क. यवा

जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चाउदसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपक्खिमणं ॥१॥  
 तन्नेवपोसहविही, कायद्वासव्वगेहिसुहहेउ ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज  
 म्मानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरुदयपम्भियायावी, तेरसीहुंतिनप  
 र्खियंकुळा, चउम्भ्यासियंकरणे, एसविहीदेसिउत्तमणा ॥ ३ ॥ ति  
 हिवुट्ठीएपुवा, गहियापम्भिपुन्नजोगसंयुता, इयराविष्ठाएणिळा, पं  
 थोवत्तित्तुल्ला ॥ ४ ॥ ( तेसेइ ज्योतिष्करं पयन्नेमें ज्ञी एसाही  
 लिखा हे ) ॥ उटिसहियानअठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ प  
 र्खिवेसहियानकयावि, इइज्जणियावीयरगेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि  
 षायं, कायद्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीठढीनका  
 यद्वा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायवंपक्खियंतुपाएण ॥ चाउदसे  
 विकइया, नहुतेरसिसोत्तसमेकहवि ॥ ३ ॥ तथा श्रावक साध्यायक करे  
 तब पहली सामायकदंरुक ३ बीर उखरके पीठे इरियावही पक्खिमें,  
 क्योकी आत्मार्थी आचार्य श्रीज्जद्वबाहूस्वामी, श्रीहरिज्जद्वसूरजी,  
 तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागंढी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला  
 ण्ढी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये  
 ग्रंथोंमें पहले करेमिजंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥  
 तथा श्रीमहावीरस्वामीके बव कट्याणक मान्य हे, इस बातका  
 कटपसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे; खरतरगन्ध, तपगन्ध के आचा  
 र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा  
 णके बडा कट्याणक न मानते हे उनोको मिंगबरकी तरे मद्धि  
 नाथस्वामीको ज्ञी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्युंकी वो ज्ञी  
 आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे. उसरा अपणे मनकट्टितपणेंसे  
 न माणनेसे अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे  
 तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दश कट्याणकादिक पर्वतिथिको करे,  
 केकन् बिनापर्व सामान्य तिथिमें पोसइ करणेका कथन कित

निदानमें जी नहीं है, पर्युत्पन्नमें कटपसूत्रकी नव वाचनाही करणी। एना वंधाण नहीं, अधकी जी करे। तथा आंखमें एक अन्नज्य पुनः पुनः जलद्रव्य यह दो द्रव्यही। अहम कारणों का अन्न वे इस वास्ते जावहाका जोखरीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहिं चाहिये। तथा तरुण स्त्रीकें सूत्रनायकनीकी पूजा करणी। प्रमाणीक जानायेनि मना किया है, कारण इस का लमें प्रार्थि स्त्रियोंमें अविशेषण तथा अकस्यात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा है, तथा श्रावजकें पञ्चदागमें पाणस्तलेगवाका पाठ करणा युक्त नहीं, यह पाठ साधूका है, तथा दिनप्रति एक उपवास पच्छावे, जो अधिक तपकी उच्चा होय तो अपने दिलमें धारणा रहै, लेकिन पञ्चस्तान नित्य सूर्योदयकी वखतहीं करे। तथा जिस धान्यकी दो फारु होय सो सब विदलकी गिणतीमें है, इन द्विदलधान्यकें गोस्त दही ठाठके साथ जक्षण नहिं करे, तथा मरण जन्मका सतक जिस घरमें होय उन घरका आहार पाणी साधु वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खन्तरकी सामाचारी लिखी है, अनेक ग्रंथ खन्तर साक्षाचारीके हैं जिनमें सरल शुद्धोपयोगी नमस्सुंदरोपाध्याय विरचित नमाचारीजनक पंचांगी प्रमाण नूत्रोंके पाठ संयुक्त है तो अनेकांती बुद्धिमानोंने गुरुगममें देवोंके धारणा ॥ यह खन्तरगजमें चोराजी गज जया है, जिन वास्ते खन्तरगजमें चोरानी नहिं है, उद्योतननृजी, मेनचंद्रनृजी के निजजिष्य अं, इन उद्योतननृजीने ७२ विद्यार्थी जिष्य ७४ में निजजिष्य श्रावर्द्धमाननृगि एवं ७४ को पचास दिव दिया, व र्द्धमाननृगिजे जिष्य जिने उद्योतननृजीने सं० १०७० का जालमें जणा, लक्ष्मणनृजीने चोराजी गजमें १०७० का जालमें जणा



करके जीता, तब उर्वेजराजाने खरतर विरुद्ध दिया, तबसे कोटिक गह्व चंडकुल वज्रशाखावाले खरतरगह्व कहलाये लगे, लेकिन अजी स्वमताजिमानो खरतरगह्वकूं संवत् वारसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसे जया ऐसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोंमें लिखा हे, लेकिन अपने पूर्वाचार्योंके बणाये सभ्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिके दो शिष्य जये, बने जिनचंडसूरि, जिनोने संवेगरंगशाखादि ग्रंथ बणाये नर श्रीमाव गोत्र थापा, उसरे श्रीअजयदेवसूरि, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाश नदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरि, जि नोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिन दत्तसूरजी एक लाख तीस हज़ार राजन्यवंतो मादेश्वरी तथा ब्रा ह्मनोको श्रावक बणाये, राखेचा लूंणीया पारख, सांवसुखा मावू कोठारी, वोथरा नाहटा, वमेर गोलठा जावक चम्म डुगर सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनसे गोत्र स्थापक ज्ञानशाली प्रमुखगोत्रोंकूं उत्तवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखणसे ग्रंथ बढ जायगा इस वास्ते इतने पर समझ लेणा. एक अठारे जाति रत्न प्रज्ञसूरिजीने उत्तियामे उत्तवाल बणाये हे, बाकी प्रायें सर्व उत्त वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरि माहाराज तक खरतरगह्वके प्रतिबोधक हे, पीठे उत्तवालवंशी हुये पीठे सं वत १५ से लेकर आज दिन तक नर गह्वियोने तथा मताव लंबियोने इनोपर अपना सिक्का जमाया हे, मूल वंशावली देखो गे तो सब व दोलत खरतर वृहद्गह्वकी हे, यह बात हमने बहोतो की वंशावली तपासके लिखी हे, जिनोके षट् परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी जये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीहेमकीर्तिसे हेमधामशाखा सवियाणगढमें पांचसे राजन्यवंशियोकूं वीर देणे

( ७८ : )

मे प्रसिद्ध ज्ञेय, उग शास्त्रोंमें जगत्पुत्र श्रीगोपगुणसे विगजमान  
चर्मशालगणिः परमगुरु ज्ञेय, जिनोके शिष्य पंथित, श्रीकुशलनि  
धानमुनिः ज्ञेय, उग परमपुरुषदापूजी मादाराजका चरणाब्जचं  
चर्मीक उ० श्रीगमलागणिः ने शिष्यमंमली पं । हेमचंद्रमुनिः चि ।  
पेमचंद्र अमरचंद्रादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य  
अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी  
वोके उपगारार्थ द्वायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर ब्रम्हा उपामग विद्या-  
शाला उ । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलालज । गणिः ॥

